हिन्दी पद्य साहित्य आदिकाल से आधुनिक काल तक

COURSE CODE: B21HD04DC

Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature
Discipline Core Course

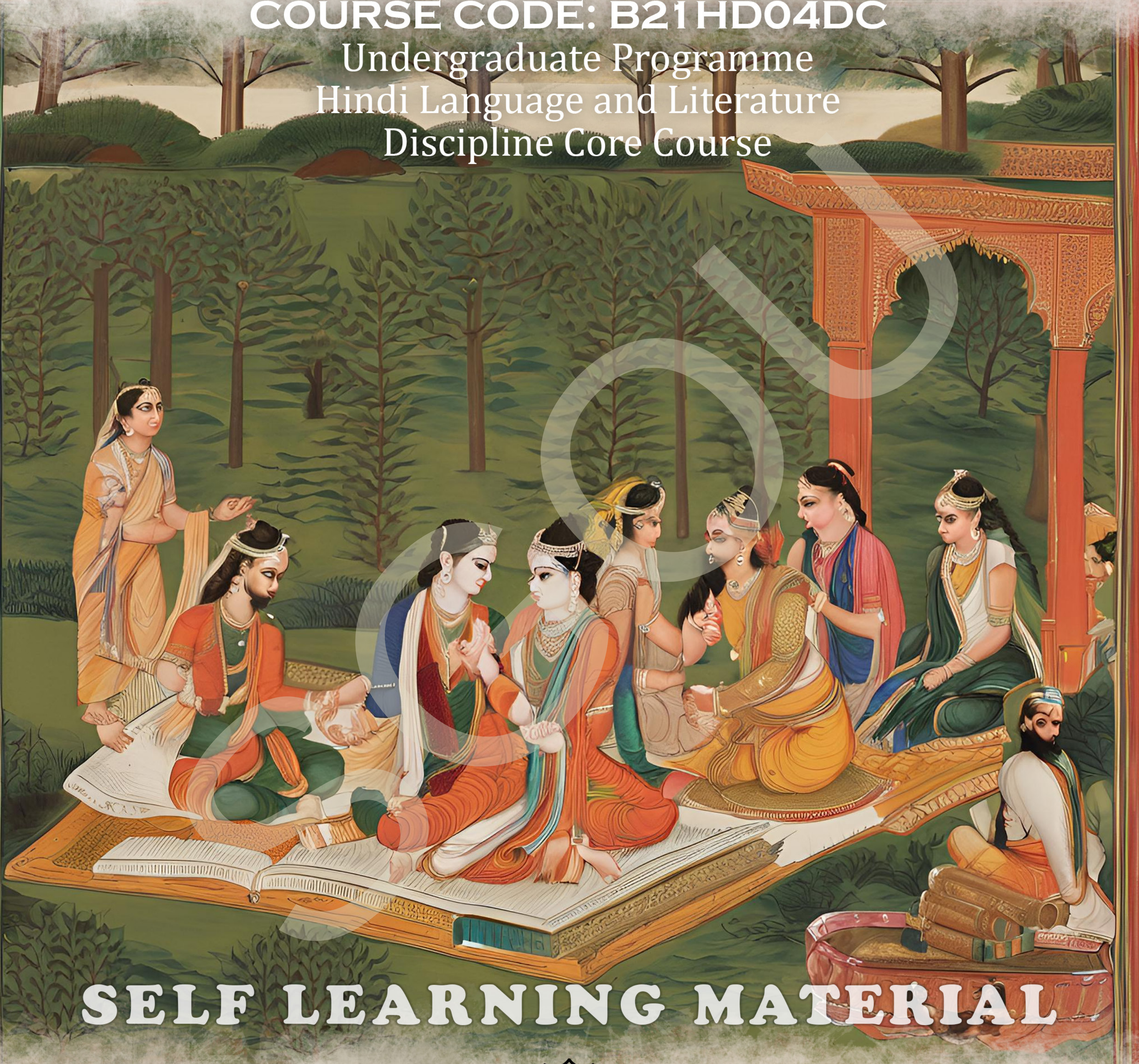

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी पद्य साहित्य
आदिकाल से आधुनिक काल तक

Course Code: B21HD04DC

Semester - IV

Discipline Core Course
Undergraduate Programme
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

हिन्दी पद्य साहित्य
आदिकाल से आधुनिक काल तक

Discipline Core Course
Course Code: B21HD04DC
Semester - IV
BA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-970238-5-9

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. R. Sethunath
Dr. B. Ashok
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Lembodharan Pillai B., Dr. Sudha T.

Review

Content : Dr. Shaji N., Dr. Sunny N.M.
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. Sandhya Menon

Edit

Dr. Shaji N., Dr. Sunny N.M.

Scrutiny

Dr. Sophiya Rajan, Dr. Indu G. Das, Dr. Sudha T., Krishnapreethi A.R.

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Jobin J.

Production

July 2024

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2024

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the UG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P. 01-07-2024

Contents

BLOCK - 01 आदिकालीन कविता **1**

इकाई 1: पृथ्वीराज रासो - रेवा तट का एक प्रसंग और मत चूको चौहान दोहा 2

इकाई 2: विद्यापति की पदावली 11

BLOCK - 02 मध्यकालीन कविता **16**

इकाई 1: कबीर के दोहे 17

इकाई 2: सूरदास के पद 26

इकाइ 3: तुलसी के दोहे 35

इकाई 4: मीरा बाई के पद 45

BLOCK - 03 द्विवेदी युगीन कविता **50**

इकाई 1: मनुष्यता - मैथिली शरण गुप्त 51

इकाई 2: मिलन - राम नरेश त्रिपाठी 57

BLOCK - 04 छायावादी और प्रगतिवादी कविता **65**

इकाई 1: प्रथम रश्मी - सुमित्रानंदन पन्त 66

इकाई 2: जूही की कली - निराला 71

इकाई 3: हिमालय से - प्रसाद 76

इकाई 4: मुरझाया फूल - महादेवी 82

इकाई 5: कलम या कि तलवार - दिनकर 88

इकाई 6: हम अनिकेतन - बालकृष्ण शर्मा नवीन 95

BLOCK - 05 प्रयोगवादी और नयी कविता **103**

इकाई 1: कलगी बाजरे की - अज्ञेय 104

इकाई 2: वे बातें लौट न आएँगी - गजानन माधव मुक्तिबोध 112

इकाई 3: कंकरीला मैदान - केदारनाथ अग्रवाल 118

इकाई 4: फूल झर गए - कीर्ति चौधरी 123

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 06 साठोत्तरी और समकालीन कविता **127**

इकाई 1: हर तरफ धुआँ है - धूमिल 128

इकाई 2: मुक्ति - अरुण कमल 135

इकाई 3: पत्थर की बेंच - चन्दकांत देवताले 142

इकाई 4: बेजगह - अनामिका 147

इकाई 5: प्यासा कुआँ - ज्ञानेंद्रपति 155

SGOU

BLOCK - 01

आदिकालीन कविता

इकाई 1

पृथ्वीराज रासो - रेवा तट का एक प्रसंग और मत चूको चौहान दोहा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- पृथ्वीराज रासो की विशेषताओं से परिचय प्राप्त होता है
- पृथ्वीराज रासो में उपलब्ध वीर और श्रृंगार रस के समन्वय जानता है
- वीरतायुक्त रचना, पृथ्वीराज रासो के युद्ध वर्णन का परिचय मिलता है
- पृथ्विराज चौहान के बारे में समझता है
- आदिकालीन कवि चन्दबरदाई से परिचित होता है
- 'रेवा तट' की कथा से अवगत होती है
- विविध छंदों को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आदिकालीन वीर काव्यों में छन्द वैविध्य एवं परंपरा की श्रेष्ठता विद्यमान है। पृथ्वीराज रासो को हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। यह लगभग 69 समय (सर्ग) का काव्य है। इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता पर हिन्दी के विद्वानों के बीच सर्वाधिक बहस हुई है। इसके रचयिता चन्दबरदाई, इस काव्य के चरित नायक पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वीरता प्रधान रचना, प्रथम महाकाव्य, वीर और श्रृंगार रस का समन्वय, युद्धों का सजीव वर्णन

Discussion / चर्चा

पृथ्वीराज रासो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना गया है। इसके रचयिता चन्दबरदाई तथा इस काव्य के चरित नायक पृथ्वीराज के समकालीन थे तथा यह भी माना जाता है कि दोनों की मृत्यु भी एक साथ हुई। चन्दबरदाई की मृत्यु तक यह ग्रन्थ पूरा नहीं हुआ था, चन्द के पुत्र जल्हण ने इसे पूरा किया, ऐसा माना जाता है। कहा जाता है कि चन्दबरदाई पृथ्वीराज का सखा, सामंत, राजमंत्री था। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे अर्द्ध प्रामाणिक मानते हुए इसके उसी अंश को प्रामाणिक माना है जिसका प्रारम्भ शुक-शुकी संवाद से हुआ है। उनका प्रमुख तर्क यह है कि आदिकाल में प्रचलित संवाद शैली में ही पृथ्वीराज रासो की रचना हुई है। इस आधार पर वे केवल 7 सर्गों को ही प्रामाणिक मानते हैं जिसमें रेवा तट समय नहीं है।

इस सम्बन्ध में उनका मत है कि सभी ऐतिहासिक कहे जाने वाले काव्यों के समान इसमें भी फैक्ट और फिक्शन

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

का मिश्रण है इसके कथानक में भी रूढ़ियों का सहारा लिया गया है इसमें भी रस सृष्टि की ओर ध्यान दिया गया है। कवि की कल्पना का समावेश भी है।

रेवातट समय में पृथ्वीराज ने रेवा नदी के तट पर जो भयानक युद्ध मोहम्मद गोरी से किया उसका वर्णन है।

'पृथ्वीराज रासो' में 69 समय (सर्ग) हैं। 'रेवा तट' समय पृथ्वीराज रासो का सत्ताइसवाँ समय (सर्ग) है। इसमें दिल्ली के महान राजा पृथ्वीराज चौहान तथा शहाबुद्दीन गोरी के रेवा तट पर होने वाले संघर्ष का वर्णन है। जब शहबुद्दीन को अपने गुप्तचरों द्वारा ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज चौहान रेवा (नर्मदा) तट के समीप वन आखेट में रत हैं, तो वह अपनी सेना सहित पृथ्वीराज पर आक्रमण कर देता है, परन्तु पृथ्वीराज चौहान शीघ्र ही मोर्चा सँभाल लेते हैं और उसकी सेना को छिन्न-भिन्न करके उसे बन्दी बना लेते है। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत सर्ग में युद्ध का वर्णन है, इसलिए कुछ विद्वान इस अंश के नामकरण 'रेवा तट' पर आपत्ति उठाते है, लेकिन इस सर्ग में वर्णित पृथ्वीराज चौहान का रेवा तट के समीप किसी वन में आखेटरत होना तथा शहाबुद्दीन के आक्रमण करने पर उत्साह के साथ उस पर पलटवार करना आदि घटनाएँ इस शंका का निराकरण कर देती है।

'रेवा तट' सर्ग की कथा-

पृथ्वीराज चौहान के सेनापति चामण्ड राय के देवगिरि जीतने के बाद कवियों ने पृथ्वीराज चौहान की कीर्ति का बखान किया। एक दिन चामण्ड राय ने पृथ्वीराज से कहा कि रेवा (नर्मदा) नदी के तट पर ऐरावत हाथी के समान बहुत से हाथी पाऐ जाते है। अतः आप रेवा तट पर शिकार खेलने चलें, तभी पृथ्वीराज चौहान ने कवि चन्द से पूछा कि ये देवताओं के वाहन पृथ्वी पर कैसे आ गए।

कवि चन्दबरदाई ने उत्तर दिया कि हे महाराज! हिमालय के पास एक बहुत बड़ा वट वृक्ष था, जोकि सौ योजन तक फैला था। एक दिन हाथियों ने विचरण करते हुए उस वृक्ष की शाखाएँ तोड़ी और ऋषि दीर्घतपा का आश्रम उजाड़ डाला। इस बात से क्रोधित होकर ऋषि ने मदान्ध हाथियों को श्राप दे दिया। इस कारण हाथी तब से गतिविहीन हो गए। तब मनुष्यों ने उन्हें अपनी सवारी बना लिया। कवि चन्द ने आगे बताा कि अंगदेश के एक वन में लोहिताक्ष सरोवर पर उन श्रापित हाथियों का झुण्ड क्रीड़ा करता था।

उसी वन में पालकाव्य ऋषि रहते थे, जिनकी हाथियों से अत्यन्त प्रीति थी। राजा पृथ्वीराज ने पूछा कि हे कविराज! उन ऋषि की हाथियों से इतनी प्रीति का कारण क्या था? कवि ने बताया कि एक बार ब्रह्मर्षि को घोर तपस्या में रत देखकर देवराज इन्द्र डर गए और उनकी तपस्या को भंग करने के उद्देश्य से उन्होंने रम्भा (अप्सरा) को ऋषि के पास भेजा। ऋषि ने क्रोधित होकर रम्भा को हथिनी होने का श्राप दे दिया। एक दिन सोते हुए एक मुनि का वीर्यपात हो गया, जिसे हथिनी ने खा लिया और पालकाव्य मुनि का जन्म हुआ। पालकाव्य मुनि इसी कारण हाथियों से प्रीति रखते थे।

पालकाव्य ऋषि और वे श्रापित हाथी एक-दूसरे से बड़ी प्रीति रखते थे। एक दिन उस वन में राजा रोमपाद शिकार खेलने आया और हाथियों को पकडकर चम्पापुरी ले गया। हाथी पालकाव्य से बिछुड़ने के कारण दुर्बल होते चले गए, उनके दीर्घकाय शरीर कृशकाय हो गए फिर पालकाव्य ऋषि वहाँ आए और उनकी काफी सेवा-सुश्रूषा की। कोंपल, पराग, पत्ते, छाल, शाखाएँ आदि खिलाकर ऋषि ने उन्हे स्वस्थ कर दिया, जिससे सभी हाथी पुनः हृष्ट-पुष्ट हो गए।

कवि चन्द का हाथियो के विषय में यह वृतान्त सुनकर राजा पृथ्वीराज को बड़ा हर्ष हुआ, तभी चामण्ड राय ने पृथ्वीराज से कहा कि हे राजन! रेवा तट पर बड़े दाँतों वाले हाथियों के साथ-साथ मार्ग में सिंह भी मिलेंगे। आप उनका भी शिकार कर सकते हैं। चामण्ड राय ने आगे कहा कि वहाँ पहाड़ो और जलाशयों पर कस्तूरी मृग, कबतूर व अन्य पक्षी भी रहते हैं और दक्षिण दिशा का सौन्दर्य तो और भी अवर्णनीय है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने सोचा कि मेरे वहाँ जाने से जयचन्द को तो ईर्ष्या होगी, साथ ही स्थान भी रमणीय है। अतः चौहान ने रेवा तट की ओर प्रस्थान कर दिया।

वहाँ के सभी राजाओं ने पृथ्वीराज का स्वागत किया और पृथ्वीराज ने भी वहाँ ख़ूब शिकार का आनंद लिया। उसी समय लाहौर के शासक चन्द पुण्डीर दाहिम का पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि शहबुद्दीन गोरी ने चौहान पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना तैयार की है। चन्द पुण्डीर के पत्र को पढ़कर चौहान लाहौर की ओर चल दिए। पृथ्वीराज ने सभी सामन्तों से मन्त्रणा करके गोरी से

युद्ध की घोषणा कर दी।

चन्द पुण्डीर ने अपनी सेना को लाहौर में गोरी की सेना को रोकने के लिए सावधान कर दिया। गोरी ने चिनाब नदी को पार किया, जहाँ उसका मुकाबला चन्द पुण्डीर से हुआ। चन्द पुण्डीर ने अपने पाँच वीरों के मरते ही गोरी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, तभी चौहान के दूतों ने उसे बताया कि तातार मारूफ खाँ (गोरी का प्रधान सेनापति) लाहौर से केवल पाँच कोस दूरी पर ही है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने गोरी की सेना पर आक्रमण कर दिया।

नगाड़ों के बजते ही हाथियों के घण्टे घनघना गए। चौहान की सेना के लोहे के बाणों को देखकर गोरी की सेना घबरा गई। दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गईं। चौहान पक्ष के साथ-साथ गोरी पक्ष के भी अनेक वीर योद्धा मारे गए। रावर, सँभरसिंह, सोलंकी माधवराय, गरुअ गोइंद, पंतग-जयसिंह, चन्द पुण्डीर, कूरम्भ, आहुट्ठ, लखन, लोहाना आदि बहुत से वीर मारे गए। चार दिन तक युद्ध निरन्तर चलता रहा। चौथे दिन चौहान के एक योद्धा गुज्जर ने गोरी को पकड़ लिया। सुल्तान गोरी को हाथी पर बाँधकर दिल्ली ले गया।

वह एक माह और तीन दिन पृथ्वीराज की कैद में रहा। शहाबुद्दीन के अमीरों ने पृथ्वीराज से गोरी को छोड़ने की विनती की और दण्डस्वरूप नौ हजार घोड़े, सात सौ ऐराकी घोड़े, आठ सफेद हाथी, बीस ढली हुई ढालें, गजमुक्ता और अनेक माणिक्य दिए। तत्पश्चात् पृथ्वीराज चौहान ने गोरी से सन्धि कर ली और पहिना-ओढ़कर उसे उसके घर भेज दिया। यही 'रेवा तट' सर्ग की कथा समाप्त हो जाती है।

'रेवा तट' की काव्यगत विशेषताएँ:

भाव पक्ष:

'रेवा तट' का प्रधान विषय पृथ्वीराज और गोरी का युद्ध है। स्पष्टतः इसका प्रधान रस वीर रस है। सर्ग के आरम्भ में चौहान को रेवा तट पर शिकार करने के लिए प्रेरित करते समय कुछ समय के लिए सौन्दर्य प्रधान छन्द मिलते हैं। तत्पश्चात् सम्पूर्ण सर्ग में युद्ध वर्णन, सैनिक व्यूह रचना, युद्ध साज-सज्जा आदि का ही वर्णन मिलता है। अतः कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण सर्ग में वीर रस का ही परिपाक हुआ है। चन्द पुण्डीर के दूत द्वारा लाए गए पत्र में गोरी की सेना के प्रति चौहान को सचेत किया गया है, जिसके द्वारा हमें गोरी की विशाल सेना का पता चलता है -

श्रोतं भ्पय गोरियं बर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उलझ, तत्तार मारूफयं।।
तुज्झी सार स उप्परा वर रसी, पल्लानर्य षानयं।
एकं जीव सहाब साहि न नयं, बीयं स्वयं सेनयं।।

युद्ध में आमने-सामने डटी सेनाओं का उत्साह और शत्रुओं के प्रति मन में उत्पन्न होने वाले क्रोध का वर्णन करके कवि चन्द ने एक ही छन्द में वीर व रौद्र रस का मानो समागम ही कर दिया है, जोकि अन्य काव्यों में मिलना असम्भव है। यथा -

लटक्कै जुरनं उडै हंस हल्लै।
रसं भीजि सूरं चवग्गांन षिल्लै।।
लगे सीस नेजा भ्रमैं मेज तथ्यं।
भषै बाइसं भाट दीपत्ति सथ्यं।।

गोरी की सेना नजदीक आ गई है, यह समाचार सुनकर पृथ्वीराज के क्रोध और ओज का दृश्य अद्भूत बन पड़ा है -

वीर रस बर बैर बर, झुकि लग्गौ असमांन।
तौ नन्दन सोमेस को, फिर बंधौ सुरतांन।।

वीर रस व रौद्र रस की पुष्टि करने वाला यह छन्द दृष्टव्य है -

भय प्रात रत्तिय जु रत्त दीसय, चन्द मन्दय चंदयौ।
भर तमस तामस सूर बन भरि, रास तामस छंदयौ।।
बर बज्जियं नीसांन धुनि घन, बीर बरनि अकूरयं।
धर धरकि धाइर करषि काइर, रसमि सूरस कूरयं।।

कला पक्ष:

कला पक्ष की दृष्टि से 'रेवा तट' स्पष्ट और प्रभावशाली है। वीर रस से पुष्ट होने के कारण इस सर्ग की भाषा ओजपूर्ण हैं। कवि ने अपभ्रंश भाषा का प्रयोग करते हुए अरबी, फारसी, तत्सम आदि शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। ओजपूर्ण भाषा का एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है।

रे गुज्जर गांवार राज लै मंट न होई।
अप्प मरै छिज्जै नृपति कौन कारज यह जोई।

कवि चन्दबरदाई ने अपने रासो ग्रन्थ में छन्द योजना के अन्तर्गत छंदों की बाढ़ ही ला दी है। कवि ने दूहा (दोहा), छप्पय, भुजंगी, साटक, कुण्डलिया, कण्ठ शोभा,

मोतीदाम, रसवला आदि प्राचीन छंदों के प्रयोग से काव्य में विशिष्टता लाने का सफल प्रयास किया है। निम्न उदाहरण हैं -

अहि बेली फल हथ्य लै, तौ ऊपर तत्तार।
मेच्छ मसरति सत्ति कै, बंच कुरानी बार।।
बर मुसाफ तत्तार षाँ, मस कित्ति तन बांन।
में भंजे लाहौर धर, लेहूँ सुनि सु विहान।
लेहूँ सु निसु विहान, सुनै ढिल्ली सरतांनं।
लुथ्थि पार पुण्डीर, भीर परिहै चैहांन।
दचित चित्त जिन करहु, राज आखेट उथापं।
गज्जनेस आयस्स, चले सब छूयं मुसाफं।
मिले सब्ब सामंत, मत्त मंडयौं सु नरेसुर।
दह गुना दल साहि, सज्जि चतुरंग समिय उर।।
मवन मंत चुम्कौ न, सोइ वर मंत विचारौ।
बल घट्यौ अप्पनौ सोच, पच्छिलौ निहारौ।।

पृथ्वीराज रासो में कवि चन्दबरदाई के प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा के चहुँ ओर दर्शन होते है; यथा-

लोह अंच उड्डंत, पत्त तरवर जिमि डोलै।

अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग कहीं-कहीं प्रभावशाली जान पड़ा है-

धन रहै ध्रम्म जस जागे है दीप दीपति दिवलोक पति।

वीप्सा अलंकार का यह उदाहरण भी प्रभावपूर्ण है-

बह बह कहि रघबंस रांम हक्कारि स उठ्यौ।

उत्प्रेक्षा अलंकार की तरह ही कवि ने उपमा अलंकार का भी प्रमुखतः प्रयोग किया है-

बर बीर धार जुगिंद पंत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं।

प्रस्तुत सर्ग 'रेवा तट' कला पक्ष की दृष्टि से वैभवपूर्ण है। कवि ने प्रसंगानुकूल विविध छन्दों, रसों, अलंकारों आदि का प्रयोग कर 'पृथ्वीराज रासो' को श्रेष्ठ काव्य बनाने में सफलतम प्रयास किया है।

रेवा तट के परीक्षापयोगी पदों की व्याख्या :-

बिन्द ललाट प्रसेद, कर्यौ संकर गजरांज।
अैरा पति धरि नाम, दियौ चढ़नै सुरराजं।।
दानव दल तेहिं गंजि रंजि उमया उर अन्दर।
होई क्रपाल हस्तिनी संग बगसी रचि सुन्दर।।
औलादि तासु तन आय कै, रेवा तट वन बिछरिय।
सामन्तनाथ सों मिलत इष, दाहिम्मै कथ उच्चरिय।।

सन्दर्भ- उपर्युक्त तीनों दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए हैं। प्रसंग- यहाँ पर चामण्ड राय ने पृथ्वीराज को हाथियों की उत्पत्ति के विषय में बताया है।

व्याख्याः

शंकर ने अपने माथे के पसीने की बूँद से तिलक करके सामान्य गज को गजराज बना दिया (या शंकर ने अपने माथे के पसीने की बूँद से गजराज को उत्पन्न किया) और उसका नाम ऐरावत रखकर देवराज इन्द्र को सवारी करने के लिए दे दिया। उसने राक्षसों का नाश किया और उमा (माता पार्वती) के ह्रदय को प्रसन्न किया। उन्होंने कृपा करके उसे (ऐरावत को) एक सुन्दर हथिनी प्रदान की। इन्हीं के मिलन से (शरीर से) उत्पन्न इनकी सन्तानें रेवा तट के पास के वनों में फैल गई। दाहिम (चामण्ड राय) ने पृथ्वीराज से मिलकर इस कथा का वर्णन किया।

विशेषः

- ऐरावत (हाथी), समुद्र-मन्थन की कथानुसार समुद्र से चौदह रत्नों के साथ निकला था।
- यहाँ पर चन्दबरदाई ने अपने ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' में अपने छन्द को 'कवित्त' का नाम दिया है, परन्तु ये कवित्त नहीं है। वस्तुतः इसके लक्ष्मण 'छप्पय' छन्द से मिलते है। 'छप्पय' छः चरण वाला विषम मात्रिक छन्द होता है। इसके प्रथम चार चरण 'रोला' के तथा अन्तिम दो चरण 'उल्लाला' छन्द के होते हैं।
- पिंगल भाषा का प्रयोग किया गया है तथा बगसी, फारसी और औलादि अरबी शब्द है।
- शंकर के माथे के पसीने से गजराज के उत्पन्न होने के सन्दर्भ में यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है। अन्त्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग भी दृष्टव्य है। 'गंजि रंजि' में छेकानुप्रास अलंकार है।

हेमाचल उपकंठ एक वट वृष्प उतंगं।
सौ जोजन परिमांन साष तस भंजि मतंगं।।
बहुरि दुरद मद अंध ढाहि मुनिवर आरामं।
दर्घतपा री देषि श्राम दीनो कुपि तामं।।
अंबर विहार गति मंद हुअ र आरूढ़न संग्रहिय।
संभरि नरिंद कवि चंद कह सुर गइंद इम भुवि रहिय।।

सन्दर्भः

उपर्युक्त तीनों दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए हैं।

प्रसंग:

पृथ्वीराज द्वारा यह पूछने पर कि देवताओं का वाहन पृथ्वी पर कैसे आया, तो कवि चन्द राजा के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं -

व्याख्या:

हे राजन! हिमालय पर्वत के निकट एक बड़ा ऊँचा वट (बरगद) का वृक्ष था। वह सौ योजन तक फैला हुआ था। पहले तो इन हाथियों ने उस वृक्ष की शाखाएँ तोडी और फिर मद से अन्धे इन द्विरदों (हाथियों) ने दीर्घतपा ऋषि का बगीचा उजाड़ डाला, जिस कारण मुनिवर ने क्रोधित होकर उन्हें श्राप दे दिया। श्राप के कारण उनकी आकाशगामी चाल मन्द हो गई और मनुष्यों ने अपनी सवारी के लिए उनका संग्रह कर लिया। कवि चन्द कहते है कि हे संभल के राजा (पृथ्वीराज) इस तरह देवताओं के वाहन (ये हाथी) पृथ्वी पर रह गए।

विशेष:

- ▶ पौराणिक आख्यान दिया गया है। 'दीर्घतपा' से तात्पर्य यहाँ दीर्घतमस ऋषि से है। विष्णु पुराण के अनुसार, 'दीर्घतपा या दीर्घतमस ऋषि चन्द्रवंशी पुरुरवा के वंशज काशिराज के पुत्र थे और धन्वन्तरि वैद्य के पिता थे।
- ▶ अपभ्रंश तथा पिंगल भाषा का पुट है।
- ▶ "सौ जोजन परिमांन" में अतिशयोक्ति अलंकार है। अन्त्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

श्रोतं भ्यय गोरियं बर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उलझ, तत्तार मारूफयं।।
तुज्झी सार स उप्परा वर रसी, पल्लानर्य षानयं।
एकं जीव सहाब साहि न नयं, बीयं स्वयं सेनयं।।

सन्दर्भ:

उपर्युक्त दोनों दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए है।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों में चन्द पुण्डीर का दूत गोरी के श्रेष्ठ सेनापति के द्वारा की गई तैयारी का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या:

चन्द पुण्डीर का दूत आगे कहता है कि हे राजन! सुनिए, गोरी के श्रेष्ठ सेनापति तातार मारूक खाँ ने ढोल बजाकर सारी तैयारियाँ कर ली हैं और उसकी सेना चतुरंगिणी बनकर ऊपर झपटने या टूट पड़ने को तैयार हैं। आपके ऊपर आक्रमण करने की इच्छा से उन्होंने अपने घोड़ों पर जीने कस ली है या आपकी सत्ता को नष्ट करने के लिए खान घोड़े दौड़ा रहे है। गोरी की सेना 'एक साहब शाह (गोरी) रहे और कोई न रहे' यह कहरक उसका स्वागत कर रही है।

विशेष:

- ▶ अपभ्रंश व पिंगल भाषा का प्रयोग।
- ▶ तुज्झी सार स उप्परा बस रसी, पल्लानयं षानयं' पंक्ति में श्लेष अलंकार है।
- ▶ प्रस्तुत पद का छन्द 'साटक' गुजराती काव्यों का छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 19-19 वर्ण होते हैं तथा 12वें व 7वें वर्ण पर यति होती है। इसके प्रत्येक चरण में वर्णो का क्रम मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), दो तगण (ऽऽ।) तथा एक गुरु (ऽ) के रूप में होता है।
- ▶ 'रूपदीप पिंगल' में साटक छन्द का विवरण इस प्रकार मिलता है-

कर्म द्वादस अंक आद संग्या, मात्रा सिवो सागरे।
दुज्जी वी करिके कलाष्ट दसवी, अर्को विरामाधिकं।।
अंते गुर्व निहार धार सबके, औरों कछु भेदना।
तीसो मत्त उनीस अंक चने, से सो भणै साटके।।
तब कहै जैट पंवार सुनहु प्रिथिराज राजमत।
जुद्ध साहि गोरी नरिन्द लाहौर कोट गत।।
सबै सेन अप्पनौ राज एकट्ठ सु किज्जै।
इष्ट भ्रत्य सगपन सुहित (बीर) कागज लिषि दिज्जै।।
सामंत सामि इह मंत है अरूजु मंत चिंतै नृपति।
धन रहै ध्रम्म जस जोग है, दीप दिपति दिवलोकपति।।

सन्दर्भ:

उपर्युक्त तीनों दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए है।

प्रसंग:

पृथ्वीराज शहाबुद्दीन के आक्रमण के बारे में सुनकर अपने मंत्रियों से मन्त्रणा कर रहे हैं।

व्याख्या:

तब जैत प्रभार बोले, हे पृथ्वीराज! राजमत ऐसा हो कि

नरेन्द्र (पृथ्वीराज) को लाहौर के दुर्ग में जाकर शाह गोरी से युद्ध करना चाहिए। अपने राज्य की सम्पूर्ण सेना को इकट्ठा करके अपने इष्टों, भृत्यों, सगों, सुहितों को पत्र लिखना चाहिए। हे सामन्तों के स्वामी! यह राजमत है और जो कुछ आपको अच्छा लगता हो वह कीजिए (या जो आपका मत है, उसके अनुसार कीजिए)। धर्म और यश का योग ही आपका धन होना चाहिए, क्योंकि आपका तेज इन्द्र के समान दीप्तिमान है।

विशेषः

- जैत प्रभार की पुत्री इच्छिनी से पृथ्वीराज का विवाह हुआ था।
- छप्पय छंद का प्रयोग।
- अन्त्यानुप्रास अलंकार का प्रयोग तथा 'दीप दीपति दिवलोकपति' में छेकानुप्रास है।

फिरे हय बष्षर पष्पर से। मनों फिरि इंदुज पंष कसे।
सोइ उपमा कवि चन्द कथे। सजे मनों पोन पवग रथे।।
उर पुट्ठिय सुट्ठिय दिट्ठियता। विपरीत पलंग तताधरिता।
लगैं उङि छित्तिय चैन लयं। सुने खुर केह अबत्तनयं।।
अग बंधिसु हेम हमेल घनं। तव चमर जोति पवंन रुनं।
ग्रह अट्ठ सतारक पीत पगे। मनो सुत क उर भांज उगे।।
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मनो विट देषि चली कुलटा।
मुष कट्टिन घूंघट अस्सु बली। मनो घूघंट दै कुल बद्धु चली
तिनं उपमा बरनं न घनं। पुजै नन बग्ग पवंन मनं।।

सन्दर्भः

उपर्युक्त चारों दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए हैं।

प्रसंग- गोरी से युद्ध की निश्चिंतता जानकर युद्ध की तैयारियाँ होने लगी। अतः प्रस्तुत पद्यांश में घोड़ों की शोभा का वर्णन किया गया हैं।

व्याख्याः

घोड़े अपने बाखर-पाखर (जिरह बख्तर) सहित ऐसे फेरे गए मानों गरुङ अपने पंखों को समेटकर उड़ रहे हों। कवि चन्द उसकी उपमा करते हुए कहते है कि वे (घोड़े) सूर्य के सारथी (प्लवंग) के घोड़ों की तरह सरपट दौड़ते प्रतीत होते हैं। उनकी छाती और पुट्ठे इतने सुन्दर दिखते है, मानों पलंग उलटकर रखे हों। जब ये चौकड़ी भरकर पृथ्वी पर चलते है, तो उनके सोने के खुर दिखाई देते है। उनके आगे सोने की हमेलें बँधी है, जो उनके चमकते हुए चँचर (कलगी) के साथ हवा में हिलते हैं, उनकी छाती पर हमेले ऐसे लगते हैं, मानो आठ ग्रह पीली पग बाँधे तारामण्डल सहित चमक रहे हों।

घोड़े चलते हुए अपने पैर ऐसे बनाते है, जैसे कोई व्याभिचारिणी स्त्री (कुलटा) अपने नायक को देखकर चलती हैं। घोड़ों के मुख पर पड़ी झालरें ऐसी प्रतीत होती है कि मानों घूँघर डालकर कुलवधुएँ चल रही हों। उनकी उपमाओं का वर्णन नहीं किया जा सकता। घोड़ों की सरपट चाल की तुलना कैसे की जाए, यह मन में नही आता।

विशेषः

- यहाँ कवि की लाक्षणिक शैली का ज्ञान होता है।
- हमेल, अरबी का शब्द है। बष्पर-पष्पर देशज शब्द है।
- कवि ने उपमानों की छटा ही बिखेर दी है।
- उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, अनुप्रास आदि विविध अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत कण्ठ शोभा छन्द के विषय में स्वयं कवि चन्द्र द्वारा इसी सर्ग के 31वें छन्द में बताया गया है-

ग्यारह अष्पर पंच षट, लघु गुरुह्रोइसमांन।
कंठ सोभ बर छंद कौ, नाम कह्यौ परवांन।।
भय प्रात रत्तिय जु रत्त दीसय, चंद मंदय चंदयौ।
भर तमस सूर बर भरि, रास तामस छंदयौ।।
बर बज्जियं नीसांन धुनि घन, बीर बरनि अकूरियं।
धर धरकि धाइर करषि काइर, रसमि सूरस कूरयं।।
गज घंट घन किय रुद्र भनकिय, षनकि संकर उद्दयौ।
रन नंकि भेरिय कन्ह हेरिय, दंति दांन धनं दयौ।।
सुनि वीर सद्दद सबद पढ्ढइ, सद्द सद्दइ छंडयौ।
तिह ठौर अद्‌भूत होत त्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ।।
सत्राह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई।
मुकर में प्रतिब्यंब राजय, सत्त धन ससि साजई।।
बर फल्लि बंबर टोप औपत, रीस सीसत आइये।
नष्षित्र हस्त कि भांन चंपक, कमल सूरहि साइये।।
बर बीर धार जुगिंद पंतिय, कब्बि ओपम पाइयं।
तजि मोहमाया छोह कल बर, धार तिथ्थ्य धाइयं।।
संसार संकर बंधि गज जिमि, अप्प बंधन हथ्थ्यं।
उनमत्त गज जिमि नंषि दीनी, मोहमाया सथ्थ्यं।।
सो प्रबल महजुग बंधि जोगी, मूनि आरम देवयो।
सामंत धनि जिति षित्ति कीनी, पत्त तरु जिमि भेवयो।।

सन्दर्भ- उपर्युक्त दोहे चन्दबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' के सर्ग 'रेवा तट' से लिए गए हैं।

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्यांश में युद्ध के मैदान का दृश्य वर्णित किया गया है।

व्याख्याः

जैसे ही प्रातःकाल हुआ और रात रक्तमय (उषा काल) दिखने लगी अर्थात् धीरे-धीरे रात का समय खत्म होने लगा तो तामसिक वृत्ति वाले योद्धा क्रोध से भर गए। नगाड़ों के बजने की ध्वनि सुनते ही वीरों में वीर रस का संचार हो गया। पृथ्वी काँपने लगी और करखा (चारणों द्वारा) गाते ही कायरों की दृष्टि भी वीर व रौद्र रस से परिपूर्ण हो गई। हाथियों के घण्टे बजने लगे और उनकी जंजीरें खनखनाने लगीं। युद्ध के नगाड़े बज उठे जैसे ही कन्ह (पृथ्वीराज के चाचा) धन व हाथियों का दान करने लगे। नगाड़ों का शोर सुनते ही वीरों ने गरजना और ब्रह्मणों ने मन्त्रोच्चार करना प्रारम्भ कर दिया।

राजा पृथ्वीराज की सेना उस स्थान पर दुर्जनों का नाश करने के लिए अद्भुत रूप से सुसज्जित होने लगी। वीरों के कवच इस तरह चमक रहे थे, जिस प्रकार सूरज के निकलते ही घाट सुशोभित होते हैं। कवि चन्द को ऐसी उपमा सुन्दर लगी। वीरों के शिरस्त्राणों पर लगे हुए उड़ते तुर्रे उनके सिर पर इस प्रकार गिरते थे, मानों सूर्य के हस्त नक्षत्र में स्थित होने से चम्पा व कमल के फूल बिखरे हों।

वीरों की पंक्तियाँ योगियों की पंक्तियों के समान दिखाई पड़ती थी। कवि को ऐसी उपमा जान पड़ी कि मानो वे योगी (योद्धा) माया-मोह को त्यागकर तलवार की धार रूपी तीर्थ पर जा रहे हों। संसार की शृंखलाओं में स्वयं को हाथी की तरह जंजीरों से बँधा पाकर अपनी प्रबल तपस्या से मोह रूपी जंजीरों को तोड़कर, जिस पर योगी देवतुल्य आनन्द को प्राप्त करता है। उसी तरह सामन्तों का स्वामी अर्थात् वीर राजा वृक्ष के पत्तों के समान पृथ्वी को कुचलकर विजय प्राप्त करता है।

विशेषः

- भाषा में लाक्षणिकता है।
- वीर रस का ओजपूर्ण प्रवाह है।
- अतिशयोक्ति, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
- आधुनिक छन्द ग्रंथों में दण्डमाली छन्द का उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन लक्षणों में यह छन्द हरिगीतिका के समतुल्य है। हरिगीतिका सममात्रिक छन्द होता है। इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ तथा 16 वीं व 12 वीं मात्रा पर यति होती है। अन्त में लघु गुरु का होना अनिवार्य हैं।

पृथ्वीराज जब अन्तिम युद्ध में पराजित हो गए। उन्हें बन्दी बनाकर गजनी की ओर ले जाया गया। तब चन्द भी रासो का लेखन कार्य अपने पुत्र जल्हण को गजनी चले गये और शब्द-भेदी बाण से गोरी का वध करने का योजना बनाई। लोक में यह दोहा उसी प्रसंग के संबंध में प्रसिद्ध हैं:-

चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमान।
ता ऊपर सुल्तान है,मत चूको चौहान।।

चन्द के संकेत पर पृथ्वीराज ने अपने शब्द भेदी बाण से सुलतान का काम तमाम कर दिया था। फिर चन्द और पृथ्वीराज ने कटार से स्वयं भी आत्मोत्सर्ग कर लिया था।

पृथ्वीराज रासो एक विशाल महाकाव्य है।

Critical Overview / अवलोकन

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, अप्रामाणिकता के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। पृथ्वीराज रासो के अनेक संस्करण मिलते हैं और यह समस्या बनी रहती है कि किस संस्करण को प्रमाणिक कहा जाये। निःसंदेह इन ग्रंथों के मूल रूप नहीं मिल पाते हैं किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि इन ग्रंथों का कोई अस्तित्व ही नहीं था भले ही इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हों लेकिन इसकी साहित्यिक गरिमा को सबने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

हिन्दी की आदि कवि चन्दबरदाई थे। पृथ्वीराज रासो वीरता प्रधान रचना है। इसमें वीर और श्रृंगार रस का परिपाक प्रयोग हुआ है। यह हिन्दी साहित्य का पहला महाकाव्य माना जाता है। इसमें मुख्यत : डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग किया गया है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य का आदिकाल वीर रस प्रधान रचनाओं से संपन्न है।
- आदिकालीन प्रमुख रचना है पृथ्वीराज रासो।
- हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य के रूप में यह विख्यात है।
- आदिकालीन प्रमुख कवि : चन्दबरदाई।
- 69 समय (अध्याय) है (पृथ्वीराज रासो में)
- पृथ्वीराज रासो में वीर और श्रृंगार रस का वर्णन है।
- पृथ्वीराज रासो में युद्ध वर्णन।
- पृथ्वीराज रासो में छन्दों की बहुलता।
- पृथ्वीराज रासो में 'रेवा तट' काव्य भाग की कला पक्ष और भाव पक्ष।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आदिकाल के पहला महाकाव्य का नाम बताइए।
2. आदिकाल के पहले कवि कौन थे?
3. पृथ्वीराज रासो किस प्रकार की रचना है?
4. पृथ्वीराज रासो में कितने अध्याय हैं?
5. पृथ्वीराज रासो ग्रन्थ किसने पूरा किया?
6. पृथ्वीराज रासो का रचयिता कौन है?
7. पृथ्वीराज रासो का नायक कौन है?
8. पृथ्वीराज रासो में किस भाषा का प्रयोग है?

Answers / उत्तर

1. पृथ्वीराज रासो।
2. चन्दबरदाई।
3. वीरता प्रधान।
4. 69 समय (अध्याय को समय कहते है)।
5. जल्हण ने (चन्दबरदाई के पुत्र)।
6. चंदबरदाई
7. पृथ्वीराज चौहान
8. डिगंल और पिंगल भाषा का प्रयोग

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. आदिकालीन प्रथम महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में इतिहास और कल्पना।
2. पृथ्वीराज रासो की साहित्यक विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।
3. पृथ्वीराज रासो के युद्ध वर्णन का परिचय दीजिए।
4. पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु का कारण क्या है ?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा

इकाई 2

विद्यापति की पदावली

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवि विद्यापति का परिचय प्राप्त होता है
- पदावली की भाषा-वैभव का परिचय मिलता है
- विद्यापति पदावली की काव्यगत विशेषताओं का परिचय प्राप्त करता है
- विद्यापति पदावली की साहित्यिक विशेषताओं से अवगत होता है
- राधा और कृष्ण की प्रेमलीला का वर्णन को समझता है
- श्रृंगार रस के संयोग पक्ष और वियोग पक्ष को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

मैथिल कोकिल विद्यापति आदिकाल तथा रीतिकाल के बीच, संधि समय के कवि थे। अतः इन्हें संधि काल का कवि भी कहा गया है। इनके साहित्य में कृष्ण तथा राधा का सौंदर्य वर्णन और भक्ति देखने को मिलती है। इनका संपूर्ण साहित्य श्रृंगार रस के संयोग पक्ष से ओतप्रोत है। कुछ कृतियां वियोग पक्ष को भी प्रदर्शित करती हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिकाल और भक्तिकाल के कवि, श्रृंगारिक कवि, मैथिली भाषा

Discussion / चर्चा

मैथिल कोकिल विद्यापति की रचनाएँ आज भी बिहार तथा पूर्वांचल के क्षेत्रों में प्रसिद्ध हैं तथा बड़े ही उत्साह पूर्वक ढंग से गायी जाती हैं। किसी भी वैवाहिक तथा मांगलिक कार्यक्रम में विद्यापति के गीतों को गाना आनंद का विषय होता है। अन्य कवियों की भांति विद्यापति के काव्य में नायक-नायिका भेद नहीं है। इनका साहित्य प्रेम के वशीभूत है।

कवि परिचयः

मैथिल कोकिल विद्यापति के जन्म को लेकर मतभेद है। अधिकांश विद्वानों ने 1380 माना है। विद्यापति को संधि काल का कवि माना जाता है। वे बिहार के मधुबनी जिले के बिप्सी गाँव में जन्मे थे। इनका परिवार विद्या और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। विद्यापति मिथिला नरेश शिव सिंह के दरबार में राजकीय कवि थे।

विद्यापति बचपन से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि के थे। साहित्य, संगीत, ज्योतिष, दर्शन, इतिहास, न्याय, भूगोल के विद्वान थे। इसके अलावा इन्हें कई समकालीन भाषा, उपभाषा का ज्ञान था।

विद्यापति का पूरा नाम विद्यापति ठाकुर था।

'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' का सूत्र देकर इन्होंने लोकभाषा की जन - चेतना को जीवित करने का महती प्रयास किया है।

साहित्यिक विशेषताएँ:

- विद्यापति को संस्कृत, अपभ्रंश, मैथिली भाषाओं का ज्ञान था।
- यह आदि काल और भक्ति काल के संधि कवि हैं।
- इन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम को आधार बनाकर अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति दी है।
- इनकी 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' में दरबारी संस्कृति और संस्कार परंपरा के रूप में देखने को मिलते हैं। 'पदावली' के पदों में भक्ति और श्रृंगार है और ये पद इनकी प्रसिद्धि का आधार हैं।
- आज भी तीज-त्यौहार पर इनके ये पद गाए जाते हैं।
- भाषा में मैथिली, अपभ्रंश और संस्कृत भाषा का प्रयोग।
- अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग।
- मुहावरेदार भाषा का प्रयोग, मिथिला क्षेत्र के लोक व्यवहार और सांस्कृतिक अनुष्ठान के पदों का प्रयोग किया गया है।
- विद्यापति का मृत्यु 1460 में मानी जाती है।

विद्यापति पदावली

विद्यापति पदावली में राधा की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन हुआ है। कृष्ण, राधा को छोड़कर मथुरा जा बसे हैं और एक बार भी उनसे मिलने गोकुल नहीं आए। राधा उनके वियोग में व्याकुल है, उनसे अब कृष्ण के बिना रहा नहीं जाता। उनकी विरह व्यथा को अलग-अलग पदों के द्वारा वर्णित किया गया है।

'सखी हे कि पूछसि अनुभव मोए।

सैह पिरित अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए।।

जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपति भेल।।

सोहो मधुर बोल स्त्रवनहि सुनल स्त्रूति पथ परस न गेल।।

कत मधु जामिनि रभस गमाओलि न बूझल कइसन केलि।।

लाख लाख जुग हिअ हिअ राखल तइओ हिअ जरनि न गेल।।'

कविः मैथिल कोकिल विद्यापति।

कविताः विद्यापति की पदावली।

संदर्भः

इस पद में नायिका अपने प्रियतम को जन्म-जन्म से देखकर भी तृप्त न होने की बात अपनी सखी को बताते हुए नायक के प्रति अपने अनन्य प्रेम को व्यक्त करती है।

व्याख्याः (विद्यापति की पदावली)

नायिका और नायक, एक-दूसरे से लंबे समय से प्रेम करते हैं। नायिका और नायक के इस प्रेम को उसकी सखी भी जानती है। अपनी इस उत्सुकतावस वह नायिका से इसका अनुभव पूछती है, तब नायिका अपने प्रेम का वर्णन करती हुई कहती है कि हे- सखी मुझसे मेरे प्रेम के अनुभव के बारे में क्या पूछती हो? अर्थात इसके आनंद और स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकती। प्रेम तो क्षण-क्षण रूप बदलने वाला होता है। इसलिए यह अवर्णनीय है। मैं जन्म भर प्रिय का रूप निहारती रहूं किंतु मेरी आंखे तृप्त नहीं हुई। उनके मधुर वचनों को कानों से सुनती रहती हूं, किंतु कानों को संतुष्टि नहीं हुई। न जाने कितनी रातें मैंने अपने प्रियतम के साथ व्यतीत की है, परंतु फिर भी यह नहीं समझ सकी की मिलन का आनंद क्या होता है। लाखों-लाखों युगों तक मैंने अपने प्रियतम को ह्रदय में रखा, किंतु फिर भी मेरी ह्रदय की जलन शांत नहीं हुई। हे सखी, मेरी बात ही क्या कितने रसिक लोगों ने इसका उपयोग किया है, किंतु इसका पूर्ण अनुभव किसी को नहीं हुआ। विद्यापति जी कहते हैं कि प्राणों को शांति प्रदान करने वाला लाखों में एक भी नहीं मिला। अर्थात प्रेम की अनुभूति की जलन ज्यों की त्यों बनी रही।

विशेषः

कवि ने प्रेम अनुभूति को व्यक्तिगत अनुभव बताया है, जो अलौकिक एवं स्वयं अनुभव करने योग्य है।

काव्य सौंदर्यः

- नायिका की विरह वेदना का वर्णन है।
- श्रृंगार रस के संयोग पक्ष का वर्णन है।
- मैथिली भाषा है।
- माधुर्य गुण विद्यमान है।
- अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, यमक, विरोधाभास,

अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,
मूदि रहए दु नयान।
कोकिल-कलरव, मधुकर-धुनि सुनि,
कर देइ झाँपइ कान।।
माधब, सुन-सुन बचन हमारा।
तुअ गुन सुंदरि अति भेल दूबरि-
गुनि-गुनि प्रेम तोहारा।।
धरनी धरि धनि कत बेरि बइसइ,
पुनि तहि उठइ न पारा।
कातर दिठि करि, चौदिस हेरि हेरि
नयन गरए जल-धारा।।
तोहर बिरह दिन छन-छन तनु छिन-
चौदसि-चाँद-समान।
भनइ विद्यापति सिबसिंह नर-पति

व्याख्याः

राधा की सखी कृष्ण के सामने राधा की विरह अवस्था का वर्णन करते हुए कहती है कि कमल के समान रूपवती राधा खिले हुए फूलों को देख कर अपनी आंखें बंद कर लेती है। अर्थात यह मिलन के प्रतीक है जो अब विरह में उसे दुख पहुंचा रहे है। हे माधव हमारी बात सुनो तुम्हारे प्रेम को याद करके वह बहुत दुर्बल, कमजोर हो गई है। यदि वह धरती पर बैठ जाती है तो उससे उठा भी नहीं जाता, वह अपनी व्याकुल दृष्टि से चारों दिशाओं में देखती रहती है कि शायद तुम आ जाओ और निराश होने लग जाती है। तुम्हारे विरह में वह क्षण-क्षण इतनी दुर्बल होती जा रही है, जैसे चौदस का चांद।

विद्यापति, राजा शिव सिंह के आश्रय कवि थे। अतः वे उनकी प्रशंसा में कहते हैं कि राजा शिव सिंह विरह के प्रभाव को जानते हैं। अतः वह अपनी पत्नी लखीमा देवी के साथ भ्रमण करते हैं।

काव्य सौंदर्यः

- नायिका की विरह वेदना का सुंदर चित्रण है।
- मैथिली भाषा।
- वियोग श्रृंगार रस।
- 'धरनी धरि धनि' में अनुप्रास अलंकार है।
- 'गुनि गुनि', 'छन छन' में वीप्सा अलंकार है।
- विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है।
- माधुर्य गुण है।
- चित्रात्मक शैली है।
- भाषा सरल, सरस, लयात्मक, काव्यातक एवं भावानुकूल है।

भाव सौंदर्यः

विद्यापति नायिका के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि सच्चे प्रेम में कभी भी तृप्ति नहीं मिलती। नायिका की सखी के पूछे जाने पर नायिका उसे बताती है कि वह जन्म जन्मांतर से अपने प्रेमी को निहारती चली आ रही है। परंतु अभी तक उसके नेत्रों को उसे देखने की इच्छा है। वह अपने प्रियतम के मीठे बोली को सुनती आ रही है, फिर भी वह उसके लिए नवीन है। अर्थात वह कहना चाहती है कि सच्चे प्रेम में मिलन के बाद भी अतृप्ति बनी रहती है।

- गुण – माधुर्य
- भाषा – मैथिली
- रस – वियोग श्रृंगार
- 'स्रवनहि सुनल स्रुति' व 'पथ परस' में अनुप्रास अलंकार है।
- शैली – चित्रात्मकत्मक एवं बिम्बात्मक।
- प्रेम के उदात रूप का वर्णन है।
- भाषा में रसात्मकता है।

Critical Overview / अवलोकन

विद्यापति को भक्त कवि की अपेक्षा श्रृंगारी कवि कहना ही उचित है। उनके पदावली में राधा और कृष्ण की जिस प्रेम लीला का वर्णन है, वह अपूर्व है।

Recap / पुनरावृत्ति

- आदिकालीन कवि।
- भक्तिकालीन कवि।
- प्रमुख रचना।
- भाषा वैभव।
- ब्रज और मैथिली भाषा।
- काव्यगत विशेषताएँ।
- श्रृंगार रस के कवि।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आदिकालीन श्रृंगारी कवि कौन है?
2. पदावली की भाषा क्या है?
3. कीर्तिलता किसकी रचना है?
4. मैथिल कोकिल नाम से जाने वाले कवि कौन है?
5. कीर्तिपताका के रचयिता कौन है?
6. विद्यापति पदावली में किसका वर्णन है?
7. विद्यापति, किस राजा के आश्रय कवि थे।
8. विद्यापति पदावली में किस अलंकारों का प्रयोग है?

Answers / उत्तर

1. विद्यापति।
2. मैथिली।
3. विद्यापति।
4. विद्यापति।
5. विद्यापति।
6. राधा की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन।
7. विद्यापति, राजा शिव सिंह के आश्रय कवि थे।
8. अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि का प्रयोग।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. विद्यापति पदावली की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
2. विद्यापति के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. विद्यापति की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
4. पदावली की विशेषताएँ लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. नगेन्द्र।
2. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिव कुमार शर्मा।
3. आधुनिक काल पूर्व हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. हेतू भारद्वाज।

BLOCK - 02

मध्यकालीन कविता

इकाई 1

कबीर के दोहे

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कबीरदास के व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्श व दृष्टिकोण, देन आदि का परिचय मिलता है
- कबीर के ब्रह्म-विचार से परिचय प्राप्त होता है
- कबीर के जाति-विरोध, आडंबरों के प्रति उनकी दृष्टिकोण, अंधविश्वासों के प्रति उनका निडर मनोभाव आदि से परिचय मिलता है
- कबीर के माया-मोह संबंधी दृष्टिकोण से परिचित होता है
- कबीर का भक्ति संबंधी आदर्श से जानकारी प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

महात्मा कबीर भक्ति-कालीन निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी काव्य धारा के महान कवि तथा सच्चे समाज सुधारक थे। कबीर के जन्म-मृत्यु और व्यक्तिगत जीवन के बारे में विद्वानों में मतभेद है। अधिकांश विद्वान संत कबीर का जन्म सन् 1398 में उत्तर प्रदेश के काशी में मानते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भक्तिकाल, निर्गुण भक्ति के प्रवर्तक, सधुक्कडी भाषा

Discussion / चर्चा

कबीरदास

कबीरदास पालन-पोषण:

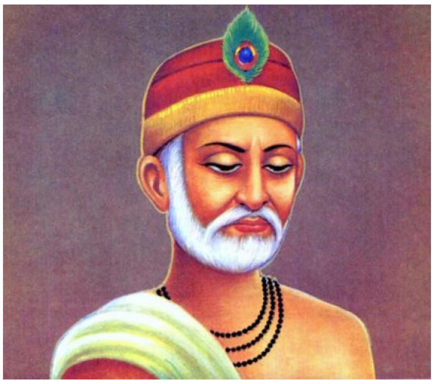

कहा जाता है कि कबीरदास का जन्म एक विधवा ब्रह्मणी के गर्भ से हुआ। उसने लोक-लाज के कारण नवजात शिशु को काशी के 'लहरतारा' नामक तालाब के किनारे छोड़ दिया था। जुलाहे (कपड़ा बुनने वाले मुसलमान जाति) तथा निःसंतान नीरू और नीमा नामक दंपतियों ने इन्हें उठाकर उसका पालन पोषण किया।

नामकरणः

नीरू और नीमा ने नवजात शिशु को कबीर नाम दिया, जिसका अर्थ होता है- महान। उन्होंने अपने नाम के साथ दास नाम भी जोड़ दिया, जिससे हिन्दू या मुसलमान की प्रतीती न हो जाये। आगे कबीर अपने धर्मों तथा कर्मो द्वारा अपने नाम का महत्व चरितार्थ कर दिया।

पत्नी और बच्चेः

कहा जाता है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई थी। उन्हें कमाल नामक पुत्र और कमाली नामक पुत्री हुई।

समकालीन राजाः

लोदी वंश के राजा सिकंदर लोदी (सं. 1545-1574) कबीर के समकालीन थे। सिकंदर क्रूर एवं अन्यायी शासक थे। कबीर उसका बड़ा विरोध करता था। ज्ञात होता है कि बघेल राज्य के राजा नाहरसिंह देव भी कबीर के समकालीन थे।

गुरुः

अधिकांश विद्वान संत रामानंद को कबीर का गुरु बताते हैं। कुछ पंडितों के अनुसार कबीर के गुरु पीर (गुरु) सूफी फ़कीर शेख तकी है, जो सिकंदर लोदी के गुरु भी रहे थे। फ़कीर शेख तकी को कबीर का गुरु मानना उचित नहीं है।

कबीर का ब्रह्मः

कबीरदास ने अपने वाणियों में बार-बार राम शब्द का प्रयोग किया है। किंतु उसका राम अयोध्या के नरपति दशरथ पुत्र श्रीराम नहीं है, उनका राम निराकार परमात्मा है। उनके राम का कोई रूप नहीं है, अरूपी है। किंतु वह सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापी संचालक है।

धार्मिक आडंबर का निषेधः

कबीरदास ने जाति और धर्म के नाम पर चलने वाले अंधविश्वासों, अनाचारों एवं आडंबरों का विरोध किया था। जब-जब वे बुराई देखते थे, तब-तब वे निर्भय-निडर एवं साहसी बन जाते थे। कबीर मानव-स्नेही होने के नाते वे मनुष्य को धर्म व जाति के अनुसार नहीं, मनुष्य के रूप में देखते थे।

जाति-विरोधः

कबीर मानवतावादी, बुद्धिमान विचारक और दार्शनिक-संत है। वे मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखते है। वे स्त्री और पुरुष के रूप में केवल दो ही जाति को मानते हैं। उनकी राय में बाकी सब जाति मनुष्य निर्मित है। मनुष्य निर्मित धर्म व जाति को कबीर नहीं मानते थे। वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें ऊंच-नीच तथा अमीर-गरीब का भेदभाव न हो, ब्राह्मण-शुद्र भेद भी न हो।

भक्ति संबंधी दृष्टिकोणः

कबीर भक्त अवश्य है। किंतु वे ब्रह्मा को किसी रूप व आकृति में नहीं स्वीकारते है। उनका परमात्मा निराकर व रूपहीन है, जो सर्वत्र व्याप्त और सर्वशक्तिमान है। कबीर सच्चे मन से परमात्मा का नाम स्मरण करना ही श्रेष्ठ भक्ति मानते हैं। उन्होंने जप, तप, माला जपना, शरीर पर भस्म लगाना, व्रत रखना, तीर्थ यात्रा करना आदि को बाह्याडंबर कहकर विरोध किया है। कबीर ने अपनी कविता को समाज-सुधार का माध्यम बनाया है। सामाजिक पुनर्निर्माण उनका लक्ष्य रहा था। वे अपनी कलम को तलवार और स्याही को गोली समझते थे।

माया-मोह का विरोधः

कबीर की दृष्टि में विषय वासना या मोह-माया परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। वे भौतिक सुख को माया जाल समझते थे। उन्होंने स्वयं भी मोह-माया क्या त्याग किया था, दूसरों को भी मोह-माया छोड़ने के लिए प्रेरित किया।

नारी के प्रति मनोभावः

नारी के प्रति कबीर का मनोभाव उदार है। किंतु उनके उस दृष्टिकोण को व्यापक कहना उचित नहीं है। क्योंकि कबीर मूल रूप में संत है। वे मानते थे कि पुरुष, नारी-मोह या विषय-वासना में गिर पड़ता है तो उसके लक्ष्य प्राप्ति में बाधा पड़ती है। इसलिए जगह-जगह पर उन्होंने नारी को छोड़ने का उपदेश दिया है। उन्होंने नारी को कामिनी इसलिए बताया है कि उनका आदर्श और स्वभाव संत के अनुकूल था। यह ध्यान देना योग्य है कि अधिकांश संतों ने स्त्री को भक्ति और मुक्ति यात्रा में बाधा डालने वाली माया के रूप में ही देखा है।

काव्यगत विशेषताएँः

कबीर मूल रूप से संत एवं समाज सुधारक हैं, वे बाद में कवि के स्थान पर विराजमान है। इसलिए उनकी वाणियों में अनुभूति पक्ष सबल है, अभिव्यंजन पक्ष दुर्बल। उन्होंने जगह-जगह पर प्रेम के महत्व को समझाया है।

उन्होंने स्पष्ट किया है कि स्थायी प्रेम के बिना सारा ज्ञान व्यर्थ है। वे समझते थे कि घमंड व अहंकार सच्चा प्रेम के लिए घातक है।

भाषा और शैली:

कबीर की भाषा साहित्यिक नहीं है, तत्कालीन जनभाषा है। जन-जीवन को प्रतिबिंबित करने के लिए उन्होंने ग्राम्य भाषा को अपनाया। कबीर घुमक्कड़ स्वभावी थे। इसलिए उनकी भाषा में अलग-अलग प्रदेशों के शब्द पाये जाते हैं। उसमें अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी, पूर्वी हिंदी, अरबी, फ़ारसी आदि कई भाषा के शब्द पाये जाते हैं। यह मिश्रित जनभाषा खिचड़ी या सधुक्कड़ी नाम से जानी जाती हैं।

कबीर की भाषा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी नाम दिया है। कबीर ने साखी, दोहा और चौपाई शैली में रचनाएँ की हैं। यमक, रूपक, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि अलंकारों का अच्छा प्रयोग उन्होंने किया है। कबीर की भाषा वर्णनात्मक, चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, भावनात्मक है। भाषा पर उनका अपरिमित अधिकार है। इसलिए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को भाषा का डिक्टेटर कहा है।

रचनाएँ:

कबीर की प्रामाणिक रचना बीजक है। सन् 1464 में उनके शिष्य धर्मदास ने बीजक नाम से कबीर के वाणियों को संकलित किया है।

बीजक के तीन भाग होते हैं-

1. साखी।
2. सबद।
3. रमैनी।

साखी शब्द का अर्थ है साक्षी। दोहा छंद में लिखी गयी साखी में पंजाबी, राजस्थानी, खडीबोली मिश्रित भाषा का प्रयोग मिलता है। इसमें परंपरागत शिक्षा और सिद्धांत के उपदेश हैं।

सबद का अर्थ है शब्द। इन पदों में ब्रजभाषा और पूर्वी बोली मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है। इसमें कबीर ने अपने मोह-माया सम्बन्धी विचारों को प्रकट किया है।

रमैनी का अर्थ है रामायण। इसका मुख्य छंद दोहा तथा चौपाई है। इसकी भाषा सधुक्कडी है। इसमें वृंदावन में प्रचलित ब्रजभाषा एवं पूर्वी हिन्दी ज्यादा मिलती है। इसमें राम संबंधी पद और चौपाईयाँ संकलित है।

मृत्यु:

कबीर 120 वर्ष तक समाज-सेवा करते हुए काशी में रहे। उन्होंने अपने अंतिम समय (सन् 1518) में काशी तजकर उत्तर प्रदेश के मगहर जाकर अपना भौतिक-शरीर त्यागा। कुछ लोगों का विश्वास है कि काशी में मरते हैं तो सीधे स्वर्ग जाते हैं, मगहर में मरने वाले को नरक मिलता हैं। कबीर की दृष्टि में यह अंधविश्वास है। उस अंधविश्वास को खंडित करने के लिए ही आपने मगहर जाकर अंतिम साँस ली।

तत्कालीन इतिहास या संदर्भ:

महात्मा कबीर हिन्दी निर्गुण भक्ति-धारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि है। कबीर का जन्म सन् 1398 में और मृत्यु सन् 1518 में मानी जाती है। यह काल उत्तर भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अधःपतन का काल है। तब लोदी वंश का अन्यायपूर्ण शासन चल रहा था। सन् 1489 में सिकंदर शाह लोदी राजसिंहासन पर बैठा। तत्कालीन राजनीतिक वातावरण पूर्ण रूप से संघर्ष पूर्ण रहा। हिन्दू हो या मुसलमान, लोग धर्मांध और पाखंड में डूबे थे। चारों ओर आक्रमण, डर, अविश्वास तथा आतंक फैला हुआ था। समाज असहिष्णुता से भरा हुआ था।

कबीर के काल को संक्रांति काल कहना उचित है। इतिहासकारों के अनुसार कबीर और सिकंदर शाह लोदी समकालीन थे। सिकंदर लोदी सन् 1489 से सन् 1517 तक तक दिल्ली पर शासन करते था। शासन-व्यवस्था लोदी के कुछ प्रिय मुल्ला और पुजारी के इच्छा और इशारे पर चलती थी। हिंदूओं और मुसलमानों के बीच ईर्ष्या-द्वेष एवं पारस्परिक आक्रमण की भावना ज़ोरों पर थी। हिन्दू बौद्ध धर्म, जैन, शैव एवं वैष्णव के रूप में विभाजित हो चुके थे। धार्मिक नेता ही नहीं, अनुयायी भी पारस्परिक झगड़ों में लगे रहते थे। ऐसे अनगिनत संघर्षों के समय, अंधकारपूर्ण समाज में एक ध्रुव तारा के समान कबीर अवतरित हुए।

▶ समकालीन कवि:

कबीरदास के समकालीन कई महान कवि हुए, जिसमें सगुण भक्त और निर्गुण भक्त हैं। रामभक्त, कृष्णभक्त, ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी कवि कबीर के समकालीन रहे थे। दादू दयाल (साखी और पद), रैदास (पद), गुरुनानक

(गुरु ग्रंथ साहब) आदि ज्ञानमार्गी में शीर्षस्थ है।

मालिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), कुतुबन (मृगावती), उसमान (चित्रावली), मंझन (मधुमालती) आदि प्रेममार्गी कवियों में उल्लेखनीय है।

गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस), नाभादास (भक्तमाल), स्वामी अग्रदास (रामध्यान मंजरी) आदि रामभक्ति धारा के प्रसिद्ध कवि हैं।

सूरदास (सूरसागर), मीराबाई (पदावली), नंददास (पंचाध्यायी), कुंभनदास (पद), कृष्णदास (प्रेमतत्व) जैसे कवियों ने कृष्ण भक्ति धारा को प्रवाहमान बना दिया है।

▶ समकालीन साहित्यिक धाराएँ:

कबीर का जीवन-काल हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ व स्वर्णिम युग माना जाता है। इस काल में भक्ति मुख्य रूप में सगुण एवं निर्गुण नाम से बहने लगी। निर्गुण भक्त काव्य धारा के अंतर्गत उस परमात्मा की भक्ति की गई जो निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान है तथा समस्त गुणों से परिपूर्ण है। निराकार (रूपहीन) ब्रह्म के विश्वासी कवि निर्गुण कहलाने लगे है। उसके अनुसार परमात्मा अगोचर है, जो प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है। स्पष्ट है कि निर्गुण काव्य में दो धाराएँ प्रवाहित हुईं – 1. ज्ञानाश्रयी, 2. प्रेमाश्रयी।

ज्ञानाश्रयी शाखा व धारा के अधिकतर कवि संत थे। सत (Essence, Cream) रूपी परम तत्व पाने वाले महान संत कहलाये। कबीर के सिवा निर्गुण भक्ति धारा के प्रसिद्ध कवियों में नामदेव, रैदास, नानक, दादू दयाल, रज्जब दास, मलूक दास, सुंदर दास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी धारा के अधिकांश कवि सूफी फ़कीर थे। जिसमें मलिक मुहम्मद जायसी, मंझन, कुतुबन, मुल्ला दाऊद, उसमान, नूर मोहम्मद, असायत आदि प्रसिद्ध है।

सगुण भक्ति, राम और कृष्ण भक्ति धारा के रूप में प्रवाहित हुई। तुलसीदास, नाभादास, स्वामी अग्रदास आदि राम भक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं। राम भक्ति धारा के समानांतर कृष्ण भक्ति धारा भी प्रवाहित हुई। जिसमें अष्ट छाप के कवि प्रसिद्ध हैं। वल्लभाचार्य के चार शिष्य– 1. सूरदास, 2. कुंभनदास, 3.परमानंददास, 4. कृष्णदास तथा वल्लभाचार्य के सुपुत्र विट्ठलनाथ के चार शिष्य– 1. गोविंदस्वामी, 2.नंददास, 3.छीतस्वामी, 4.चतुर्भुजदास आदि इस शाखा में प्रमुख है।

कबीर के जीवन-काल में श्री संप्रदाय, ब्रह्म संप्रदाय, रुद्र संप्रदाय, सनकादि संप्रदाय आदि संप्रदाय भी हुए थे। श्री संप्रदाय के आचार्य रामानुज है। लक्ष्मी ने आचार्य रामानुज को प्रदान किये गये मत के आधार पर उन्होंने अपने आदर्श का रूप-निर्माण किया था। इस कारण से उनके संप्रदाय को श्री संप्रदाय कहने लगे। ब्रह्म संप्रदाय के मुख्य प्रवर्तक तथा प्रचारक मध्वाचार्य थे। रुद्र संप्रदाय के प्रवर्तक विष्णु स्वामी थे। सनकादि संप्रदाय का प्रमुख प्रवर्तक निबार्काचार्य थे।

दोहाः 1

सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।

लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावन हार॥

प्रस्तुत साखी संत, ज्ञानमार्गी, समाज-सुधारक तथा दार्शनिक कवि महात्मा कबीर द्वारा विरचित बीजक से अवतरित है। बीजक के तीन भागों में प्रथम भाग है साखी। साखी (साक्षी) के गुरु महिमा शीर्षक से प्रस्तुत साखी ली गयी है। इसमें कबीर ने गुरु की महिमा को व्यक्त किया है। कबीर के लिए गुरु सर्वोपरि है। कबीर ने गुरु को परमात्मा से बढ़कर महत्व दिया है। यहाँ कबीर गुरु के उपकार से प्राप्त परमात्मा का रूप प्रस्तुत करता है।

छंद / अलंकार

कबीर ने इसमें दोहा नामक छंद का उपयोग किया है जो उनका प्रिय है। दोहा मात्रिक छंद है। इस छंद में 24, 24 मात्राओं की दो पंक्तियां होती है। कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रहीम आदि मध्यकालीन कवि दोहा छंद के प्रमुख कवि है।

प्रस्तुत दोहे में अनन्त शब्द की आवृत्ति होने से यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है। यमक शब्दालंकार के भेदों में एक है। यमक शब्द का अर्थ होता है – दो। अर्थात एक ही शब्द अलग-अलग अर्थ में बार-बार प्रयोग है तो यमक अलंकार होता है। निपुण कवि काव्य-सौंदर्य बढ़ाने के लिए ही ऐसे शब्द की पुनरुक्ति करते हैं।

उपरोक्त दोहे में कबीर ने शांत रस का इस्तेमाल किया है। नव रसों में अंतिम रस है शांत। इसका स्थायी भाव निर्वेद अथवा उदासीनता है। विविध कारणों से होने वाले मन की शांति की निष्पत्ति व सफलता से शांत रस पैदा होता है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

सारांश:

महात्मा कबीर कहते हैं कि सच्चे गुरु की महिमा अनंत और अपार है। सच्चे गुरु वे है जो अपने शिष्यों पर अनगिनत उपकार करते हैं। वे अवश्य सेवक और त्यागी है। सतगुरु के दिन और रात शिष्यों के भलाई के लिए होते हैं। हर वक्त अपने शिष्यों पर उनकी असीमित कृपा होती है। सतगुरु अपनी अनंत कृपा द्वारा शिष्यों की ज्ञान रूपी आँखों को खोल देते हैं। तात्पर्य यह है कि गुरु अपने शिष्यों के मन में विभिन्न चिंता और अनगिनत भावनाएँ पैदा करते हैं। जैसे सद्‌गुरु की महिमा अनन्त है, वैसे उसके उपकार भी अनन्त है। वे अज्ञानता- रूपी मार्ग पर भटकने वाले शिष्यों को ज्ञान-रूपी प्रकाश देते है। सतगुरु अपने शिष्यों को परम तत्व व सत्य स्वरूपी ब्रह्मा का साक्षात्कार करा देते हैं। कबीर व्यक्त करते है कि सतगुरु द्वारा अनन्त दृष्टि खोल देने से उन्हें अनन्त प्रभु का दर्शन प्राप्त हो गये हैं। नहीं तो अब भी उन्हें प्रभु अप्राप्य रहते। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान शिष्य के ज्ञान-चक्षु खोलने वाली चाबी है। जीवन में सतगुरु परम आवश्यक है।

शब्दार्थ:

सतगुरु	=	सच्चा गुरु
महिमा	=	महत्व
अनन्त	=	अन्त न होने वाला
अनन्त	=	असंख्य, अनेक
उपगार	=	उपकार
अनन्त	=	सर्वव्यापी,परमात्मा
लोचन	=	नेत्र
सार	=	तत्व

दोहा: 2

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पडा रहन दो म्यान।।

सारांश:

कबीर कहते है कि किसी साधु का ज्ञान समझने के लिए उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए। जाति के अनुसार ज्ञान का मूल्यांकन न करें। ऐसा करना पाप है। ऐसा करने वाला साधुता का अपमान करता है। सज्जन की जाति पूछे बिना उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का अच्छा और बड़ा मूल्य होता है। तलवार रखने वाले खोल का उतना मूल्य नहीं होता, जितना मूल्य तलवार का है। अर्थात मोल पूछना है तो तलवार का पूछो, म्यान को पड़ा रहने दो।

विश्लेषण:

साधु श्रेष्ठ तथा महान है। साधारणतः व्यक्ति दिन-रात के कठिन परिश्रम से ज्ञानार्जन प्राप्त कर साधु बन जाता है। जब से व्यक्ति सन्यास जीवन की ओर मुड़ता है, तब से जाति-चिंता उनके मन से छूट जाती है। जातिहीन साधु की जाति पूछने से किसी को कोई प्रयोजन नहीं मिलता है। साधु की मान्यता, श्रेष्ठता और उसका आदर उसकी जाति के अनुसार नहीं, ज्ञान के अनुसार दिया जाना चाहिए। स्पष्ट है कि ज्ञान के क्षेत्र में जाति-धर्म का ज़रा भी स्थान नहीं होता है। ज्ञान सबसे ऊपर है।

जाति के आधार पर ज्ञान-निर्णय करना दुष्ट-जनों की वृत्ति होती है। ज्ञान के क्षेत्र में जाति ढूँढना अपरिष्कृत मनुष्य की अपक्व प्रवृत्ति मानना चाहिए। तलवार खरीदने वाले को म्यान का रूप-रंग या आकर्षण देखकर तलवार नहीं खरीदनी चाहिए। समझदार आदमी तलवार की उपयोगिता निश्चित कर खरीदता है। तलवार मुख्य है और म्यान गौण। तात्पर्य यह है कि जाति के अनुसार साधु का ज्ञान जाँचना व्यर्थ और मूर्खता है। क्योंकि काटने का काम तो तलवार से होता हैं। म्यान के रूप-रंग-आकृति और आकर्षण से तलवार का उपयोग सार्थक नहीं होता है।

दुखद बात यह है कि शिक्षित और सुसंस्कृत कहे जाने वाले वर्तमान समाज में आज भी जातिवाद ज़ोरों पर चल रहा है। केरल के महान समाज सुधारक श्रीनारायण गुरु ने दशकों पहले जाति-संप्रदाय के विरुद्ध भरसक प्रयत्न किया है। सामाजिक क्रांति के अग्रदूत श्रीनारायण गुरु जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। उनके विचार में जातिवाद पागलों का करतूत है। उन्होंने अपना अधिकांश समय जाति-हीन समाज निर्माण के लिए अर्पित किया था। केरल की जाति संप्रदाय की भयानकता देखकर स्वामी विवेकानंद ने केरल को पागलखाना कहा है। महात्माओं के मत में जाति-प्रथा ईश्वर प्रदत्त नहीं है, मनुष्य निर्मित है। उनके अनुसार परमात्मा ने दो ही जाति निश्चित की है- स्त्री और पुरुष। महात्मा कबीर के मत में शेष सबकुछ मानव-निर्मित है। उसकी अवहेलना करें। क्योंकि जाति-प्रथा पाप और शाप है।

कबीर न हिन्दु थे न मुसलमान। वे हिन्दू और इसलाम धर्म को न मानते हुए जीवन पर्यंत धर्म निरपेक्ष रहे थे।

उन्होंने समाज में फैली बुराइयाँ, अंधविश्वास, छुआछूत, अशिक्षा, जाति-व्यवस्था आदि का खुलकर विरोध किया। साथ ही साथ अन्य सामाजिक बुराइयों की सख्त आलोचना भी की है।

व्याख्याः

कबीर के जीवन-काल में हिन्दू धर्म में जाति ज़ोरों पर थी। जन-जीवन के विभिन्न क्षेत्र में जाति अपनी भयानक रूप में फैली हुई थी। लोग जाति-धर्म के अनुसार साधु-संतों का आदर या अनादर करते थे। ऊँचे कुल व जाति में जन्मे साधु-संतों को ऊँचा स्थान मिलता था। जाति में ऊँचे को उच्च स्थान और शेष को तुच्छ स्थान मिलता था। निम्न जाति में जन्मे व्यक्ति को तो आजीवन अपमान सहना पड़ता था।

कबीर मानते है कि जन्म से कोई अच्छा-बुरा अथवा उच्च-तुच्छ नहीं होता है। व्यक्ति अपने-अपने कर्म से अच्छा या बुरा, उच्च या तुच्छ बनता है। उच्च कुल व जाति में जन्म लेने पर कोई भी ज्ञानी, दार्शनिक, साधु व संत नहीं बन जाता है।

ज्ञान जन्मजात गुण नहीं है। यह संसर्ग और अध्ययन से धीरे-धीरे अर्जित किया जाता है। किंतु तीव्र जातिवादी इस सत्य को मानने के लिए तैयार नहीं होता। जातिवादियों का गलत विश्वास है कि ज्ञान उच्च जाति वालों का जन्मजात गुण है। कबीर इसका कट्टर विरोध करते थे। संत कबीर जन्म के आधार पर किसी को ज्ञानी मानने के पक्षपाती न थे।

साधु की जाति से किसी को कोई लाभ नहीं मिलता है। उसके बदले ज्ञान से मतलब होना चाहिए। जैसे मोल भाव तलवार का करना चहिए न कि उसके म्यान का। युद्ध में तलवार की उपयोगिता होती है, म्यान चाहे लाख रूपये की हो या एक रूपये की, युद्ध में म्यान की उपयोगिता नहीं होती है।

ज्ञान ईश्वरदत्त है। वह किसी जाति या वर्ग में जन्म लेने से उपलब्ध नहीं हो जाता है। निस्संदेह किसी भी जाति में ज्ञानी हो सकता है।

संत कबीर की रचनाएँ भक्ति आंदोलन को भली प्रकार प्रभावित करती है। कबीर की वाणी ने सिक्खों के धर्म ग्रंथ गुरू ग्रंथ साहब में स्थान पाया है। उनकी वाणी को आत्मसात कर कई लोग कबीर पंथी बने। जाति-प्रथा एवं अस्पृश्यता मानव समाज को कई शताब्दी पीछे की ओर धकेल देती है।

शब्दार्थः

मोल करो	=	मूल्य लगाओ, मूल्यांकन करना (Price, value, cost)
साधु	=	ज्ञानी, संत, सन्यासी
ज्ञान	=	समझ (knowledge, wisdom)
म्यान	=	तलवार को रखने का खोल (sheath)

दोहाः 3

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जाति।
देखत ही छिप जाइंगे, ज्यौं तारे परभाति।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ महात्मा कबीर रचित बीजक से उद्धृत है। बीजक के साखी, सबद और रमैनी नाम के तीन भाग हैं। कबीर निर्गुण भक्त संत और कवि हैं। साथ ही साथ ज्ञानमार्गी और समाज-सुधारक भी है।

निर्गुण का अर्थ है गुणहीन। किंतु संत महात्माओं और कवियों ने निराकार (आकृति हीन) परमात्मा के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया है। निर्गुण शब्द का प्रयोग वैदिक ग्रंथों में परमात्मा, ईश्वर, सृष्टा तथा भगवान के संदर्भ में किया गया है। वैदिक ग्रंथों में भगवान को सगुण और निर्गुण, दोनों रूपों में जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निर्गुण संत काव्य धारा को ज्ञानाश्रयी नाम से पुकारा है। इस पर मतभेद करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे निर्गुण भक्ति साहित्य कहा है। डॉ.रामकुमार वर्मा ने संत काव्य नाम देकर निर्गुण संतों की रचनाओं को संबोधित किया है।

निर्गुण भक्तों की रचना संत साहित्य के नाम से जानी जाती हैं। ये रचनाकार संत पहले हैं और बाद में कवि। संत संस्कृत शब्द है, सत् धातु से बना इसका अर्थ है सज्जन या धार्मिक व्यक्ति। हिन्दी में साधु या सन्यासी के लिए इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

छंदः

प्रस्तुत पद का छंद दोहा है। दोहा भक्ति-कालीन कवियों का प्रिय छंद है। कबीर, तुलसी, सूर जैसे कवियों ने इसका अधिकाधिक प्रयोग किया है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास ने मानव जीवन की क्षणिकता या नश्वरता समझाने के लिए उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

उपमा शब्द का अर्थ है – तुलना। जब काव्य में किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना या सादृश्यता किसी दूसरी वस्तु या व्यक्ति से की जाये तब उपमा अलंकार होता है। इसमें वस्तुओं के गुण, आकृति, रूप, स्वभाव आदि में समानता दिखाई देती है।

सारांशः

महात्मा कबीर संत-दार्शनिक होने के कारण मानव जीवन की क्षणिकता और नश्वरता समझाते रहे थे। उपरोक्त पंक्तियों में कबीर स्पष्ट कर देते है कि मनुष्य का जीवन क्षण-भंगुर है। जैसे पानी में बनने वाला बुदबुदा है वैसे ही मानव जीवन भी तात्कालिक तथा नश्वर है। आगे वे कहते है कि जैसे रात में उदित आकाश के तारे प्रातः देखते-देखते छिप जाते है वैसे ही मनुष्य भी देखते-देखते कहीं विलीन हो जाएंगे।

कबीर पहले दार्शनिक है और बाद में कवि। दार्शनिक संत एवं समाज सुधारक होने से उन्हें अपने समाज की बुरी आदतों पर बड़ा दुख है। क्योंकि मनुष्य अपनी आँखें मूंदकर भौतिक, माया-मोह के पीछे दौड़ते रहते हैं। इस दौड़ के बीच उन्हें सृष्टा पर भली-भाँति विश्वास नहीं है। अधिकांश लोगों को सृष्टा और सृष्टि के उद्देश्य तक मालूम नहीं है।

इस संदर्भ में एक और विचार भी संगत लगता है। मनुष्य की भौतिक इच्छाएँ पानी के बुदबुदे के समान हैं, जो क्षण भर में बनती है और क्षण भर में नष्ट हो जाती हैं। प्रातः तारे छिप जाने के समान, मृत्यु के समय मनुष्य का यह शरीर ही नहीं, उसकी सारी आशा-अभिलाषाएँ भी नष्ट हो जाएगी।

संत एवं दार्शनिक होने के कारण कबीर ने अपनी वाणियों में जीवन के सभी पहलुओं को रेखांकित किया है। उनकी वाणी में समस्त जीवों के कल्याण की भावना निहित है। जीवन का सही मार्ग कबीर की वाणी में प्रतिबिंबित है। अथवा यों कहिए कि कबीर के दोहे वर्तमान काल में दर्पण का काम करते हैं। कबीर, समस्त जीवों को समदृष्टि से देखते हैं। कबीर लोक कल्याणकारी भावना के सशक्त समर्थक के रूप में खड़े हैं।

व्याख्याः

संत कबीर के अनुसार मानव जीवन पानी के बुदबुदे के समान है। मनुष्य-जीवन थोड़े ही समय में नष्ट हो जाता है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार सबेरा होने पर प्रकाश के कारण आकाश में जलने वाले तारे छिप जाते है।

मनुष्य जीवन की क्षणिकता व्यक्त करने के लिए कबीर ने उसे पानी का बुदबुदा बताया है। पानी में बनने वाले बुदबुदे थोड़ी ही देर में फूटकर उस पानी में ही विलीन हो जाते हैं। बुदबुदे जिधर जन्म लेते हैं, वहीं मिल जाने की उनकी नियति है। रात में आकाश के अंधकार के बीच उदित असंख्य तारों की स्थिति भी यही होती है। जब सूर्य का आगमन होता है, तब तारे अप्रत्यक्ष हो जाते हैं।

रात के तारे प्रभात-कालीन सूरज की पहली किरण के साथ कहाँ खो जाते हैं, इसका कोई पता नहीं चलता है। तारे की नियति भी वैसी होती है, जैसी पानी में जन्म लेने वाले बुदबुदे की। जन्म की वेला में ही मिट जाने का समय भी निश्चित है। अर्थात बुदबुदा और मनुष्य किसी भी पल फूटकर पानी में ही मिल जायेगा।

मृत्यु शाश्वत और अवश्यंभावी है। किसी भी कारण से कोई भी उससे बच नहीं सकता। आज नहीं है तो कल हर जीव को मरना ही है। समस्त जीव, अपना मानने वाला जीवन उसके यथार्थ मालिक (परमात्मा) को लौटाना पड़ेगा।

शब्दार्थः

बुदबुदा	=	बुलबुला (Bubble)
ज्यौं	=	जैसे
तारे	=	नक्षत्र
छिप	=	अप्रत्यक्ष हो जाना
परभाति	=	प्रभात

Critical Overview / अवलोकन

निर्गुणभक्त, संत कबीर युग सृष्टा और युगांतरकारी महात्मा हैं। उनके मुंह से समय-समय पर निकली हुई वाणी लाखों-करोड़ों निर्बल दिलवालों को आत्म बल प्रदान करती है। निरक्षर कबीर ने जो कुछ कहा है वह सब अपने

परम, विशिष्ट-ज्ञान और सुदीर्घ जीवन-परिचय से कहा है।

कबीर की शब्द-शक्ति तलवार से परे है। इससे डरकर सुलतान सिकंदर शाह लोदी ने उसका सत्यानाश करना चाहा। लोदी के आगे कबीर का सिर नहीं झुका। क्योंकि कबीर के पास अपने गुरु रामानन्द से अर्जित ज्ञान, तेज एवं पारस था। इसलिए अल्प ज्ञानी सिकंदर शाह लोदी महाज्ञानी संत-महात्मा कबीर के सम्मुख परास्त हुआ। अथवा यों कहिए कि रामानंद निर्मित ढाँचे लिया शिष्य कबीरदास ने अपने गुरु का यश चरितार्थ किया।

Recap / पुनरावृत्ति

- कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ।
- कबीर का पालन-पोषण नीरू-नीमा नामक निसंतान मुसलमान जुलाहों ने किया।
- कबीर के गुरु रामानन्द हैं।
- कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के सर्वोच्च कवि है।
- कबीर का मुख्य लक्ष्य जन-मानस में निर्गुण-निराकार ब्रह्म की अवधारणा को प्रसारित करना रहा है।
- कबीर ने गुरु और ईश्वर को बराबर माना है।
- कबीर बाह्याडम्बरों के विरोधी थे।
- कबीर ने ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, पूर्वी हिन्दी जैसी कई भाषाओं से मिश्रित जनभाषा (सधुक्कडी) स्वयं निर्मित की है।
- कबीर की संपूर्ण रचना बीजक नाम से विख्यात है।
- कबीर की भाषा सधुक्कडी पंचमेल खिचड़ी नाम से भी जानी जाती है।
- कबीर के अनुयायियों को कबीर पंथी कहते है।
- कबीर के व्यक्तित्व में कवि, भक्त, योगी, समाज सुधारक, दार्शनिक, मानव प्रेमी आदि विविध पक्ष पाये जाते हैं।
- कबीर को डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने वाणी का डिक्टेटर कहा है।
- कबीर के समकालीन कवियों में तुलसीदास, सूरदास तथा जायसी आदि मुख्य है।
- कबीर की मृत्यु 1518 में उत्तर प्रदेश के मगहर में हुई।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ज्ञानाश्रयी धारा के प्रवर्तक एवं समाज परिष्कर्ता कवि कौन है?
2. बीजक का संकलन किसने किया?
3. बीजक के तीन भागों के नाम बताइए।
4. कबीर की भाषा क्या है?
5. कबीर वाणी के डिक्टेटर है- यह किसकी उक्ति है?
6. कबीर के समकालीन कौन है?
7. कबीर के अनुसार मानव जीवन किसके सामान है?
8. कबीर का जन्म कब हुआ ?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers / उत्तर

1. कबीर दास।
2. धर्मादास।
3. साखी, सबद, रमैनी।
4. सधुक्कडी।
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी।
6. लोदी वंश के रजा सिकंदर लोदी
7. पानी के बुदबुदे के सामान
8. 1398

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कबीर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
2. कबीर के समकालीन प्रमुख कवि और उनकी कृतियों का परिचय दीजिए।
3. कबीर की गुरु महिमा संबंधी विचारों को प्रकट कीजिए।
4. व्याख्या कीजिए-

   "सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।
   लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावन हार।"

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. कबीर का रहस्यवाद – डॉ. राजकुमार वर्मा।
3. कबीर - अनुशीलन – डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी।
4. बीजक का भाषा - शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. शुकदेव सिंह।
5. कबीर – डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी।
6. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचन्द्र तिवारी।
7. महात्मा कबीर – डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल।

इकाई 2

सूरदास के पद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ▶ मध्यकालीन-भक्तिकालीन हिन्दी कविता के सौंदर्य शास्त्र को समझता है
- ▶ सूरदास के समय की सामाजिक, राजनीतिक, भक्ति संबंधी परिस्थितियाँ, कृष्ण भक्ति धारा का महत्व, कृष्ण भक्त कवियों के सामाजिक दृष्टिकोण आदि की जानकारी प्राप्त करता है
- ▶ सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य, गोसाई विट्ठल नाथ आदि के बारे में परिचय प्राप्त करता है
- ▶ अष्टछाप में कवियों के स्थान एवं उनकी मुख्य रचनाओं की विशेषताएँ समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का मेरुदंड है। महात्मा सूरदास भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। कवि सूर की भाषा ब्रजभाषा है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सूर की काव्य कृतियों की विशेषता प्रकट करते हुए लिखा है कि सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है और रूपकों की बारिश होने लगती हैं। साथ ही सूरदास ने भगवान कृष्ण के बाल्यकाल का अत्यंत मनोरम एवं सजीव वर्णन किया है। श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के चित्रण में सूरदास अद्वितीय हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सूरदास के समय की साहित्यिक परिस्थितियाँ, अष्टछाप, वात्सल्य रस, श्रृंगार रस, सख्य भाव

Discussion / चर्चा

काव्य में श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के विन्यास में सूर सिद्धहस्त है। इसलिए उन्हें वात्सल्य रस का सम्राट कहते हैं। सूर के काव्यों में ब्रजभाषा की कोमलकांत पदावली नैसर्गिक रूप में बहती है। भाषा में ऐसा लालित्य एवं प्रभाव दूसरे कवियों में देखने को नहीं मिलता है। सूर हिन्दी साहित्य के सूरज हैं।

सूरदास के समय की सामाजिक परिस्थितियाँ:

आदि काल में उत्तर भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई थी। हिन्दू लोगों को धीरे-धीरे इसलाम धर्म अपनाना पड़ रहा था। धर्मांतरण ज़ोरों पर चल रहा था। हिंदुओं में अंधविश्वास, जाति-प्रथा, छुआछूत, विधवाओं के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार आदि फैला हुआ था। अमानवीय व्यवहार सह-सहकर निम्न जाति के लोगों का जीवन असह्य हो चुका था। बाल-विवाह, सती-अनुष्ठान आदि दुराचार चारों ओर प्रचलित थे। स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। पुरुष बहु-विवाह कर आडंबरपूर्ण जीवन बिताते

थे। इस समय हिंदू समाज की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। भक्ति काल के पूर्वार्द्ध में समाज दो वर्गों में विभक्त हो चुका था। पहला उच्च कुल जात बादशाह, राजा, सेठ, साहूकार और सामंत आदि थे। दूसरे वर्ग में किसान, मज़दूर, पद-दलित जैसे साधारण लोग आते थे। तब सामाजिक बदलाव एक अनिवार्य विषय बन गया था।

सूरदास के समय की राजनीतिक परिस्थितियाँ:

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो भक्ति काल में उत्तर भारत में तुग्लक वंश से लेकर मुगल वंश के शासन काल रहे थे। ये शासक अन्यायी और अधिकार-मोही थे। उनमें सांप्रदायिक चिंता प्रबल थी। एक ओर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी जैसे शासक अत्याचार करते थे, दूसरी ओर साम्राज्य का सीमा विस्तार करते थे। इस समय कई हिंदुओं ने धर्मांतरण कर लिया था। भक्ति कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ हिन्दुओं के लिए अनुकूल न थीं। भक्ति काल के शासक किसी न किसी बात पर परस्पर युद्ध करते थे। इन युद्धों का कारण धर्म और सीमा विस्तार होता था। इस समय को अशांति का काल कहना सर्वथा उचित है।

सूरदास के समय की धार्मिक परिस्थितियाँ:

भक्तिकाल धार्मिक दृष्टि में उन्नति का काल है। उत्तर भारत में शुरु होने से पहले भक्ति आंदोलन का शुभारंभ दक्षिण भारत में हुआ था। अतएव भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ। तब हिन्दुओं में ही नहीं, मुसलमानों में भी धर्म के नाम पर कुछ अंधविश्वास जमे हुए थे। पूजा, नमाज़, तीर्थ यात्रा, माला-जप, रोज़ा आदि कार्यक्रम भारी मात्रा में चलता था। पथ भ्रष्ट लोगों में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों और आडंबरों को रोकने में तत्कालीन संतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कलुषित परिस्थिति में कबीर ने समाज सुधार का, तुलसीदास ने समन्वयवाद का और सूरदास ने भगवान कृष्ण के लोकरंजन रूप-वर्णन द्वारा तत्कालीन वातावरण बदलने का भरसक प्रयत्न किया।

सूरदास के समय की आर्थिक परिस्थितियाँ:

सूरदास के समय लोगों की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। इस समय के अधिकतर लोगों को जीने के लिए आवश्यक आमदनी न थी। खेती-बारी मुख्य काम था। धनिकों को कोई दुख-कष्ट न था। इसलिए धनिकों का जीवन आडंबर पूर्ण था तो दरिद्र अत्यंत संकटपूर्ण जीवन बिता करते थे।

सूरदास के समय की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ:

इस काल को समन्वय, संस्कृति के विकास का काल कहना उचित है। इस समय के कवियों ने भक्ति से उत्पन्न साहित्य को संगीत से जोड़ा था। तब संगीत और चित्रकला का खूब विकास हुआ था। मुगल शासक ने कला और संगीत को प्रोत्साहन दिया था। हिन्दी भक्ति काल का साहित्य, सांस्कृतिक एकता का ज्वलंत उदाहरण है।

सूरदास के समय की साहित्यिक परिस्थितियाँ:

सूरदास के समय की राजभाषा फ़ारसी थी। उच्च वर्ग के हिंदू लोग संस्कृत भाषा का अध्ययन करते थे। उर्दू, सैनिकों की भाषा के रूप में विकसित हुई थी। वृंदावन में ब्रज भाषा और अवध में अवधी भाषा का प्रचार था। संत कवियों की बोलचाल की भाषा सधुक्कड़ी नाम से उनके बीच प्रचलित थी। भक्ति काल में विविध प्रकार के काव्यों की रचना हो चुकी थी, जिसमें प्रबंध, मुक्तक और गीतिकाव्य आदि हैं। इस काल के कवि निर्गुण और सगुण भक्त थे। यह कहना अनुचित न होगा कि इस समय का साहित्य मन, मस्तिष्क और हृदय की अशांति को शांति के रूप में परिवर्तित कर देता है।

कृष्ण भक्ति:

कृष्ण भक्तिधारा भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा का एक अनंत प्रवाह है। हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति काव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण, भगवान विष्णु के अवतार हैं। कृष्ण के चरित्र के आधार पर रचित रचनाएँ कृष्ण भक्ति साहित्य के नाम से जानी जाती है। कृष्ण भक्ति काव्य धारा का आधार ग्रंथ श्रीमद् भागवत है। काशी के सन्यासी वल्लभाचार्य ने अपने इष्ट देव कृष्ण की भक्ति के प्रचार-प्रसार को नेतृत्व दिया था। वल्लभाचार्य द्वारा संस्थापित पुष्टि मार्ग ने कृष्ण भक्ति धारा को गतिशील बना दिया।

अधिकांश कृष्ण भक्त कवियों ने वृंदावन में प्रचलित ललित-कोमल ब्रजभाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया है। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के बालक रूप का वर्णन करने के साथ-साथ उनकी विविध लीलाओं का अनुपम एवं आकर्षक और हृदयस्पर्शी वर्णन भी किया है। कृष्ण भक्ति के प्रचार-प्रसार में आचार्य वल्लभ एवं उनके सुपुत्र गोसाई विट्ठलनाथ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वल्लभाचार्य:

पुष्टिमार्ग के स्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य कृष्ण भक्ति धारा के महान नायक हैं। आचार्य वल्लभ का जन्म सन् 1479 में तथा मृत्यु 1531 में मानी जाती है। उन्होंने अपने अनुयायियों को भगवान कृष्ण की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित करने का प्रोत्साहित किया। उनका कृष्ण भक्ति पंथ आगे पुष्टिमार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

व्यास सूत्र भाष्य, जैमिनी सूत्र भाष्य, भागवत टीका सुबोधिनी, पुष्य प्रवल मर्यादा, सिद्धांत रहस्य आदि कई कृतियाँ वल्लभाचार्य के नाम पर मिलती है। उन्होंने भाषा के रूप में संस्कृत और बृजभाषा को स्वीकार किया है।

गोसाई विट्ठलनाथः

गोसाई विट्ठलनाथ महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र एवं कृष्ण भक्ति धारा के श्रेष्ठ सन्यासी भी रहे हैं। उनका जन्म सन् 1515 में काशी में और मृत्यु सन् 1585 में मथुरा के गोवर्धन गिरी की गुफा में हुआ था। वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक और अष्टछाप के स्थापक के रूप में हिन्दी साहित्य में विट्ठलनाथ का महत्वपूर्ण स्थान हैं। विट्ठलनाथ संगीत और चित्रकला में पारंगत थे। वे भक्ति मार्ग में जाति और वर्ण नहीं मानते थे। विट्ठलनाथ ने अपने पिताजी के चार शिष्यों (सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास तथा कृष्णदास) और अपने चार शिष्यों (चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी, नंददास तथा छीतस्वामी) को जोड़कर अष्टछाप नामक आठ कवियों का एक संघ स्थापित किया। अष्टछाप ने आगे कृष्ण भक्ति धारा को तेज़ी से प्रवाहित किया।

निष्कर्षः भक्ति काल की स्वर्णिम चमक के पीछे कई संतों, आचार्यो, महात्माओं एवं कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें कृष्ण भक्त कवियों का स्थान अद्वितीय है। सगुण या निर्गुण हो, राम भक्त हो या कृष्ण भक्त, ज्ञानमार्गी हो या प्रेममार्गी– उनके निस्वार्थ कर्म से भक्ति-मुक्ति तथा शांति सर्वत्र व्याप्त हुई। अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी उसका उद्‌भव और विलयन एक ही स्थान पर हुआ। अर्थात भक्ति की अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी सब धाराएँ एक ही परमात्मा में विलीन हो गयी।

कवि परिचय

सूरदास के तीन ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं –

1.सूरसागर

2.सूरसारावली

3.साहित्य लहरी

सूरसागरः

'सूरसागर' श्रीमद्‌भागवत के आधार पर रचा गया महाकाव्य है। विद्वानों के मत में इसमें सवा लाख पद थे। अभी तक लगभग पाँच हजार पद संकलित कर प्रकाशित हो चुके हैं। इस महाकाव्य में बारह स्कन्ध है। इसका मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण लीला है। साथ ही साथ विनय, वैराग्य, सत्संग एवं गुरु महिमा से संबंधित पद भी इसमें उपलब्ध है।

सूर सारावलीः

सूर सारावली में भगवान कृष्ण कुरुक्षेत्र से लौटने के बाद की घटनाएँ, संयोग लीला, वसंत हिंडोला एवं होली आदि प्रसंगों के वर्णन हुए हैं।

साहित्य लहरीः

साहित्य लहरी एक लघु ग्रंथ है। इसमें रस, अलंकार और नायिका-भेद आदि का वर्णन हुआ है। इसका मुख्य रस श्रृंगार है।

मृत्युः

वल्लभाचार्य के पौत्र तथा विट्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूरदास की मृत्यु सन् 1584 में गोवर्धन पहाड़ के निकट स्थित पारसौली (उत्तर प्रदेश में मथुरा जिले के गोवर्धन ग्राम से एक सवा मील दूर स्थित गाँव) में हुई।

> सूरदास के निधन पर गोस्वामी विट्ठलनाथ ने शोकाकुल होकर कहा था 'पुष्टिमार्ग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ'

पद 1

चरण-कमल बंदौ हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई॥
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बन्दौं तेहि पाई॥

प्रस्तुत पद सूरदास विरचित 'सूरसागर' महाकाव्य के प्रथम स्कंध का शुभारंभ या मंगलाचरण है। यह विनय-भक्ति संबन्धी पद है। 'सूरसागर' सूरदास द्वारा हिन्दी साहित्य को प्राप्त अमूल्य ग्रंथ है। यह भक्ति काल की महान उपलब्धियों में से एक है। इसकी शैली मुक्तक और

राग बिलावल है।

काव्य रचना की गेय शैली को पद (छन्द) कहते हैं। पद शैली का विकास लोकगीतों की परंपरा से माना जाता है। पद मात्रिक छन्द है। साधारणतः पदों के साथ किसी राग का निर्देश भी मिलता है। पद शैली की मुख्य दो परम्पराएँ चली है। यह दोनों परम्पराएँ हिन्दी काव्य-साहित्य में मिलती है। पद शैली में पहला है– सन्त कवियों के सबद संप्रदाय। दूसरा भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवियों की लोकगीतों की शैली में रची पद-शैली। सूर का प्रस्तुत पद लोकगीतों की शैली का पद है। भक्ति काल में भक्ति भावना की अभिव्यक्ति के लिए पद शैली का प्रयोग हुआ है। सूर का अधिकतर काव्य पद शैली में रचित है। 'सूरसागर' पद शैली का उज्ज्वल ग्रंथ है।

काव्य पदों की शब्दावली:

चरण कमल – से श्रीकृष्ण के परम-पवित्र चरणों की ओर इशारा हुआ है। हरि का वास्तविक अर्थ ईश्वर है, इधर कृष्ण की ओर इशारा हुआ है। रंक चलै सिर छत्र धराई से तात्पर्य दरिद्र धनिक होने की ओर है।

छंद:

प्रस्तुत पद में गेय शैली का छंद है। इस पद में रूपक अलंकार है। अलंकार का अर्थ होता है– आभूषण। कविता में सौंदर्य-वर्धन के लिए अलंकार का प्रयोग होता है। चरण कमल बंदौ हरि राइ–पंक्ति में रूपक अलंकार है। क्योंकि चरणों की तुलना कमल से की गयी है। उपमेय को उपमान के रूप में कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। प्रस्तुत पद में चरण (उपमेय) को कमल (उपमान) के रूप में प्रयुक्त किया है। इसमें रूपक अलंकार के सिवा पुनरुक्ति प्रकाश और अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत पद में भक्त कवि सूरदास ने अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए उनके चरणों की वन्दना की है।

महात्मा सूरदास श्रीकृष्ण की गुण-विशेषता व्यक्त करते हैं कि जिस पर श्रीहरि (कृष्ण) की कृपा हो जाती है, उसे असंभव बात भी संभव हो जाती है। भगवन श्रीकृष्ण के अनुग्रह से लंगड़ा आदमी पहाड़ पार कर सकता है। अंधे को सबकुछ देखने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। बहरा पुनः सुनने लगता है। कृष्ण भगवान की कृपा से गूंगा बोलने लगता है। कृष्ण-कृपा से रंक या दरिद्र, राजा का छत्र धारण कर अमीर बन जाता है। सूर कहते है कि मैं ऐसे दयालु एवं करूणामय प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की वन्दना बार-बार करता हूँ।

विश्लेषण:

भक्तों को भगवान ही सर्वोच्च है। भक्त अपना हर दिन और हर क्षण परमात्मा से जोड़कर मोक्ष पाना चाहता है। भक्त का सबसे बड़ा चरितार्थ होता है मोक्ष-प्राप्ति। उसका विश्वास यह है कि भक्ति, मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। मुक्ति से तात्पर्य यह है कि भौतिक जीवन-जगत से आध्यात्मिक जगत की ओर की यात्रा। अर्थ यह भी निकलता है कि **व्यक्ति अभक्ति + शक्ति + मुक्ति = परमात्मा का साक्षात्कार**।

श्रीकृष्ण भक्त वत्सल तथा करूणानिधि है। वे कभी भी अपने भक्तों को नहीं छोड़ते हैं। भक्तों पर हर वक्त उनकी कृपा-कटाक्ष की वर्षा होती है। अर्थात कृष्ण का निर्णय है कि अपने भक्त तनिक भी दुखी न रहें।

भक्त की भलाई भगवान का दायित्व है। इसके माध्यम से भक्त और भगवान एक बन जाते हैं। इसलिए सूर कहते है कि श्रीहरि (कृष्ण) की कृपा होने पर लंगड़ा व्यक्ति बड़े-बड़े पर्वत पार कर लेता है। कृपा-सिंधु श्यामसुंदर अन्धे की आँखों पर ज्योति देकर उसे सबकुछ देखने का अवसर प्रदान करता है। आराध्य भगवान कृष्ण के अनुग्रह से बहरा आदमी सुनने लगता है। कृष्ण के कृपा से गूंगा पुनः बोलने लगता है। श्री नंद के कृपा से दरिद्र से दरिद्र व्यक्ति भी धनिक हो जाता है। ऐसे भक्त-प्रिय भगवन श्रीकृष्ण के कमल रूपी परम-पवित्र चरणों की वन्दना करना भक्त अपना सौभाग्य समझता है। सूरदास भगवत चरणों में बार-बार प्रणाम समर्पित करते हैं।

सूरदास के मत में जिन्हें भगवान कृष्ण की कृपा हो उन्हें कुछ भी असंभव नहीं होता है। कृष्ण अपने भक्तों के सारे असंभवों को संभव कर देता है। सूरदास चेतावनी देते हैं कि जो व्यक्ति भगवान के चरणों की वंदना नहीं करते, वे व्यक्ति इधर (संसार) और उधर (परलोक) में अभागा ही रह जाता।

महात्मा सूरदास अंधे थे लेकिन उनके पद यह साबित करते हैं कि उनकी बाहरी आँखों में जितना अंधापन था, भीतरी आँखें उससे सौ प्रतिशत प्रकाशमान थी। मनुष्य जीवन का अर्थ केवल खाना, पीना और सोना नहीं है।

ऐसा जानवर कर सकता है। मनुष्य विवेकी और जागरूक है। सूरदास स्पष्ट करना चाहते हैं कि विवेकी और जागरूक मनुष्य श्रीहरि की आराधना करके उसके पथ पर आगे बढ़ते हैं, अनुपम एवं अपूर्व सुख पा सकते हैं।

प्रथम चरण की व्याख्या:

सूरदास पहले शीर्षस्थ कृष्ण-भक्त हैं बाद में महान कवि। वे अपने आराध्य भगवान कृष्ण के कमल-रूपी चरणों की वन्दना करते हुए कहते हैं कि भगवत चरणों का आकर्षण सर्वोपरि है। भगवान कृष्ण के पैर कमल जैसे हैं, जो परम पवित्र हैं। उनकी वंदना करना मोक्ष दायक है। ऐसा करने से भक्त अनगिनत उपकार-उपलब्धि पा लेते हैं। उदाहरणार्थ कृष्ण की कृपा से लँगड़ा व्यक्ति पहाड़ को पार कर लेता है। अन्धे को सबकुछ दिखाने वाले, बधिर को सुना देने वाले, गूंगे को बोलने का अवसर देने वाले, दरिद्र को धनिक बनाने वाले श्रीहरि की भक्त-वात्सल्य-प्रियता अद्‌भुत और अनोखी है। ऐसे करुणामय श्रीकृष्ण के चरणों की बार-बार की वन्दना करने से भक्तों को सबलता ही नहीं, सफलता भी मिलती है।

शब्दार्थः

चरण	=	पैर
बंदौ	=	वंदना करना
राई	=	राजा
जाकी	=	जिसकी
गिरी	=	पहाड़
पंगु	=	लंगड़ा
लघै	=	पार कर जाता है
मूक	=	गूंगा
रंक	=	निर्धन, गरीब, दरिद्र
छत्र धराई	=	राज-छत्र धारण करना (धनिक बन जाना)
तेहि	=	तिनके
पाई	=	चरण

संत व सन्यासी अनुभवी हैं। उन्हें तीनों लोकों के बारे में अपरिमित ज्ञान है। इसलिए संत के वचनों को महत्व देना चाहिए। मनुष्य अपने जीवन को भक्ति के मार्ग पर चला देता है तो भगवान उसके निकट आ पहुंचता है। जब मनुष्य अपना तन और मन भगवन को समर्पित करता है तब भगवान उसे सभी सुख देता है। निराशा से भरपूर मन में भगवान कृष्ण आशा पैदा करते हैं।

पदः 2

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पिवत, यह अजहुं है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनी, ज्यों है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत ओंछति, नागिन-सी भुई लोटी।।
काचो दूध पियावति पचि पचि, देत न माखन रोटी।
सूर स्याम चिरजिवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।।

प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' महाकाव्य के दशम स्कंध से लिया गया है। रामकली राग में लिखा गया यह पद अत्यन्त सरल और सरस है।

काव्य पदों की शब्दावली:

किती बार प्रयोग कितनी बार को लक्ष्य करता है। यह अजहुं है छोटी–प्रयोग में बालकृष्ण की मानसिक व्यथा खींचने का प्रयास किया है। नागिन-सी भुई लोटी– यहाँ साँप के फन की ओर इशारा हुआ है। चिरजिवौ–मरे बिना अमर रहने को सूचित करता है।

छंद / अलंकार:

प्रस्तुत पद में गेय शैली का प्रयोग हुआ है। (अधिक जानकारी के लिए प्रथम पद देखिए) 'सूरसागर' महाकाव्य सूर की कीर्ति का आधार स्तंभ है। सूरदास ने अपने सूरसागर में मुख्यतः अनुप्रास, श्लेष, यमक, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। वैसे सूरसागर में भक्ति, प्रेम और संगीत का आश्चर्यजनक सामंजस्य हुआ है।

व्याख्या:

प्रस्तुत पद में सूरदास ने माता यशोदा और बेटे श्रीकृष्ण के संवाद से मातृ-पुत्र संबंध का उज्ज्वल चित्र खींचा है। यह काव्य-भाग कृष्ण की बाललीला वर्णन के नाम से प्रसिद्ध है।

बाल स्वभाववश बालक कृष्ण दूध पीने से इनकार करते हैं। तब माता यशोदा कृष्ण को प्रोत्साहित करती हैं कि मेरे प्यारे लाल, तुम नित्य कच्चा दूध पिया करो। ऐसा दूध पियोगे तो तुम्हारी चोटी भी भाई बलराम की जैसी मोटी और लंबी हो जाएगी। माता यशोदा के प्रलोभन, प्रोत्साहन एवं उम्मीद में पड़कर बालक कृष्ण ज्यादा दूध

पीने लगते हैं। कई दिन बीत जाने पर भी उनकी चोटी वैसे ही रही, जैसे पहले थी। कृष्ण इस पर दुखी हो जाते हैं। लंबा समय बीत जाने पर एक दिन कृष्ण, माँ यशोदा से पूछते हैं– मैया, मेरी यह चोटी कब बढ़ेगी? तेरे अनुरोध से दूध तो कई दिनों से पी रहा हूँ। बार-बार दूध पीने पर भी मेरी चोटी छोटी ही है। तूने कहा था कि मेरी चोटी बलराम की बेनी की तरह लंबी और मोटी हो जायेगी। यह चोटी नागिन के फन के जैसी धरती पर लोटने लगेगी। तू तो पहले कहती थी कि मेरी यह चोटी दाऊ (बलराम) की चोटी की जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। देखो माँ, दूध पीते-पीते लंबा समय गुज़र जाने पर भी मेरी चोटी पहले जैसी छोटी ही है। हे माँ, तू मुझे नहलाते, धुलाते, कंघी करती हुई कहती थी कि यह चोटी नागिन-सी भूमि पर लोटेगी। अब भी तू मुझे पुचकार कर, बहला-फुसलाकर कच्चा दूध पिलाती है लेकिन यह तो आज भी पहले जैसी ही है।

बालक कृष्ण को मक्खन और रोटी प्यारी है। लेकिन यशोदा मक्खन और रोटी नहीं देती है। कृष्ण इस पर उपालंभ कहते है कि माँ उन्हें मक्खन और रोटी देने के बदले निरंतर कच्चा दूध पिला रही हैं। चोटी के नाम पर मुझे खाने को मक्खन और रोटी नहीं देती है। यह कहकर कृष्ण यशोदा से रूठ जाते हैं। कृष्ण के उपासक सूरदास इस पर खुशी व्यक्त करते हुए कहते हैं कि कृष्ण और बलराम की जोड़ी अनुपम है। कृष्ण-बलराम जोड़ी सदा जीती रहे।

श्रीकृष्ण जन्म से ही कुशल एवं बुद्धिमान है। प्रस्तुत पंक्तियों में सूरदास अपने इष्ट देव श्री हरि की कुशलता तथा बुद्धिमत्ता को चित्रित करते हैं। पुराने समय से लोग चोटी को सौंदर्य का केंद्र मानते हैं। अधिकतर लोगों का विश्वास यह है कि चोटी आकर्षक हो तो चेहरा आकर्षक लगता है। बच्चे अपनी ओर देखने से ज़्यादा दूसरों पर दृष्टि डालते हैं। जो बच्चे के पास व वश पर नहीं है, उसे वे किसी प्रकार पा लेने का परिश्रम करते हैं। छोटे बच्चे माँ-बाप, भाई-बहन जैसे परिचितों के निरीक्षण-परीक्षण-विश्लेषण करते रहते हैं। उनमें कुछ उनके रॉल मॉडल भी बन जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यहाँ बलराम को बालक कृष्ण अपना रॉल मॉडल बना लेते हैं। कृष्ण के बाल नाटे हैं। जब कि बलराम के बाल लंबे, मोटेऔर आकर्षक है। इसे सुअवसर समझकर माता यशोदा कृष्ण को दूध पीने को प्रेरित करती है। यहाँ मैया यशोदा एवं बेटा कृष्ण, दोनों की मनोगति अपनी-अपनी भलाई पर आधारित होती है।

काव्य में मनोवैज्ञानिकता का प्रयोग करने में सूरदास सिद्धहस्त है। उन्होंने अधिकतर बालक कृष्ण के लीला-विनोद और यशोदा के व्यवहार तथा मनोभावों के वर्णनों में मनोवैज्ञानिकता का प्रयोग किया है। कृष्ण को दूध पिलाने के लिए यशोदा जो कुछ कहती है वह मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का उदाहरण है।

माँ संतानों के उज्ज्वल भविष्य चाहती है, यह स्वाभाविक भी है। इसलिए यशोदा कृष्ण को बार-बार दूध देती है कि मेरा लाल शीघ्र ही शीघ्र बुद्धिशाली और शक्तिशाली बन जाये। यह भी ध्यान देने का योग्य है कि निरंतर दूध पी-पीकर कृष्ण उस पर अतृप्त हो गये हैं। वे दूध के बदले माखन-रोटी चाहते हैं। निरंतर खाने-पीने वाले पदार्थों से अतृप्ति पैदा होना स्वभाविक है। सूर यह व्यक्त करना चाहते हैं कि हमारा मन जो चाहता है वही जीभ भी चाहती है।

बच्चे साधारणतः अधिकतर शिकायतें अपनी माँ से करते हैं। यहाँ भी यही स्थिति है। कृष्ण यशोदा से शिकायत करते है कि मैया उसे चोटी का लालच देकर उन्हें कच्चा दूध पिलाया है। जबकि उन्हें तो माखन-रोटी पसंद है। आगे सूरदास कहते हैं कि बलराम और घनश्याम की जोड़ी अनुपम एवं आकर्षक है, उसे देखना सौभाग्य की बात है। आशीष देते हुए सूरदास कहते है कि बलराम-घनश्याम, दोनों भाइयों की जोड़ी चिरंजीवी रहें। अंतिम पंक्ति में सूरदास दोनों भाइयों की दीर्घायु की कामना करते सूरदास यहाँ दोनों के प्रति अपनी असीमित प्यार, वात्सल्य और भक्ति भी प्रकट करते हैं।

रामकली राग में विरचित प्रस्तुत पद सूरदास रचित बाल-लीला संबंधी उत्कृष्ट पदों में से एक है जो चर्चित इतिहास काव्य सूरसागर के दशम स्कंध की शोभा बढ़ाता है। इसकी एक और विशेषता इसमें अंतर्लीन लालित्य, नैसर्गिकता एवं सरसता है।

उपरोक्त पद में चित्रित श्रीकृष्ण बालक अवश्य है, परंतु उनमें उपलब्धि-अनुपलब्धि तथा भेद-भाव को विवेचित

करने का बड़ा सामर्थ्य परिलक्षित है। सूर ने बालक गोपाल की मानसिकता का बड़ा ख़ूबसूरत वर्णन किया हैं, ऐसा वर्णन किसी दूसरे कृष्ण भक्त कवियों में नहीं मिलता है।

शब्दार्थः

कबहिं	=	कब
किती	=	कितनी
पियत	=	पिलाना
अजहूँ	=	आज भी
बल	=	बलराम, बलदेव
बेनी	=	चोटी, बाल
लाँबी	=	लंबी
काढ़त	=	बाल बनाना
गुहत	=	गूँथना
न्हवावत	=	नहलाना
नागिन	=	सर्पिणी
भुइँ	=	भूमि, ज़मीन
लोटी	=	लोटने लगी
काचौ	=	कच्चा
पियावति	=	पिलाती
पचि-पचि	=	बार-बार
माखन	=	मक्खन
चिरजीवी	=	चिरंजीवी
दोउ	=	दोनों
हरि	=	(भगवान) कृष्ण
हलधर	=	बलराम
जोटी	=	जोड़ी
बार	=	समय
ओंछत	=	कंघी

सूरदास वल्लभ संप्रदाय व अष्टछाप के सर्वोच्च महात्मा एवं कवि हैं। सगुण भक्त सूरदास ने श्रीकृष्ण का जैसा मनोरम वर्णन किया है वैसा और किसी कवि नहीं किया है। उनकी कृष्ण भक्ति पुष्टि मार्गीय है, जिसकी तुलना करना व्यर्थ है। सूर के भीतर ही नहीं, उनका बोध-अबोध, दिन-रात, खान-पान, चाल-चलन, बात-चीत, वैयक्तिक-सामाजिक जीवन हर कहीं सर्वत्र कृष्णमय था। उसकी सारी लक्ष्य कृष्ण भक्ति की पुष्टि और प्रचार-प्रसार है। सूर ने प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के चरणों का असीम आकर्षण व्यंजित किया है। सूर का भक्ति-भाव चरम कोटि का है।

> सूरदास में जितनी सहृदयता एवं भावुकता है प्रायः उतनी ही चतुरता है और वाग्विदग्धता (वचन-चातुरी) भी।

Critical Overview / अवलोकन

सूरदास को पूर्ण विश्वास था कि कृष्णाराधना से असंभव बात भी संभव हो जाती है। मनुष्य को जो असाध्य होता है, वह भगवान को साध्य है। क्योंकि सब कुछ भगवान के द्वारा चयनित है। सूरदास मानते है कि श्रीकृष्ण सृष्टि, स्थिति और संहार का अधिनायक है। ब्रह्म की हर गतिविधि महा विष्णु के अवतार कृष्ण के इच्छानुसार चलती है। भक्त प्रिय कृष्ण हमें संसार-रूपी समुद्र पार कराने वाले जहाज़ है। कृष्ण की भक्ति स्थायी है बाकी सब अस्थायी। इसलिए सूरदास आजीवन श्रीकृष्ण की महिमा का गान करते रहे। वे हर ब्रह्म मुहूर्त में मथुरा के श्रीनाथ के मंदिर की दरवाज़ा खोलते समय अपनी इष्ट भगवान को नये-नये गीत से अर्चना करते थे।

सूरसागर का उपरोक्त पद कृष्ण के आराधक तथा अनन्य भक्त कवि सूरदास के महत्वपूर्ण पदों में एक माना जाता है। यहाँ सूरदास ने अपना आश्रय तथा अवलंब श्रीकृष्ण के कमल-रूपी चरणों को माना है। वे कृष्ण के परम-पवित्र चरणों पर आत्म-समर्पण कर साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं। इसमें शंका नहीं होती है कि भगवान पर भक्त का सबसे बड़ी चढ़ावा आत्म समर्पण ही है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि है।
- सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी सूरदास के प्रमुख रचनाएँ हैं।
- गुरु वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्य है सूरदास।
- अष्टछाप के सर्वोच्च महान कवि।
- सूरदास भगवान कृष्ण की गुण-गान करते है।
- वात्सल्य रस का आरंभ सूरदास से हुआ।
- वात्सल्य रस का सम्राट कहता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूरदास का हरि कौन है?
2. सूर-कृतियों की मुख्य भाषा क्या है?
3. सूरदास के गुरु कौन है?
4. अष्टछाप के संस्थापक कौन है?
5. सूरदास किस काल के कवि थे?
6. सूरदास किस सम्प्रदाय का कवी है?
7. सूरदास की मृत्यु कब हुआ ?
8. सूरदास के तीन प्रमाणिक ग्रंथ लिखिए।

Answers / उत्तर

1. श्रीकृष्ण।
2. ब्रज।
3. वल्लभाचार्य।
4. विट्ठल नाथ।
5. भक्ति काल के सगुण भक्ति धारा।
6. वल्लभ सम्प्रदाय व अष्टछाप
7. 1584
8. सूरसागर, सूरसावली, साहित्य लहरी

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. भक्त और भगवान के संबंध में एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
2. भक्ति मार्ग में सूर का स्थान निर्धारित करते हुए एक भाषण तैयार कीजिए।
3. अंधे की अंधता केवल बाहर ही है। इस विषय में टिप्पणी लिखिए।
4. कृष्ण की कृपा से भक्तों को मिलने वाले गुण और विशेषताएँ बताइए
5. सूरदास ने कृष्ण के चरण की कौन-सी विशेषता बताई है?
6. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सूर एक अग्रणी कृष्ण भक्त कवि हैं?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी भक्तिकाल – नन्ददुलारे वाजपेयी।
3. सूरदास – डॉ. श्यामसुंदर दास।
4. सूरदास – डॉ. हरबंसलाल वर्मा।

इकाई 3

तुलसी के दोहे

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी राम भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि और कविता के सौंदर्य शास्त्र से परिचय प्राप्त होता है
- तुलसीदास के व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्श, दृष्टिकोण, राम पर अनन्य भक्ति, तुलसी का समन्वय भावना आदि से जानकारी प्राप्त होता है
- तुलसीदास की भाषा-शैली, तुलसी की कविता में छंद, अलंकार, लोकनायक का रूप, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य में तुलसी की देन आदि से परिचत होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति-सभ्यता और जनमानस के महाकवि के पद पर विराजमान है। तुलसी केवल काव्य- सृष्टा ही नहीं है जीवन - दृष्टा भी रहे है। वे मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के नायक है और उसके साथ ही पथ-प्रदर्शक भी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार भारतवर्ष का लोक-नायक वही हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो, भारतीय समाज में नाना भाँति की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-विचार और पद्धतियाँ प्रचलित है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भक्तिकाल, सगुण भक्ति, राम भक्ति, समन्वय भावना

Discussion / चर्चा

तुलसीदास लोकनायक है। उनकी लोक नायक भावना सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है। वे युगांतरकारी विश्व कवि के विशिष्ट स्थान पर विराजमान है। उन्होंने अपनी रचना का मूल उद्देश्य लोकमंगल स्वीकार किया है।

तुलसीदास के जन्म और आरंभिक जीवन को लेकर विद्वानों में मतभेद है। महा पंडित डॉ. ग्रियर्सन ने तुलसीदास का जन्म सन् 1532 माना है। डॉ. ग्रियर्सन के मत को सर्वाधिक स्वीकृति प्राप्त हुई है।

लोकनायक तुलसीदास के जन्म स्थान के बारे में भी मतभेद है। अधिकांश विद्वान उनका जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के बाँदा (वर्तमान नाम – चित्रकूट) जिले के राजापुर को मानते हैं।

▶ **वास्तविक नाम और माता-पिता :**

तुलसी के बचपन का नाम रामबोला था। गुरु बाबा नरहरिदास ने रामबोला को तुलसीदास नाम दिया। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता हुलसी थी।

▶ **पत्नी तथा बच्चाः**

तुलसीदास का विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। उन्हें तारक नाम का एक पुत्र हुआ, जिसकी असमय मृत्यु हो गई थी।

▶ **गुरुः**

तुलसीदास के गुरु नरहरिदास थे। उन्होंने उसे सुचारु शिक्षा प्रदान की। उनकी देखरेख में तुलसी ने वेद, दर्शन, काव्य, ज्योतिष आदि का अध्ययन किया।

▶ **मृत्युः**

महात्मा तुलसीदास की मृत्यु सन् 1623 में उत्तर प्रदेश के काशी में हुई।

▶ **दृष्टिकोणः**

तुलसी अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीराम की भक्ति के उत्कर्ष के लिए व्यतीत किये थे। राम भक्ति में तल्लीन होकर वे एक तपस्वी के वेश में बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, तथा हिमालय का भ्रमण करते रहे थे। लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश समय काशी, प्रयाग, अयोध्या और चित्रकूट में बिताया था।

▶ **तुलसी की रचनाएँः**

तुलसीदास की रचनाएँ निम्न लिखित हैं– 1. रामचरितमानस 2.गीतावली 3.कवितावली 4.बरवै रामायण 5.दोहावली या दोहा रामायण 6.चौपाई रामायण 7.सतसई 8.पंचरत्न 9.जानकी मंगल 10.पार्वती मंगल 11.वैराग्य संदीपनी 12.रामलला नहछू 13.श्री रामाज्ञा प्रश्न 14.संकटमोचन 15.विनय पत्रिका 16.हनुमानबाहुक 17.कृष्ण गीतावली।

तुलसी के प्रधान कृतियों में चर्चित मुख्य विषय निम्न प्रकार है –

रामचरितमानसः

रामचरितमानस इतिहास महाकाव्य तुलसी का कीर्ति स्तंभ है। उन्होंने अयोध्या में रहकर इसकी रचना की। यह विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ अवधी भाषा में लिखा गया। इस प्रबंध काव्य की रचना का शुभारंभ उन्होंने सन् 1574 में, चैत्र मास के रामनवमी पर अयोध्या में किया था। दो साल, सात महीने और छब्बीस दिन का समय लगाकर इन्होंने इसे पूरा किया।

> ‘श्रीरामचरितमानस’ का महत्व इसलिए नहीं है कि वह एक धार्मिक ग्रन्थ समझा जाता है; वरन ‘श्रीरामचरितमानस’ का महत्त्व उसमे निहित पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतक, नैतिक आदर्शो की उस उदात्त और प्रभावपूर्ण व्याख्या के कारण है जिसने सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक आदर्श भावात्मक समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की।

रामचरितमानस विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में 46 वें स्थान पर विद्यमान है। रामचरित मानस सात काण्डों में विभक्त है– 1.बालकांड 2.अयोध्याकांड 3.अरण्यकांड 4.किष्किंधाकांड 5.सुंदरकांड 6.लंकाकांड 7.उत्तरकांड।

▶ **विनय पत्रिका-**

विनय पत्रिका का रचना काल 1574 से 1622 के बीच माना जाता है। राम गीतावली नाम से भी इसे पुकारतें हैं। यह मुक्तकों का संग्रह है। इसके मुक्तकों के द्वारा तुलसीदास ने अपना आत्म निवेदन अपने आराध्य भगवान श्रीराम को अर्पित किया है।

▶ **गीतावली** -

इसका रचना काल 1573-1613 के बीच मानते हैं। यह ग्रंथ पदावली रामायण के नाम में भी जाना जाता है।

▶ **कवितावली** -

कवितावली का रचना काल सन् 1574 से 1623 के बीच माना जाता है। इसकी कथा सात कांडों में विभाजित है। इस मुक्तक काव्य की भाषा ब्रजभाषा है।

▶ **कृष्ण गीतावली** -

कृष्ण गीतावली का रचना काल सन् 1586-1603 के बीच माना जाता है। यह श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित गीतों का संग्रह है।

▶ **बरवैरामायण** -

बरवैरामायण का रचना काल सन् 1573-1623 के बीच माना जाता है। एकरूपता के बिना मिलने वाले बरवै छंद में राम की कथा बताई गई है। इसकी राम कथा सात कांड में विभक्त है। इस ग्रंथ में बरवै छंद में लिखे गये 69 मुक्तक उपलब्ध हैं।

▶ **दोहावली या दोहा रामायण** -

दोहावली, दोहा रामायण नाम से भी जानी जाती है। इसमें संग्रहीत दोहे तुलसीदास की अन्य रचनाओं में भी

देख सकते हैं। इसमें कुल 573 दोहे संग्रहित है।

▶ **जानकी मंगल-**

इसका रचना काल सन् 1572-73 माना जाता है। इसमें प्रयुक्त भाषा अवधी है। जानकी मंगल में श्रीराम और सीता के विवाह को विषय-वस्तु बनाया गया है।

▶ **पार्वती मंहल-**

पार्वती मंगल का रचना काल 1582 माना जाता है। यह अवधी भाषा में लिखा गया ग्रंथ है। छंद दोहा है। यह सोहर और हरिगीतिका छंदों में रचा गया काव्य है। तुलसी ने इसमें शिव-पार्वती के विवाहोत्सव का चित्रण किया है।

▶ **वैराग्य संदीपनी-**

इसका रचना काल सन् 1569-70 के भीतर माना जाता है। तुलसी ने इसमें वैराग्य के स्वरूप का चित्रण किया गया है।

▶ **रामलला नहछू-**

इस ग्रंथ का रचना काल सन् 1570-72 है। यह सोहर शैली में लिखी गई एक छोटी-सी कृति है। रामलला नहछू में शुभ अवसर पर नख काटने के रीति को व्यक्त किया गया है।

▶ **रामाज्ञा प्रश्न-**

माना जाता है कि तुलसी ने इसकी रचना सन् 1570 -71 में की है। यह ब्रजभाषा में लिखा गया काव्य है। इसमें सात सर्ग है, जिसमें राम-कथा कही गई है। इसमें रामचरितमानस में उपेक्षित सीता निर्वासन क प्रसंग को स्थान दिया है।

▶ **काव्यगत विशेषताएँ-**

तुलसीदास के काव्य में भाव पक्ष के समान कला पक्ष भी सबल, संपन्न और समृद्ध है। साधारणतः काव्य की महत्ता उसकी भाव पक्ष और कला पक्ष के महत्व के अनुसार मानी जाती है। इस दृष्टि में देखते समय लगता है कि निस्संदेह तुलसीदास हिन्दी के उच्च कोटि के कवि हैं। उनके साहित्य में व्याप्त सुगठित भाव पक्ष और कला पक्ष उन्हें हिन्दी साहित्य के महान और सर्वश्रेष्ठ कवि बना देता है।

▶ **महत्वपूर्ण संदर्भो का चित्रण-**

तुलसीदास विश्व इतिहास में भारतीय संस्कार को रेखांकित करने वाले महान कवि है। उन्होंने रामायण के माध्यम से हमारे सामने मनुष्य जीवन के अलग-अलग तत्वों और पहलुओं को स्थापित किया है।

▶ **तुलसीदास के काव्य-रूप-**

काव्य के दो भेद होते हैं – प्रबंध काव्य (महाकाव्य) और मुक्तक काव्य (खंडकाव्य)। तुलसी ने रामचरितमानस लिखकर प्रबंध काव्यकार तथा कवितावली, दोहावली जैसे काव्य रचकर मुक्तक काव्यकार की अपनी अपूर्व प्रतिभा को दर्शाया है।

▶ **तुलसी के काव्य में भक्ति-**

तुलसी पहले उच्च भक्त है और बाद में विश्व प्रसिद्ध काव्यकार। उनकी भक्ति शाश्वत एवं लाखों-करोड़ों लोगों को आश्रय-अवलंब प्रदान करने वाली है। उसका आश्रय और अवलंब है आदर्शनिष्ठ एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र का यशगान और उन पर आत्मसमर्पण।

▶ **दास्य भक्ति की प्रबलता-**

तुलसी की भक्ति दास्य भक्ति है। उनका राम सृष्टि, स्थिति और संहार का सर्वाधिकारी है। अपने आराध्य के आगे तुलसी एक तुच्छ, साधारण भक्त-व्यक्ति हैं।

तुलसी के राम निर्गुण भक्त कवियों के राम नहीं है। तुलसी के राम सगुणी है, वह अयोध्या नरपति दशरथ के नंद है, देवी सीता के पति है, लक्ष्मण-भरत तथा शत्रुघ्न के भाई है, समस्त जीव-अजीवों के मित्र है। तुलसी के राम अयोध्या-मिथिला के लोगों के ही नहीं, संपूर्ण प्रकृति, जीव-जंतुओं के बंधु-बाँधव है। उस लोक रक्षक व मंगलकारी रामचंद्र का यश-गान खंड-खंड में, पंक्ति-पंक्ति में, वाक्य-वाक्य में, शब्द-शब्द में तुलसीदास ने किया है।

तुलसी में समन्वय भावना-

तुलसी के तन, मन और धन श्रीराम है। उन के लिए राम ही सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम है। वे इस प्रकृति में राम के आदर्शों द्वारा समन्वय स्थापित करने का प्रयास करते हैं। तुलसी को अन्य अवतार भी स्वीकार्य है, किंतु जितना राम उन्हें स्वीकार्य है, उतना नहीं। तुलसी ने राजा-प्रजा, निर्गुण-सगुण, दुर्बल-सबल, वैष्णव-शैव, ज्ञानी-अज्ञानी जैसे विपरीत ध्रुवों पर रहने वालों के बीच समन्वय स्थापित किया है।

▶ **प्रकृति वर्णन-**

तुलसी प्रकृति के पुजारी कवि रहे हैं। उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण अत्यंत आकर्षक ढंग में किया है। कहीं पर उन्होंने प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण किया है तो कहीं पर उद्दीपन रूप में।

▶ **लोक कल्याण की भावना-**

तुलसी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र के दास रहे हैं।

राम में लोक-कल्याण की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। तुलसी ने इसे ही अपने काव्य में अपनाया है। उनके काव्य में लोक-कल्याण की भावना अपनी संपूर्णता के साथ दृष्टि गोचर होती है। उन्होंने अपने ग्रंथों में राम के माध्यम से राजा, प्रजा, परिवार, माता, पिता, पत्नी, पुत्र, भाई, गुरु, मित्र आदि सभी के संबंधों का आदर्शनिष्ठ स्वरूप दर्शाया है। तुलसी की लोक कल्याण भावना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, जिससे हमारा दैनंदिन जीवन प्रकाशमान बन जाता है।

▶ रस-योजना-

तुलसीदास के काव्यों में नव रसों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग देखने को मिलता है। उन्होंने वीर, रौद्र, भयानक, श्रृंगार आदि रसों का प्रयोग उतना नहीं किया है जितना शांत। तुलसी के सभी ग्रंथ भक्ति रस प्रधान है। शांत रस नव रसों में अंतिम रस है। किसी वस्तु, प्राणी या किसी प्रिय जन से मोह भंग होता है तो शांत रस की निष्पत्ति होती है। इसके उत्पत्ति का कारण तत्वज्ञान और वैराग्य है। शांत रस का स्थाई भाव निर्वेद है।

तुलसी मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र का चित्रकार है। लोक रक्षक राम में अंतर्लीन मुख्य भाव शांत है। राम के अनन्य भक्त तुलसी के स्थायी भाव भी वही हो सकता है। अथवा महान कवि ने अपने ग्रंथों में शांत रस को मुख्य और बाकी को गौण स्थान दिया है।

▶ भाषा-शैली-

तुलसी की भाषा अवधी है। (अवध आजकल उत्तर प्रदेश का एक राज्य है। अवध प्राचीन काल में कोशल कहलाता था। तब की राजधानी अयोध्या थी। अयोध्या शब्द से अवध शब्द निकला है। अवधी पुराने समय में अवध में प्रचलित भाषा थी। तुलसी अपने जीवन के अधिकांश समय अवध में रहे थे।)

तुलसी की भाषा में प्रसाद व माधुर्य गुण की प्रमुखता होती है। उनकी भाषा में कथ्य के अनुकूल वाक्य-विन्यास, शब्दों का उपयुक्त विन्यास, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का सुनिश्चित प्रयोग, नाद सौन्दर्य, चित्रात्मकता आदि भाषा-संबंधी अनेक गुण देखने को मिलते है। लगता है कि यह उनकी भाषा की प्राण वायु है।

तुलसी ने रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका जैसी कृतियों में वृंदावन में प्रचलित ब्रजभाषा का उपयोग किया है। अवधी तथा ब्रज के अलावा उनकी भाषा में प्राकृत, संस्कृत, पालि, अपभ्रंश आदि स्वदेशी भाषाओं के शब्द और कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द भी पाये जाते हैं।

तुलसी ने भाषा में वर्णनात्मक, भावात्मक, चित्रात्मक, संवाद रीति, आत्मकथात्मक शैलियों का अच्छा उपयोग किया है। छंदों-अलंकारों के उपयोग में रामचरितमानसकार सिद्धहस्त हैं। तुलसी ने अपने काव्यों में मुख्य रूप में दोहा, चौपाई, छप्पय, पद, कवित्त, सोहर, सोरठा आदि छँदों का प्रयोग किया है।

▶ समकालीन कवि-

तुलसीदास के समकालीन कई सगुण भक्त और निर्गुण भक्त कवि हैं। तुलसी के अलावा रामभक्त कवियों की श्रेणी में रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, नाभादास, नरहरिदास आदि के नाम आते हैं। राम भक्ति धारा में तुलसी को छोड़ दें तो स्वामी अग्रदास का नाम सर्वोच्च आता है। अग्रदास तुलसी के समकालीन हैं। उसके चार ग्रंथ मिलते हैं– 1. हितोपदेश, 2.ध्यान मंजरी, 3.रामध्यान, 4.कुंडलिया।

▶ समकालीन साहित्यिक धाराएँ:

तुलसीदास के समय हिन्दी साहित्य मुख्य रूप में सगुण भक्ति धारा (रामभक्ति तथा कृष्ण भक्ति) और निर्गुण भक्ति धारा (ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी) के रूप में बह रही थी। तुलसीदास सगुण-राम भक्ति के पोषक रहे थे।

दोहा : 1

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य श्री रामचरितमानस के सुंदर काण्ड से अवतरित है। रचयिता विश्व महाकवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। रामचरितमानस का सुंदर काण्ड बहुत ही सुंदर है। उसका एक-एक शब्द सुंदर है। इसलिए इसका सुंदर काण्ड नाम पूर्ण रूप में समुचित है। रामचरित मानस में कुल मिलाकर सात काण्ड है – 1. बाल काण्ड 2. अयोध्या काण्ड 3.अरण्य काण्ड 4.किषकिन्धा काण्ड 5.सुंदर काण्ड 6.लंका काण्ड (युद्ध काण्ड) 7.उत्तर काण्ड। इससे ज्ञात होता है कि विवेच्य, सुंदर काण्ड इसका पाँचवाँ काण्ड है।

सुंदर काण्ड सीतादेवी की खोज में हनुमान का लंका प्रस्थान से संबंधित घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है।

काव्य पदों की शब्दावलीः

यहाँ विश्राम शब्द आराम के अर्थ में नहीं, दायित्व निभाने के अर्थ में किया गया है।

मोहि का यथार्थ मतलब मोह लेने वाला है, किंतु इस संदर्भ में हनुमान द्वारा अपने को (मुझे) सूचित करने के लिए मोहि का प्रयोग किया है।

छंदः

उपरोक्त दोहे में युग सृष्टा और युग दृष्टा काव्यकार तुलसीदास ने सोरठा छंद का प्रयोग किया है। वाक्य में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या, क्रम, मात्रा, गणना और यति-गति से संबंधित विशिष्ट योजना को छंद कहते हैं। प्रस्तुत काव्य-भाग में प्रयुक्त दोहा छंद मात्रिक छंद है। दोहा को अर्द्ध सम मात्रिक छंद भी कहते हैं।

विश्लेषणः

हनुमान हिन्दुओं के उपासना मूर्ति हैं। हनुमान को शक्ति, तेज, सच्चा भक्त और साहस के प्रतीक के रूप में मानते हैं। हनुमान राम भक्त हैं। रामायण और रामकाव्य परंपरा में उसका ऊँचा स्थान होता है। वे अपना तन, मन और धन प्रभु के चरणों में समर्पित कर देते हैं।

सीता की मुक्ति-हेतु लंका की ओर जाते समय हनुमान को अपनी धर्म और कर्म का पूरा पता था। उनका ध्येय सीता की मुक्ति है। उन्हें अपना लक्ष्य यथोचित पूरा करने की उम्मीद है। उन्हें राम से जितनी भक्ति एवं आदर है, उतना ही माँ सीता से भी है। सीता की मुक्ति उन्हें उच्च है, खान-पान-आराम और बाकी तुच्छ।

सीता धरती-पुत्री है। मीना (मैनाक) पर्वत भी धरती के अंग है। दोनों धरती के अंग होने से मैनाक को सीता से विशेष ममता होना स्वाभाविक है।

जीवन में एकाग्रता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। एकाग्रता के भंग होते ही उद्देश्य का भंग हो जाता है। अनवसर का आराम आलसी भी बना देता है। इसलिए हनुमान मैनाक के निवेदन सम्मानपूर्वक अस्वीकार कर देता है।

उपरोक्त पंक्तियों में राम भक्त हनुमान का कर्तव्य-बोध एवं निस्वार्थ मनोभाव झलकता है।

प्रथम चरण की व्याख्याः

सुंदर काण्ड तुलसी रामायण की पाँचवाँ काण्ड है। इसमें रावण के अधीन सीता की मुक्ति से संबंधित अनेक मर्मस्पर्शी घटनाएँ घटित होती हैं। प्रस्तुत दोहा देवी सीता की खोज में हनुमान का लंका प्रस्थान से संबंधित है।

हनुमान लंका की यात्रा के दौरान रास्ते में मीना (मैनाक) पर्वत से मिलते हैं। मैनाक राम भक्त है। धरती-पुत्री सीता से उन्हें विशेष प्यार है। देखते ही हनुमान ने मैनाक को हाथ से छूकर उसको प्रणाम किया। हनुमान को बहुत दूर जाना है। इसलिए मैनाक अपने मेहमान से विश्राम करने का निवेदन करता है। तब अपना लक्ष्य व्यक्त करते हुए हनुमान कहते हैं कि श्रीराम का काम किये बिना मुझे विश्राम नहीं है। श्रीराम के काम का मतलब सीता की मुक्ति है। वे पत्नी की अनुपस्थिति में दुखी एवं विवश है। जब तक सीता राक्षस राजा रावण के अधीन हैं तब तक मुझे खान-पान और विश्राम नहीं है।

मैनाक शुभ चिन्तक है। हनुमान उसको पूरा सम्मान देते हैं और उसकी शुभकामनाएँ लेते हैं तथा अपने लक्ष्य की ओर जारी रहते हैं। जीवन में अनेक ऐसी बातें होती हैं जो हमारी एकाग्रता को भंग कर देती हैं। एकाग्रता भंग करने के मुख्य कारण हैं- प्रमाद, आलस्य, सुस्ताने के बाद की नींद। हनुमान समझते है कि यदि यहाँ (मीना पर्वत पर) विश्राम करेंगे तो अपने कार्य में विलंब हो जायेगा। यहाँ हनुमान के दृढ़ संकल्प और कर्तव्य-बोध का पता चलता है।

शब्दार्थः

तेहि	=	अभिलाषा
परसा	=	स्पर्श किया
पुनि	=	पुनः, दुबारा, फिर से
कीन्ह	=	किये
प्रनाम	=	प्रणाम, नत–मस्तक होकर अभिवादन
काजु	=	कार्य
बिनु	=	बिना
मोहि	=	मोह लेने वाला, मुझे
बिश्राम	=	आराम

दोहा : 2

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर।

बसीकरन इक मंत्र है परिहरू बचन कठोर।।

यह गोस्वामी तुलसीदास कृत उपदेश प्रधान दोहा है। यह अवधि भाषा में, दोहा शैली में रचित है।

काव्य पदों की शब्दावली:

मीठे शब्द का यथार्थ अर्थ होता है मिठास या मधुर। किंतु यहाँ कवि ने आकर्षक या दूसरों को प्रभावित करने को पर्याप्त के अर्थ में मीठे शब्द का प्रयोग किया है।

छंद/अलंकार:

प्रस्तुत पद्य भाग में तुलसी ने दोहा-सोरठा छंद का उपयोग किया है।

प्रस्तुत दोहे में तुलसी कहते हैं कि मीठे वचन से सर्वत्र ख़ुशी फैलती है। मीठी बोली हमें स्वयं सुख देती है। साथ-ही-साथ अपने चारों ओर सुख को फ़ैलाती है। मीठी बोली ऐसा ताकतवर मंत्र है जो दूसरे लोगों को अपने वश में कर लेता है। इसलिए हर मनुष्य को कटु वाणी त्याग कर मीठी बोली बोलनी चाहिए।

विश्लेषण:

मीठी बोली में ऐसी अपार शक्ति होती है जिससे अन्य भी अपने हो जाते हैं। मधुर बोली बोलने वाले का कहीं भी कोई शत्रु नहीं होता है, हर कहीं मित्र ही मित्र दिखाई पड़ते हैं। मधुर भाषण से कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है। इससे असंभव समझी जाने वाली बात भी संभव हो सकती है। मनुष्य की जीभ कभी-कभी अनियंत्रित हो जाती है। कभी उससे मीठे बोल निकलते है तो कभी कटु। यह सच है कि मधुर भाषण, भाषी को ही नहीं, उसे सुनने वाले के मन में भी खुशियाँ देता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आदमी की वाणी से मित्र एवं शत्रु बनते हैं। बोली मीठी से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। वैसे ही बोली कटु है तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं। तात्पर्य यह है कि मीठे वचन सभी ओर खुशी फैलती है। मृदु एवं मधुर वाणी अवश्य सुखकारी विचारों का प्रसार करती हैं। मधुर वाणी से मित्र-जनों की संख्या बढ़ जाती है।

व्याख्या:

तुलसी कहते है कि मनुष्य को सर्वथा मीठा ही बोलना चाहिए। मीठी बोली का मतलब मृदु, सरल, स्पष्ट, धीमा, घमंड हीन और विनय से बातें करना होता है। मीठी बोली बोलने वाला जल्दी ही अपने आसपास के लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर अपने वश में कर लेता है। मीठे वाणी नकारात्मक चिंता को सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देती है।

कटु वचन हर्ष-उल्लास के वातावरण को बोझिल बना देता है। कटु बातें असभ्यता का द्योतक है। विद्वान कहते है कि मुंह से निकली हुई बातें और हाथ से छूटे पत्थर एक जैसे हैं, उन्हें वापस नहीं लिया जा सकता। शरीर में जब कोई चोट लगती है तो वह दवा-मरहम से ठीक हो जाती है। कटु वचन से मन-मस्तिष्क में होने वाले घाव किसी भी दवाई से ठीक नहीं होते। इसलिए बोली हमेशा आकर्षक और मीठे बनाने का प्रयास करें। हर बोली में नम्रता अवश्य होना चाहिए।

समकालीन समाज तनाव पूर्ण है। कई लोग आसपास रहते समय भी अनजाने-शत्रु बनकर रहते हैं। इसलिए तुलसी उपदेश देते है कि मीठे वचनों को वशीकरण मंत्र समझकर मित्रता से व्यवहार करें। कौन-सी वाणी अच्छी और कौन-सी बुरी, इसका निर्णय स्वयं करें।

कठोर वचन को तज दें। अतएव किसी आवेश में कठोर शब्द कहकर दूसरों के हृदय में दुख पहुँचाने वाला आदमी बड़ा पापी होता है। याद रखिए कि कटु वचन हमारे और दूसरों के हृदय को ज्वालामुखी बना देता है।

शब्दार्थ:

तुलसी	=	तुलसीदास
मीठे	=	मीठा, मधुर
बचन	=	वचन, वाणी
ते	=	वे, वह
उपजत	=	उपज, पैदावार
चहुँ ओर	=	चारों ओर, चारों तरफ
बसीकरन	=	वशीकरण
इक	=	एक
परिहरू	=	परिहार करने वाला, निवारण करने वाला, त्यागने वाला
बचन	=	वचन
कड़ा	=	कठोर, ठोस

दोहा : 3

तव प्रताप उर राखि प्रभु जेहउँ नाथ तुरंत।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार।।

रामचरितमानस या तुलसी रामायण के सात काण्डों में छठा है लंका काण्ड। इस काण्ड में तुलसी रामायण की महत्वपूर्ण घटनाएँ निहित है। जिसमें मुख्य है हनुमान का लंका प्रस्थान, माता सीता की मुक्ति, युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा, लंका दहन आदि। लंका काण्ड, युद्ध काण्ड नाम में भी प्रसिद्ध है।

काव्य पदों की शब्दावली:

यहाँ सील शब्द का प्रयोग साधारण स्वभाव के अर्थ में नहीं, भरत के सद्व्यवहार को इंगित करने के लिए किया है। पवन कुमार वायु पुत्र हनुमान है। यह नाम आज भी अत्यंत आकर्षणीयता के साथ भक्त जनों के हृदय में समाहित है।

छंद / अलंकार:

प्रस्तुत पंक्तियों में दोहा छंद है। रामचरितमानसकार ने अपनी काव्य में दोहा छंद का अधिक से अधिक उपयोग किया है। विवेच्य दोहा के मन महुँ, पुनि पुनि पवनकुमार एवं पाइ पद आदि में अनुप्रास अलंकार है। इसके सिवा पुनि पुनि में पुनरुक्ति अलंकार हुआ है।

अनुप्रास अलंकार–

अनुप्रास शब्द अनु अ प्रास, दो शब्द मिलकर बना हुआ है। अनु का अर्थ – बार-बार और प्रास का अर्थ वर्ण होता है। किसी वर्ण की बार-बार की आवर्ती या दुहराने के चमत्कार से बनने वाले अलंकार को अनुप्रास कहते है। अर्थात इसमें किसी वर्ण की एक बार या अनेक बार की दुहराई होती है।

पुनरुक्ति अलंकार–

पुनरुक्ति शब्द, पुनः + उक्ति, दो शब्दों के योग से बना हुआ है। काव्य में शब्दों की पुनरावृति होती है तो उसे पुनरुक्ति अलंकार कहते है। यमक अलंकार में शब्दों के अर्थ में भेद होते है। लेकिन पुनरुक्ति अलंकार में अर्थ की भिन्नता नहीं होती है, केवल शब्दों की आवर्ती मात्र होती है।

प्रस्तुत पद तुलसी रामायण के एक शोकपूर्ण संदर्भ को उभरता है। यहाँ लक्ष्मण-मूर्छा के कारण राम पक्ष में अपरिमित दुख और व्यथा का सन्दर्भ है। तात्पर्य यह है कि उपरोक्त पंक्तियों में करुण रस का परिपक्व उपयोग हुआ है।

करुण रस–

प्रिय अथवा इष्ट वस्तु नष्ट होने से मन में क्षोभ पैदा होता है, उसे शोक कहते है। विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से मन में जो शोक का भाव उत्पन्न होता है, उसे करुण रस कहते है। करुण रस की स्थायी भाव शोक है।

पवनपुत्र हनुमान ने कहा– हे नाथ, महाप्रभु, मैं आपका यश हृदय में रखकर तुरंत चला जाऊँगा। इस प्रकार कहकर प्रभु का आज्ञा पाकर और भरत के चरणों की वंदना करके हनुमान लंका की ओर चल दिए।

भरत की भुजाओं के बल, सद्स्वभाव, गुण तथा प्रभु (राम) के चरणों की अपार प्रेम की भावना को मन ही मन में बार-बार प्रशंसा करते हुए वायु पुत्र हनुमान चले जा रहे है।

विश्लेषण:

रामचरितमानस के लंका काण्ड को युद्ध काण्ड भी कहते है। वास्तव में यह शारीरिक एवं मानसिक युद्धों से भरा हुआ काण्ड प्रतीत होता है। राम पक्ष और रावण पक्ष में घोर युद्ध चल रहा है। पहला पक्ष श्रीराम का है जो न्याय, नीति, विवेक, क्रम, आदर, सहिष्णुता आदि के पक्ष है। दूसरा या विपक्ष राक्षस राजा रावण का है जो अन्याय, अनीति, अविवेक, अक्रम, अनादर, असहिष्णुता आदि का है। राम-रावण युद्ध का मूल कारण सीता देवी पर रावण का अतिक्रम है।

रण-क्षेत्र में रावण पुत्र मेघनाद ने अपना शक्ति बाण लक्ष्मण पर छोड़ा। शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं। लक्ष्मण-मूर्छा से राम और उनके समर्थक सर्व चराचरों पर दुख और संकट छा जाता है। राम को लक्ष्मण अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। राम स्तव्ध रह जाते हैं। उनके आगे अंधेरा छा जाता है। तब आशा-रूपी कर्तव्य-बोध के साथ हनुमान अवतरित हुए।

जब हनुमान जाम्बवान से लंका में रहने वाले सुषेण वैद्य और उनके इलाज के बारे में सुनते है तब उनका कर्तव्य-बोध जाग उठता है। कर्तव्य-निष्ठ हनुमान छोटा रूप धारण कर वैद्य सुषेण को उनके घर सहित घटना स्थल

पर पहुँचा देते हैं। जब औषधि लाने के लिए कहा जाता है तो औषधि का पता न होने पर पूरे पहाड़ को उखाड़ कर सुषेण वैद्य के सामने प्रस्तुत कर देते हैं। इस प्रकार हम यहाँ हनुमान की राम भक्ति का उत्कर्ष देख सकते हैं।

व्याख्याः

प्रस्तुत दोहा लंका काण्ड का मेरूदंड है। राम-रावण युद्ध के बीच मेघनाद का तीर लग जाने से लक्ष्मण मूर्छित हो गये। मूर्छित लक्ष्मण को बचाने के उद्देश्य से हनुमान संजीवनी बूटी लेकर लौट रहे है। तब मार्ग में भरत से उनकी भेंट घटित होती है।

प्रभु भारत को प्रणाम करते हुए हनुमान ने कहा कि हे नाथ, मैं आपके प्रताप को अपने हृदय में धारण करता हूँ। अब मैं तुरंत प्रस्थान करता हूँ। अर्थात निर्धारित समय से लंका पहुँच जाऊँगा। लक्ष्मण की मूर्छा से प्रभु श्री राम दुखी हैं। सारे राम भक्तों को हनुमान की शक्ति और कर्तव्य-कुशलता पर पूरा भरोसा है। राम भक्तों की यह उम्मीद हनुमान को मालूम है। इसलिए शीघ्र लक्ष्मण के पास पहुँचना और उन के जीवन बचाना हनुमान का एक मात्र लक्ष्य है।

हनुमान अपना उद्देश्य कैकयी पुत्र भरत को व्यक्त करते हैं। तदनंतर उनके चरण छूकर प्रणाम करते हैं और लंका-प्रस्थान की आज्ञा की याचना करते हैं। हनुमान की राम भक्ति पर भरत को गर्व होने लगा। उनका आशीष पाकर पवन कुमार यात्रा शुरू करते हैं। हनुमान भरत के बाहुबल, उनके सद्गुण संपन्न शील-स्वभाव तथा प्रभु राम के चरणों में उनकी अपार भक्ति को याद रखते हैं। भीतर ही भीतर, बार-बार भरत की प्रशंसा करते हुए हनुमान लंका की ओर चले जा रहे है। यहाँ तुलसीदास ने पवन पुत्र की राम-भक्ति और कर्तव्य-बोध का उत्तम वर्णन किया है।

शब्दार्थः

तव	=	तुम्हारा, आपका
प्रताप	=	यश
उर	=	हृदय
राखि	=	रखकर
प्रभु	=	(भरत) मालिक, ईश्वर
जेहउँ	=	जाऊँगा
नाथ	=	स्वामी, मालिक
तुरंत	=	शीघ्र
अस	=	इस तरह से
कहि	=	कहा
आयसु	=	आज्ञा
पाइ	=	पाकर
पद	=	चरण, पैर
बंदि	=	वंदना करके
चलेउ	=	चले
हनुमंत	=	हनुमान
बाहु	=	भुजा
बल	=	शक्ति
सील	=	शील, सद्व्यवहार
गुन	=	गुण
प्रभु	=	मालिक (भरत)
प्रीति	=	प्रेम
अपार	=	अधिक
महँ	=	में
सराहत	=	प्रशंसा करते हुए
पुनि-पुनि	=	बार-बार, फिर-फिर
पवनकुमार	=	वायु पुत्र, हनुमान

Critical Overview / अवलोकन

तुलसी चित्रित हनुमान केवल एक रामभक्त ही नहीं है, उससे बढ़कर कई विशेषताओं का सम्मिश्रित रूप हैं। तुलसी रामायण के सुंदर काण्ड तथा लंका काण्ड में हम हनुमान की विशिष्ट से विशिष्टतम गुणों को देख सकते हैं। तुलसी की लेखनी यह साबित करती है कि जो असाध्य तथा असंभव है उसे साध्य एवं संभव करने वाले का नाम है श्री हनुमान। अथवा रामायण में हनुमान को राम से भिन्न देखना संभव नहीं है। उपरोक्त दोहे से यह भी व्यक्त होता है कि भरत के समान हनुमान भी उत्तम राम भक्त है, दोनों की स्वामी भक्ति सर्वोच्च है। भरत की स्वामी-भक्ति, हनुमान को प्रभावित करती है। भरत राम के भाई हैं, उससे ज़्यादा भक्त। उनकी प्रभु भक्ति, सद् स्वभाव और उनका बाहुबल हनुमान को अत्यधिक प्रभावित करता है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ तुलसी सगुणोपासक कवि हैं।
- ▶ तुलसी के राम लोक हितैषी-लोक मंगलकारी राम है।
- ▶ तुलसी राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि हैं।
- ▶ तुलसी ने मुख्य रूप में अवधी को और गौण रूप में ब्रजभाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया है।
- ▶ तुलसी ने मुख्य रूप में दोहा, चौपाई, छप्पय, पद, सवैया, कवित्त, सोहर, सोरठा आदि छँदों का प्रयोग किया है।
- ▶ तुलसी ने अपने काव्य में तत्कालीन युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति की आलोचना करके प्रशंसनीय रूप में उनका चित्रण किया है।
- ▶ तुलसी ने प्रकृति का चित्रण आलंबन और उद्दीपन रूप में किया है।
- ▶ तुलसी ने काव्य की दोनों शैलियों, प्रबन्ध (महाकाव्य) और मुक्तक (खंड काव्य) में काव्य रचना की है।
- ▶ तुलसी कृत श्री रामचरितमानस करोड़ों हिन्दुओं का अपना धर्म ग्रंथ है।
- ▶ तुलसी की भक्ति दास्य-भक्ति है।
- ▶ तुलसी कृत श्री रामचरितमानस में स्पंदित मानस असल में भारत का मानस है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रस्तुत दोहा किसका है?
2. तुलसी का कीर्ति स्तंभ क्या है?
3. तुलसीदास के गुरु कौन है?
4. तुलसी की भाषा क्या है?
5. श्री रामचरितमानस कितने काण्डों में विभक्त हैं?
6. तुलसी की भक्ति कैसे थे?
7. तुलसी कैसे कवी थे?
8. तुलसी के बचपन का नाम क्या था।

Answers / उत्तर

1. गोस्वामी तुलसीदास
2. श्री रामचरित मानस
3. बाबा नरहरिदास
4. साहित्यिक अवधी
5. सात काण्ड
6. दास्य-भक्ति

7. तुलसी समन्वयकारी कवि हैं।
8. तुलसी के बचपन का नाम रामबोला था।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी साहित्य में तुलसीदास का स्थान निर्धारित कीजिए।
2. तुलसी दास की भक्ति भावना की विशेषताएँ लिखिए।
3. तुलसीदास का जीवन परिचय और रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
4. पठित दोहे के अनुसार समझाइए कि हनुमान एक उत्तम राम-भक्त हैं।
5. प्रस्तुत दोहे के हनुमान-भरत संवाद को एक पटकथा के रूप में रूपांतरित कीजिए।
6. रामचरितमानस में चित्रित रामभक्ति पर टिप्पणी लिखें।
7. राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम– राम का कार्य क्या है, सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए?

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
3. विश्वकवि तुलसी और उनके प्रमुख काव्य – डॉ. राम प्रसाद मिश्र।
4. परम्परा का मूल्यांकन – डॉ. रामविलास शर्मा।
5. महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ – डॉ. भगीरथ मिश्र।
6. गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
7. तुलसीदास – डॉ. रामचन्द्र तिवारी।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 4

मीरा बाई के पद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्तिकाल की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री से परिचय होता है
- विरह की गायिका से परिचय प्राप्त होता है
- मीरा बाई के पदों की विशेषताओं से परिचय होता है
- मीरा बाई की रचनाओं से अवगत होता है
- मीरा बाई की भक्ति को समझता है
- मीरा बाई की व्यक्तित्व को समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्ति काल की स्वर्णिम चमक के पीछे कई संतों, आचार्यों, महात्माओं एवं कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें कृष्ण भक्त कवियों का स्थान अद्वितीय है। सगुण या निर्गुण हो, राम भक्त हो या कृष्ण भक्त, ज्ञानमार्गी हो या प्रेममार्गी– उनके निस्वार्थ कर्म से भक्ति-मुक्ति तथा शांति सर्वत्र व्याप्त हुई। अलग-अलग धाराओं के रूप में बहकर भी उसका उद्भव और विलयन एक ही स्थान पर हुआ। अर्थात भक्ति अलग-अलग होने पर भी सब धाराएँ एक ही परमात्मा में विलीन हो गयी। मीराबाई भक्ति काल की कृष्ण भक्ति धारा की श्रेष्ठ कवयित्री हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

विरह वेदना, पति भावना, कृष्ण के साथ अनन्य प्रेम

Discussion / चर्चा

मीरा बाई भगवान श्रीकृष्ण की सबसे बड़ी भक्त मानी जाती है। मीरा बाई ने जीवनभर भगवान कृष्ण की भक्ति की, और कहा जाता है कि उनकी मृत्यु भी भगवान की मूर्ति में समा कर हुई थी। मीरा बाई की जयंती पर कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड तो नहीं हैं, लेकिन हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार, शरद पूर्णिमा के दिन को मीराबाई की जयंती के रूप में मनाया जाता है। मीरा बाई के जीवन से जुड़ी कई बातों को आज भी रहस्य माना जाता है।

मीरा बाई जोधपुर, राजस्थान के मेड़वा राजकुल की राजकुमारी थीं। मीराबाई मेड़ता महाराज के छोटे भाई रतन सिंह की एकमात्र संतान थीं। मीरा जब केवल दो वर्ष की थीं, उनकी माता की मृत्यु हो गई। इसलिए इनके

दादा राव दूदा उन्हें मेड़ता ले आए और अपनी देख-रेख में उनका पालन- पोषण किया। मीराबाई का जन्म 1498 के लगभग हुआ था।

इतिहास में कुछ जगह ये मिलता है कि मीरा बाई ने तुलसीदास को गुरु बनाकर रामभक्ति भी की। कृष्ण भक्त मीरा ने राम भजन भी लिखे हैं, हालांकि इसका स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं मिलता है, लेकिन कुछ इतिहासकार ये मानते हैं कि मीराबाई और तुलसीदास के बीच पत्रों के जरिए संवाद हुआ था। माना जाता है मीराबाई ने तुलसीदास जी को पत्र लिखा था कि उनके घर वाले उन्हें कृष्ण की भक्ति नहीं करने देते। श्रीकृष्ण को पाने के लिए मीराबाई ने अपने गुरु तुलसीदास से उपाय मांगा। तुलसी दास के कहने पर मीरा ने कृष्ण के साथ ही रामभक्ति के भजन लिखे। जिसमें सबसे प्रसिद्ध भजन है पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

मीराबाई का मन बचपन से ही कृष्ण-भक्ति में रम गया था। मीराबाई के बालपन से ही कृष्ण की छवि बसी थी इसलिए यौवन से लेकर मृत्यु तक उन्होंने कृष्ण को ही अपना सब कुछ माना। उनका कृष्ण प्रेम बचपन की एक घटना की वजह से अपने चरम पर पहुँचा था। बाल्यकाल में एक दिन उनके पड़ोस में किसी धनवान व्यक्ति के यहाँ बारात आई थी। सभी स्त्रियां छत पर खड़ी होकर बारात देख रही थीं। मीराबाई भी बारात देखने के लिए छत पर आ गईं। बारात को देख मीरा ने अपनी माता से पूछा कि मेरा दूल्हा कौन है इस पर मीराबाई की माता ने उपहास में ही भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति की तरफ़ इशारा करते हुए कह दिया कि यही तुम्हारे दूल्हा हैं यह बात मीराबाई के बालमन में एक गांठ की तरह समा गई और वे कृष्ण को ही अपना पति समझने लगीं।

विवाह योग्य होने पर मीराबाई के घर वाले उनका विवाह करना चाहते थें, लेकिन मीराबाई श्रीकृष्ण को पति मानने के कारण किसी और से विवाह नहीं करना चाहती थी। मीराबाई की इच्छा के विरुद्ध जाकर उनका विवाह मेवाड़ के राजकुमार भोजराज के साथ कर दिया गया।

विवाह के कुछ साल बाद ही मीराबाई के पति भोजराज की मृत्यु हो गई। पति की मौत के बाद मीरा को भी भोजराज के साथ सती करने का प्रयास किया गया, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं हुई। इसके बाद मीरा वृंदावन और फिर द्वारिका चली गई। वहां जाकर मीरा ने कृष्ण भक्ति की और जोगन बनकर साधु-संतों के साथ रहने लगीं।

पति की मृत्यु के बाद मीरा की भक्ति दिनों-दिन बढ़ती गई। मीरा मंदिरों में जाकर श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने घंटो तक नाचती रहती थीं। मीराबाई की कृष्ण भक्ति उनके पति के परिवार को अच्छा नहीं लगा। उनके परिजनों ने मीरा को कई बार विष देकर मारने की भी कोशिश की। लेकिन श्रीकृष्ण की कृपा से मीराबाई को कुछ नहीं हुआ।

कहते हैं कि जीवनभर मीराबाई की भक्ति करने के कारण उनकी मृत्यु श्रीकृष्ण की भक्ति करते हुए ही हुई

थीं। मान्यताओं के अनुसार वर्ष 1547 में द्वारका में वो कृष्ण भक्ति करते-करते श्रीकृष्ण की मूर्ति में समा गईं थी।

मान्यता है कि मीरा पूर्व-जन्म में वृंदावन की एक गोपी थीं और उन दिनों वह राधा की सहेली थीं। वे मन ही मन भगवान श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं। गोप से विवाह होने के बाद भी उनका लगाव श्रीकृष्ण के प्रति कम न हुआ और कृष्ण से मिलने की तड़प में ही उन्होंने प्राण त्याग दिए। बाद में उसी गोपी ने मीरा के रूप में जन्म लिया।

मीराबाई की भक्ति

मीरा की भक्ति में माधुर्य- भाव काफी हद तक पाया जाता था। वह अपने इष्टदेव कृष्ण की भावना प्रियतम या पति के रूप में करती थी। उनका मानना था कि इस संसार में कृष्ण के अलावा कोई पुरुष है ही नहीं।

मीराबाई रैदास को अपना गुरु मानते हुए कहती हैं-

"गुरु मिलिया रैदास दीन्ही ज्ञान की गुटकी"।

इन्होंने अपने बहुत से पदों की रचना राजस्थानी मिश्रित भाषा में की है। इसके अलावा कुछ विशुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा में भी लिखा है। इन्होंने जन्मजात कवयित्री न होने के बावजूद भक्ति की भावना में कवयित्री के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। मीरा के विरह गीतों में समकालीन कवियों की अपेक्षा अधिक स्वाभाविकता पाई जाती है। इन्होंने अपने पदों में श्रृंगार और शांत रस का प्रयोग विशेष रूप से किया है। मीरा की फुटकल रचनाओं और पदों का संग्रह 'मीराबाई की पदावली' नाम से किया गया है।

काव्य शैली या भाषा शैली

मीराबाई के काव्य में उनके हृदय की सरलता, तरलता तथा निश्छलता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। मीराबाई ने गीति काव्य की रचना की तथा उन्होंने कृष्णभक्त कवियों की परम्परागत पदशैली को अपनाया। मीराबाई के सभी पद संगीत के स्वरों में बंधे हुए हैं। उनके गीतों में उनकी आवेशपूर्ण आत्माभिव्यक्ति मिलती है। प्रियतम के समक्ष आत्म-समर्पण की भावना तथा तन्मयता ने उनके काव्य को मार्मिक तथा प्रभावोत्पादक बना दिया है।

कृष्ण के प्रति प्रेमभाव की व्यंजना ही मीराबाई की कविता का उद्देश्य रहा है। मीरा जीवन-भर कृष्ण की वियोगिनी बनी रहीं। उनके काव्य में हृदय की आवेशपूर्ण विह्वलता देखने को मिलती है। मीरा की काव्य-भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा के निकट है तथा उस पर राजस्थानी, गुजराती, पश्चिमी हिन्दी और पंजाबी का प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। उनकी काव्य-भाषा अत्यन्त मधुर, सरस और प्रभावपूर्ण है। पाण्डित्य-प्रदर्शन करना मीरा का कभी भी उद्देश्य नहीं रहा। कृष्ण के प्रति उनके अगाध प्रेम ने ही उन्हें कृष्णकाव्य के समुन्नत स्थल तक पहुँचाया।

भाव पक्ष और कला पक्ष

पाण्डित्य-प्रदर्शन करना मीराबाई का कभी भी उद्देश्य नहीं रहा। कृष्ण के प्रति उनके अगाध प्रेम ने ही उन्हें कृष्णकाव्य के समुन्नत स्थल तक पहुँचाया। मीराबाई के काव्य में उनके हृदय की सरलता, तरलता तथा निश्छलता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

भाव पक्ष

मीराबाई ने गोपियों की तरह कृष्ण को अपना पति माना और गोपियों की ही भाँति मीरा माधुर्य भाव से कृष्ण की उपासना करती थीं। मीरा का जीवन कृष्णमय था और सदैव कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी। मीरा ने 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई, जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।' कहकर पूरे समर्पण के साथ भक्ति की। मीरा के काव्य में विरह की तीव्र मार्मिकता पाई जाती है। विनय एवं भक्ति संबंधी पद भी पाए जाते हैं। मीरा के काव्य में श्रृंगार तथा शांत रस की धारा प्रवाहित होती है।

कला पक्ष

मीराबाई कृष्ण भक्त थी। काव्य रचना मीरा का कभी भी उद्देश्य नहीं रहा, इसलिए मीरा का कला पक्ष अनगढ़ है साहित्यिक ब्रजभाषा होते हुए भी उन पर राजस्थानी, गुजराती भाषा का विशेष प्रभाव है। मीराबाई ने गीति काव्य की रचना की तथा उन्होंने कृष्णभक्त कवियों की परम्परागत पदशैली को अपनाया। मीराबाई के सभी पद संगीत के स्वरों में बँधे हुए हैं। उनके गीतों में उनकी आवेशपूर्ण आत्माभिव्यक्ति मिलती है। संगीतात्मक प्रधान है श्रृंगार के दोनों पक्षों का चित्रण हुआ है। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है। सरलता और सहजता ही मीरा के काव्य के विशेष गुण हैं।

मीरा बाई की ग्यारह रचनाओं के नामः

1. गीत गोविन्द की टीका।
2. नरसी जी का मायरा।

3. राग सोरठ का पद।
4. राग मलहार।
5. सत्यभामानु रूसणं
6. राग गोविन्द।
7. मीरा की गरबी।
8. रुक्मणि मंगल।
9. नरसी मेहता की हुंडी।
10. चरित
11. स्फुट पद।

मीरा बाई के पदः

“बसो मोरे नैनन में नंदलाल

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक दिये भाल

मोहनी मुरति सांवरी सूरति, नैना बने बिसाल

अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल

छुद्र घंटिका कटि तट शोभित, नूपुर सबद रसाल

मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल।”

मीराबाई के पद की व्याख्याः

उपरोक्त पद में मीराबाई श्री कृष्ण से कहती हैं कि हे श्री हरि आप सदा ही मेरे नैनों में निवास करिए। मेरी कामना है कि आपका मनमोहन रूप सदा ही मेरे आंखों में बसा रहे। मस्तक पर मोर मुकुट और कानों में कुंडल सुशोभित हो रहा है और माथे पर लाल रंग का तिलक लगाए हुए आप अत्यंत मनमोहक लग रहे हैं।

आपके सांवले रंग पर आपकी हिरनी जैसी मनमोहक आंखें सुंदरता को और भी बढ़ा देती हैं। अपने होठों से अमृत की वर्षा करने वाले मुरली को बजाते हुए आप बड़े अच्छे लगते हैं। गले में बैजन्ती की माला बड़ी लुभावनी लगती है।

मुरली मनोहर आपके कमर और पैरों पर लगी हुई छोटी सी मधुर घंटी से उत्पन्न होने वाला स्वर बहुत ही कर्ण प्रिय है। मीराबाई कहती हैं, कि श्री कृष्ण अपने सभी भक्तों का ख़याल रखते हैं और संतो को सुख प्रदान करते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

मीरा बाई की भक्ति माधुर्य भाव की है। मीरा ने प्रेम के अत्यन्त प्रवीण एवं अनुभूतीमय चित्रण उकेरे हैं। उनके पदों में वियोगजन्य दुख नापना कोई सुगम काम नहीं है। मीरा के पदों में रहस्यात्मकता है। मिलन, उत्सुकता, आशा, और प्रतीक्षा आदि उनके पदों में समाहित है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्तिकाल।
- सगुण भक्ति।
- कृष्ण भक्ति।
- श्रेष्ठ कवयित्रि मीरा बाई।
- पति भावना।
- प्रमुख रचनाएँ।
- विरह की गायिका।
- पद की विशेषता।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवयित्री कौन है?
2. मीरा बाई की भक्ति भावना किस प्रकार की है?
3. राग गोविन्द किसकी रचना है?
4. विरह की गायिका कौन है?
5. मीरा बाई किसको अपना पति मानती हैं?
6. मीराबाई का जन्म कब हुआ ?
7. मीराबाई का विवाह किसके साथ हुआ ?
8. मीराबाई की पदों की भाषा क्या थी?

Answers / उत्तर

1. मीरा बाई।
2. कृष्ण को पति के रूप में मानना।
3. मीरा बाई।
4. मीरा बाई।
5. भगवान कृष्ण को।
6. 1498
7. मेवाड़ के राजकुमार भोजराज के साथ।
8. राजस्थानी मिश्रित भाषा

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. मीरा बाई और उनके पद– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
2. भक्तिकाल की श्रेष्ठ कवयित्री मीराबाई की भक्ति पद्धति का परिचय दीजिए।
3. मीराबाई के पद की विशेषताएँ क्या हैं?
4. समर्थन कीजिए कि मीरा बाई विरह की गयिका है।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहासः सं. नगेन्द्र।
2. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिव कुमार शर्मा।
3. आधुनिक काल पूर्व हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. हेतु भारद्वाज।

BLOCK - 03

द्विवेदी युगीन कविता

इकाई 1

मनुष्यता

मैथिली शरण गुप्त

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदी-युगीन काव्य के क्षेत्र में मैथिली शरण गुप्त के स्थान के बारे में समझता है
- मैथिली शरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' की विशेषता समझता है
- 'मनुष्यता' कविता में चित्रित मानवीय मूल्यों से अवगत हो जाता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य के वास्तविक गुणों से परिचित कराया है। कवि के कथनानुसार, मनुष्य तभी मनुष्य कहलाने लायक है, जब उसमें परहित-चिंतन के गुण हों। मनुष्य का जीवन वास्तव में परहित के लिए न्यौछावर हो जाने पर ही सफल है। ऐसे व्यक्ति को संसार याद रखता है। यदि मनुष्य परहित के लिए स्वयं को समर्पित नहीं करता तो उसका जीवन व्यर्थ है।

प्रकृति के समस्त प्राणियों में से केवल मनुष्य के पास ही विवेक है। मृत्यु की सार्थकता भी दूसरों के लिए कुर्बान होने में है। गुप्त ने इस कविता में महान परोपकारी व्यक्तियों; यथा दधीचि, रंतिदेव, उशीनर, कर्ण आदि का उदाहरण देते हुए अपने तथ्य को स्पष्ट करते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मैथिलीशरणगुप्त, मनुष्यता, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, मानवीय मूल्य

Discussion / चर्चा

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) का जन्म चिरगांव (झांसी) में हुआ था। ये द्विवेदी-काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। गुप्त जी की आरम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलनेवाली पत्रिका 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थीं। बाद में इनका परिचय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी से हुआ और इनकी कविताएं 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदी जी के आदेश और उपदेश तथा स्नेहमय प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप इनकी काव्य-कला में निखार आया। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किन्तु इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत भारती' (1912) है। 'भारत-भारती' ने हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएं प्रबुद्ध की और तभी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। गुप्त जी मातृभूमि को केवल भूमि खण्ड नहीं, अपितु 'सगुण मूर्ति सर्वेश की' मानते हैं।

गुप्त जी ने 'तिलोत्तमा', 'चन्द्रहास' और 'अनघ'

नामक तीन नाटक, प्रायः सभी प्रकार के प्रगीत और मुक्तक भी लिखे हैं। किन्तु नाटकों, प्रगीतों और मुक्तकों में ये वैसी भाव-सृष्टि नहीं कर पाये, जैसी कि प्रबन्धकाव्यों में। वस्तुतः ये मूलतः प्रबन्धकार थे- अन्य साहित्य-रूपों में इनकी प्रतिभा को उचित विकास नहीं मिला। खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और विकास में इनका अन्यतम योगदान है। वास्तव में उसे काव्योपयुक्त रूप प्रदान करनेवालों में ये अग्रगण्य थे। यहाँ तक कि इनकी आरम्भिक रचना 'जयद्रथ वध' में भी खड़ीबोली का सरस-मधुर और प्रांजल रूप मिलता है। भारतीय संस्कृति के ये अनन्य प्रस्तोता थे। किन्तु अन्धानुकरण की प्रवृत्ति इनमें नहीं थी, कालान्तर में आ जानेवाली विकृतियों से इनके साहित्य का सांस्कृतिक पृष्ठाधार एकदम मुक्त है। दूसरे, अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं में आस्था रखने पर भी इन्होंने युगधर्म की कभी उपेक्षा नहीं की। भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता होने के साथ-साथ ये नवीन भारत के राष्ट्रीय कवि भी थे। इनकी प्रायः सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं। उत्तर भारत में राष्ट्रीयता के प्रचार और प्रसार में 'भारत-भारती' के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। इनकी परवर्ती रचनाएँ भी असन्दिग्ध रूप से राष्ट्र -भावना से परिपूर्ण हैं। गुप्त जी के प्रमुख काव्य-ग्रन्थ हैं – जयद्रथ वध (1910), भारत-भारती (1992), पंचवटी (1925), झंकार (1929), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जयभारत (1952), विष्णुप्रिया (1957) सैरंध्री (1927) आदि।

'प्लासी का युद्ध' 'मेघनाद वध', 'वृत्र-संहार' आदि इनके द्वारा अनूदित काव्य हैं।

गद्य नाटक : तिलोत्तमा, चंद्रहास, उद्धार

अनुदित रचनाएँ (मधुप के नाम से प्रकाशित हैं)

संस्कृत – स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिमा, अभिषेक, (भास) रत्नावली (हर्षवर्धन)- नाटक

बंगाली – मेघनाथ वध , विरहिणी वज्रांगना (माइकल मधुसूदन दत्त)

फारसी – रूबाइयात उमर खय्याम (उमर खय्याम)

गुप्त जी जन-भावना के प्रतीक हैं। किसी सात्विक, विनयशील, विनम्र और स्वाभिमान की भावना से परिपूर्ण गांधीवादी व्यक्तित्व के दर्शन करने हों तो हमें मैथिलीशरण गुप्त को जानना होगा।

जन्म – 3 अगस्त 1883 चिरगांव (झांसी)
मृत्यु – 12 दिसंबर 1964

मनुष्यता - मैथिलीशरण गुप्त

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।
हुई न यों सु–मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये,
मरा नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु–प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखण्ड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।।

क्षुधार्थ रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है वही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरूद्धवाद बुद्ध का दया–प्रवाह में बहा,
विनीत लोक वर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वहीं मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन हैं यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े–बड़े।
परस्परावलम्ब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

'मनुष्य मात्र बन्धु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरूष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

अर्थ

मर्त्य	=	मरणशील
पशु-प्रवृत्ति	=	पशु जैसा स्वभाव
उदार	=	दानशील / सहृदय
कृतार्थ	=	आभारी / धन्य
कीर्ति	=	यश
कूजती	=	मधुर ध्वनि करती
क्षुधार्त	=	भूख से व्याकुल
रंतिदेव	=	एक परम दानी राजा
करस्थ	=	हाथ में पकड़ा हुआ / लिया हुआ
दधीचि	=	एक प्रसिद्ध ऋषि जिनकी हड्डियों से इंद्र का वज्र बना था
परार्थ	=	जो दूसरों के लिए हो
अस्थिजाल	=	हड्डियों का समूह
उशीनर	=	गंधार देश का राजा
क्षितीश	=	राजा
स्वमांस	=	अपने शरीर का मांस
कर्ण	=	दान देने के लिए प्रसिद्ध कुंती पुत्र
महाविभूति	=	बड़ी भारी पूँजी
वशीकृता	=	वश में की हुई
विरूद्धवाद बुद्ध का दया प्रवाह में बहा	=	बुद्ध ने करूणावश उस समय की पारंपरिक मान्यताओं का विरोध किया था
मदांध	=	जो गर्व से अंधा हो
वित्त	=	धन-संपत्ति
परस्परावलंब	=	एक दूसरे का सहाय
अमर्त्य अंक	=	देवता की गोद
अपक	=	कलंक रहित
स्वयंभू	=	परमात्मा / स्वयं उत्पन्न होने वाला
अंतरैक्य	=	आत्मा की एकता / अंतःकरण की एकता
प्रमाणभूत	=	साक्षी
अभीष्ट	=	इच्छित
अतर्क	=	तर्क से परे
सतर्क पंथ	=	सावधान यात्री

सारांश

मानव में निहित मनुष्यता का गुण उसे अन्य प्राणियों से अलग करता है। मनुष्य का यह गुण स्वार्थी होने से उसे रोकता है तथा दूसरों के लिए भी जीने-मरने केलिए प्रेरित करता है। मनुष्यता अनेक सद्‌गुणों का समाहार है, जैसे-परोपकार, उदारता, दान, दया, सहानुभूति, विश्वबंधुत्व, प्रेम आदि। मैथिलीशरण गुप्त की मनुष्यता शीर्षक कविता इन गुणों को उजागर करती है। कवि के अनुसार इनमें किसी भी गुण हो तो मनुष्य संसार में अमर हो जाता है। मनुष्यता विहिन मानव को कवि मनुष्य मानने को तैयार नहीं है।

कवि कहता है कि हे मनुष्यो ! यह अच्छी प्रकार विचार कर लो कि मानव-जीवन नश्वर है। अतः मृत्यु निश्चित है। यदि मृत्यु निश्चित है तो तुम्हें उससे डरना नहीं चाहिए, बल्कि ऐसी गौरवशाली मृत्यु प्राप्त करनी चाहिए कि मरने के बाद भी सब याद करें। ऐसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा जाता है। यदि तुम्हें ऐसी गौरवशाली सुमृत्यु प्राप्त न हुई तो तुम्हारा जीना-मरना व्यर्थ है। सुमृत्यु परोपकार से प्राप्त होती है; क्योंकि जो अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीता है, वह मरकर भी नहीं मरता। परोपकारी अमर हो जाता है। केवल अपने लिए ही जीना तो पशुओं का स्वभाव है। मनुष्य तो वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

उदारता को मनुष्यता का महत्त्वपूर्ण गुण मानते हुए गुप्त जी कहते हैं कि उदार व्यक्तियों की कथाएँ ही पुस्तकों में छपती हैं और लोगों की वाणी उनका ही बखान करती है। उदार व्यक्ति के जन्म से यह पृथ्वी धन्य हो जाती है। उसका यश सदैव अमर रहता है, और यह सारा संसार उसकी पूजा करता है। इसका कारण यह है कि उदार व्यक्ति अपने उदारतापूर्ण कार्यों से संसार में विश्वबंधुत्व और मित्रता की भावना को भर देता है। ऐसा उदार व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। क्योंकि मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

परोपकारियों और त्यागियों का उदाहरण देते हुए गुप्त जी कहते हैं कि भूख से व्याकुल राजा रंतिदेव ने अपने हाथ पर रखा भोजन का थाल घर आए भिक्षुक को दे दिया और स्वयं भूखे रहे। महर्षि दधीचि ने जन-कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ देवताओं को दे दीं। राजा उशीनर ने एक छोटे-से पक्षी कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस काटकर दे दिया था। दानवीर कर्ण ने अपना प्राणरक्षक कवच भी माँगने वाले इंद्र को दान कर दिया। इन सब परोपकारी-जनों को पता था कि यह शरीर नश्वर है, इसलिए इसे परोपकार में लगा देना चाहिए। कवि कहते हैं कि यह शरीर नश्वर है।

मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि सहानुभूति अर्थात् करुणा भी मनुष्यता का आवश्यक गुण है। यह गुण मनुष्य की महान पूँजी है। करुणा एक ऐसा गुण है, जिसके द्वारा सारा संसार स्वयं ही वशीभूत हो जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बुद्ध का अन्य धर्मों ने जो विरोध किया था, वह उनकी करुणा की धारा में बह गया था। अपने दया-भाव से उन्होंने सारे संसार को अपना अनुयायी बना लिया था। कवि कहता है कि यह भाव केवल परोपकारी-जनों के हृदय में ही उत्पन्न होता है अर्थात् जो दूसरों की भलाई करता है, वही उदार और दयालु होता है। वास्तव में वही मनुष्य है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

गुप्त जी कहते हैं कि तुम सब सामने आने वाली विपत्तियों और विघ्न बाधाओं को एक ओर ढकेलते हुए प्रसन्नतापूर्वक हँसी-खुशी से अपने-अपने अभीष्ट मार्ग पर बढ़ते चलो। सभी पंथ, संप्रदाय और धर्म इस बात के प्रति सतर्क (सावधान) रहें कि भले ही संसार में कितने भी धर्म, संप्रदाय हों, लेकिन सबका निर्विवाद मार्ग एक ही है अर्थात् सब ईश्वर की ओर ही जाते हैं। अतः तुम्हें ध्यान रखना है कि विभिन्न मार्गों पर चलते हुए भी तुम्हारा परस्पर हेलमेल (मित्रभाव) कम न हो और आपस में भेदभाव न बढ़े। मनुष्य की समर्थता तभी है, जब वह स्वयं भी पार उतरे और दूसरों को भी उतारे क्योंकि वास्तव में मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

Critical Overview / अवलोकन

मैथिलीशरण गुप्त की मनुष्यता शीर्षक कविता मानवीय मूल्यों को उजागर करती है। कवि सहानुभूति एवं परोपकार जैसे मूल्यों की विभिन्न प्रसंगों के द्वारा स्थापित करता है। कवि का मानना है कि मनुष्यता अनेक सद्‌गुणों का समाहार है, जैसे-परोपकार, उदारता, दान, दया, सहानुभूति, विश्वबंधुत्व, प्रेम आदि।

कवि के अनुसार सुमृत्यु परोपकार से प्राप्त होती है; क्योंकि जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीता है, वह

मरकर भी नहीं मरता। मात्र अपने लिए जीना पशु-प्रवृत्ति है। दूसरों केलिए जीनेवाला अर्थात् परोपकारी अमर हो जाता है। उदार व्यक्ति अपने उदारतापूर्ण कार्यों से संसार में विश्वबंधुत्व और मित्रता की भावना को भर देता है। ऐसा उदार व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है।

वस्तुतः परोपकारियों और त्यागियों का उदाहरण देते हुए गुप्त जी कहते हैं शरीर नश्वर है, इसलिए इसे परोपकार में लगा देना चाहिए। दूसरों की भलाई जो करता है, वही उदार और दयालु होता है। मनुष्य की समर्थता तभी है, जब वह स्वयं भी पार उतरे और दूसरों को भी उतारे क्योंकि वास्तव में मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है। यहाँ जनता में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने की कोशिश है।

Recap / पुनरावृत्ति

- द्विवेदी-युगीन काव्य की भाषा पूर्णः खड़ीबोली थी।
- मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय जीवन को समग्रता से समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है।
- ‘राम चरित मानस’ के पश्चात् हिन्दी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण - कृत ‘साकेत’ ही है।
- मनुष्यता अनेक सद्गुणों का समाहार है
- शरीर नश्वर है, इसलिए इसे परोपकार में लगा देना चाहिए।
- परोपकारियों और त्यागियों का उदाहरण देते हुए गुप्त जी राष्ट्रीय भावना को जागृत करते हैं।
- उदार व्यक्ति संसार में विश्वबंधुत्व और मित्रता की भावना को भर देता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘राम चरित मानस’ के पश्चात् हिन्दी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ कौन है?
2. मैथिलीशरण गुप्त ने कितनी महाकाव्यों की रचना की हैं?
3. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कहाँ हुआ था?
4. आधुनिक युग में प्रबन्धकाव्य की विलोपमान परम्परा के संरक्षक कौन हैं ?
5. द्विवेदी-युगीन काव्य की भाषा कौन-सी थी?
6. ‘रंग में भंग’ का प्रकाशन कब हुआ?
7. द्विवेदी-युग से पूर्व कविता के क्षेत्र में मुख्य विषय क्या थे?
8. मैथिलीशरण गुप्त की ख्याति का मूलाधार ग्रंथ कौन-सा है?

Answers / उत्तर

1. मैथिलीशरण गुप्त
2. दो महाकाव्यों की।
3. चिरगांव (झांसी) में
4. मैथिलीशरण गुप्त जी।
5. खड़ीबोली।
6. सन् 1909

7. श्रृंगार और देश भक्ति
8. 'भारत भारती'

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिए।
2. मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' में अभिव्यक्त उदारता पर विचार प्रकट कीजिए ।
3. 'मनुष्यता' कविता में निहित संदेश पर टिप्पणी लिखिए।
4. मैथिलीशरण गुप्ता के राष्ट्रभावना पर चर्चा कीजिए।
5. मनुष्यता कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता पर विचार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिंदी काव्य-संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
3. हिन्दी साहित्य का उद्भव व विकास – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. परम्परा का मूल्यांकन – डॉ. रामविलास शर्मा
7. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।

इकाई 2

मिलन

राम नरेश त्रिपाठी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कविता "मिलन' के चौथे परिच्छेद' से परिचय प्राप्त करता है
- राम नरेश त्रिपाठी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- राम नरेश त्रिपाठी की भाषा-शैली, भावपक्ष और कला पक्ष आदि से परिचय प्राप्त करता है
- राष्ट्र के प्रति राम नरेश त्रिपाठी के दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी की द्विवेदीयुगीन काव्य-परम्परा में कविवर रामनरेश त्रिपाठी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वच्छन्द भावधारा के प्रवेश की प्रारम्भिक पृष्ठभूमि में त्रिपाठी जी प्रस्तुत काव्यधारा की विशेषताओं से प्रभावित होकर काव्य-जगत के प्रांगण में अवतरित हुए। अपनी प्रखर प्रतिभा द्वारा हिन्दी-साहित्य के सभी अंगों पर आपने अपनी सफल लेखनी चलाई। हिन्दी के खण्डकाव्य क्षेत्र को भी आपने अपने मनोज्ञ काव्यों से सजाया। आपके प्रख्यात तीन खण्डकाव्य हैं- 'मिलन', 'पथिक' तथा 'स्वप्न' - जो हिन्दी साहित्य की गौरव निधियाँ हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में- 'काव्य के क्षेत्र में जिस स्वाभाविक स्वच्छन्दता का आभास पं. श्रीधर पाठक ने दिया था, उसके पथ पर चलने वाले द्वितीय उत्थान में त्रिपाठी जी दिखाई पड़े। 'मिलन', 'पथिक और 'स्वप्न' नामक इनके तीनों खण्डकाव्यों में इनकी कल्पना ऐसे मर्मपथ पर चली है, जिस पर मनुष्य मात्र का हृदय स्वभावतः ढलता आया है। ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओं के भीतर न बँधकर अपनी भावना के अनुकूल स्वच्छन्द संचरण के लिए कवि ने नूतन कथाओं की उद्भावना की है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रामनरेश त्रिपाठी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, देश प्रेम, खण्डकाव्य मिलन

Discussion / चर्चा

पं. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई. को जौनपुर जिले के कोइरीपुर में हुआ था। आपके पिता पंडित रामदत्त त्रिपाठी धार्मिक एवं कर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे। इनकी स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक ही चल सकी। जीवन के प्रारम्भिक काल से ही ये हिन्दी की सेवा करने में लग गये थे। उन्होंने साहित्य सेवा को ही जीवन का लक्ष्य बनाया। त्रिपाठी जी का काव्य आदर्शवादी है। छायावादी काव्य के सौन्दर्य की झलक भी उनकी कविता में है।

देश-प्रेम आपके काव्य का मूल आधार है। ग्राम्य-गीतों का संकलन आपके श्रम का प्रतीक है। ये मानव प्रेम के पक्षधर तथा प्रकृति चित्रण के कुशल चितेरे हैं। त्रिपाठी जी ने लोकगीतों का संग्रह किया था। सन् 1962 में इनका स्वर्गबास हो गया।

रचनाएँ:-

त्रिपाठी जी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार थे। उन्होंने काव्य, नाटक, कहानी, निबन्ध और आलोचना सम्बन्धी अनेक कृतियाँ लिखीं। इनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं:-

(1) खण्डकाव्य - 'पथिक', 'मिलन', 'स्वप्न'।

(2) कविताओं का संग्रह - 'मानसी'।

(3) सम्पादित- 'कविता कौमुदी' (छः भाग), 'ग्राम गीतों का संग्रह'।

रामनरेश त्रिपाठी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। देशभक्ति, माधुर्य, ग्राम्य जीवन, त्याग, बलिदान, प्रकृति, मानवता आदि आपके काव्य-विषय रहे हैं। उन्होंने आदर्शवादी काव्य की रचना करके देश को उत्थान की ओर प्रेरित किया है। वे रचनात्मक विचारधारा के पोषक कवि थे।

इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है। इनके द्वारा रचित 'पथिक' और 'मिलन' नामक खण्डकाव्य अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम तथा मानव सेवा की उत्कृष्ट भावनाएँ बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित हुई हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा और पवित्र प्रेम के सुन्दर चित्र भी इन्होंने अपनी कविताओं में चित्रित किये हैं।

प्रकृति-वर्णन के क्षेत्र में त्रिपाठी जी का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने प्रकृति को आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों में ग्रहण किया है। इनके प्रकृति-चित्रण की विशेषता यह है कि जिन दृश्यों का वर्णन इन्होंने किया है, वे इनके स्वयं देखे हुए अनुभूत दृश्य हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'पथिक', 'मिलन' और 'स्वप्न' (खण्ड काव्य), 'मानसी' (स्फुट कविता संग्रह), 'कविता- कौमुदी', 'ग्राम्य गीत' (सम्पादित), 'गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता'।

रामनरेश त्रिपाठी अपने खण्डकाव्यों में परोक्ष रूप से परतन्त्रता के बन्धन काटने का सन्देश देते हैं। इसी प्रकार अनेक कविताओं में पशु-बल की अवहेलना करते हुए निर्भयतापूर्वक स्वतन्त्रता के मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा दी गयी है। वस्तुतः द्विवेदीयुगीन कवियों ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से अतीत के गौरव का गान करते हुए देश की वर्तमान दशा पर क्षोभ प्रकट किया है।

एक ओर तो ये सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों एवं आडम्बरों पर फबतियां कसते हैं तथा दूसरी ओर अपनी सभ्यता, संस्कृति और परम्परा को तिलांजलि देनेवाले पाश्चात्य सभ्यता के अनुरागी को भी अपने परिहास और व्यंग्य का आलम्बन बनाते हैं। ब्रजराज कृष्ण को पाश्चात्य वेश-भूषा धारण करने का परामर्श देकर इन्होंने वस्तुतः विदेशियों की नकल करनेवाले भारतीयों का ही मज़ाक उड़ाया है

त्रिपाठी जी मननशील, विद्वान तथा परिश्रमी थे। ये द्विवेदी युग के उन साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने द्विवेदी मण्डल प्रभाव से पृथक रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा से साहित्य के क्षेत्र में कई कार्य किये। त्रिपाठीजी स्वच्छन्दतावादी कवि थे, ये लोकगीतों के सर्वप्रथम संकलनकर्ता थे। काव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना तथा लोक-साहित्य आदि विषयों पर इनका पूर्ण अधिकार था। त्रिपाठी जी आदर्शवादी थे।

मिलन - रामनरेश त्रिपाठी

परम प्रेम-पागलिनी विजया भरती श्राह उसास।
कई मास तक रही भटकती किया न कहीं निवास।।
यन बन में गाती फिरती थी चुनती फिरती फूल।
रटती हुई प्राणप्यारे को, गई जगत को भूल।।

पल्लव लता कुसुम कलियों को करती थी अति प्यार।
बन के पशु पक्षी से भी वह रखती प्रेम अपार।।

जा पहुँची पथ भूल एक दिन एक गाँव के पास।
था प्रभात का समय हर्ष का, पर था गाँव उदास।।

जाड़े के थे विवस, माघ का मास, भयानक शीत।
काँप रहे थे दीन घरों में वन-हीन भय-भीत।।
देखा, केवल चर्माच्छादित एक मनुज-कंकाल।
फटा पुराना एक अँगोछा पहने परम बिहाल।।

बाहुबद्ध कर पवस्तम्भ को चिन्ता-प्रसित अधीर।
घुटनौ-मध्य चिबुक रख कंपित थर थर अवल शरीर।।
श्राशा घरे धूप की उर में पीठ किये रवि-थोर।
बैठा है; पर हाय ! निर्दयी घिर श्राये घन घोर।।

इस पर भी चल पड़ा तीर सा तीक्ष्ण तुषारित पौन।
दाँत बज उठे, सिकुड़ गया वह तुहिन-निपीड़ित मौन।।
कहने लगा, "किया था मैंने हाय ! कौन सा पाप।
हे भगवान ! मिल रहा जिसका फल है यह सन्ताप"

वह सामने द्वार के अपने बैठा था अति दीन।
घर में उस की दुखिया गृहिणी थी तन छीन मलीन।।
बालक एक फूल मुरझा सा चिपकाये थी गोद।
उदासीनता दरिद्रता का था आमोद -प्रमोद।।

ओढ़ घास की बनी चटाई बिछा भूमि पर घास।
वे सोते थे पास पास ही प्रायः कर उपवास।।
उसी चटाई के नीचे से उठ वह नर कंकाल।
आ बैठा था घाम के लिये बाहर प्रातःकाल।।

विजया श्री बैठी ढिग उस के थर थर कम्पित गात।
विषम हृदय वेधक बहता था शीतल हिममय घात।।
विजया का हिम से विलोककर करुणोत्पादक हाल।
द्रवीभूत हो गया दया से वह मानव कंकाल।।

घर में जाकर निज गृहिणी से माँग चटाई घास।
ले आया पावक पड़ोस से भट विजया के पास।।
विजया को दो उढ़ा चटाई निकट जला दी आग।
विजया मोहित हुई देख कर उस गरीब का त्याग।।

उसने उसे पास बैठाया पूछा प्रेम समेत।
'क्यों भाई ! तुम बड़े दीन हो, क्या है इसका हेत' ?
बोला दीन उसास खींच कर, "मैं हूँ एक किसान।
साधारण खेती बारी से पाल रहा था प्राण।।

मैं हूँ, मेरी घरवाली है, गोद एक है बाल।
सुख दुख से थोड़ी आमद में कट जाता था काल।।
कई दिन हुये, एक लोकप्रिय सज्जन पर हो क्रुद्ध।
रच षड़यन्त्र राजदूतों ने उसके मानविरुद्ध।।

करना चाहा मुझे गवाही देने को तैयार।
पर मैंने असत्य भाषण से किया साफ़ इन्कार।।
इससे मुझ पर कुपित हुये वे करके कोप कराल।
मुझे फँसाया निरपराध ही झूठ बना कर जाल।

वा बरतन बिकवा कर घर में जो था माल।
सब धन लिया छीन निष्ठुर हो मैं अब हूँ कंगाल।।
है न एक दाना खाने को प्रायः कर उपवास।
सो जाता हूँ यही चटाई ओढ़ बिछाकर घास।।"

भर आई रोया सिसक किसान।
विजया भी सिर नीचा करके रोने लगी निवान।
मनमें कहने लगी- 'अहा ! है निपट गरीब किसान।
पर उदारता से भूषित है इसका हृदय महान।।

इनकी सेवा करना ही था प्रियतम का उद्देश।
अब मैं वही पूर्ण करने को घूमूँगी सब देश।।
इनके ऊपर पड़ी हुई है छाया श्रति प्रतिकूल।
उसे हटाने से ही होगा उन्नति का दृढ़ मूल।।

सेवा-धर्म मुख्य है जग में लोक-शांति प्रद् काज।
एक दीन ने प्रबल प्रेम की धार पलट दी श्राज।।
प्रियतम को ढूँढना यनों में है उन्मत्त प्रयास।
वास्तव में है दीन-जनों के सुख में उसका वास।।

प्रियतम ने भी कहा यही था कैसा वचन श्रमोल !
'जग ही में जाना जाता है मनुष्यता का मोल'।।
आश्वासन दे उस किसान को विजया उठ तत्काल।
गाँव गाँव में धूम देखने लगी देश का हाल।।

देखा सने उसी भाँति के अगणित नर-कङ्काल।
चिपके रीढ़ से जिनके बुध के पुत्र के गाल।।
विजया ने किया सुद्ध हो, कर प्रयत्न भरपूर।
तन मन दे इसे दीन देश का कष्ट करूँगी दूर।।

बहका कर इन बेचारों को ठगते हैं ठग लोग।
बदले में इनको देते हैं दंड दीनता रोग।
इनको धना ज्ञान से वंचित वे करते हैं राज।
हाय ! हाय ! इस श्रधम स्वार्थ पर पड़ी न अब लौ गाज।।

विजया सत्य प्रेम से अपना करके कायाकल्प चली
लोक-सेवा करने को होकर दृढ़ संकल्प
उस दिन से देखा न किसी ने फिर उसका वह रूप।
देख पड़ी वह एक गाँव में सन्यासिनी स्वरूप।।

लिये त्रिशूल हाथ में करने वली देश- उद्धार।
गाँव गाँव में लगी घूमने सेवाव्रत उर धार।।
द्वार द्वार पर जाकर विजया करुणा-प्रेम-निधान।
सब को लगी जगाने गाकर देशभक्ति मय गान।।

उसके गान अतीत काल के थे सुख रूप ललाम।
सुन करके आहे. भरते थे कृषक कलेजा थाम।।
उसके गान हृदय में भरते थे साहस उत्साह।
बतलाते थे स्वतन्त्रता को सुख पाने की राह।।

उसके गान-श्रवण की पक्षी पशु तक में थी चाह।
उनका भी कुराज्य में सुख से होता थान, निबाह।।
उसके गान मन्त्र थे मोहक सदगुण गए की खान।
जिसने सुना वही उठ बैठा, दूर त्रुश्रा अज्ञान।।

उसके गानों ने उपजाये सुदृढ साहसी शूर।
मिटा विरोध, समाजसे हुआ। दंभ द्वेष दुख दूर।।
उसके गान जधान श्रवण कर कायरपना बिसार।
होते थे स्वदेश-सेवा में मरने को तैयार।

जिसने भी सुन पाया उसका हृदय-विमोहक गान।
हुआ उसी का देश-प्रेम से पूरण सावित प्रान।।
देवी मान लोग करते थे श्राराधना सहर्ष।
उसे देख उनमें जगता था उन्नति का उत्कर्ष।। [२६]

विजया ने फिर गाँव गाँव में करके मङ्गल गान।
एक भाव में भरा सभी को सुना मनोहर तान।।
विजया गई हृदय लोगों का प्रेम-सुधा से सींच।
उसके बाद युवक आ पहुँचा उन गावों के बीच।। [२७]

उसने उन हृदयों में बोया स्वतन्त्रता का बीज।
सींचा उन हृदयों ने उसको स्वयं पसीज पसीज।।
मिलन नगर के आस पास मुनि देते थे व्याख्यान।
धर्म-स्वदेश-जाति—रक्षा को करते थे आह्वान।।

जागे लोग, सचेत हुये सब सुन मुनि का उपदेश।
हुये देश-रक्षा में सहने को सय केश।।
किया उन्होंने एक एक का देश-प्रेममय प्रान।
होने लगा वीर-मंडल में स्वतन्त्रता का गान।।

स्वतन्त्रता के लिये प्रजा जब उत्सुक हुई नितान्त।
तब मदांध श्राष्ट्रियन वृद ने सुन पाया वृत्तान्त।।
वे श्रतीव क्रोधातुर धाये दलबल सहित अपार।
करने लगे. उठे हृदयों पर भीषण अत्याचार।

धर विजया को, पकड़ युवा को, मुनि की डालो मार।
गाँव गाँव रिपुओं ने घेरा करते हुये पुकार।।
सहते सहते प्रजा थकी थी अरि के अत्याचार।
देख कष्ट निज हितैषियों का सकी नं क्रोध सँभार।।

निकली प्रजा मिलन की घर से क्रोधित सिंह समान।
जन्मभूमि की स्वतन्त्रता में होने को बलिदान।।
आकर मिला युवक भी उनमें बढ़ा. विपुल उत्साह।
हृदय हृदय में देशभक्ति का उमड़ा प्रबल प्रवाह।।

खड़े हुये निज बैर भूल कर भाई भाई साथ।
स्वतन्त्रतादायिनी खड्ग से भूषित थे सब हाथ।।
क्रुद्ध शत्रुओं ने जब देखा प्रजा हुई उद्दंड।
दौड़े परम कुद्ध देने की उसे यथोचित दंड।।

सुना पूर्वजों की गुणगाथा भर कर शौर्य अपार।
किया युवक ने सब लोगों को लड़ने को तैयार।।
बढ़े कुचलने को बैरी-गण मानो मत्त मतंग।
झपटे लोग सिंह सम, तब तो पलट गया सब ढंग।।

लोहू गर्म हुआ धीरों का फड़क उठे सब श्रङ्ग।
नशा वीरता का चढ़ आया देख रक्त का रंग।।
शस्त्र-सुसज्जित शत्रु अधिक थे अल्प प्रजा बलहीन।
युवक स्वयं श्राहत था यद्यपि दिखता था न मलीन।।

उखड़ रहे थे पैर प्रजा के छूट रहा था धीर।
इतने ही में मुनि श्रा पहुँचे लिये असंख्यक वीर।।

गरज उठे सब सिंहनाद से झपटे शस्त्र सँभाल।
टिक न सके, बैरी कुछ पिछड़े सह आक्रमण कराल।।

विजया भी भैरवी भेस में आई घर करवाल।
उसके साथ बहुत थे वे हा मंत्र-मुग्ध कंकाल।।
देख सामने विषम समस्या त्याग विजय की आस।
रिपु भयभीत प्राण-रक्षा का करने लगे प्रयास।।

आहत युवक थक गया, तन से निकल रहा था रक्त।
था तथापि वह शत्रु-मथन में पूर्ण रूप आसक्त।।
थका देख कर इस अवसर में उठा तीक्ष्ण तलवार !
एक ओर से एक शत्र ने किया अचानक वार।।

युवक न वार बना सकता था देख काल विकराल !
आगे बढ़ अपनी छाती पर ली मुनिने करवाल।।
तब तक अरि का शीश युवक ने मुड़कर लिया उतार।
पर मुनिकी गति देख यह चती आँखों से जलधार।।

विजया ने दूसरी थोर से कर भैरव हुंकार।
मार भगाया शत्रु-वृन्द को करके कठिन प्रहार।।
आगे आगे भगे दस्युगण पागल श्वान समान।
कंकालों ने उन्हें खदेड़ा कर में लाठी तान।।

मुनि थे अति प्रसन्न, उमड़ा था आँखों में आनन्द।
बोले, 'जीवन भर में मैं हूँ आज सुखी स्वच्छन्द।।
मेरे सम्मुख आज हमारे बैरी भागे हार।
देख स्वतन्त्र मिलन को मन में है आनन्द अपार।।

एक बार दुर्दम्य शत्रु से प्रजा गई है जीत।
तो वह सदा विजयिनी होगी, वैरी हैं भयभीत तुमने अपने पूज्य पिता का माना शुभ सन्देश।
व्रत स्वदेश सेवा का घर कर किया स्वतन्त्र स्वदेश।।

धन्य भाग्य है, पुत्र ! तुम्हारा जीवन हुआ पवित्र।
तुम से हुआ यशस्वी यश भी देख विशुद्ध चरित्र।।
विजया के साथ शांति सुख पानो सुयश अतीव।
जब तुम मिले, उसी दिन वह भी थी मिल चुकी सजीव।।

पर वह कहाँ गई, न हुआ कुछ पता आज तक ज्ञात।
यह कह मुनि ने कही युवकसे उस दिन की सब बात।।
बोले, 'कभी न निष्फल होगा उसका सच्चा स्नेह।
सच्चा प्रेम पूर्ण होता है जग में निस्संदेह।।

बेटा ! मैं हूँ पिता तुम्हारा, तुम न सके पहचान।
बचपन में ही बिलग हुये थे, मेरे जीवन प्रान !
तुम विजया के साथ प्राप्रिय ! करो लोक-कल्याण।
सुखी रहो, अब मैं करता हूँ सुखी सहर्ष प्रयाण।।

'जय स्वदेश की 'जय स्वदेश कपड़ा सुनाई नाद।
उसी समय मुनि ने तन त्यागा, दे शुभ आशीर्वाद।।
'हाय! पिता,'कह युवक व्यथितचित गिरकर हुआ अचेत।
धन्य पिता का प्रम दे दिया प्राण पुत्र के हेत।।

व्याख्या

हिन्दी की आधुनिक खण्डकाव्य-परम्परा में 'मिलन' काव्य का स्थान बेजोड़ है। सन् 1917 में प्रकाशित प्रस्तुत खण्डकाव्य के आज तक बीसों संस्करण निकल चुके हैं, जो इसकी लोकप्रियता का स्पष्ट परिचायक है। इस खण्डकाव्य के पाँच सर्ग हैं। काव्य का प्रारम्भ दुमलतावितानों के बीच सज्जित एक कुटी में रहने वाले युवमिथुन-आनन्दकुमार एवं विजया के मधुर वार्तालाप से होता है। देश-सेवा के महान आदर्श से प्रेरित युवमिथुन देश-सेवा के लिए कमर कस कर विश्व की विशाल रंगभूमि में उतर पड़ते हैं, पर विधि की गति से नदी पार करते समय उनकी नाव डूब जाती है।

दूसरे सर्ग में एक मुनि द्वारा काव्य-नायिका विजया को जीवन दान देने का वर्णन है। विजया से सब बातें ज्ञात करके तीसरे सर्ग में मुनि बिछुड़े हुए युवक को भी खोज निकालते हैं तथा उससे बीते हुए जीवन की सम्पूर्ण गाथा सुन लेते हैं। युवक का पिता मिलन नगर का निवासी था। एक बार वह राजा का क्रोध-पात्र बन जाता है तथा अपने इकलौते बेटे को एक मित्र मुनि के पास सौंप कर देश सेवा के लिए निकलता है। मुनि उसका ब्याह अपनी कुटिया में पली एक सुन्दरी लड़की से करा देता है। इसके बाद पति-पत्नी के बिछुड़न की कथा भी वह कह सुनाता है। यह कथा सुनकर पितृ-हृदय की मानवीय दुर्बलता को दबाकर मुनि उसे देश सेवा के लिए- महान आदर्श की ओर उन्मुख कर देता है तथा पुनर्मिलन का संकेत भी देता है।

चौथे सर्ग में हम स्वतंत्रता के महान आदर्श की स्थापना के लिए प्रतिश्रुत तीनों को पाते हैं- मुनि, आनन्द तथा विजया को। इनके द्वारा आयोजित भयानक विप्लव में

शासन-सत्ता पराजित हो जाती है। लेकिन युवक की जीवन-रक्षा करते हुए मुनि को घातक घाव लगता है तथा युद्धभूमि में ही वे अपने प्राणों का विसर्जन कर देते हैं। इसी सर्ग के अन्त में युवक के जीवन रक्षक मुनि अपने को उसके पिता होने के रहस्य का उद्घाटन करते हैं। अन्तिम सर्ग- जो बहुत ही छोटा है, केवल तीन छन्दों से निर्मित है- में युवमिथुन के पुनः मिलन का वर्णन है।

त्रिपाठी जी का यह खण्डकाव्य आपकी राष्ट्रीय चेतना का संवाहक है, जिसका कारण तत्कालीन भारतीय परिस्थितियाँ हैं। त्रिपाठी जी के युग में भारतमाता विदेशियों की गुलामी की श्रृंखलाओं में जकड़कर मुक्ति के लिए कराह रही थी। ऐसे अवसर पर भारतीय जनता की राष्ट्रीय चेतना को सजग करने का अपने खण्डकाव्य के माध्यम से कविवर त्रिपाठी जी ने सफल प्रयास किया। 'मिलन' खण्डकाव्य में विदेशी शासकों के अत्याचारों तथा उन अत्याचारों से पीड़ित प्रजा की दीन दशा का वर्णन किया गया है। ये बातें स्वतंत्रतापूर्व भारत पर भी लागू हो सकती हैं। इसके बाद काव्यनायक आनन्द- कुमार तथा उसकी प्रिया विजया का देश भर में भ्रमण कर देश-वासियों में जागुति उत्पन्न करने का चित्रण है। यह हमें भारत की आजादी के लिए प्रयत्नशील महात्मा-गांधी तथा अन्य देशस्नेही नेताओं की याद दिलाती है। जनता में विद्रोह एवं राष्ट्रीय भावना के जागृत होने पर राजा प्रजा के बीच युद्ध होता है तथा उस बीच काव्यनायक के पिता मुनि का प्राणदान होता है एवं विदेशी भाग जाते हैं। इस प्रकार देश को जो विजय सन् 1947 में मिली, उसकी कल्पना त्रिपाठीजी ने अपनी अंतश्चेतना से सन् 1918 में ही कर ली थी।' सचमुच देशभक्ति का उत्कृष्टतम रूप प्रस्तुत काव्य में चित्रित है।

भावपक्ष एवं कलापक्ष का मणिकांचन संयोग प्रस्तुत खण्डकाव्य में द्रष्टव्य है। कथानक कवि के कल्पनावैभव की उपज है। प्रकृति का मनोहारी वर्णन काव्य को अधिक मनोरम बनाता है। प्रस्तुत रूप में मुख्यतया करुण तथा अंग रूप में श्रृंगार, रौद्रव वीर रसों की अभिव्यक्ति है। भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति आपने सुन्दरतम शैली में की है। आपकी खड़ीबोली भाषा भावाभिव्यक्ति में सर्वथा सक्षम है। भाषा-शैली को मनोरम बनाने के लिए आवश्यक अलंकारों का प्रयोग भी आपने किया है। सरसी छन्द का सुन्दर निर्वाह काव्य में आद्यंत हुआ है।

खण्डकाव्य-कला की कसौटी पर त्रिपाठी जी का यह काव्य खरा उतरता है। कथानक का आधार लिए इस काव्य में भाव और छन्द श्रृंखलाबद्ध हैं और उसमें वर्णित भी है। पाँच सर्गों में कथा वर्णित है। काव्य-कलेवर लघु है। आदि से अन्त तक एक ही छन्द प्रयुक्त हुआ है। शीर्षक भी संक्षिप्त तथा सार्थक है। जीवन के एक मार्मिक पक्ष की अभिव्यक्ति ही काव्य में हुई है। प्रमुख कथा के साथ अन्य प्रासंगिक कथाओं का नितांत अभाव भी है। देश-सेवा के महान आदर्श को लक्ष्य करके ही यह खण्डकाव्य विरचित हुआ है।

Critical Overview / अवलोकन

श्री रामनरेश त्रिपाठी के प्रथम खण्ड काव्य 'मिलन' का प्रकाशन संवत् 1974 (सन् 1917 ई०) में हुआ। हिन्दी मन्दिर, प्रयाग द्वारा इसका प्रकाशन किया गया। इसके कथानक का आधार कल्पना है। परतंत्र भारत की तत्कालीन सामाजिकता में स्वाधीनता के लिए ललक और जागरूकता लाने एवं कर्तव्य-बोध की प्रेरणा फूंकने में इस प्रेम कथा मूलक काव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आनन्द और विजया देश सेवा में प्रवृत्त होते हैं, अचानक नाव उलट जाने से दोनों अलग हो जाते हैं। एक मुनि को दोनों अलग-अलग अचेतावस्था में मिलते हैं, वह उन्हें होश में ले आता है और दोनों को देश सेवा के लिए प्रेरित करता है। दोनों कष्ट उठाकर देश सेवा करते हैं। भारतीय विदेशी आक्रमणकारियों पर विजय प्राप्त करते हैं। अन्त में मुनि स्वर्गवासी हो जाते हैं और आनन्द तथा विजया का मिलन होता है। इस खण्ड काव्य में राष्ट्रीयता, गांधी-दर्शन और नारी शक्ति का उदात्त स्वरूप निखरा है। पाँच सर्गों में विभक्त परिमार्जित खड़ी बोली के इस उत्कृष्ट काव्य का अंगी रस श्रृंगार है। घटना वैचित्र्य और नाटकीय संवादों से परिपूर्ण इस काव्य का प्रमुख स्वर देश प्रेम है।

Recap / पुनरावृत्ति

1. रामनरेश त्रिपाठी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।
2. देशभक्ति, माधुर्य, ग्राम्य जीवन, त्याग, बलिदान, प्रकृति, मानवता आदि आपके काव्य-विषय रहे हैं।
3. आदर्शवादी काव्य की रचना करके देश को उत्थान की ओर प्रेरित किया है।
4. वे रचनात्मक विचारधारा के पोषक कवि थे।
5. 'मिलन' 1918 ई. में लिखा गया रामनरेश त्रिपाठी का खण्ड काव्य है।
6. रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम तथा मानव सेवा की उत्कृष्ट भावनाएँ बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित हुई हैं।
7. भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा और पवित्र प्रेम के सुन्दर चित्र भी 'मिलन' में चित्रित किये गए हैं।
8. देश सेवा और आदर्श को उजागर करना ही कवि लक्ष्य।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मिलन' की रचना कब हुई?
2. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कब हुआ?
3. रामनरेश त्रिपाठी की खण्डकाव्यों का नाम लिखिए?
4. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कहाँ हुआ था?
5. रामनरेश त्रिपाठी की कविता - संग्रह का नाम लिखिए?
6. रामनरेश त्रिपाठी द्वारा सम्पादित पुस्तकों के नाम बताइए।
7. 'पथिक' किस विधा की रचना है?
8. रामनरेश त्रिपाठी का निधन कब हुआ?

Answers / उत्तर

1. 1917 ई. में
2. सन् 1889 ई. को
3. 'पथिक', 'मिलन', 'स्वप्न'।
4. जौनपुर जिले के कोइरीपुर नामक गाँव में
5. 'मानसी'
6. 'कविता कौमुदी' (छः भाग), 'ग्राम गीतों का संग्रह
7. खण्डकाव्य
8. सन् 1962 में

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. रामनरेश त्रिपाठी की खण्डकव्यों की विशेषता पर आलेख तैयार कीजिए।
2. मिलन खण्डकाव्य का सारांश लिखिए।
3. 'रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम तथा मानव सेवा की उत्कृष्ट भावनाएँ बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित हुई हैं।' स्पष्ट कीजिए।
4. मिलन खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।
5. मिलन खण्डकाव्य में चित्रित राष्ट्रीयता पर आलेख लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. द्विवेदी-युगीन खण्ड काव्य – डॉ. सरोजनी अग्रवाल।
3. हिंदी काव्य-संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव व विकास – डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
6. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. परम्परा का मूल्यांकन – डॉ. रामविलास शर्मा
8. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 04

छायावादी और प्रगतिवादी कविता

इकाई 1

प्रथम रश्मी

सुमित्रानंदन पन्त

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद से परिचय प्राप्त करता है
- महाकवि पंत के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- महाकवि पंत की भाषा-शैली, भावपक्ष और कला पक्ष आदि से परिचय प्राप्त करता है
- प्रथम रश्मी कविता के माध्यम से प्रकृति में मनुष्य को देखने की छायावादी प्रवृत्ति से अवगत हो जाता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

कविवर सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के महान कवियों में एक हैं। छायावाद काव्य की सभी विशेषताएं पंत की कविता में पायी जाती है। सुमित्रानंदन पंत की 'प्रथम रश्मि' कविता 1919 में लिखी गयी थी और 'वीणा' (1927) में संग्रहीत हुई थी। यह कविता छायावाद की शुरुआती कविताओं में प्रमुख है। इसमें छायावादी प्रवृत्तियों को प्रमुखता से व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ था। पन्त ने इस कविता में चिड़िया को सम्बोधित करके कुछ बातें कही हैं। चिड़िया को कवि 'बाल विहंगिनी' कहते हैं, जिसका अर्थ है 'बालिका चिड़िया'। प्रकृति में मनुष्य को देखने का यह एक सुंदर उदाहरण है। वे उस चिड़िया से कोमलतापूर्वक बात करते हैं। इस एक तरफा संवाद में रोमानियत की अंतर्धारा बहती हुई जान पड़ती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सुमित्रानंदनपंत, चिदम्बरा, छायावाद, छायावादी प्रवृत्ति, प्रथम रश्मि, कृतित्व, किशोर चिड़िया

Discussion / चर्चा

सुमित्रानन्दन पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि कहते हैं। पंत छायावाद का अप्रतिम कवि है। उनका जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा नामक जिले के कौसानी नामक गाँव में सन् 1900 में हुआ था। उनका यथार्थ नाम गोसाई दत्त था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। पंत में कल्पना की स्वच्छंद उड़ान, अत्यंत दुर्लभ मनोरम प्रकृति चित्रण, प्रकृति एवं मानव जीवन के अटूट संबंध की ज़रूरत आदि विशेषताएँ मिलती है। पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि कहते हैं। महाकवि पंत का जन्म हिमालय के तराई अल्मोड़ा में हुआ था। बचपन में उनकी माता का देहांत हो गया। आगे मातृहीन पंत हिमालय की गोद में पले। इसलिए उनकी कविता में हिमालय की प्राकृतिक सुषमा

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

ज़ोरों पर मिलती है। पंत छायावाद के संस्थापक कवियों में एक है। सन् 1921 में महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने कालेज का अध्ययन छोड़ दिया। बाद में आप इलाहाबाद में आकाशवाणी के अधिकारी रहे। उनके चिदम्बरा शीर्षक महाकाव्य को 1968 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। सन् 1961 में उन्हें पद्म भूषण उपाधि मिला है। वीणा, पल्लव, गुंजन आदि पंत के छायावादी काव्य संग्रह है। इसके अलावा ग्राम्या, युगान्त, युगवाणी, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, युगपथ, उत्तरा, रजत रश्मि, कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा आदि पंत की उल्लेखनीय काव्य कृतियाँ है। चिदम्बरा महाकाव्य पर सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ प्राप्त हुआ है। सुमित्रानन्दन पंत का देहांत 28 दिसम्बर 1977 को हुआ था।

> प्रकृति और सौन्दर्य के सुकुमार कवि पंत जी के काव्य में भारतीय दर्शन आध्यात्मिकता, नैतिकता, भौतिकता और भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों का अद्भुत चित्रण देखने को मिलता है। वे कोमल अनुभूतियों के संवेदनशील चितेरे हैं।

प्रथम रश्मि - सुमित्रानंदनपंत

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ हे बाल-विहंगिनि!
पाया तूने वह गाना?
सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में,
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊँघ रहे थे, घूम द्वार पर,
प्रहरी-से जुगनू नाना।
शशि-किरणों से उतर-उतरकर,
भू पर कामरूप नभ-चर,
चूम नवल कलियों का मृदु-मुख,
सिखा रहे थे मुसकाना।

स्नेह-हीन तारों के दीपक,
श्वास-शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में
तम ने था मंडप ताना।
कूक उठी सहसा तरु-वासिनि!
गा तू स्वागत का गाना,
किसने तुझको अंतर्यामिनि!
बतलाया उसका आना!

सारांशः

सुमित्रानंदन पंत ने 'प्रथम रश्मि' नामक कविता सन् 1919 में लिखी थी। उन्होंने यह कविता 1927 में प्रकाशित वीणा नामक काव्य संग्रह में संग्रहीत की है। प्रस्तुत कविता हिन्दी के आदर्शवाद की आरंभिक कविताओं में एक है। यह पंत के छायावाद की प्रतिनिधि कविता है। इसमें छायावाद की सारी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। प्रथम रश्मि नामक कविता में पंत एक किशोर चिड़िया को संबोधित करते हुए सारी बातें प्रत्यक्ष रूप से कहते हैं। किशोर चिड़िया को कवि बाल विहंगिनी नाम दे कर पुकारते हैं।

किशोर चिड़िया को संबोधित करते हुए कवि पंत कहते है कि हे आकर्षक रंगवाली चिड़िया, तुम्हें कैसे पता चला कि अब सुबह होने वाली है? सुबह की प्रथम रश्मि आकाश से भूमि की ओर आने से पहले उसके आगमन की सूचना पा कर तू हमें संदेश देती है। कवि संशय से पूछते है कि तुम्हें प्रथम रश्मि के आने का पता, रश्मि के आगमन से बहुत समय पहले कैसे मिला? पंत बड़े होकर भी यहाँ बालसुलभ जिज्ञासा उठाते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि अपनी यह शंका एक जगह ही नहीं, कई स्थान पर प्रकट करते हैं। कवि आगे पूछते हैं कि हे बाल विहंगिनी (बालिका चिड़िया) तुमने इतना सुंदर गायन कहाँ-कहाँ से प्राप्त किया है।

कवि फिर पूछते हैं कि- हे चिड़िया, प्रभात से पहले जब तू अपने घोंसले में सपना देख रही थी। तब तू अपने शरीर को अपने पंखों से ढके हुए थी। कवि कहते हैं कि जब तुम सो रही थी तब तुम्हारे घोंसले के आसपास

आकर्षक जुगनू मंडरा रहे थे। यह ऐसा लग रहा था कि जुगनू तेरे घोंसले के चारों ओर घूम कर तुझे पहरा दे रहे हों। जुगनू रात-भर बाल विहंगनी के दरवाज़े पर रखवाली कर रहे थे। प्रभात होते-होते जुगनू थककर, ऊंघते हुए पूरी रात की पहरेदारी समाप्त कर देते हैं। कवि यहाँ भोर के पहले का मनोरम तथा प्रकृति-रमणीय दृश्य उपस्थित कर छायावादी कविता की विशेषताएँ साबित करने का प्रयास करते हैं।

अगली पंक्तियों में प्रकृति का अत्यंत सुंदर दृश्य खींचते हुए कवि कहते हैं कि प्रभात में चाँद के किरणों की सहायता से आकाश से बादल धरती पर उतर रहे थे। बादल अपने आग्रह के अनुसार कामरूप धारण कर यहाँ की ओर आते हैं। कवि के मत में बादल धरती पर उतरने के लिए चाँदनी की डोर एवं ओस की बूँदों से सहायता लेते हैं। कवि कहते है कि ऊपर से आये वे बादल कलियों के मुख को बड़े प्रेम से चूमते हैं। बादल कलियों को खिलने की और मुसकुराने की कला सिखा देते हैं। बादलों के चूमने से कलियाँ खुल कर मुसकुराती हैं।

प्रकृति का भव्य रूप वर्णित करते हुए कवि कहते हैं कि रात में आकाश के तारे दीपक जैसे चमक रहे थे। सबेरे होते-होते दीपक में तेल समाप्त होने के समान तारों का प्रकाश धीमा होता है और अंत में बुझ जाता है। रात में धरती पर हवा रुक जाती हैं। साँस रुक जाने के समान पेड़ के पत्ते निश्चल हो जाते हैं। चारों ओर अंधेरा छा जाता है। धरती के मनोभाव के अनुकूल उसके सभी प्राणी सो जाते हैं। रात में प्राणी ऐसे सो जाते हैं कि किसी बाधा के बिना सपने देख रहे हों। सबेरे होते समय किसी को मालूम नहीं होता कि रात समाप्त हो चुकी है और धरती पर प्रथम रश्मि फैली पड़ी है।

जब सबेरे प्रकृति के बाकी सभी प्राणी मीठे सपने देखकर या अन्य मन में सो रहे हैं, तब बाल विहंगिनी अचानक कूक उठती है। कवि बाल विहंगिनी से पूछते है कि तुम तो पेड़ों के ऊपर सोती हो। प्रथम रश्मि के आगमन का पता तुम्हें कैसे मिलता है? कवि यहाँ तरुवासिनी शब्द द्वारा कूकने वाली कोयल की ओर इशारा करते हैं। कोयल को तरुवासिनी संबोधित कर कवि कहते हैं कि भोर में तुम कैसे, सहसा स्वागत के मीठे गीत गाकर उठती हो? तुम्हारी प्रवृत्ति से मालूम होता है कि तुम अन्तर्यामिनी हो। लगता है कि तुम्हें गूढ़ बातों की भी जानकारी है। पंत कहते है कि प्रथम रश्मि के आने का पता तुम्हें किसने दिया? सचमुच तुम अन्तर्यामिनी हो।

Critical Overview / अवलोकन

'प्रथम रश्मि' नामक कविता हिन्दी में महान कवि सुमित्रानंदन पंत की रचना है। यह प्रकृति के उपासक कवि पंत की प्रौढ़-गंभीर कविता है। यह कविता छायावाद नामक काव्य आदर्श को रेखांकित करती है। इस कविता में अनेक स्थानों पर कवि बाल सुलभ निष्कलंकता एवं उत्सुकता से बाल विहंगिनी से प्रश्न करते हैं। तब ऐसा लगता है कि कवि प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जानने को तत्पर एक छात्र हो। कवि की बाल सुलभ जिज्ञासा पाठकों में भी उत्सुकता पैदा करती है।

पंत जी ने अपना बाल्य और यौवन काल सुरम्य पर्वत हिमालय की मोहक में बिताया है। गोसाई दत्त नामक पंत के बचपन में ही माँ छूट गयी थी। मातृहीन पंत कौसानी के भू प्रवेशों में घूमते-फिरते थे। हिमालय उनकी माता बनी। यह प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जानने की पाठशाला रही थी। प्रकृति का सूक्ष्म-निरीक्षण उनके कवि जीवन का सहायक बना। पन्त जी के जीवन संदर्भ ने उन्हें छायावादी कवि बना दिया है। प्रस्तुत कविता में छायावादी काव्य की भाषा शैली मिलती है। इस कविता के वातायन द्वारा कवि पंत हमें छायावाद का साकार रूप दर्शाते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ यह छायावाद की शुरुआती कविताओं में प्रमुख है।
- ▶ इसके प्रश्नों में बाल-सुलभ जिज्ञासा है।
- ▶ यह कविता 'प्रकृति के सुकुमार कवि' पंत की पहचान बन गयी है।
- ▶ प्रकृति में मनुष्य को देखने की छायावादी प्रवृत्ति का यह सुन्दर उदाहरण है।
- ▶ यह अपने ढंग से जागरण की कविता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'प्रथम रश्मि' नामक कविता के कवि कौन है?
2. कवि सुमित्रानंदन पंत का यथार्थ नाम क्या है?
3. पंत का जन्म कब, कहाँ हुआ था?
4. पंत की किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है?
5. कवि पंत इस कविता में किसे संबोधित करते हैं?
6. 'प्रथम रश्मि' कविता का प्रकाशन वर्ष कब है?
7. पंत के छायावादी काव्य संग्रहों के नाम लिखिए?
8. 'कला और बूढ़ा चाँद' किसकी रचना है?

Answers / उत्तर

1. सुमित्रानंदन पंत
2. 'गोसाई दत्त' था।
3. अल्मोड़ा नामक जिले के कौसानी नामक गाँव में सन् 1900 में हुआ था।
4. 'चिदम्बरा' शीर्षक महाकाव्य को।
5. बाल विहंगिनी को।
6. 1919
7. वीणा, पल्लव, गुंजन आदि
8. सुमित्रानंदन पंत

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. पंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. प्रस्तुत कविता के आधार पर पंत की छायावादी काव्य-भावना व्यक्त कीजिए।
3. छायावादी कवि पंत विषय पर टिप्पणी लिखिए।
4. प्रथम रश्मी कविता पर टिप्पणी लिखिए।
5. प्रकृति के सुकुमार कवि पंत पर विचार प्रकट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. हिन्दी साहित्य इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
10. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
11. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
12. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।
13. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।
14. महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
15. महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
16. महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
17. महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
18. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
19. दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 2

जूही की कली

निराला

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी काव्य में प्रस्फुटित प्रवृत्ति-छायावाद से परिचय प्राप्त कर सकता है
- हिन्दी में छायावाद की पहली कविता 'जूही की कली' से परिचय प्राप्त कर सकता है
- छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में समझता है
- निराला की मुक्त छंद पद्धति, भाषा-शैली, विषय-चयन आदि से परिचय प्राप्त कर सकता है
- निराला के रहस्यवाद से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

'जूही की कली' छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक महत्वपूर्ण कविता है। निराला को हिन्दी छायावादी कविता का सृष्टा माना जाता है। निराला प्रकृति के मानवेतर वस्तुओं में मानवीयता पैदा करने वाले सिद्धहस्त कवि हैं। 'जूही की कली' छायावाद कविता का उत्तम प्रतिनिधित्व करती है। कवि एक कली के विचारों से विकारों को आवेगमय बना देते हैं।

जूही की कली परंपरागत काव्य प्रणाली से अलग एक रचना है। इसमें चित्रित प्रकृति का मानवीकरण रूप हिन्दी में इससे पहले नहीं देखा गया। 'जूही की कली' के बाद की कविताओं में हमने प्रकृति के अवयवों में मानवीकरण देखा है, किंतु इतना उज्ज्वल चित्रण विरल ही पाते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सरोज-स्मृति, 'जुही की कली', मलय पवन, मानवीकरण

Discussion / चर्चा

सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम है 'निराला'। निराला हिन्दी साहित्य जगत में 'महाप्राण' विशेषण से सुपरिचित है। उनका जन्म 21 फरवरी 1897 में पश्चिम बंगाल के मेदनीपुर (वर्तमान नाम मिटनापुर) के महिषादल में हुआ था। निराला का वास्तविक नाम सूर्यकुमार था। वे पहले सूर्यकांत त्रिपाठी नाम से लिखते थे। आगे उन्होंने अपना उपनाम निराला स्वीकार किया। व्यक्तिगत एवं साहित्यिक जीवन में निराला नाम को चरितार्थ कर विचित्र रहा था। उनके बंधु एवं बाँधव असमय एक-एक होकर उनकी आँखों के सामने ही मर गये। महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का निधन 14 अक्तूबर 1961 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था।

हिन्दी काव्य-जगत में निराला ने पहले पहल छंद रहित व मुक्त छंद कविता लिखी है। आपने कविता के अलावा, उपन्यास, निबंध जैसे साहित्य की रचनाएँ भी की हैं। निराला हिन्दी के सर्वप्रथम छायावादी कवि हैं। निराला रचित 'जूही की कली' हिन्दी की सर्वप्रथम छायावादी कविता है।अपरा, अप्सरा, अनामिका, अर्चना, आराधना, अलका, अणिमा, परिमल, गीतिका, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, सरोज-स्मृति आदि निराला की उल्लेखनीय काव्य रचनाएँ है। इसमें सरोज स्मृति अपनी बेटी के असमय मृत्यु पर दुःखी होकर रचा गया शोकगीत है।

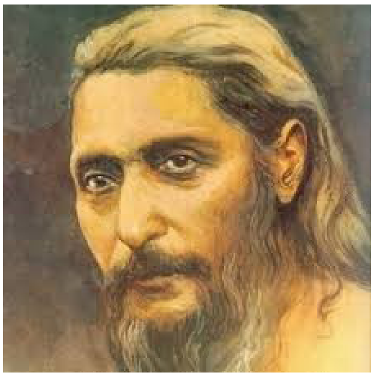

जूही की कली - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

विजन-वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न-
अमल-कोमल-तनु तरुणी-जुही की कली,
दृग बंद किए, शिथिल-पत्रांक में,
वासंती निशा थी;
विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कांता की कंपित कमनीय गात,
फिर क्या? पवन
उपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन
कुंज-लता-पुंजों को पार कर
पहुँचा जहाँ उसने की केलि
कली-खिली-साथ।
सोती थी,
जाने कहो कैसे प्रिय-आगमन वह ?
नायक ने चूमे कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इस पर भी जागी नहीं,
चूक-क्षमा माँगी नहीं,
निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मूँदे रही-
किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिए,
कौन कहे ?
निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंकों की झड़ियों से
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिए गोरे कपोल गोल;
चौंक पड़ी युवती-
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज-पास,
नम्रमुख हँसी-खिली,
खेल रंग, प्यारे संग।

सारांश

निराला की 'जुही की कली' सर्वचर्चित एवं ख्याति प्रसारित कविता है। 'जूही की कली' कविता की सबसे बड़ी विशेषता इसमें सर्वत्र फैली हुई उदात्त मानवीकरण की भावना है। प्रस्तुत कविता वर्तमान समाज में भी चर्चित एवं बहुत पसंदीदा है।

कवि कहते हैं कि विजन-वन वल्लरी में रहने वाली जुही की कली विरह व्यथा में बहुत पीड़ित है। क्योंकि उनकी प्रियतम पवन (हवा) जुही की कली को छोड़कर दूर-विदूर की मलय गिरी पर्वत की ओर चला गया था। प्रेमी के विरह में जुही की कली तड़प रही है। उनके वियोग तीव्र एवं असहनीय है। प्रेमी पवन जुही की कली को छोड़कर जाने के बाद वह अपने प्रेमी के स्वप्न में खोई हुई रहती है। जुही की कली सोचती कि कब अपने प्रेमी लौट आएगा? कब पहले जैसे प्रेमी-प्रेमिका, दोनों का मिलन संपन्न होगा?

सुदूर मलय गिरि पर्वत पर गए जुही की कली के प्रेमी पवन को भी अपनी प्रेमिका की याद आती है। जुही की कली को याद आते समय पवन अपनी प्रेयसी से मिलने के लिए तड़प उठता है। तत्काल ही नायक पवन अपनी प्रेयसी जुही की कली से मिलने के लिए चल पड़ता है। जब प्रेमी पवन अपनी प्रेयसी जुही की कली के पास लौटते हैं तब उनकी प्रेमिका जुही की कली अपने सपनों में खोई हुई निश्चल, आंखें मूंदकर दिखायी पड़ी है। जुही

की कली को अपने प्रेमी पवन के आने का कोई पता नहीं मिलती है। इसी कारण वह अपने प्रेमी के स्वागत में उठती नहीं है, निश्चल पड़ी है।

प्रेयसी जुही की कली की चेष्टा विहीनता देखते समय प्रेमी पवन को लगता है कि अपनी प्रेमिका कली को अपने आने में कोई हर्ष-खुशी नहीं हुआ है। इसलिए वह आँखें खोलकर अपना स्वागत नहीं करती हैं। प्रेयसी की उदासीनता एवं उपेक्षा पर पवन को क्रोध आता है। पवन आहत मन के साथ अपनी प्रेयसी के पास रहना नहीं चाहता है। इसलिए पवन क्रुद्ध होकर तुरंत अपने झोंको को तेज गति से चलाने लगता है।

जुही की कली की उदासीनता में हुई अतृप्ति पवन पर बड़ी प्रतिक्रिया पैदा करती हैं। नहीं तो वह अपनी झोंके से जुही की कली के कोमल शरीर पर आघात न लगाता। बेसुध सपने से सुध पायी जुही की कली पवन के झोंके में हड़बड़ा कर उठ जाती है। तब अचानक अपने पास अपने प्रेमी पवन को देखकर वह खुशी से पुलकित हो जाती है। तब दोनों, प्रेमी-प्रेमिकाओं के वियोग-पीड़ा दूर हो जाता है, दोनों अनुरक्त हो जाता है। आगे दोनों आलिंगन बद्ध हो जाता है। दोनों के मिलन से आसपास की प्रकृति मुग्ध हो उठे। प्रेमी पवन और प्रेमिका जुही की कली अपार प्रेम के रंग में डूब जाते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

'जूही की कली' महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित बहुचर्चित छायावादी कविता है। सन् 1922 में इसका प्रकाशन हुआ। हिन्दी काव्य जगत में इसने बड़ा अद्भुत और आश्चर्य पैदा किया, क्योंकि यह परंपरागत काव्य प्रणाली से अलग एक रचना है। इसमें चित्रित प्रकृति का मानवीकरण रूप हिन्दी में इससे पहले नहीं देखा गया। 'जूही की कली' के बाद की कविताओं में हमने प्रकृति के अवयवों में मानवीकरण देखा है, किंतु इतना उज्ज्वल चित्रण विरल ही पाते हैं।

विवेच्य कविता में नायिका जूही की कली एवं नायक पवन है। दोनों का श्रृंगार वर्णन जितना तन्मयता तथा सतर्कता से निराला ने किया है, यह अन्यत्र दुर्लभ है। जब पाठक पवन की प्रेयसी जूही की कली के वियोग को देखता है, तब वह अनजाने में उसमें डूब जाता है। ललित-कोमल भाषा और आकर्षक शैली में इसका वर्णन निराला ने किया है।

प्रस्तुत कविता में जीवन की बुरी स्थिति, विरह की संकीर्णता आदि को अपार कुशलता से निराला ने अंकित किया हैं। विरहिणी जुही की कली पवन के मीठे सपने में मंत्रमुग्ध रहते समय उस में परिकल्पित मनोहर भाव-बोध निराला के द्वारा ही संभव है। इतना ही नहीं, विरह में पीड़ित एक साधारण छोटी-सी कली में विप्रलंभ श्रृंगार का अनूठा रूप बड़े ही अनुपम एवं आकर्षक ढंग में निराला दर्शाते भी हैं।

प्रस्तुत कविता की भाषा सरल खड़ीबोली है। इस कविता में कवि ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है। इसके नायक पवन और नायिका कली के वियोग का वर्णन अद्वितीय है। इसमें निराला की काव्य-शैली का निरालापन सजीव है। निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि 'जूही की कली' शीर्षक कविता द्वारा कवि ने अपने उपनाम– निराला- शब्द का अर्थ 'विचित्र' को पूर्ण रूप से चरितार्थ कर दिया है।

मुक्त छंद के प्रवर्तक महाकवि निराला एक ऐसे विद्रोही कवि थे, जिन्होंने निर्भीकता के साथ अनेक रूढ़ियों को तोड़ डाला और काव्य के क्षेत्र में अपने नवीन प्रयोगों से युगांतकारी परिवर्तन किये।

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ जूही की कली मुक्तक छंद की रचना है।
- ▶ जूही की कली लंबे समय पश्चात निराला द्वारा रचित सुंदर कविता है।
- ▶ जूही की कली कविता में उदात्त मानवीकरण की भावना है।
- ▶ कविता में जूही की कली और पवन का मानवीकरण किया गया है।
- ▶ निराला प्रकृति की वस्तुओं में मानवीयता पैदा करने वाले सिद्धहस्त कवि हैं।
- ▶ वियोग एवं संयोग श्रृंगार का वर्णन।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जूही की कली कविता की रचना किसने की?
2. निराला का पूरा नाम क्या है?
3. सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम क्या है?
4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का वास्तविक नाम क्या है?
5. निराला का जन्म कहाँ हुआ था?
6. निराला का जन्म कब हुआ था?
7. निराला द्वारा अपनी बेटी सरोज की असमय मृत्यु पर दुःखी होकर लिखी गये शोक काव्य का नाम लिखिए।
8. निराला की जूही की कली का प्रकाशन कब हुआ?

Answers / उत्तर

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
3. निराला
4. सूर्यकुमार
5. पश्चिम बंगाल के मेदनीपुर के महिषादल में
6. 21 फरवरी 1897 को
7. 'सरोज स्मृति'
8. 1922 में

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. तर्क युक्त उत्तर देकर समर्थन कीजिए कि जूही की कली हिन्दी की पहली छायावादी कविता है।
2. 'जूही की कली' शीर्षक कविता में प्रकट मानवीकरण पर विचार कीजिए।
3. महाप्राण निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
4. जूही की कविता के मुक्तक छंद पर विचार प्रकट कीजिए ।
5. निराला के काव्यसौष्ठव पर विचार प्रकट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. हिन्दी साहित्य इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
10. कवि निराला – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
11. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा।
12. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
13. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
14. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।
15. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।
16. महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
17. महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
18. महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
19. महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
20. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
21. दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

इकाई 3

हिमालय से

प्रसाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावादी कविता से परिचय प्राप्त कर सकता है
- जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझ सकता है
- जयशंकर प्रसाद का राष्ट्र प्रेम के बारे में समझता है
- जयशंकर प्रसाद की भाषा-शैली, भक्ति आदि से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

'हिमालय से' जयशंकर प्रसाद की राष्ट्र- प्रेम से ओतप्रोत आकर्षक कविता है। प्रसाद भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अमर गायक रहे हैं। उनकी कविता, नाटक, कहानी, निबंध या अन्य कोई भी रचना हो, उसमें देश प्रेम मुखरित है। प्रसाद भारत को जितना गौरव देते थे, उतना अन्यत्र किसी कवि ने नहीं दिया था। भारत सोने की चिड़िया कहा जाता था। प्रस्तुत कविता में भारत के अतीत स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं कि अपने देश की महान उपलब्धियों पर हमें सदैव गर्व होना चाहिए। यदि हमें अपने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान भी करना पड़े तो हमें तत्काल तैयार रहना चाहिए। प्रस्तुत कविता में कवि का राष्ट्र प्रेम सभी रूपों में मान्य एवं प्रशंसनीय है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जयशंकर प्रसाद, हिमालय से, नाटककार, भारतीय संस्कृति, देशप्रेम

Discussion / चर्चा

जयशंकर प्रसाद के जीवन काल में अंग्रेज़ों का शासन था। तब लेखक और कवि ने अपनी लेखनी देश की आज़ादी के लिए चलायी थी। जन्मभूमि की महिमा वर्णन द्वारा स्वतंत्रता की भावना पैदा करना प्रसाद का लक्ष्य है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, एकांकीकार, निबंधकार आदि है। उनका जन्म 30 जनवरी 1890 में काशी में हुआ है। उनकी शिक्षा घर पर ही आरम्भ हुई। घर पर से उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, और उर्दू की शिक्षा पायी थी। 'कानन कुसुम', 'महाराणा का महत्व', 'झरना', 'आँसू', 'लहर', 'कामायनी', 'प्रेम पथिक' आदि प्रसाद के उल्लेखनीय काव्य ग्रंथ है। सन् 1935 में प्रकाशित उनका कामायनी

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

महाकाव्य हिन्दी के महत्वपूर्ण काव्यों में एक माना जाता है।

जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी सन् 1910 में 'इंदु' नामक पत्रिका में प्रकाशित 'ग्राम' है। उन्होंने कुल मिलाकर 72 कहानियाँ लिखी हैं। 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आँधी', 'आकाशदीप', 'इन्द्रजाल' आदि प्रसाद के प्रसिद्ध कहानी संग्रह है।

जयशंकर प्रसाद ने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' नामक तीन उपन्यास भी लिखे हैं। 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'जन्मेजय का नागयज्ञ', 'राज्यश्री', 'कामना' आदि प्रसाद के चर्चित नाटक है। 'एक घूंट'उनके एकांकी का नाम है। इसके सिवा उन्होंने कई निबंध भी लिखे हैं। उनकी 'कामायनी' महाकाव्य पर मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ है। प्रसाद 47 वर्ष की उम्र में 15 नवंबर 1937 में स्वर्ग सिधार गये।

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकट हुई प्रवृत्ति है। प्रकृति की वस्तुओं में ईश्वरीय छाया व रूप देखकर कविता में उसका आविष्कार करने को छायावाद कहते है।

प्रसाद छायावाद के संस्थापक कवियों में प्रमुख है। उन्हें छायावाद के चार स्तंभों में एक माना जाता है। छायावाद के दीप स्तंभों में अन्य तीन सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा है।

हिमालय से - जयशंकर प्रसाद

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक-हार
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योम-तम पुँज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक
विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत
अरुण-केतन लेकर निज हाथ, वरुण-पथ पर हम बढ़े अभीत
सुना है वह दधीचि का त्याग, हमारी जातीयता विकास
पुरंदर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरा इतिहास

सिंधु-सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह
दे रही अभी दिखाई भग्न, मग्न रत्नाकर में वह राह
धर्म का ले लेकर जो नाम, हुआ करती बलि कर दी बंद
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम
यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं
जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
ह्मदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा मे रहती थी टेव

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान
जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष

शब्दार्थ

उपहार	=	भेंट, सम्मान
हीरक	=	हीरा
हार	=	माला
आलोक	=	प्रकाश
व्योम	=	आकाश
पुंज	=	समूह
अखिल	=	संपूर्ण
अशोक	=	शोक हीन

विमल	=	पवित्र
वाणी	=	वाणीदेवी, सरस्वती, शब्द
संप्रीत	=	प्रेम के साथ
साम	=	सामवेद
धरा	=	धरती
धूम	=	हलचल
भिक्ष	=	बुद्ध सन्यासी
लोहा	=	शस्त्र, आयुध
गोरी	=	मुहम्मद गोरी
सिंहल	=	श्रीलंका

सारांश

कवि कहते है कि हमारा भारत महा पर्वत हिमालय के आंगन में बसता है। वह प्रतिदिन प्रभात में भारत को कोमल किरण-रूपी उपहार-सम्मान प्रदान करता है। हिमालय किरण रूपी उपहार देकर मानो पुण्य भूमि भारत का अभिनंदन करता है। प्रभात कालीन प्रथम रश्मियाँ ओस की बूँदों पर पड़तीं हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उषा हीरों की माला पहने हो।

कवि कहते है कि सबसे पहले ज्ञान का आविर्भाव हमारे भारत में हुआ है। हम सबसे पहले जागृत हुए। भारत ने अपना ज्ञान-रूपी प्रकाश संपूर्ण विश्व में प्रसारित किया है। भारत द्वारा प्रसारित किये गये दर्शन-ज्ञान से समस्त संसार आलोकित हो गया। उस दर्शन-रूपी आलोक से संपूर्ण संसार का अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया है। वहाँ ज्ञान और आनंद चमकने लगा है। भारत के उपकार से समस्त सृष्टि का अज्ञान एवं दुःख मिट गया, वे ज्ञानी हो गये।

कवि ने भारत की महिमा का गान करते हुए कहा है कि वीणापाणि देवी सरस्वती ने यहाँ अपने कमल के समान कोमल हाथों में वीणा उठाकर विद्या का संदेश प्रदान किया है। सरस्वती देवी की वीणा की झंकार से सप्त सिंधुओं में सप्त स्वरों का आकर्षक संगीत गूँज गया। अर्थात पुण्य भूमि भारत से सर्वप्रथम मन मोहक संगीत ध्वनि का जन्म हुआ। भारत संगीत की जन्मभूमि मात्र नहीं है। इस महान पुण्य भूमि से संगीत के वेद ग्रंथ सामवेद का सृजन भी हुआ।

भारत शांति का देश है। हम शस्त्रों के प्रयोग द्वारा किसी राष्ट्र को जीतना नहीं चाहते। हम परंपरा से धर्म को कर्म बनाये रखने वाले हैं। धर्म पर हमें अपार विश्वास है। इतना ही नहीं, सत्कर्म तथा धर्म का आविर्भाव और उत्तरोत्तर प्रचार यहीं से हुआ। पुण्य-भूमि भारत में भगवान श्रीबुद्ध, वर्धमान, महावीर के जैसे परम धर्म पुरुषों का जन्म हुआ है। यहाँ गौतम बुद्ध ने सारी राजकीय सुख-सुविधाएँ तजकर महा संदेश प्रसारित किया। उन्होंने भिक्षु बनकर लोक हित हेतु अपना जीवन समर्पित किया। वर्धमान महावीर ने अपनी भलाई न चाहकर अन्यों की भलाई के लिए कर्मरत रहे हैं। भारतीयों का दया भाव महान है। हम ने मुहम्मद गोरी को पराजित करने के पश्चात भी सहानुभूति के कारण उन्हें क्षमा दी। भारत से पड़ोसी राष्ट्र चीन ने धर्म ज्ञान प्राप्त किया है। सम्राट अशोक ने अपने सुपुत्र महेंद्र एवं पुत्री संघमित्रा को चीन, जावा द्वीप एवं श्रीलंका भेजकर धर्म शिक्षा प्रसरित की है।

कवि कहते है कि भारतीय कभी भी किसी की संपत्ति, राज्याधिकार या जीवन छीनने को तैयार नहीं हुए हैं। क्योंकि भारत की प्रकृति ने मुफ्त रूप में आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की हैं। भारत शस्य, श्यामल कोमल भूमि है। यह पुण्य भूमि नदी-नालों से अनुगृहीत है। इधर घाटियाँ, खेतीबारी की सुविधा, सिंचाई की सुविधा, फूल-फल सब कुछ है। इसलिए हमें दूसरों के छीनने की आवश्यकता नहीं है। कवि व्यक्त करते है कि हम पुराने काल से इस पुण्य भूमि की संतानें है। तात्पर्य यह है कि हमने कहीं बाहर से आकर यहाँ अधिकार नहीं जमाया है।

कवि कहते है कि भारतीय उत्तम चरित्रवान हैं। हम धीर, वीर और गंभीर है। हमारी भुजाएँ मजबूत है। हम वीरता, चमत्कार करने के साथ-साथ विनम्र भी है। हमारे पास सारी उपलब्धियाँ है, किंतु हम इस पर कभी भी घमंड नहीं करते हैं। भारत की अपनी एक प्राचीन तथा सर्वमान्य संस्कृति और सभ्यता है। इस उच्च संस्कृति द्वारा अन्यों के दुःख को हम हल्का करते हैं। क्योंकि भारतीय कहीं भी, किसी को भी दुःखी देखना नहीं चाहता है। दीन दुखियों की सेवा हमारे जन्मजात गुण हैं।

सहानुभूति भारतीयों का विशिष्ट भाव है। कवि आगे कहते है कि भारतीय अपनी संपत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा दान-पुण्य के लिए खर्च करते हैं। दानवीर को हम अपना देवता मानते हैं। सत्य विश्वासी होने के नाते भारतीय सत्य ही बोलते हैं। स्मरण रहे कि हम सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की परंपरा के है। भारतीयों के हृदय तेज और गौरव पूर्ण है। हम सदा अपने वचन का पालन करते हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

प्राण जाये तो भी वचन से हट नहीं सकते हैं।

कवि प्रसाद आगे कहते हैं कि हम भारतीयों की वीरता, शूरता एवं उदारता आज भी वही है, जो युग-युगांतरों से हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त है। आज भी हमारे देश और देशवासी साहसी एवं गंभीर है। ज्ञानार्जन एवं ज्ञान प्रसारण में भारतीय पहले के जैसे आज भी सबसे आगे हैं। पूरे संसार में हम अब भी शांति दूत बनकर रहते हैं। वैसे आर्यों की अमर वंश परंपरा के अधिकारी होने से भारतीय अब भी शक्तिशाली ठहरते हैं।

कवि प्रसाद भारतीयों का आह्वान करते हुए कहते है कि हम जब तक रहें, तब तक मातृदेश भारत के लिए तन, मन एवं धन समर्पित कर रहें। हमें सदैव अपने भारत की सर्वोच्च, महान संस्कृति एवं सभ्यता पर गर्व होना चाहिए। भारत हमें सुखी-आनंदप्रद जीवन प्रदान करता है। उसके उज्ज्वल भविष्य को ही हमें अपना उत्कर्ष समझना चाहिए। भारत हमें सुख देता हैं, बदले में हम अपनी जन्मभूमि की सुरक्षा करें। कवि का निवेदन है कि अगर राष्ट्र की सुरक्षा व महत्ता के लिए हमारा जीवन चाहिए तो, जीवन न्यौछावर करने को तैयार हो जाना चाहिए।

Critical Overview / अवलोकन

भारत प्रकृति के सभी गुणों से समृद्ध देश है। प्रकृति से जितनी उपलब्धि हमें मिली है, उतनी पूरे संसार में और कहीं नहीं है। भारत भूमि में जन्म लेना और यहीं की मिटटी में मिल जाना, हम अपना सौभाग्य समझते हैं। हमारा भारत महा पर्वत हिमालय की गोद में बसा हुआ है। हमारी संस्कृति बड़ी पुरानी होने के साथ-साथ अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है। हमने ही संसार में पहले पहल ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाया है। भारत पहले के समान अब भी महान है। अपनी विभूतियों से हम दूसरों को चकित कर देते हैं। आजकल राष्ट्र प्रेम पहले से कम होता आ रहा हैं। हमारे इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, प्राकृतिक विशिष्टताएँ आदि जानने को नौजवानों में तात्पर्य जगाना अनिवार्य हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रसाद जी को 'कामायनी' महाकाव्य पर मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- प्रस्तुत कविता महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित छायावादी कविता है।
- भारत प्रकृति के सभी गुणों से समृद्ध देश है।
- दानवीर को हम अपना देवता मानते हैं।
- प्रसाद छायावाद के संस्थापक कवियों में प्रमुख है।
- राष्ट्र प्रेम एवं सुरक्षा से ओतप्रोत कविता है।
- बलिदान का महत्व समझाते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हिमालय से' शीर्षक कविता के कवि कौन है?
2. जयशंकर प्रसाद का जन्म कहाँ हुआ?
3. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ?
4. 'कामायनी' की रचना किसने की?
5. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं तीन नाटकों के नाम लिखिए।
6. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो उपन्यासों के नाम लिखिए।
7. जयशंकर प्रसाद ने कितने उपन्यास लिखे है?
8. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो कहानी संग्रहों के नाम लिखिए?

Answers / उत्तर

1. प्रसाद
2. काशी में हुआ
3. जनवरी 1890 में हुआ
4. जयशंकर प्रसाद ने
5. स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
6. कंकाल, तितली और इरावती
7. तीन
8. छाया, प्रतिध्वनि

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. राष्ट्र के प्रति नागरिक के कर्तव्य को हिमालय से कविता के माध्यम से व्यक्त कीजिए।
2. प्रस्तुत कविता के अनुसार भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।
3. 'हिमालय से' नामक कविता का सारांश लिखिए।
4. जयशंकर प्रसाद के काव्यसौष्ठव पर विचार प्रकट कीजिए।
5. जयशंकर प्रसाद की राष्ट्रीयता पर विचार प्रकट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. हिन्दी साहित्य इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
10. कवि निराला – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
11. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा।
12. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
13. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
14. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।

SGOU

15. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।
16. महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
17. महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
18. महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
19. महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
20. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
21. दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

SGOU

इकाई 4

मुरझाया फूल

महादेवी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा के बारे में समझता है
- महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- महादेवी वर्मा की भाषा-शैली, उनकी कविता के भावपक्ष और कला पक्ष से परिचय प्राप्त करता है
- मानव जीवन के प्रति महादेवी वर्मा के दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक हिन्दी काव्य-साहित्य के अंतर्गत बहनेवाली छायावादी काव्यधारा की चार प्रमुख विभूतियों में कवयित्री महादेवी वर्मा अन्यतम है। उनकी तुलना कृष्ण प्रेमी दीवानी मीराबाई से की जाती है। इसलिए उनको 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उन्होंने अपने काव्य को आराध्य की विरहानुभूति और व्यक्तिगत दुःख- वेदना की अभिव्यक्ति में सीमित न रखकर उसे लोक कल्याणकारी करुणा भाव से जोड़ दिया है। महादेवी वर्मा ने मुरझाया फूल शीर्षक कविता में मानव जीवन की क्षण भंगुरता को अत्याधिक मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

महादेवी वर्मा ने गद्य और पद्य दोनों शैलियों में साहित्य की रचना की है। जिसमें काव्य की रचनाएँ हैं:- 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'यामा'। गद्य में उन्होंने 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और 'पथ के साथी' जैसे रचनाएँ की हैं। उन्हें पद्मश्री उपाधि से भी नवाजा गया है और 'यामा' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। उनकी काव्य भाषा संस्कृत-निष्ठ खड़ीबोली हैं, जो कोमलता, मधुरता, गेयता आदि गुणों से संपन्न है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

महादेवी वर्मा, मुरझाया फूल, क्षण भंगुरता, प्रतीकात्मकता

Discussion / चर्चा

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध पद्यकार एवं गद्यकार हैं। महादेवी वर्मा जीवन में भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई को आधुनिक मीरा के नाम से पुकारते हैं। महादेवी का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर

प्रदेश के फर्रुख़ाबाद में हुआ था। उन्होंने संस्कृत में एम.ए. पास करने के उपरांत पहले प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रोफ़ेसर और बाद में प्रिंसिपल का काम किया।

महादेवी की कविता का मूल भाव प्रेम की पीर और दुःख है। 1930 में प्रकाशित 'नीहार', 1932 में प्रकाशित 'रश्मि', 1934 में प्रकाशित 'नीरजा', 1936 में प्रकाशित 'सांध्यगीत' और 'यामा' आदि महादेवी वर्मा के उल्लेखनीय काव्य ग्रंथ है। 'यामा' नामक काव्य पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' आदि महादेवी के प्रौढ़ गद्य ग्रंथ है।

महादेवी वर्मा को 1941 में 'स्मृति की रेखाएँ' ग्रंथ पर द्विवेदी पदक, 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पुरस्कार, 1943 में भारत-भारती पुरस्कार, 1956 में पूरी साहित्य सेवा के लिए पद्म भूषण, 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1982 में यामा पर ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1988 में पद्म विभूषण पुरस्कार, तदनंतर विक्रम, कुमाऊँ, दिल्ली व बनारस विश्वविद्यालयों द्वारा डी. लिट. की मानद उपाधियाँ आदि प्राप्त हुई हैं। 80 वर्ष की आयु में 11 सितम्बर सन् 1987 को प्रयाग में महादेवी वर्मा का स्वर्गवास हो गया।

> विरह, वेदना और पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति ही महादेवी वर्मा के काव्य का प्रमुख आधार है। हिन्दी काव्य जगत में उन्हें; 'पीड़ा की गायिका', 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है।

मुरझाया फूल - महादेवी वर्मा

था कली के रूप शैशव-
में अहो सूखे सुमन,
मुस्कराता था, खिलाती
अंक में तुझको पवन!

खिल गया जब पूर्ण तू-
मंजुल सुकोमल पुष्पवर,
लुब्ध मधु के हेतु मँडराते
लगे आने भ्रमर!

स्निग्ध किरणें चन्द्र की-
तुझको हँसाती थीं सदा,
रात तुझ पर वारती थी
मोतियों की सम्पदा!

लोरियाँ गाकर मधुप
निद्रा विवश करते तुझे,
यत्न माली का रहा-
आनन्द से भरता तुझे।

कर रहा अठखेलियाँ-
इतरा सदा उद्यान में,
अन्त का यह दृश्य आया-
था कभी क्या ध्यान में।

सो रहा अब तू धरा पर-
शुष्क बिखराया हुआ,
गन्ध कोमलता नहीं
मुख मंजु मुरझाया हुआ।

आज तुझको देखकर
चाहक भ्रमर घाता नहीं,
लाल अपना राग तुझपर
प्रात बरसाता नहीं।

जिस पवन ने अंक में-
ले प्यार था तुझको किया,
तीव्र झोंके से सुला-
उसने तुझे भू पर दिया।

कर दिया मधु और सौरभ
दान सारा एक दिन,
किन्तु रोता कौन है
तेरे लिए दीनी सुमन?

मत व्यथित हो फूल! किसको

सुख दिया संसार ने?
स्वार्थमय सबको बनाया-
है यहाँ करतार ने।

विश्व में हे फूल! तू-
सबके ह्मदय भाता रहा!
दान कर सर्वस्व फिर भी
हाय हर्षाता रहा!

जब न तेरी ही दशा पर
दुख हुआ संसार को,
कौन रोयेगा सुमन!
हमसे मनुज निःसार को?

शब्दार्थ (WORDS AND MEANINGS)

प्रतिक्षण	=	हर पल
प्रतिपल	=	हर पल
प्रियतम	=	आराध्य, ईश्वर
आलोकित	=	प्रकाशित
विपुल	=	विस्तृत
मृदुल	=	कोमल
अपरिमित	=	असीमित, अपार
पुलक	=	रोमांच
सौरभ	=	सुगंध
विपुल	=	विस्तृत
मृदुल	=	कोमल
अपरिमित	=	असीमित, अपार
पुलक	=	रोमांच
नूतन	=	नया
ज्वाला कण	=	आग की लपट
शलभ	=	पतंगा
सिर धुन	=	पछताना
सिहर	=	कांपना
असंख्यक	=	अनेक
स्नेहहीन	=	प्रेम से रहित
उर	=	हृदय
विद्युत	=	बिजली
विहँस	=	भलाई

सारांश

'मुरझाया फूल' प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखी कविता है। यह एक छायावादी कविता है। इसमें कवयित्री महादेवी वर्मा जी ने फूल के बारे में विरहानुभूति भावनाओं को व्यक्त कर कहा है कि खिले हुए फूल को देख सभी आकर्षित होते हैं, पर जब वही फूल मुरझाकर ज़मीन पर गिर जाता है तो उसे कोई देखता तक नहीं। खिले हुए फूल के साथ पवन खेलता है, उसे हंसाता हैं, पंखा बनकर उसे सुलाने की कोशिश करता है। चंद्रमा अपनी रोशनी से हंसाता है तो ओस की बूंदें अपनी मुक्ता जाल से उसका श्रृंगार कर देती है। भौंरे मधु पान करने के हेतु उसके चारों ओर मंडराने लगते हैं। माली प्यार से उसकी देखभाल करता है।

महादेवी वर्मा ने इस कविता के ज़रिए खिले फूल के प्रति पवन, चंद्रमा, भौंरे तथा ओस की बूंदे किस प्रकार आकर्षित होते हैं उसका सुंदर वर्णन किया है। जब फूल कली की अवस्था में होता है तब पवन उसे अपनी गोदी में लेकर झूलाता है, तथा उसके साथ खेलता है। इसके बाद जब पूर्ण रूप से विकसित होकर फूल खिलने लगता है तो उसकी शोभा बढ़ाने के लिए चंद्रमा अपनी रोशनी से उसे हंसाता है और पवन भी उसे सुलाने की कोशिश में पंखा बन जाता है। तो ओस की बूंदे मुक्त जल से फूल का श्रृंगार करती है। फूलों की मधुरता देख भौंरे भी मधुपान करने के लिए उसके चारों और मंडराने लगते हैं। अतः फूल अपने सौंदर्य तथा अपने माधुर्य से सबका दिल जीत लेता है। जिसे देख सभी आकर्षित हो जाते हैं।

मुरझाया हुआ फूल धरा यानी धरती पर बेजान स्थिति में पड़ा हुआ है। आज उसमें पहले जैसी सुगंध और कोमलता नहीं रही, जिसके कारण कोई भी उसे अपनाना नहीं चाहता। जिसने कभी अपने माधुर्य से सबका दिल जीता था, आज वह मुरझाकर ज़मीन पर बेजान पड़ा है।

लेकिन जब फूल मुरझाने लगता है तो उसे कोई नहीं देखना चाहता। जिस पवन ने उसे अपनी गोदी में लेकर खिलाया था, वही पवन फूल के मुरझा जाने के बाद अपनी तीव्र झोंकों से ज़मीन पर गिरा देता है और वृक्ष भी उसके खो जाने का गम नहीं मनाता। भौंरे भी उसके पास मंडराने नहीं आते। अर्थात् जिस फूल ने अपना समस्त दान कर सबको ख़ुशी दी, आज उसी फूल को कोई अपनाना नहीं

चाहता। इसी बात पर कवि ने मुरझाए हुए फूल को दुखी न होने की सलाह दी है और कहा है कि इस संसार में भगवान ने सभी को स्वार्थमय ही बनाया है।

इस कविता के माध्यम से कवयित्री यह कहना चाहती हैं कि खिले फूल की सुन्दरता देख सभी मोहित हो जाते है और उसके साथ खेल- कूद करने लगते है। उसी प्रकार चंद्रमा की निर्मल किरणें उसे सदा हंसाती है और ओस की बूंदे मुक्ता जाल से उसका श्रृंगार करती है। अर्थात चंद्रमा और ओस की बूंदों के योगदान से फूलों की शोभा और भी बढ़ जाती है। पवन खिले फूलों के साथ खूब खेला तथा उसने उसे हमेशा हंसाया है। कली की स्थिति में उसे गोद में लेकर झुलाया है, तो नींद न आने पर वायु के झोंकों से उसे सुलाया भी है। लेकिन मुरझाए हुए फूल को पवन ने ही अपने तीव्र वायु के झोंके से ज़मीन पर भी गिराया है।

खिले फूल और मुरझाए फूल के प्रति भौंरे के व्यवहार भिन्न- भिन्न होते हैं। जब बगीचे में खिले फूल लहराते हैं तब फूल की सुंदरता एवं उसकी सुगंध की ओर आकृष्ट होकर भौंरे मधु पान करने हेतु मंडराने लगते हैं। लेकिन जब फूल मुरझाकर ज़मीन पर गिर जाता है तब उस फूल के प्रति किसी भौंरे का ध्यान नहीं जाता है। क्योंकि उस फूल में पहले जैसी सुगंध एवं मधु नहीं बचती और भौंरे भी ज़मीन पर गिरे मुरझाए फूल का मधुपान नहीं करता है।

महादेवी वर्मा पुष्प से पूंछती है की जब तू उद्यान में अठखेलिया कर रहा था, तब क्या तूने यह सोचा था की तेरा अंत होगा। इस समय जब तू मुरझाया हुआ पड़ा है उद्यान में, अब कोई भ्रमर क्यों पास नही आता है तेरे। और वो पवन जिसने तुझे आनंद दिया था उसीने आज तुझे गिरा दिया हैं। आज जब तू मुरझाया हुआ धरती पर पड़ा हुआ है, कोई तेरे लिए रोने वाला नहीं हैं।

महादेवी वर्मा पुष्प को हौसला प्रदान करते हुए कहती है, पुष्प व्यथित मत हो। क्योंकि तेरी ही नहीं इस स्वार्थमय संसार में सभी की यही गति होती हैं। संसार स्वार्थ के ऊपर ही चलता हैं। जब तूने अपनी सारी खुशबु और सुंदरता जगत पर वार दी, फिर भी संसार ने तेरी इस दशा पर दुःख ना किया तो फिर हम जैसे निसार मनुष्य के हश्र पर कौन आँसू बहाने वाला है?

Critical Overview / अवलोकन

महादेवी वर्मा की मुरझाया फूल कविता मानव जीवन की क्षण भंगुरता को अत्यधिक मार्मिक ढंग से दर्शाया है। मुरझाया फूल कविता में कवियित्री मुरझाया हुआ फूल को सम्बोधन करते हुए कहती हैं कि सूखे सुमन अपने बाल्य काल यानी कली थी, उस समय हँसते खिलखिलाते हुए तुम पवन के प्रभाव से खिल गए। जब शुरुआत में पुष्प खिला तो उसपर बहोत सारे भँवरे आकर मधु के लिए मंडराने लगे। जब पुष्प खिलता है उस समय उसपर चन्द्रमा, पवन और माली का स्नेह उमड़ कर आने लगता हैं। कोई उसको हंसाता है, कोई उसको देखकर आनंदित होता है, कोई लोरियाँ गाकर सुलाता हैं। आज जब तू मुरझाया हुआ धरती पर पड़ा हुआ है, कोई तेरे लिए रोने वाला नहीं हैं। महादेवी वर्मा पुष्प को हौसला प्रदान करते हुए कहती है, पुष्प व्यथित मत हो। क्योंकि तेरी ही नहीं इस स्वार्थमय संसार में सभी की यही गति होती हैं।

कवियत्री ने यहाँ पर पुष्प के जीवन का वर्णन करते हुए कलात्मक रूप से मनुष्य जीवन की निःसारता और संसार के स्वार्थमय होने का सटीक वर्णन किया है। कवियत्री कहती है कि मनुष्य को ये समझना चाहिए की जीवन क्षणभंगुर है व उसी अनुसार संसार में आचरण करना चाहिए।

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ महादेवी वर्मा की कविता का मूल भाव प्रेम की पीर, दुःख है।
- ▶ प्रतीकात्मकता का प्रयोग है।
- ▶ अंतिम समय की पीड़ा का वर्णन है।
- ▶ सरल भाषा में फूल के माध्यम से जीवन के सत्य को दर्शाया है।
- ▶ 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- ▶ 1982 में यामा पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- ▶ 1988 में पद्म विभूषण पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मुरझाया फूल' शीर्षक कविता किसने लिखी है?
2. महादेवी वर्मा का जन्म कहाँ हुआ है?
3. आधुनिक मीरा कौन है?
4. महादेवी वर्मा कौन-सी प्रवृत्ति की कवयित्री है?
5. महादेवी वर्मा के किस काव्य ग्रंथ को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है?
6. महादेवी वर्मा को कब ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है ?
7. महादेवी वर्मा को कब पद्मविभूषण उपाधि मिली है?
8. महादेवी वर्मा की मृत्यु कब हुई?

Answers / उत्तर

1. महादेवी वर्मा ने।
2. 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रुख़ाबाद में हुआ था।
3. महादेवी वर्मा।
4. रहस्यवाद।
5. 'यामा' को
6. 1932 में
7. 1956 में
8. 11 सितम्बर सन् 1987 को

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. ‘मुरझाया फूल’ नामक कविता के अनुसार महादेवी के छायावादी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
2. महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. महादेवी वर्मा के काव्यसौष्ठव पर विचार प्रकट कीजिए।
4. मुरझाया फूल कविता पर टिप्पणी लिखिए।
5. महादेवी वर्मा की भाषा शैली पर विचार प्रकट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. हिन्दी साहित्य इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
10. कवि निराला – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
11. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा।
12. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
13. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
14. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।
15. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।
16. महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
17. महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
18. महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
19. महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
20. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
21. दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

इकाई 5

कलम या कि तलवार

दिनकर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'कलम या कि तलवार' कविता के बारे में समझता है
- दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- दिनकर की भाषा-शैली, उनकी कविता के भावपक्ष और कला पक्ष से परिचय प्राप्त करता है
- 'कलम या कि तलवार' कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता के बारे में समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रामधारी सिंह दिनकर हमारे राष्ट्र कवि है। रामधारी सिंह का उपनाम है दिनकर। जिसका अर्थ है सूरज। दिनकर वास्तव में आधुनिक हिन्दी काव्य जगत में सूरज (दिनकर) है। आप छायावादोत्तर काल के प्रथम पीढ़ी के अग्रणी कवि और लेखक हैं। गद्य और पद्य साहित्य में उनका समान अधिकार है। किंतु महान कवि के रूप में उनकी विशेष ख्याति है। दिनकर ने कई साल राज्य सभा के मनोनीत सदस्य के रूप में भी प्रशंसनीय योगदान अर्पित किया है। आपके 'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य और 'संस्कृति के चार अध्याय' आलोचना ग्रंथ सर्वमान्य है।

दिनकर राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी कवि है। स्वतंत्रता संग्राम के समय आप ने अपनी कविता द्वारा नौजवानों में राष्ट्र भक्ति और आज़ादी की अनिवार्यता जागृत की। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को सजीव बनाने के लिए कलम को शस्त्र बनाया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रामधारी सिंह दिनकर, कलम, तलवार, अहिंसा, हिंसा

Discussion / चर्चा

रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी छायावादोत्तर कविता के सशक्त कवि है। उनका जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। सन् 1928 में उन्होंने मेट्रिक परीक्षा पास किया। सन् 1932 में पटना विश्वविद्यालय से उन्होंने इतिहास विषय लेकर बी. ए. ऑनर्स उपाधि पास किया। दिनकर पहले स्कूल में अध्यापक रहे थे। सन् 1934 में अध्यापक नौकरी त्यागकर उन्होंने बिहार सरकार में सब-रजिस्ट्रार पद स्वीकार किया। आप सन् 1950 में बिहार के मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष रहे हैं। चार

वर्ष बाद भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर सुशोभित रहे। आगे भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष बने।

दिनकर का जन्म परतंत्र भारत में हुआ था। तब पूरे भारत में गाँधीजी के नेतृत्व में आज़ादी का संग्राम ज़ोरों पर था। एक ओर सरकार की अन्याय और अव्यवस्था में लोग थके हुए थे। दूसरी ओर सामंतों-साहूकारों की अनीति-अक्रम भोगना पड़ता था। किसानों-मज़दूरों का संघर्ष भी फैला हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम हिंसावादी और अहिंसावादी आदर्श में विभक्त होकर भी दोनों की लक्ष्य आज़ादी की प्राप्ति थी। कवियों में अधिकांश राष्ट्रवादी बनकर राष्ट्रीय नवजागरण का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। दिनकर स्वतंत्र भारत में भी कार्यरत रहे थे। उन्होंने विशिष्ट पदों का संभालन भी बड़ी कुशलतापूर्वक किया है।महाकवि रामधारी सिंह दिनकर की मृत्यु 24 अप्रैल 1974 में तमिलनाडु के मद्रास (चेन्नई) में हुई थी।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर को कई आदर-सम्मान मिले है, जिनमें मुख्य है, सन् 1959 में केंद्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार तथा सन् 1959 में भारत पद्म विभूषण दे कर सम्मानित किया गया है। दिनकर को भागलपुर विश्वविद्यालय ने डॉक्ट्रेट उपाधि से सम्मानित किया गया है। गुरू महाविद्यालय ने विद्या वाचस्पति उपाधि, राजस्थान विद्यापीठ ने साहित्य चूड़ामणि उपाधि से सम्मानित किया गया है। दिनकर के उर्वशी नामक काव्य को सन् 1972 में ज्ञानपीठ मिला है।

प्रमुख कृतियाँ–

- पद्य साहित्य - 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रेणुका', 'विजय सन्देश', 'प्राणभंग', 'हुंकार', 'रसवंती', 'द्वन्दगीत', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'नीम के पत्ते'।
- गद्य साहित्य - 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर', 'राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी', 'मेरी यात्राएँ', 'दिनकर की डायरी', 'आधुनिक बोध'।
- रचनाकार की अन्य रचनाएँ - 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रेणुका', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर'।

कलम या कि तलवार - रामधारी सिंह दिनकर

दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार
अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर का मैदान
कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल की नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे
एक भेद है और वहां निर्भय होते नर-नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बादल में बिजली होती, होते दिमाग में गोले
जहाँ पालते लोग लहू में हलाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में नहीं हुई तलवार।

शब्दार्थ

तन	=	शरीर
अंध	=	अंधेरा
कक्ष	=	कमरा
मीठे	=	मधुर
दिमाग	=	मस्तक
अंगारे	=	दहता हुआ टुकड़ा
प्रज्वलित	=	चमकता हुआ, जलता हुआ
प्राण	=	जीवन
निर्भय	=	भय के विना
नर-नारी	=	पुरुष और स्त्री
उगलती	=	बाहर निकलना
चिंगारी	=	जलती हुई आग का टुकड़ा

हरदम	=	सदा समय
शोले	=	ज्वाला
बादल	=	मेघ
दिमाग	=	मस्तिष्क
गोले	=	वृत्त, वस्तु
लहू	=	खून
हलाहल	=	प्रचंड

सारांश

'कलम या कि तलवार' दिनकर की एक विचार-प्रधान और ओजपूर्ण कविता है। यह छायावादोत्तर कविता का प्रतिनिधित्व करती है। कवि इसमें कलम और तलवार, दोनों की उपयोगिता व्यक्त करते हुए दोनों का स्थान निर्धारित करते हैं। कलम अस्तित्व बनाये रखती है तो तलवार सर्वनाश। कलम सामाजिक परिवर्तन की चीज़ है, तलवार मनुष्य का निशान तक समाप्त कर देने वाली चीज़ है। कलम अहिंसा का द्योतक है तो तलवार हिंसा की परिचायक है।

वस्तुतः प्रस्तुत कविता में कलम एवं तलवार, दोनों का निर्माण और नाश के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। कलम बौद्धिकता की पर्याय है, तलवार शारीरिक पीड़ा की। 'मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय' – इस पंक्ति में कलम और तलवार का अलग-अलग प्रतीक प्रकट करने का प्रयास हुआ है। कलम मन में ऊँचे-ऊँचे भावों को जगाती है तो तलवार शारीरिक शक्ति पैदा करती है। 'कलम या कि तलवार' नामक कविता में कवि रामधारी सिंह दिनकर कलम और तलवार की उपयोगिता व्यक्त करते हुए कहते है कि अपनी-अपनी जगह में दोनों को स्थान होता है। कलम और तलवार, दोनों प्रधान है। कवि कहते है कि कलम और तलवार, दोनों में क्षमता है। दोनों की अपार शक्ति है। लेकिन दोनों में स्पष्ट अंतर है। कलम सृष्टि करती है, तो तलवार नाश करती है। कलम मन में अनेक विचारों को पैदा करती है। तलवार खून से अधिकार जमाती है।

'दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार'

कलम मन में विचारों की अभिव्यक्ति करती है। कलम से निकलने वाले शब्द व वाक्य से समाज को जगाया जा सकता है। दूसरी ओर तलवार ऐसा एक शस्त्र है जिससे बौद्धिक जीत नहीं होती है, शारीरिक विजय मिल सकती है। विचारवान मनुष्य के मन में चेतना जाग्रत करने के लिए कलम सशक्त है। कवि कहते है कि कलम और तलवार, दोनों में ताकत है। कलम विवेकी तथा विचारशील जन-समाज का सृजन करती है। तलवार खून से अपनी ताकत का प्रदर्शन करती है। वैयक्तिक तथा सामाजिक सुरक्षा कलम से ज्यादा तलवार से संभव है। जहाँ शस्त्र व तलवार परास्त होता है वहाँ कलम विजय पा सकती है। अँधेरे कमरे में बैठकर कलम से अच्छे-अच्छे, मीठे-मीठे गाने रचे जा सकते हैं। तलवार बाहर की सुरक्षा प्रदान करती है।

कवि कहते है कि कलम हमारे मन में विविध विचारों को पैदा करती हैं और हर वक्त जलते अंगारे के समान सोच-विचार की प्रेरणास्रोत बनकर रहती है। कलम अक्षर रूपी आग को उगलती है। कलम और तलवार, दोनों में से कलम की शक्ति सर्वोच्च है। इसीलिए कि कलम से मनुष्य का मानसिक बदलाव संभव हो सकता है। तलवार की ताकत गिनने योग्य है। किंतु ज्ञान की व्याप्ति तथा शक्ति गिनने से परे है। कलम की वाणी से संसार की सर्वतोमुखी तरक्की होती है। कवि पूछते है कि कलम या तलवार में आपको क्या पसंद है। इसमें से किसको स्वीकार कर हम समाज निर्माण करेंगे?

कवि का कथन है कि कलम महत्ता का निशान है तो तलवार सत्ता की निशान है। कलम का उपजाऊ ज्ञान-विवेक है। लेकिन तलवार का उपजाऊ खून है। कवि स्पष्ट करते है कि जिस व्यक्ति के अंदर जोश, वैचारिक शक्ति और विवेक है उस व्यक्ति को तलवार की ज़रूरत नहीं है। तात्पर्य यह है कि परिवर्तन के लिए हिंसात्मक शस्त्रों को छोड़ दें और अहिंसात्मक कलम को अच्छा उपकरण समझ लें।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने 'कलम या कि तलवार' शीर्षक कविता में कलम को ज्ञान-शक्ति और तलवार को दैहिक शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। कलम ज्ञान की प्रतीक है, तो तलवार क्रुद्धता की। कलम के समान तलवार भी उपयोगी चीज़ है। लेकिन दोनों का उपयोग अलग-अलग तरीके से होता है। परंतु इस बात में कोई संदेह नहीं कि कलम और तलवार की तुलना में कलम की शक्ति सर्वोपरि है। अक्षर अग्नि है

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जिससे अनचाहे कार्यों का सर्वनाश हो सकता है। कवि ने अक्षरों को चिंगारी इसलिए कहा है कि समाज में कलम से पैदा होने वाली चिनगारी भविष्य में ज्वाला का रूप ले लेती है। कलम क्रांति का निर्माण करती है तो तलवार चुने हुए जीव-जंतुओं को मार देती है। तलवार की तुलना में कलम छोटी चीज़ है, फिर भी उसकी शक्ति अपार और अपरिमित है। छोटी-सी वस्तु कलम संसार के कितने नीति-रीति तथा निर्माणों को नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। तलवार की ताकत क्षणिक है। किंतु कलम की ताकत काल और समय सीमा को पार कर मनुष्य को सोचने-समझने के लिए विवश कर देती है। कलम रीति-नीति को सर्वथा के लिए पलट देती है।

तलवार की सीमा-व्याप्ति व असर कुछ लोगों पर होता है। किंतु कलम की व्याप्ति चमत्कारी है। तलवार केवल बाहरी शरीर पर चोट करती है। परंतु कलम काल-कालांतर और देश-देशांतर की चीज़ है। वह करोड़ों लोगों के मन-मस्तिष्क में चिंगारी बनकर परिवर्तन के लिए सख्त उत्तेजना कर देती है। असल में भौतिक बदलाव से बड़ा बदलाव है मन-मस्तिष्क का बदलाव। ऐसा एक बदलाव तलवार से असंभव है, कलम से यह संभव है। यही नहीं है, कलम विविधता की पृष्ठभूमि में एकता पैदा करती है। इससे समाज एक समान सोच के साथ एक गति पा सकता है। तलवार स्वयं रक्षा की चीज़ है। कलम की शक्ति पूरे संसार की रक्षा कर सकती है। विवेच्य कविता हमारे अन्दर इस प्रकार के कई विचार-विमर्श जागृत करने में समर्थ है।

'कलम या कि तलवार' विचारों को उद्वेलित करने वाली सबल कविता है। इसमें कवि पाठकों के समक्ष दो चीज़ों को पेश करता है। जिसमें एक कलम और दूसरी तलवार है। दोनों अलग-अलग रूप में उपयोगी है। कलम की तुलना में तलवार बड़ी है। लेकिन शक्ति के हिसाब से कलम ज्यादा ताकत वाली प्रतीत होती है। क्योंकि वह मन में कई प्रकार के विचारों-विमर्शों को पैदा करने में समर्थ है। कलम की वाणी अनेक चिंताओं को जगाकर सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करती है।

कलम की शब्द-शक्ति अवर्णनीय है। उसका एक-एक अक्षर अंगारे जैसा है। ये अक्षर मन-मस्तिष्क में सैकड़ों चिंताओं को पैदा करते हैं। कलम अहिंसा पर निर्भर है तो तलवार हिंसा पर। कलम की शक्ति बौद्धिक है और तलवार की शक्ति दैहिक है।

विवेकवान एवं शिक्षित आदमी कलम को अपनी शस्त्र मानते हैं। किंतु विवेकहीन, अशिक्षित और अर्ध शिक्षित आदमी तलवार को शस्त्र बनाते हैं। कलम सामाजिक परिवर्तन के लिए उपयोगी चीज़ है तो तलवार परिवार-समाज का बिखराव करती है।

तलवार का असर कुछ ही लोगों के शरीर पर होता है। परंतु कलम का असर संपूर्ण मानव जाति पर पड़ता है। कलम का प्रभाव स्थायी है वहीं तलवार का प्रभाव तात्कालिक व अस्थायी है। कलम का स्पर्श मन और मस्तिष्क पर पड़ता है। तलवार जीव और अजीव को नष्ट कर देती है। वही कलम हृदय पर मृदु स्पर्श करती है। तलवार शरीर पर अपनी कठोर शक्ति छोड़ देती है। युद्ध तलवार से जीता जा सकता है।

कवि के अनुसार कलम ह्मदय को संवारती है। तलवार अधिकार की ताकत जमाती है। तलवार एक-दूसरे के बीच अलगाव पैदा करती है। कलम समाज में उत्साह और उमंग पैदा करने में सक्षम है। कलम से शांति-समाधान स्थापित होता है। तलवार अशांति और अक्रम फैला देता है। कलम जिस समाज की प्रगति सही दिशा पर करती है, तलवार उस समाज में ईर्ष्या-द्वेष पैदा करती है। प्रस्तुत कविता में कवि उपरोक्त प्रकार कलम और तलवार की स्थान-मान निर्धारित करते हैं और अंत में पूछते है कि तुम्हें कलम या कि तलवार चाहिए? सुसंस्कृत और शिक्षित समाज तलवार नहीं स्वीकारता है, कलम को स्वीकार करता है।

'अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान' - पंक्ति की आशय यह है कि कहीं भी बैठकर कलम का सदुपयोग हो जाता है। अंधेरे कमरे में बैठकर रची गई कविता भी समाज का अंधेरा मिटाने का सामर्थ्य रखती है। अंध कक्ष का प्रयोग अंधेरा व अज्ञता को सूचित करने के लिए किया गया है।

'कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली'- पंक्ति में परतंत्रता से नवजागरण की ओर जाने का दृढ़ संकल्प प्रस्फुटित होता है।

Critical Overview / अवलोकन

'कलम या कि तलवार' शीर्षक कविता वर्तमान संघर्ष पूर्ण ज़माने में आशा की ज्वाला जला देती है। संसार भर में छोटे-मोटे युद्ध व संघर्ष चल रहे है। कभी-कभी इंसान छोटी-छोटी बातों के लिए भी शस्त्र उठा लेता है। तलवार अशांति का पर्याय है। इधर तलवार का मतलब शस्त्र है। संसार युद्ध से पीड़ित है। कवि व्यक्त करते है कि शस्त्र कभी भी समाधान नहीं लाता है, अशांति फैला देता है। यह संदेश प्रसारित करने वाली प्रस्तुत कविता समकालीन समाज में महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

कलम सबसे सशक्त शस्त्र है। लेखक अपने इस सशक्त शस्त्र द्वारा संसार से कुछ कहना चाहता है। लेखक के लिए कलम बम से सख्त हैं। कलम हमारे अंदर छिपी हुए अनेक भावनाओं को बाहर निकालती है। लेखनी जन-मानस में अमिट छाप पैदा करती है। कलम ज्ञान और विवेक का पर्याय भी है। हर क्षेत्र में कलम का प्रभाव पड़ता है। तलवार किसी में भी मानसिक परिवर्तन नहीं डालती है। मानसिक परिवर्तन सबसे बड़ा परिवर्तन है। इतना ही नहीं, तलवार का दुष्परिणाम भयानक होता है। इससे बचने का आसान मार्ग कलम को तलवार बनाना है।

Recap / पुनरावृत्ति

- रामधारी सिंह दिनकर हमारे राष्ट्र कवि है।
- दिनकर का जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था।
- कलम और तलवार, दोनों में से कलम की शक्ति सर्वोच्च है।
- कलम से मनुष्य के मानसिक बदलाव संभव हो सकता है।
- कलम एवं तलवार, दोनों को निर्माण और नाश के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रामधारी सिंह दिनकर का जन्म कब, कहाँ हुआ था?
2. दिनकर को कब पद्म विभूषण मिला है?
3. दिनकर के किस काव्य को ज्ञानपीठ मिला है?
4. दिनकर को कब ज्ञानपीठ मिला है?
5. कलम किसका प्रतीक है?
6. तलवार किसका प्रतीक है?
7. संसार में कलम और तलवार में से किसकी शक्ति असीम है?
8. दिनकर को कब केंद्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers / उत्तर

1. 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में
2. 1959 में
3. उर्वशी नामक काव्य को
4. सन् 1972 में
5. निर्माण का
6. नाश का
7. कलम की
8. सन् 1959 में

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. 'कलम या कि तलवार' कविता के संदर्भ में युद्ध और समाधान विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए।
2. रामधारी सिंह दिनकर के काव्यसौष्ठव पर विचार प्रकट कीजिए।
3. कलम या कि तलवार कविता पर टिप्पणी लिखिए।
4. राष्ट्रकवि के रूप में रामधारी सिंह दिनकर के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।
5. 'कलम या कि तलवार' कविता की प्रासंगिकता पर आलेख तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. कवि निराला – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
10. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा।
11. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
12. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
13. जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।
14. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।

15. महादेवी वर्मा – डॉ.इन्द्रनाथ मदान।
16. महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
17. महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
18. महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
19. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
20. दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

SGOU

इकाई 6

हम अनिकेतन

बालकृष्ण शर्मा नवीन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- बालकृष्ण शर्मा नवीन के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- 'हम अनिकेतन' शीर्षक कविता से परिचय प्राप्त करता है
- बालकृष्ण शर्मा नवीन की भाषा-शैली, विषय-चयन आदि से परिचय प्राप्त करता है
- बालकृष्ण शर्मा नवीन के रहस्यवाद से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

बालकृष्ण शर्मा नवीन छायावादोत्तर युग (1936-1943) के प्रखर कवि है। यह काल भारतीय सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन का काल माना जाता है। इस काल की कविता में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विचार धाराएँ मिली-जुली हैं। इस समय की कविता में एक ओर राष्ट्र-मुक्ति आंदोलन और दूसरी ओर द्वितीय विश्वयुद्ध के भयानक परिणाम का रूप-भाव देखने को मिलता है। इस समय के कवि विविध आदर्शवादी बनकर काव्य-जगत में सक्रिय रहे थे। राष्ट्रवाद, गाँधीवाद, मार्क्सवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, यथार्थवाद, हालावाद आदि विविध आदर्श अस्तित्व में आते गए। प्रमुख कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामेश्वर शुक्ल अंचल, नागार्जुन, हरिवंश राय बच्चन आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन का समय भारत में समस्याओं और संघर्षों का काल था। भारत भर में आज़ादी के लिए संग्राम चल रहे थे। तब यहाँ कई किसान-मज़दूर आंदोलन भी हुए थे। तब गाँधीजी, नेताजी, नेहरु जैसे नेता युवकों में नयी उमंग और उत्साह पैदा कर रहे थे। आज़ादी का संग्राम हिंसावादी और अहिंसावादी के रूपों में विभक्त हो चुका था। इस काल में अंग्रेजों से शस्त्र और निःशस्त्र लड़ने को सैकड़ों-हज़ारों नौजवान आगे आये। युवकों को उत्तेजित करने में कवि भी लगे हुए थे। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने विप्लव, देशभक्ति और प्रेम की कई कविताएँ लिखी है।

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक आदर्शवादी कवियों ने विदेशियों के प्रति आक्रोश, स्वतंत्रता-संग्राम का उत्साह, अहिंसा का महत्व, अतीत का महत्व, बलिदान की अनिवार्यता, बुराईयों एवं कष्टों से मुक्ति की आशा और सबसे बढ़कर आज़ाद होने की आवश्यकता आदि पर ज़ोर दिया है। इस समय के राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कवियों ने पराधीनता के प्रति कट्टर विरोध प्रकट किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बालकृष्ण शर्मा नवीन, अनिकेतन, स्वतंत्रता, त्याग और समर्पण, देश-प्रेम

Discussion / चर्चा

प्रगतिशील कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन का जन्म 8 दिसम्बर सन् 1897 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के भयाना नामक गाँव में हुआ था। ग्वालियर के शाजापुर से इनकी प्राथमिक शिक्षा हुई। नवीन ने उज्जयिनी से दसवीं तथा कानपुर से इंटर की परीक्षा पास की। सन् 1916 में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी और गणेशशंकर विद्यार्थी आदि से इनकी मुलाकात हुई। सन् 1920 में बी.ए. के लिए पढ़ते समय उन्होंने गाँधीजी के आह्वान पर कॉलेज छोड़ दिया।

बालकृष्ण शर्मा नवीन सन् 1920 से अंतिम समय तक सच्चे देशभक्त बनकर व्यवहारिक राजनीति में सक्रिय रहे। आप 1952 से मृत्यु पर्यंत संसद के सदस्य रहे। उन्होंने भारतीय संविधान निर्मात्री परिषद के सदस्य के रूप में प्रशंसनीय योगदान अर्पित किया है। उन्होंने हिन्दी को राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए बड़ा योगदान दिया। बालकृष्ण शर्मा नवीन अच्छे पत्रकार भी रहे थे। उन्होंने 'प्रताप' तथा 'प्रभा' नामक पत्रिकाओं का संपादन प्रशंसनीय रूप में किया है। साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में बालकृष्ण शर्मा नवीन के योगदान के कारण भारत सरकार ने सन् 1960 में उन्हें पद्म भूषण उपाधि दे कर सम्मानित किया। राष्ट्र सेवक तथा वरिष्ठ कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन 29 अप्रैल 1960 में स्वर्ग सिधार गये।

'कुंकुम', 'रश्मिरेखा', 'ऊर्मिला', 'अपलक', 'विनोबा स्तवन', 'क्वासी', 'प्राणार्पण', 'हम विषपायी जन्म के' आदि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की प्रमुख कृतियाँ है।

> 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
> जिससे उथल-पुथल मच जाये।'
>
> बालकृष्ण शर्मा नवीन

हम अनिकेतन - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन
हम तो रमते राम हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वेतन?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़ माटी
ठाट फकीराना है अपना वाघांबर सोहे अपने तन?
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शोणित-उद्वेलन!

हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सने ईंट-गारे में हम क्यों बने व्यर्थ में बेमन?

ठहरे अगर किसीके दर पर कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जो देखा कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन!
हम अनिकेतन।

शब्दार्थ

अनिकेतन	=	बिना घर का, गृहहीन
काटी	=	व्यतीत की
परिपाटी	=	परंपरा

घरौंदा	=	घर
फ़कीराना	=	फकीर का जैसा जीवन
बाघम्बर	=	बाघ की छाल का कपड़ा
हास-विलास	=	मनोरंजन पूर्ण विलासिता
संग्रह	=	वस्तुओं का समाहार
विग्रह	=	अलग-अलग करना
जँचे	=	अच्छा लगना
उद्वेलन	=	उमड़ना
गारे	=	मिट्टी
भटके	=	इधर-उधर घूमना, फिरना
सदन	=	मकान, घर
दर-दर घर-घर	=	घर से घर की ओर भटकना
खाक	=	भस्म, धूल
बेमन	=	बिना मन के, तात्पर्य के बिना
ठहरे	=	रुके
दर	=	दरवाजा
सकुचाकर	=	संकोच से
दरबान	=	द्वारपाल
भिक्षु	=	भिखारी, सन्यासी

सारांश

'हम अनिकेतन' शीर्षक कविता बालकृष्ण शर्मा नवीन के 'रश्मिरेखा' नामक काव्य-संग्रह में संकलित है। अनिकेतन, निकेतन का विपरीत शब्द है जो बेघर को सूचित करता है। यह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की प्रबल कर्तव्य निष्ठा की ओर पाठकों के ध्यान आकर्षित करने वाली कविता है। कवि स्पष्ट करते है कि स्वतंत्रता सेनानियों का निकेतन भारत है, उनके बंधु-बाँधव भारतीय है। पूरे देश निकेतन होने से वह अनिकेतन रहता है।

'हम अनिकेतन' शीर्षक कविता में बालकृष्ण शर्मा नवीन सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों, परंपरागत बंधनों से मुक्ति पाने की आशा प्रकट करते हैं। स्वतंत्रता सेनानियों का कोई निकेतन या घर नहीं है, वे अनिकेतन हैं। वे अपना निकेतन छोड़कर संग्राम पथ पर निकलते हैं। देश ही उनका निकेतन है तथा देशवासी उनके बंधु-बाँधव हैं।

कवि कहते हैं कि यह पूरा भारत हमारा घर-परिवार है। हम अकेले नहीं हैं, कई भारतीय हमारे साथ है। इसलिए फ़कीराना रमते राम बनकर हम स्वतंत्रता सेनानी आगे बढ़ते हैं। हमारा एकमात्र लक्ष्य आज़ादी की प्राप्ति है, बाकी सब नगण्य। इस यात्रा में हमें कोई विघ्न-बाधा नहीं है। कवि पूछते है कि हमें कहाँ घर, कहाँ दर? हम फ़कीर जैसे है। फकीरों को रुपये-संपत्ति की ज़रूरत नहीं है। स्वतंत्रता सेनानी त्यागी और राष्ट्र के लिए स्वयं समर्पित है। कवि घर बनाना नहीं चाहता है। क्योंकि वह जगह-जगह भटकना चाहता है। इसलिए कवि के लिए ईंट-पत्थर अनुपयोगी चीज़ है। स्वतंत्रता सेनानी अपने जीवन को त्याग और बलिदान के रूप में बदल देता है। उनके त्याग और बलिदान के समतुल्य कुछ भी नहीं है। कवि के मत में देश की आज़ादी के पश्चात भी देश सेवक अपनी सेवा वृत्ति से हट नहीं सकता है। स्वतंत्रता के बाद भी वह अपना कर्तव्य जारी रखता है, क्योंकि राष्ट्र निर्माण तथा लोकतंत्र में उनकी बड़ी भागीदारी है।

प्रस्तुत कविता के शीर्षक में ही नहीं, पंक्तियों में भी कवि ने बार-बार अनिकेतन शब्द का प्रयोग किया है। इसमें कवि अपने को धनहीन फ़कीर रमता राम बताते हैं। वे स्वयं को घूमने-फिरने वाला एक फ़कीर बताते हैं। समाज रमते राम के साथ भिक्षुओं का जैसा व्यवहार करता है। फ़कीरों का न कोई निकेतन है, न कोई ठिकाना है, वे तो जगह-जगह विचरने वाले हैं। यही उनकी नियति है। इस फ़कीरपन के बदले कवि दूसरी परिपाटी सीखना नहीं चाहता है क्योंकि उनकी रीति तो फ़कीराना है। फ़कीर का जीवन सीधा-सादा और सच्चा है। कवि स्वयं अपने को किसी बंधन में बाँधकर जीने का इच्छुक नहीं है। बंधन गुलामी-व्यवस्था का द्योतक है। जगह-जगह घूम फिरकर जीने में आज़ादी और आनंद है। इतना ही नहीं, कवि का अब तक का अनुभव कठिन रहा है। इसलिए वह ऐसा जीवन पसंद नहीं करता है।

प्रस्तुत कविता स्वतंत्रता-संग्राम के समय में आज़ादी के सेनानियों को प्रोत्साहित करने के वास्ते रचित है। कवि इसमें राष्ट्रीय चेतना का उद्घोषण करता है। इस में कवि की स्वच्छंद जीवन-दृष्टि देखने को मिलती है। कवि व्यक्त करते हैं कि हम स्वतंत्रता सेनानियों में त्याग और समर्पण की भावना निहित है। इसलिए हम आज़ादी के रास्ते पर आगे-आगे बढ़ते जा रहे है। स्वतंत्रता संग्राम के मार्ग पर जाने वालों को क्या घर, क्या दर और क्या वेतन?

स्वतंत्रता सेनानी तन, मन और धन भूलकर आज़ादी के सूर्योदय की प्रतीक्षा में कार्यरत हैं। वे सही अर्थ में देश-प्रेम के दीवाने हैं। उनका देश -सेवा के आलावा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं है। अर्थात वह स्वयं अपना तन, मन और धन राष्ट्रीय प्रगति के लिए अर्पित कर सहर्ष निकल पड़े हैं।

स्वतंत्रता सेनानियों के निस्वार्थ मनोभाव को व्यक्त करते हुए आगे कवि कहते हैं कि उनका अपना कोई घर नहीं होता है। जब वे इस पथ पर निकलते हैं तब वे अपने घर-बार से छूटते हैं। आज भारत देश ही उनका घर है। सारे भारतीय उनके सगे-संबंधी है। कवि कहते है कि हम अकेले नहीं हैं, हज़ारों-लाखों देश-स्नेही साथ हैं। सारा राष्ट्र और लोग उनके साथ होने से कवि को कभी भी अकेलापन प्रतीत नहीं होता है।

कवि स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तित्व को प्रकट करते हुए कहते है कि हम तो फ़कीर है। इसलिए रमते राम के समान जगह-जगह चलते हैं। हमारा कोई निश्चित घर व निर्धारित जगह नहीं है। लेकिन हमारा लक्ष्य तो निश्चित है, वह है स्वतंत्रता की प्राप्ति। हम अंतिम लक्ष्य के साक्षात्कार के लिए निरंतर गतिशील है। इस राह में हमारी आज़ादी ही एकमात्र लक्ष्य है, वह ही याद है, बाकी सब हम भूल गए हैं। घर की याद आते ही हमारी आँखों के सामने हमारा भारत नज़र आता है। हमें सगे-संबंधियों की याद आते ही करोड़ों भारतीय सामने आते हैं।

कवि स्वतंत्रता सेनानियों की उपमा फ़कीरों से करता है। फ़कीर निःस्वार्थी होते हैं। वे अपने लिए नहीं, दूसरों की भलाई के लिए दिन-रात बिता देते हैं। निर्धन फ़कीर दूसरों के हित के लिए तन, मन, धन समर्पित कर देते हैं। स्वतंत्रता सेनानी भी स्वयं समर्पित हैं। वे समझते हैं कि परोपकार ही पुण्य है। कवि हमारा ध्यान अंग्रेजों के ज़माने के कुछ भारतीय सरकारी कर्मचारियों की ओर आकर्षित करता है। वे सरकारी पद पर बैठकर सुख-सुविधापूर्ण जीवन बिताते थे। वे कभी-कभी देश-द्रोही बन कर देश प्रेमियों को कठिनाइयों में धकेल देते है। कभी-कभी विदेशियों के स्वदेशी कर्मचारी निर्लज्ज व्यवहार करते थे। वे एकसाथ मातृभूमि और उसकी निस्सहाय संतानों को विदेशियों के पैरों पर गिरा देते थे। सच कहें तो ऐसा स्वदेशी कर्मचारी विदेशियों से भी बड़ा शत्रु है।

कवि कहते हैं कि आज़ादी पाने के बाद भी स्वतंत्रता सेनानी अपना दायित्व छोड़ता नहीं है। स्वतंत्रता सेनानियों को जीवन की नयी परंपरा शुरू करने की आवश्यकता नहीं है। देश स्वतंत्र हो गया। स्वतंत्रता सेनानी स्वतंत्र है। किंतु देश भक्त अपनी देश सेवा से पीछे नहीं हटते है। अर्थात वे अपने कर्तव्य से हट कर रहें तो उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती है। जीवन का यही मर्म समझकर देश सेवक हर वक्त अपनी सुख-सुविधाओं से अलग रहता है। कवि के अनुसार राष्ट्र पुनर्निर्माण और लोकतंत्र की स्थापना में स्वतंत्रता सेनानियों का बड़ा हाथ है। वह अपना कर्तव्य निभाकर जीवन का लक्ष्य पा सकता है।

देश भक्तों का अंतिम लक्ष्य परतंत्रता से स्वतंत्रता प्राप्ति है। आज़ादी के अलावा उनकी कोई दूसरी चाह नहीं है। देश मुक्ति के लिए पूरे भारतवासियों की सहायता और सहयोग चाहिए। सेनानी जगह-जगह घूमते समय उन्हें अपना घर बनाना निरर्थक लगता है। लोगों ने अपने-अपने घर बना रखे हैं। अपने प्रयत्न से बनाये घर के प्रति लोगों में अपनेपन का भाव है। यह स्वाभाविक लगाव होता है। लेकिन स्वतंत्रता सेनानियों को घर-परिवार से लगाव नहीं है। तब ईंट-पत्थर के मकान बनाने से फ़ायदा नहीं है। अर्थात अनिकेतन ही अच्छा है।

कवि आगे कहते हैं कि हम कभी देश सेवा के वास्ते किसी के घर-द्वार पर पहुंचते हैं, तब गृह नायक हमें कोई पथ यात्री या भिक्षुक समझते हैं। घर के मालिक उन्हें किसी दूसरे घर की तलाश करने को कहता है। कवि को इस पर दुःख होता है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि कवि अपनी कविता के माध्यम से देश, देश भक्ति और देश सेवा के महत्व को सीधे-सादे शब्दों में अंकित किया है।

आजकल अधिकतर राजनीति और राष्ट्र सेवा स्वार्थ पूर्ति का पर्याय बन चुका है। निस्वार्थ सेवा-भाव कम होता आ रहा है। परंतु स्वतंत्रता संग्राम के ज़माने में सेनानी जनसेवा को ईश्वर सेवा समझता था। जब वह घरबार छोड़ता है तब से उनका घर और परिवार देश बन जाता है। परोपकार को परम सौभाग्य समझने वाली पीढ़ी अप्रत्यक्ष होती जा रही है।

- 'ठाट फ़क़ीराना है अपना बाघम्बर' - प्रयोग द्वारा कवि ने बाघ की छाल का वस्त्र की ओर इशारा किया है।
- द्वारपाल के लिए दरबान शब्द का प्रयोग किया है।
- दर-दर घर-घर - शब्दों का बार-बार प्रयोग घर से घर की ओर भटकना व्यंजित करता है।
- परिपाटी शब्द साधारण अर्थ में नहीं, परंपरा को सूचित करने को हुआ है।

Critical Overview / अवलोकन

प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतंत्रता सेनानियों के मनोभाव एवं कर्तव्य बोध को समझाने के लिए अपने को स्वयं उदाहरण के रूप में दिखाया है। कवि स्पष्ट करते है कि मेरे जैसे स्वतंत्रता सेनानी फ़क़ीर है। फ़क़ीर का जीवन परायों के हित के लिए होता है। यह स्पष्ट करते हुए कवि कहते है कि हमें रहने को राजप्रासाद नहीं चाहिए। वैसे हमें घर नहीं चाहिए। हमें मनोरंजन के लिए कोई सुविधा नहीं चाहिए। क्योंकि फ़क़ीर व फक्कड़ एक जगह स्थायी नहीं रहता है। आजकल लोग सुख-सुविधाओं के पीछे दौड़ रहे हैं। वे संपूर्ण जीवन धन-संपत्ति और सुख-भोग जुटाने के ध्येय में भाग-दौड़ करते हैं। भौतिक-सुख लोलुपता मात्र उनका लक्ष्य होता है। किंतु हम जैसे देश भक्त सेनानियों को किसी प्रकार का भौतिक सुख-भोग नहीं चाहिए। कवि के जैसे सेनानी भौतिक-सुखों से विरक्त है। उन्हें इसमें तनिक भी रुचि नहीं है। देश भक्तों के लिए क्षणिक व तात्कालिक सुख-सुविधाएँ व्यर्थ है। वे परोपकार को महान पुण्य मानते हैं। इसलिए वह सुख तजकर यह कष्टप्रद जीवन स्वयं चुन लेता हैं।

कवि स्वतंत्रता सेनानियों के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते है कि हम अपनी सुख-सुविधाओं के लिए नहीं, दूसरों की भलाई के लिए डटे हुए हैं। अधिकांश लोग भौतिक सुख-वस्तु जुटाकर रहने वाले स्वार्थी हैं। ऐसे स्वार्थियों से सच्चे देश भक्तों की तुलना ना करें। हमें ख़ूब पता है कि भौतिक सुख-सुविधाओं से मिलने वाले सुख क्षणिक है। उस सुख के पीछे दुख छिपा हुआ है। परोपकार से प्राप्त सुख ही सच्चा और शाश्वत है।

कवि कहते है कि हम जीवन भर भटकते रहेंगे। एक जगह से दूसरी ओर निरंतर घूमते फिरेंगे। क्योंकि हमारी नस-नस में राष्ट्रीय चेतना कूट-कूटकर भरी हुई है। हमारी आँखों के सामने देश के लाखों-करोड़ों निर्धन, निर्बल और निराश्रित लोग खड़े हुए हैं। इसलिए हम पूरे राष्ट्र को घर मानकर भटकते जा रहे हैं। तब हमें घर बनाने से क्या फायदा? यही नहीं, इधर हमारे जैसे कई लोग बेघर है। उनका मन हमारे साथ है। हमारा चरम लक्ष्य आज़ादी है। उसे पाने के लिए हम यहाँ से वहाँ जाते हैं। ऐसी स्थिति में ईंट-मिट्टी का घर बनाने से क्या लाभ?

कवि कहते है कि हम फ़क़ीर और रमता राम है। हम जैसे रमता राम कई तरह के अनुभव संपन्न है। तात्पर्य यह है कि स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहते समय हमें विविध प्रकार के अच्छे-बुरे अनुभव प्राप्त हुए है। हमें संग्राम पथ पर बढ़ते समय कभी-कभी किसी के घर पर पहुंचना पड़ता है। तब घर के मालिक आकर हमें भिक्षुक समझ कर कहते हैं कि बाबा, इधर से ज़रा आगे जाओ। मतलब यह है कि दूसरा घर देखो। कवि निवेदन करते है कि हम घुमक्कड़ है, हमें आप निर्धन फकीर समझने में हमें तनिक भी दुख नहीं है। लेकिन आप हमें कभी भी भिखारी न समझे। हम देश भक्त है और देश की आज़ादी के लिए इस तरह घूम रहे हैं। हम राष्ट्र सेवावश अनिकेतन हो चुके हैं। आप कृपया समझ लीजिए कि यह देश ही हमारा घर है। हम अपने लिए नहीं, यह कष्ट-दुख तुम्हारे लिए सह रहे हैं। मेरी ही नहीं, तुम सब की गुलामी भी हमें झकझोर देती है। आप से सविनय निवेदन है कि संकट-मुक्ति की मार्ग पर हमें अपमानित-अवहेलित न करें। तुम्हारा अपमान हमारे हृदय को क्षत-विक्षत कर देता है।

छायावादोत्तर कविता की विशेषताएँ

- छायावादोत्तर कविता छायावादी कविता का विकसित रूप है।
- छायावादोत्तर कविता का मुख्य विषय राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना था।
- यह नवजागरण का समय था।

- ▶ इस समय सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध आंदोलन चलते थे।
- ▶ इस समय भारत में अनेक राजनीतिक आंदोलन ज़ोरों पर थे।
- ▶ छायावादोत्तर काव्य धारा आधुनिक हिंदी कविता की सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य धारा है।
- ▶ छायावादोत्तर काव्य सरल और कोमल होने से सभी को पठनीय है।
- ▶ छायावादोत्तर काव्यों में अधिकतर दार्शनिक और आदर्शनिष्ठ काव्य हैं।
- ▶ इस समय सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन कवियों में बड़ा प्रेरणा स्रोत बना हुआ था ।
- ▶ डॉ. नगेंद्र ने छायावादोत्तर कविता को राष्ट्रीय-साँस्कृतिक काव्य धारा और व्यक्तिवादी काव्य धारा के रूप में विभक्त किया है।
- ▶ छायावादोत्तर काव्यों में अधिकांश का मूल आधार देशभक्ति है।
- ▶ छायावादोत्तर कविता को मनुष्य की सहज और सरल कविता कहते हैं ।
- ▶ छायावादोत्तर कविता ने मुख्यतः मानवतावाद को प्रदर्शित किया है।
- ▶ छायावादोत्तर कविता का शिल्प स्पष्ट है और वह निरंतर प्रवाहित है।
- ▶ छायावादोत्तर कविता व्यक्ति चेतन, राष्ट्रीय चेतन और समष्टि चेतन प्रधान है।
- ▶ छायावादोत्तर कविता में छंदों की विविधता पायी जाती है।
- ▶ छायावादोत्तर कवियों ने पराधीनता का कट्टर विरोध प्रकट किया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ बालकृष्ण शर्मा नवीन ने छायावाद युग में काव्य जगत में पदार्पण किया।
- ▶ बालकृष्ण शर्मा नवीन काव्य एवं राजनीति, दोनों में सक्रिय रहे थे।
- ▶ बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविता का मुख्य भाव राष्ट्रीयता की गूँज है।
- ▶ बालकृष्ण शर्मा नवीन प्रेम और मस्ती के कवि कहलाते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का दूसरा नाम क्या है?
2. आधुनिक काल की समय सीमा कहाँ से कहाँ तक है?
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का पितामह कौन है?
4. छायावाद युग कहाँ से कहाँ तक माना जाता है?
5. बालकृष्ण शर्मा नवीन का जन्म कब, कहाँ हुआ था?
6. बालकृष्ण शर्मा नवीन द्वारा संपादित पत्रों के नाम लिखिए?
7. सन् 1960 में बालकृष्ण शर्मा नवीन कौन-से पुरस्कार से सम्मानित हुए?
8. 'हम अनिकेतन' शीर्षक कविता के कवि कौन है?

Answers / उत्तर

1. गद्य काल
2. सन् 1850 से आज तक
3. भारतेंन्दु
4. सन् 1936 में
5. सन् 1897 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के भयाना नामक गाँव में हुआ था
6. प्रताप तथा प्रभा
7. पद्म भूषण उपाधि
8. बालकृष्ण शर्मा नवीन

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. छायावादोत्तर युग की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति समझाइए।
2. बालकृष्ण शर्मा नवीन के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. बालकृष्ण शर्मा नवीन की समकालीन साहित्य धाराओं का परिचय दीजिए।
4. आजकल निस्वार्थ सेवा-भाव कम होता आ रहा है- इस विषय में अपने मित्र के नाम पर लिखने वाले चिट्ठी में अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. 'हम अनिकेतन' कविता पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : नवीन – भवानीप्रसाद मिश्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा – डॉ. नंददुलारे वाजपेयी।
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. अमरनाथ।
5. हिंदी कविता की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ. देवराज शर्मा।
6. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ – डॉ. नगेन्द्र।
7. हिंदी कविता : आधुनिक आयाम – डॉ. राम दरश मिश्र।
8. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत।
9. हिन्दी साहित्य इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
10. कवि निराला – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
11. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा।
12. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह।
13. हिन्दी सहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

14.जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली – ओमप्रकाश सिंह।
15.कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. राजकुमार वर्मा।
16.महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ मदान।
17.महादेवी वर्मा-कवि और गद्यकार – लक्ष्मण दत्त गौतम।
18.महादेवी का साहित्य – ओंकार शरद।
19.महादेवी-नया मूल्यांकन – योगराज धानी।
20.संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
21.दिनकर का गद्य साहित्य, एक अध्ययन – एलियास।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 05

प्रयोगवादी और नयी कविता

इकाई 1

कलगी बाजरे की

अज्ञेय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के आविर्भाव के मुख्य कारणों से परिचित होता है
- प्रयोगवादी कविता की परिभाषा से अवगत होता है
- हिन्दी के प्रमुख प्रयोगवाद कवियों के बारे में समझता है
- प्रयोगवादी कवि अज्ञेय और तारसप्तक के योगदान से परिचय प्राप्त करता है
- 'कलगी बाजरे की' कविता के भावपक्ष और कलापक्ष से अवगत होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

नवीन भावों, नवीन विचारों और नवीन प्रयोगों के साथ हिन्दी काव्य-जगत में प्रस्फुटित हुई काव्य-प्रणाली को प्रयोगवाद कहते है। प्रयोग शब्द का सामान्य अर्थ होता है– नई दिशा में अन्वेषण का प्रयास। अंग्रेजी के Experimentalism का हिन्दी समानार्थी शब्द है प्रयोगवाद। छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद आदि काव्य-आदर्शों के समान हिन्दी काव्य-जगत में प्रकट हुआ एक आदर्शवाद है प्रयोगवाद। हिन्दी में प्रयोगवाद के संस्थापक और प्रमुख कवि अज्ञेय हैं।

प्रयोगवाद मानव को सामाजिक इकाई समझते हैं। प्रगतिवाद कलापक्ष की उपेक्षा करता है। प्रयोगवाद में कलात्मक उद्देश्य संदिग्ध नहीं है। प्रयोगवाद नवीन प्रयोगों के अनुसार होता है। प्रगतिवाद राष्ट्रीय आंदोलनों से संबंधित है। प्रगतिवाद और छायावाद के प्रतिक्रिया से प्रयोगवाद प्रकट हुआ। प्रयोगवाद का मुख्य उद्देश्य साम्यवाद एवं प्रगतिवाद का विरोध है। प्रयोगवाद जीवन तथा जगत के प्रति अनास्था प्रकट करता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- प्रयोग शब्द का सामान्य अर्थ है- नई दिशा में अन्वेषण का प्रयास।
- प्रयोगवाद के अगुवा अज्ञेय हैं।
- प्रयोगवाद का आरंभ 1943 में तार सप्तक से हुआ।
- नये बोध, संवेदनाएँ और शिल्पगत चमत्कार के कवि प्रयोगवादी कवि कहलाते है।
- प्रयोगवाद नवीन प्रयोगों के अनुसार होता है।
- प्रयोगवाद के कवियों ने सहज और यथार्थ का वर्णन किया है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

प्रयोगवाद और नयी कविता

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वाधीनता प्राप्ति के आसपास की नई काव्य-चेतना को व्यापक अर्थों और संदर्भों में 'प्रयोगवाद और नयी कविता' के नाम से संबोधित किया गया है। यह काव्य आंदोलन अनेक तरह की विचारधाराओं, जीवन-मूल्यों, सामाजिक-राजनीतिक आघातों के सामाजिक यथार्थ से उत्पन्न हुआ। यह काव्य आंदोलन रचना-प्रक्रियाओं की विभिन्न शैलियों को अपने में अभिन्न रूप से आत्मसात करता हुआ रचनात्मक विकास की अनेक दिशाओं में विकसित होता रहा।

प्रयोगवाद का आरंभः

हिन्दी में प्रयोगवाद की चर्चा सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' शीर्षक काव्य-संग्रह से माना जाता है। अज्ञेय के नेतृत्व में कुछ कवि काव्य-जगत में नये बोध, संवेदनाएँ और शिल्पगत चमत्कार पूर्ण कविता रचकर अवतरित हुए, वे प्रयोगवादी कवि कहलाने लगे। अज्ञेय ने सन् 1943 में इलाहाबाद से 'प्रतीक' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। 'प्रतीक पत्रिका को प्रयोगवाद की शुरुआत का आधार माना जाता है।

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में अंतरः

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के अंतर को व्यक्त करते हुए अज्ञेय ने कहा है कि मानव के प्रति दो दृष्टिकोण मिलते हैं। इसमें पहला, मानव व्यक्ति पर आधारित है। दूसरा, मानव को सामाजिक इकाई के रूप में देखने वाला होता है।

प्रगतिवाद के बारे में अज्ञेय ने अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है कि उसमें विषय के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण होता है। अज्ञेय के अनुसार प्रगतिवाद में कलापक्ष की उपेक्षा होती है। प्रगतिवाद के अधिकतर कवि विषय की ओर उन्मुक्त है। प्रयोगवाद में कलात्मक उद्देश्य संदिग्ध नहीं होता है। प्रयोगवाद के कवि तर्क प्रस्तुत करते है कि उनका दृष्टिकोण नवीन प्रयोगों के अनुसार का होता है। प्रगतिवाद राष्ट्रीय आंदोलनों से घनिष्ठ संबंध रखता है तो प्रयोगवाद साहित्यिक काव्य आंदोलन से संबंधित है। अज्ञेय की राय में प्रयोगवाद कला पक्ष के प्रति विशेष तात्पर्य रखता है, काव्य पक्ष से नहीं।

प्रयोगवाद के कवि जीवन के प्रगतिशीलता को ही नहीं , उसकी कलात्मक श्रेष्ठता की भी प्रगति करता है। विख्यात कवि डॉ. धर्मवीर भारती ने प्रयोगवाद के बारे में अपना मत यों प्रकट किया है – प्रयोगशील कविता कई अर्थों में टेकनिक और अभिव्यंजना का आंदोलन है। प्रयोगवाद में विचारधारा के प्रति झुकाव नहीं है। प्रयोगवाद काव्य की विषय-वस्तु को कम महत्व देता है, वह काव्य के शिल्प को ज्यादा महत्व देता है। नयी विषय-वस्तु को ढूँढ कर उसे प्रस्तुत करने की ओर प्रयोगवाद उन्मुख है।

प्रयोगवाद के प्रवर्तकों के दृष्टि में जीवन के संपूर्ण क्षेत्र में प्रयोग निरंतर चलते रहते हैं। हिन्दी में अज्ञेय के तार-सप्तक और प्रतीक ने सबसे पहले प्रयोगवाद का निर्धारण किया है। सन् 1951 में दूसरा तार-सप्तक का प्रकाशन हुआ है। इससे प्रयोगवाद का रूप पूर्णतः स्पष्ट हो गया।

कला, कला के लिए या कला जीवन के लिए वादः

प्रयोगवाद और नयी कविता में कलावाद या कला की ऑटोनॉमी को, कला के स्वायत्त संसार को इस ढंग से जमाने का प्रयास ही कवि मुक्तबोध की चिन्ता का विषय बना है। कलावादियों को डर लगता था कि वे परिवर्तनकारिणी प्रवृत्तियाँ कहीं नयी कविता में न उभरने लगें। इसलिए ऐसी प्रवृत्तियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों के और अधिक प्रभावशाली एवं सुन्दर ढंग से बनने की अगली संभावनाओं के विरोध में उन्होंने यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसमें कला की स्वायत्त निर्विकल्पकता की स्थापना की गई और इस प्रकार नयी कविता को जीवन के मूल तथ्यों से अलग करने का प्रयत्न किया गया। आधुनिक भावबोध वाले सिद्धान्तों, जन-साधारण के उत्पीड़न के अनुभवों, उग्र विक्षोभों और मूल उद्वेगों का बॉयकाट किया गया। 'लघुमानव' वाला सिद्धान्त लाकर जन-साधारण की मार्मिक आध्यात्मिक शक्तियों और भव्यताओं से आँखें फेर ली गईं

प्रयोगवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँः

प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया से प्रयोगवाद की शुरुआत हुई। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह के मत में वाद के विरुद्ध विद्रोह प्रयोगवाद की पहली विशेषता है। इसका समर्थन करते हुए अज्ञेय ने कहा है कि प्रयोग का कोई वाद नहीं है। प्रयोगवाद का दूसरी विशेषता यह कि इसके

प्रवर्तक अपने को स्वयं सत्यान्वेषी मानते हैं। तीसरा, प्रयोगवाद के कवियों ने समाज से अधिक व्यक्ति को महत्व दिया है। चौथी विशेषता यह है कि प्रयोगवाद के कवियों ने सहज और यथार्थ रूप में वर्णन किया है।

प्रयोगवादी काव्य की भाषाः

प्रयोगवाद के कवियों ने सहज और संवाद पद्धति से रचना-प्रक्रिया की है। अज्ञेय ने आरंभ काल की कविताओं में तनिक संकीर्ण तथा दुरूह भाषा का उपयोग किया है। लेकिन वे बाद में प्रयोगवाद के अनुकूल बोलचाल की भाषा की ओर मुड़े है। प्रयोगवाद के कवियों ने सवैया जैसे प्राचीन छंदों में काव्य रचना की है। इन कवियों ने प्रतीकों एवं बिंबों का अधिकाधिक उपयोग भी किया है। प्रतीकों एवं बिंबों का सर्वाधिक उपयोग करने वाले कवि अज्ञेय हैं।

प्रयोगवाद में छंद, बिम्ब, प्रतीक आदिः

अधिकांश प्रयोगवादी कविता मुक्त छंद की नहीं है, छंद सिद्ध है। प्रयोगवाद के कवियों ने सवैया जैसे प्राचीन छंदों में काव्य रचना की है। इन कवियों ने प्रतीकों एवं बिंबों का अधिकाधिक उपयोग भी किया है। प्रतीकों एवं बिंबों का सर्वाधिक उपयोग करने वाले कवि अज्ञेय हैं। अज्ञेय की कविता में प्रकृति के विविध प्रकार के बिम्ब सबसे अधिक उपलब्ध हैं।

प्रयोगवाद के प्रमुख कविः

प्रयोगवाद के संस्थापक कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय है। अन्य प्रमुख कवि हैं- अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, श्री नरेश मेहता, गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, भवानीप्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, रघुवीर सहाय, हरिनारायण व्यास, कीर्ति चौधरी।

कवि परिचयः

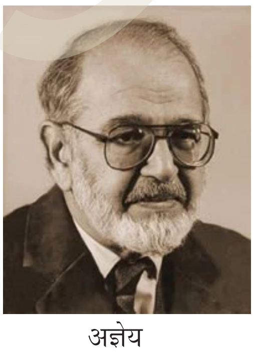

अज्ञेय

अज्ञेय का पूरा नाम है सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय। अज्ञेय मूलतः मानवतावाद के साहित्यकार हैं। अज्ञेय ने काव्य-सृजन में व्यक्ति के बदले समष्टि को महत्व दिया है। अज्ञेय ने प्रकृति की उपासना करते हुए उसका अनुपम चित्रण किया है। अज्ञेय को आधुनिक हिन्दी कविता के पथ-प्रदर्शक कवियों में एक माना जाता है। उन्होंने हिन्दी को उसकी परंपरागत प्रणाली से मुक्त कर उस पर नये परीक्षण किया। अज्ञेय को कई पुरस्कार और उपाधियाँ मिलीं हैं, जिसमें प्रमुख है– केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978), काशी नागरी प्रचारिणी सभा पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार आदि।

अज्ञेय क्रांति के पक्षधर थे। आप स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिए थे। उन्होंने इलाहाबाद से 'प्रतीक' नामक पत्रिका का प्रकाशन-संपादन शुरू किया और 'विशाल भारत' का संपादन कार्य भी कुशलतापूर्वक किया। बहुमुखी प्रतिभावाले संपन्न साहित्यकार अज्ञेय की प्रमुख रचनाएँ हैं : -

भग्नदूत, इत्यलम, हरि घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, अरी ओ करुणा प्रभामय, इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे, पुष्करिणी, आँगन के पार द्वार, पूर्वा, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, सागर मुद्रा, पहले मै सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, सदानीरा, ऐसा कोई घर आपने देखा है। (कविता) शेखरः एक जीवनी खंड, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी (उपन्यास) विपथगा, परंपरा, अमर वल्लरी, कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, संपूर्ण कहानियाँ।(कहानी-संग्रह)

कविता पाठः

कलगी बाजरे की

हरी बिछली घास।

दोलती कलगी छरहरी बाजरे की।

अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की, वग़ैरह, तो

नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगी :

तुम्हारे रूप के-तुम हो, निकट हो, इसी जादू के-

निजी किस सहज, गहरे बाँध से, किस प्यार से मैं कह रहा हूँ-

अगर मैं यह कहूँ-

बिछली घास हो तुम

लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की?

आज हम शहरातियों को

पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से

सृष्टि के विस्तार का-ऐश्वर्य का-औदार्य का-

कहीं सच्चा, कहीं प्यारा एक प्रतीक

बिछली घास है,

या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर दोलती कलगी

अकेली

बाजरे की।

और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूँ

यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है-

और मैं एकांत होता हूँ समर्पित।

शब्द जादू हैं-

मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है?

कविता परिचय

प्रस्तुत कविता कविवर अज्ञेय की नितान्त नवीन सौन्दर्य-बोधी भावनाओं से संयमित उद्भावना है। बाजरा एक मोटा अनाज है। उसकी कलगी से तात्पर्य उसका सिट्टा या दानेदार भुट्टा है कि जो अपनी गुरुत्व-पूर्ण आलिता से प्रकृति-प्रेमी का मन वस्तुतः मोह लेता है। कवि ने इसकी स्निग्धता, पुष्टता, सुकुमारता और उद्ग्रीवता से अपनी प्रियतमा के सौन्दर्य को उपमित किया है। कवि के विचार में सौन्दर्य के सभी परम्परागत उपमान आज मैले अर्थात् अर्थहीन हो चुके हैं। अब नवीन मानव की चेतना को नवीन सौन्दर्य- उपमान भाने लगे हैं। अतः कवि ने उन्हीं के माध्यम से सौन्दर्य को साकार किया है।

सप्रसंग-व्याख्या

1) **हरी बिछली घास - - - - मुलम्मा छूट जाता है।**

शब्दार्थ

कलगी	=	बाजरे का सिट्टा, सिर का आभूषण
दोलती	=	डोलती, हिलती
छरहरी	=	इकहरी, पतली
ललाती	=	लाल होती
भोर	=	प्रभात
नीहार-न्हायी	=	ओंस से भीगी
कुई	=	कुमुदिनी
टटकी	=	ताजी खिली
उथला	=	कम गहरा, रेतीला
बासन	=	बर्तन

प्रसंग- ये पंक्तियाँ कविवर अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' में से उद्धृत की गई हैं। इस कविता में कवि ने सौन्दर्य-बोधक प्राचीन उपमानों की व्यर्थता प्रतिपादित करके, नवीन उपमानों के प्रति नवीन मानव के झुकाव की बात कही है। अपने प्रिय को सम्बोधित कर, पुराने उपमानों के व्यर्थ हो जाने की बात स्पष्ट करते हुए इन पंक्तियों में कवि कह रहा है:

व्याख्या- हरी और गीली घास पर बाजरे की इकहरी कलगी हिल-डुल या डोल रही है। अर्थात् हरी घास पर हिलते-डुलते बाजरे के सिट्टे अत्यन्त मोहक लगकर मन में नई-नई कल्पनाएँ जगा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हे प्रिये! अब यदि मैं तुम्हें लाल हो रही साँझ में चमक उठने वाली अकेली तारिका की उपमा नहीं दे पाता, अथवा शरद् ऋतु के सुहावने प्रभात में ओंस में नहाई या भीगी कुमुदिनी को तुम्हारा उपमान नहीं बनाता, या फिर चम्पे की ताजा खिली कली के साथ तुम्हारे सौन्दर्य को उपमित नहीं करता, तो इसका कारण यह नहीं है कि मेरा हृदय अब रेतीला, सूना अर्थात् सौन्दर्य-भावना से रहित हो गया है, या फिर मेरे प्यार में कुछ मैलापन अर्थात् कमी आ गई है। नहीं, ऐसी कोई भी बात नहीं है। इन सब परिवर्तन का

मात्र कारण यह है कि वस्तुतः तुम्हारे सौन्दर्य को उपमित करने वाले इस प्रकार के सभी उपमान अब मैले अर्थात् व्यर्थ एवं अर्थ- हीन हो चुके हैं। इन प्रतीकों के देवता कूच कर चुके हैं अर्थात् इनमें अब किसी भी प्रकार की ताजगी और पवित्रता नहीं रह गई है। जिस प्रकार बर्तन को बार-बार घिसने-मलने से उसकी कलई घिस कर छूट और समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार इन उपमानों के बार-बार प्रयुक्त होने के कारण इनकी सारवता एवं सौन्दर्य भी अब पूर्णतया समाप्त हो चुका है। इसीलिए अब तुम्हारे सौन्दर्य की उपमा इन उपमानों से करना कोई अर्थ नहीं रखता ।

2) मगर क्या तुम - - - - कलगी छरहरी बाजरे की।

शब्दार्थ

बिछली	=	गीली, फिसलनभरी
शहरातियों	=	शहरों के निवासियों
पालतू मालंच	=	बनावटी बगीचा, घरेलू वाटिका
औदार्य	=	उदारता
गगन की पीठिका	=	आकाश-तल

प्रसंग- आज के शहराती वातावरण, शहराती वाटिकाओं में उगने वाली कलियों के स्थान पर बाजरे की कलगी की उपमा अजीब लग सकती है, पर ताजगी इसी में है, यही विचार व्यक्त करते हुए प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों में कवि- वर अज्ञेय कह रहे हैं:

व्याख्या- हे प्रिये! अपने सौन्दर्य की निकटता केवल तुम आप ही कर सकती हो अर्थात् उसका अन्य उपमान नहीं खोजा जा सकता। तुम्हारे सौंदर्य के जादू और निकटता के बोझ या प्रभाव से दबकर मैं तुम्हें जिस नये उपमान से उपमित करना चाहता हूँ, वह शायद तुम समझ नहीं सकोगी। अगर तुम्हारे सौन्दर्य के बारे में मैं यह कहूँ कि तुम गीली और फिसलनभरी हरी घास के समान हो, या फिर हवा में लहलहाते बाजरे की इकहरी कलगी हो, तो शायद तुम यह न समझ सको कि मैं तुम्हें यह सब कितने प्यार से कह रहा हूँ। कवि का भाव यह है कि इस प्रकार के उपमानों-उपमाओं में जो ताजगी और अपनत्व है, वह घिसे-पिटे पुराने उपमानों में अब कहाँ रह गया है? कवि कहता है कि अब हम शहरवासियों के लिए फालतू या घरेलू वाटिकाओं में खिलने और हर समय सामने रहने वाली सजी-सँवरी जूही के फूलों से बढ़कर सृष्टि का विस्तार ऐश्वर्य और व्यापकता को प्रगट करने वाली बिछली घास का प्रतीक (उपमान) कहीं अधिक सच्चा और प्यारा है। या फिर शरद् ऋतु की साँझ में सूने आकाश की पृष्ठभूमि पर अकेली डोलती हुई बाजरे की कलगी उपमान (प्रतीक) रूप में अधिक ताजी, सच्ची और प्यारी है। कवि का भाव यह है कि जो वस्तु हर समय पास रहती या बार-बार सामने आती है, उसका महत्व घट जाता एचएआई। इसी कारण आज तारे-कुमुदों के उपमान महत्वहीन हो गए हैं। इसके विपरीत घास और बाजरे की कलगी आदि के उपमान अपनी ताजगी और दूरी के कारण शहरातियों के लिए तो अवश्य ही अधिक आकर्षक हो सकते हैं।

3) और सचमुच, इन्हें ...कुछ नहीं हैं ?

शब्दार्थ

वीरान	=	सूनापन
संसृति	=	सृष्टि, संसार

प्रसंग- कवि प्रकृति के सुविस्तृत मुक्त वातावरण के प्रति अनन्य समर्पण की भावना से भरकर कह रहा है :

व्याख्या- मैं जब प्रकृति के प्राङ्गण में अछोर बिछी हरी-बिछली घास तथा बाजरे की लहलहाती कलगियों को देखता हूँ, तो सारी सृष्टि का खुला, दूर-दूर तक फैला सूनापन यानि प्रकृति का एकान्त सुन्दर वातावरण गहरा-कर मेरी आँखों एवं अन्तःचेतना में समूचा सिमटकर बस जाता है। अपने समूचे एकान्तिक व्यक्तित्व के साथ मैं उस सौन्दर्य को अर्पित हो जाया करता हूँ। शब्द में जादू का प्रभाव रहता है, पर क्या कोरे शब्दों की तुलना में मेरे इस मौन समर्पण का कुछ महत्व नहीं है? अर्थात् मौन समर्पण शब्दों द्वारा व्यक्त भावों से भी अधिक प्रभावी एवं महत्वपूर्ण हुआ करता है ।

विशेष- कवि की अन्तश्चेतना प्रकृति के उन्मुक्त एवं ताजे-नये स्वरूप के प्रति पूर्णतया समर्पित है।

'कलगी बाजरे की' कविता - सारांश

'कलगी बाजरे की' कविता अज्ञेय जी की प्रसिद्ध कविताओं में से एक है। यह कविता 'हरि घास में क्षण भर' काव्य संग्रह से लिया गया है। इसका प्रकाशन 1949 में हुआ था। इस कविता में कवि ने अपनी प्रेमिका की

तुलना तारा, कुमुदनी या चम्पे की कली जैसी पुराने प्रतीकों को छोड़कर 'चिकनी हरि घास' और 'बाजरे की बाली' से करते हैं। उनके अनुसार हरि घास और बाजरा प्रेमिका के सुन्दरता के निकट है। ये दोनों ही चीजें शहर वासियों के लिए जूही के फूलों से भी अधिक महत्वपूर्ण है। कवि इन दोनों के सादगी भरी शोभा से इतने प्रभावित हैं कि वे इनके माध्यम से सारी सृष्टि को अपने नजदीक महसूस करने लगते हैं। अज्ञेय जी ने इस कविता के माध्यम से पुराने उपमान को छोड़कर नये उपमान का प्रयोग किया है। यह कविता मूलतः प्रेम और प्रकृति को अभिव्यक्त करती है।

इस कविता में कवि अपनी प्रेमिका की तुलना बाजरे की कलगी से करते हुए प्रश्न करते हैं। कवि अपनी प्रेमिका को 'चिकनी हरि घास' या 'बाजरे की पतली हिलती हुई बाली' कहना चाहते है।

कवि प्रश्न करते हैं कि अगर मैं तुमको लाल होती हुई शाम के समय आकाश में चमकने वाली तारिका या तारा नहीं कहता, मैं तुम्हे शरद ऋतु के सुबह में पाले से ढकी हुई कुमुदनी नहीं कहता या अभी-अभी ताजा खिली हुई चम्पे की कली भी नहीं कहता तो इसका कारण यह नहीं है कि मेरा प्यार तुम्हारे प्रति कम हो गया है या मेरा प्यार मैला या झूठा हो गया है, बल्कि ये सब उपमान अब पुराने और मैले हो गए हैं, इन प्रतिमानों में अभिव्यक्त करने की जो क्षमता थी वह अब नष्ट हो गई है। यानी सभी कवियों ने इन सभी प्रतीकों का कई बार प्रयोग कर लिया है। जिससे ये सभी अब पुराने हो गए हैं। जिस तरह बर्तनों को अधिक घिसने से उसकी चमक कम पड़ जाती है ठीक उसी प्रकार इन सभी उपमानों का अधिक प्रयोग करने से ये सब भी पुराने हो चुके हैं।

कवि अपने प्रेमिका से प्रश्न करते हैं- क्या? क्या तुम यह पहचानती हो तुम्हारे करीब तुम्हारे रूप के निकट सिर्फ इसलिए इन पुराने उपमानों के साथ कवि ने उनकी तुलना नहीं की है। तुम्हारे इस रूप के जादू के कारण मैं अपनी सहज गहरे भाव बोध से, प्यार से, यह कह रहा हूँ, अगर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम बिछली हरि घास में लहराती बाजरे की कली हो। हम शहरी लोगों ने पाले हुए बगीचे में जूही के फूलों को लगाया है। यह हरि भरी घास सृष्टि का विस्तार है। यही समृधि, एश्वर्य, सम्पन्नता शक्ति सहनशीलता सभा का प्रतीक है यह बिछली हुई घास इस संसार के सफलता सच्चाई प्यार का प्रतीक है। यह शरद ऋतु की सांध्य के समय सुने आकाश पर डोलती हुई बाजरे की कलगी उस जूही के फूलों से सुंदर है। जब-जब मैं घास बाजरे की कलगी को देखता हूँ तो सचमुच संपूर्ण संसार वीरान होता हुआ दिखाई देता है। इस संस्कृति का समापन और भी सिमटा हुआ प्रतीत होने लगता है और तुम्हे स्वयं को अकेले ही समर्पित कर देता हूँ। कवि कहते हैं कि शब्द जादू है इससे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति मिलती है। कवि अपनी प्रेयसी से प्रश्न करते हैं- क्या संपूर्ण कुछ नहीं है? क्या इसका कोई मोल नहीं है? क्या संसार के प्रति किया गया संपूर्ण कुछ नहीं है?

कवि ने अंतिम कुछ पंक्तियों में प्रकृति के प्रति अपने अथाह प्रेम को दर्शाया है और वे इन्हीं पंक्तियों से एक प्रश्न उठाते हैं कि क्या यह समर्पण कुछ नहीं है? जो मैं अपने प्रेमिका के प्रति भाव रखता हूँ उसका कोई मोल नहीं।

Critical Overview / अवलोकन

प्रयोगवाद और नयी कविता, सामान्य और विशिष्ट, दोनों अर्थों में अपने से पहले की कविता से विद्रोह करती कविता है। कविता का उद्देश्य आनंद या मुग्ध कर लेना मात्र नहीं रहा– कविता का उद्देश्य हो गया आदमी का संपूर्णता में अपने समय और समाज के यथार्थ से साक्षात्कार। कवि ने आज के शहरी व्यस्त जीवन को नये सौन्दर्य-बोध के लिए प्रकृति के मुक्त वातावरण की ओर जाने की प्रेरणा दी है। साथ ही साथ यह मत भी व्यक्त किया है कि सृष्टि के विस्तृत सौन्दर्य एवं उदारता के दर्शन सीमित शहरी जीवन में संभव नहीं, बल्कि ग्राम-प्रकृति के मुख्य जीवन में ही सम्भव हैं। उन्होंने पुरानेपन की व्यर्थता और नवीन की सारवता के प्रति आग्रह स्पष्ट किया है। कवि की अन्तश्चेतना प्रकृति के उन्मुक्त एवं ताजे-नये स्वरूप के प्रति पूर्णतया समर्पित है।

Recap / पुनरावृत्ति

- कविता में सहज एवं प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया गया है।
- नए उपमानों का प्रयोग किया गया है।
- उपमा अलंकर का प्रयोग किया गया है।
- कविता में मानवीकरण किया गया है।
- कवि ने अपने प्रेमिका के प्रति समर्पण भाव को दर्शाया है।
- कवि अपने जमीन से जुड़ा रहना चाहता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रयोगवाद शब्द का सामान्य अर्थ क्या है?
2. 'प्रतीक' नामक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष?
3. प्रयोगवाद के संस्थापक कवि?
4. 'कलगी बाजरे की' किसका रचना है?
5. 'कलगी बाजरे की' उपमान से कवि किसकी उपमा कर रहा है?
6. अज्ञेय की नवीन सौंदर्य-बोधी भावनाओं से युक्त प्रयोगवादी कविता कौन-सी है?
7. 'कलगी बाजरे की' कविता में कवि प्रेमिका की तुलना किससे की है?
8. 'प्रतीक' नामक पत्रिका का प्रकाशन संपादन किसने शुरु किया?

Answers / उत्तर

1. नई दिशा में अन्वेषण का प्रयास
2. 1943 में
3. अज्ञेय
4. अज्ञेय
5. अपनी प्रेमिका की
6. कलगी बाजरे की
7. बाजरे की कलगी से
8. अज्ञेय

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्रयोगवाद के समय की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक स्थितियों का परिचय दीजिए।
2. 'हमारा देश' कविता का भावपक्ष और कलापक्ष निर्धारित कीजिए।
3. प्रयोगवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या-क्या हैं?
4. उदाहरणों द्वारा समर्थन कीजिए कि आजकल हमारे ग्रामीण युवकों में कुछ शहरी तथा पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय – विद्या निवास मिश्र।
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
3. अज्ञेय रचनावली – अज्ञेय।
4. अज्ञेय ग्रंथावली – कृष्णदत्त पालिवाल।
5. अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ. रतन कुमार पाण्डेय।
6. अज्ञेय कवि – ओमप्रकाश अवस्थी।
7. अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन – डॉ. चन्द्रकांत।
8. आज के प्रतिनिधि कवि अज्ञेय – डॉ. विद्यानिवास मिश्र।

इकाई 2

वे बातें लौट न आएँगी

गजानन माधव मुक्तिबोध

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वरिष्ठ कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के व्यक्ति जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के काव्य जीवन से परिचित होता है
- मुक्तिबोध की कविताओं की विशेषता समझता है
- 'वे बातें लौट न आएँगी' कविता से परिचित होता है
- 'मुक्तिबोध' के आदर्श, दृष्टिकोण, भाषा-शैली आदि से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

तारसप्तक के कवि गजानन माधव मुक्तिबोध 20 वीं सदी के सबसे प्रमुख हिन्दी कवियों, निबंधकारों, साहित्यक और राजनीतिक आलोचकों और कथा लेखकों में से एक थे। मुक्तिबोध को व्यापक रूप से सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साथ भारत में आधुनिक हिन्दी कविता का अग्रणी माना जाता है। उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है।

अध्ययन-अध्यापन, लेखन व पत्रकारिता के साथ-साथ आकाशवाणी व राजनीति की व्यस्तता के बीच सतत संघर्ष व जुझारू व्यक्तित्व का परिचय देते हुए मुक्तिबोध ने आधुनिक हिन्दी कविता व समीक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी युग का सूत्रपात किया।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- प्रगतिवाद के कवियों की भाषा बोलचाल शैली की है।
- प्रयोगवाद के कवियों ने शब्द-प्रयोग द्वारा सहज संवाद पद्धति में रचना की है।
- अधिकांश प्रयोगवादी कविता छंद सिद्ध है।
- प्रयोगवाद के कवियों ने सवैया जैसे प्राचीन छंदों में काव्य रचना की है।
- प्रयोगवाद में प्रतीकों एवं बिंबों का अधिक उपयोग हुआ है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

कवि परिचय :- गजानन माधव मुक्तिबोध

आधुनिक हिन्दी कविता एवं समीक्षा के सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर 1917 को श्यौपुर, ग्वालियर, मध्यप्रदेश में हुआ था। अध्ययन-अध्यापन, लेखन व पत्रकारिता के साथ-साथ आकाशवाणी व राजनीति की व्यस्तता के बीच सतत संघर्ष व जुझारू व्यक्तित्व का परिचय देते हुए मुक्तिबोध ने आधुनिक हिंदी कविता व समीक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी युग का सूत्रपात किया।

'चाँद का मुंह टेढ़ा है', 'भूरी-भूरी खाक धूल' (कविता संग्रह), 'सतह से उठता आदमी', 'काठ का सपना', विपात्र (कथा साहित्य), 'कामायनी एक पुनर्विचार', 'भारतः इतिहास और संस्कृति', 'समीक्षा की समस्याएँ', 'नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र', 'आखिर रचना क्यों', 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष' तथा 'एक साहित्यक की डायरी' के अतिरिक्त छह खंडो में प्रकाशित 'मुक्तिबोध रचनावली' मुक्तिबोध की लेखनी के तेज व प्रखर विचारधारा के जीवंत साक्ष्य है। लंबी बीमारी के बाद 11 सितम्बर 1964 को नई दिल्ली में उनका निधन हुआ ।

कविता पाठ

वे बातें लौट न आएँगी

वे बातें लौट न आएँगी
खगदल हैं ऐसे भी कि न जो
आते हैं, लौट नहीं आते
वह लिए ललाई नीलापन
वह आसमान का पीलापन
चुपचाप लीलता है जिनको
वे गुँजन लौट नहीं आते
वे बातें लौट नहीं आतीं
बीते क्षण लौट नहीं आते
बीती सुगन्ध की सौरभ भर

पर, यादें लौट चली आतीं
पीछे छूटे, दल से पिछड़े
भटके-भरमे उड़ते खग-सी
वह लहरी कोमल अक्षर थी
अब पूरा छन्द बन गई है—
'तरू-छायाओं के घेरे में
उदभ्रान्त जुन्हाई के हिलते
छोटे-छोटे मधु-बिम्बों-सी
वह याद तुम्हारी आई है' —
पर बातें लौट न आएँगी
बीते पल लौट न आएँगे।

कवितापरिचय

यह आधुनिक हिन्दी के यशस्वी कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की चर्चित कविता है। 'मुक्तिबोध' हिन्दी संसार की एक घटना बन गए। कुछ ऐसी घटना, जिसकी ओर से आँखें मूंद लेना असम्भव था। उनका एकनिष्ठ संघर्ष, उनकी अटूट सच्चाई, उनका पूरा जीवन, सभी एक साथ हमारी भावनाओं के केंद्रीय मंच पर सामने आए और सभी ने उनके कवि होने को नई दृष्टि से देखा। कैसा जीवन था वह और ऐसे उसका अंत क्यों हुआ। और वह समुचित ख्याति से अब तक वंचित क्यों रहा, यह साहित्य प्रेमियों के लिए कुतूहल की विषय है।

विश्लेषणः

तारसप्तक के पहले कवि 'मुक्तिबोध जी' जिनका पूरा नाम गजानन माधव मुक्तिबोध है, हिन्दी साहित्य के ऐसे कवि हैं जिन्होंने छायावाद से काव्य रचनाएँ आरम्भ की। मुक्तिबोध ने भाषा विचार के लिए किसी रूढ़ियों का सहारा नहीं लिया। मुक्तिबोध की समर्थ भाषा उनके काव्य को प्राणवान बनाने में समर्थ है। आगे चलकर उन्होंने प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता की युगधाराओं से जुड़ते हुए काव्य संसार में नया प्रयोग शुरू किया, जो बहुत

जल्द प्रचलन में कई कवियों की रचनाओं में दिखने लगा। इससे चरितार्थ होता है कि वे प्रगतिवादी, प्रयोगवादी और विद्रोही कवि रहे हैं।

मुक्तिबोध की कविताओं की विशेषताः

मुकितबोध की काव्य भाषा भी उनकी विचारधारा की विशिष्टताओं की तरह मौलिक है। कबीर तथा निराला की कविताओं के सहजग्राह्य भाषा का प्रयोग उनकी रचनाओं में दिखता है। मुक्तिबोध की कविताओं में अनूठे प्रतीक, बिम्ब, अलंकार, मुहावरे-लोकोक्तियों के प्रयोग तथा छन्द विधान के सार्थक प्रयोग फैंटेसी के रूप में हिन्दी साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान अंकित कराते हैं। उनकी कविताओं में संवेदना के सर्वश्रेष्ठ रूप दृष्टिगोचर होते हैं। मुक्तिबोध की कविताओं में संपूर्ण परिवेश के बीच स्वयं को खोजना और पाना ही नहीं अपितु संपूर्ण परिवेश के साथ अपने को बदलने की प्रक्रिया का भी चित्र है।

उन्होंने अपनी कविताओं में तत्सम, तदभव, अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी सभी भाषाओं का प्रयोग किया है। छोटे-छोटे वाक्यांश का प्रयोग मुक्तिबोध जी अपनी कविताओं में हमेशा करते रहे हैं, जो उस कविता को प्रभावशाली बना देते हैं ।

मुक्तिबोध की कविताओं में सहज सरल भाषा शैली के साथ विचार तत्व की प्रधानता है।

वे अपनी रचनाओं में विचारों को तीव्रता के साथ प्रकट करते हैं साथ ही इसमें व्यंग्य की झलक भी दृष्टि गोचर होती है।

मुक्तिबोध की कविताएँ अलंकार युक्त हैं और सहज अपने भावों का उद्‌गार करती हैं लेकिन वे अधिकतर सौंदर्य और अलंकार पर ध्यान न देकर शब्द के अर्थ की शक्ति पर ध्यान देते थे।

नारायण मौर्य ने उनकी रचनाओं के विषय में कहा है कि मुक्तिबोध की काव्य भाषा की बहुत बड़ी शक्ति है- मुहावरों का प्रयोग। मुक्तिबोध ने अपने काव्य में केवल इनका प्रयोग ही नहीं किया अपितु नये मुहावरों की रचना भी की है, जो उनकी रचनाओं को बहुत प्रभावी बनाता है।

मुक्तिबोध गहन सामाजिक अनुभूतियों के जनवादी कवि रहे हैं जो सामाजिक चिन्ताओं और संवेदनाओं से जुड़कर चलने वाले कवि हैं। उनके साहित्य के अधिकांश भाग में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर प्रहार किया गया है।

अंतर्मुखी और मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़ने के कारण मुक्तिबोध ने फैंटेसी का प्रयोग अपने काव्य में अनेक कारणों से किया है। जीवन के यथार्थ पर मिथ्या और पाखण्ड की अनेक पर्तें जमी हैं और फैंटेसी के द्वारा वे लोगों तक अपनी बात सहज रूप से पहुँचा पाये।

सारांशः

कवि कहते है कि बीते पल कभी भी लौट न आएँगे। जो बीत गया, वह पूर्णतः छूट गया। बीत गयी सो बात गयी। जैसे खगदल हैं ऐसे भी कि न जो आते हैं, लौट नहीं आते है। वह लिए ललाई नीलापन है, आसमान का पीलापन, ज्यों चुपचाप लीलता है जिनको त्यों वे गुँजन लौट नहीं आते है।

आगे कवि व्यक्त करते हैं कि जैसे बीते क्षण लौट नहीं आते वैसे वे बातें लौट नहीं आतीं है।

बीती सुगन्ध की सौरभ के समान मात्र कुछ यादें लौट चली आतीं हैं।

पीछे छूटे, दल से पिछड़े
भटके-भरमे उड़ते खग-सी
वह लहरी कोमल अक्षर थी
अब पूरा छन्द बन गई है-
'तरू-छायाओं के घेरे में
उदभ्रान्त जुन्हाई के हिलते
छोटे-छोटे मधु-बिम्बों-सी
वह याद तुम्हारी आई है' -

काल गुजर जाता है, समय किसी के लिए रूक नहीं सकता है, यह प्रवाह के समान है, पर बातें लौट न आएँगी और बीते पल लौट न आएँगे ।

कालातीत चिंताओं के धनी 'गजानन माधव मुक्तिबोध' हिंदी साहित्य के अत्यंत विख्यात रचनाकार रहे हैं और उन पर जितना भी लिखा जाये, वह अल्प ही है ।

स्वातंर्त्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'मुक्तिबोध' कहानीकार और समीक्षक भी थे। इन्होंने

प्रगतिशील कविता और नई कविता के मध्य सेतु की भाँति कार्य किया।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविता पहली बार वर्ष 1943 में सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' के संपादन में निकलने वाली पत्रिका तारसप्तक में छपी। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी यह कविता उनकी राजनीतिक विचारधारा को भी परिलक्षित करती है। उन पर मार्क्सवाद की विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इसलिए नई कविता आंदोलन के वे प्रमुख कवि भी हैं।

हालांकि मुक्तिबोध के जीवनकाल में उनका कोई स्वतंत्र काव्य संग्रह न प्रकशित हो सका। हाँ, उनकी मृत्यु के पहले श्रीकांत वर्मा ने उनकी 'एक साहित्यक की डायरी' जरूर प्रकाशित की थी। इस रचना का दूसरा संस्करण उनकी मृत्यु के दो महीने बाद प्रकाशित हुआ। इनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काव्य संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा' है।

'चाँद का मुँह टेढ़ा है' मुक्तिबोध की उन लम्बी कविताओं का प्रतिनिधि काव्य है जो एक विस्तृत प्रारूप लिए होती है। जिस प्रकार एक म्यूरल पेटिंग में कलाकार रंगों की अद्भुत मिलावट से एक जीवंत चित्र उकेर देते हैं उसी प्रकार मुक्तिबोध की रचनाएँ भी एक विशाल म्यूरल पेण्टिंग के समान जीवंतता लिए रहती हैं। ये रचनाएँ आधुनिक प्रयोगवादी स्वरूप की हैं जिसका काव्य शिल्प ठोस और स्थिर होता है। ये रचनाएँ गहन व कसे हुए ट्रैजिक संबंधों का जाल भी बुनती हैं।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविताएँ नए सृजन का विस्फोट है क्योंकि ये एक सजग समाज की रचना करने को आतुर हैं। एक ऐसा समाज, जहाँ राजनीतिक व्यवस्था में लोगों की पूरी की पूरी भागीदारी हो। इसके साथ ही समाज में एक सच्ची समानता स्थापित करना भी उनका मूलभूत उद्देश्य है। मुक्तिबोध ने कविताओं के अतिरिक्त आलोचना विधा पर भी अपनी कलम चलाई है। इनकी प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ हैं- नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, कामायनीः एक पुनर्विचार।

एक साहित्यकार से परे अगर उनकी व्यावहारिक जिंदगी पर प्रकाश डालें तो मुक्तिबोध को 'विरुद्धों का सामंजस्य' भी कहा जा सकता है। एक तरफ जहाँ वो पाई-पाई के लिए मोहताज हैं तो दूसरी तरफ वो पैसे को लात भी मारते हैं। वो चाहते तो पैसे देने वाली पत्रिकाओं में लिख भी सकते थे मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। मुक्तिबोध नई से नई वैज्ञानिक उपलब्धियों पर बेहद ख़ुश होते थे लेकिन परिवार नियोजन के वे सख्त ख़िलाफ थे। परिवार नियोजन को वे पूंजीवादी व्यवस्था का उपोत्पाद मानते थे।

मुक्तिबोध विचारों से आधुनिक थे लेकिन इसके साथ ही वैज्ञानिक व्यवहार में कई बातों में बिल्कुल सामंती थे। किसी को अपने घर में साग्रह खाना खिलाना, अपनी हैसियत से बाहर खातिर करना उनकी खास प्रवृत्ति थी। लगता था, कोई पुराने ठाकुर साहब हैं, जिन्हें मूंछें मुड़ाना पड़ेगा, अगर मेहमाननवाजी में कमी आयी।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' अपने विचारों व मान्यताओं के मामले में जितने सधे हुए थे, जीवन की व्यवस्था के मामले में वे उतने ही बेतरतीब थे। अपने स्वास्थ्य के प्रति वे बेहद ही लापरवाह थे। अपने अंतिम समय मे वे भोपाल के हमीदिया अस्पताल में भर्ती थे। यहीं पर 11 सितंबर 1964 को उनका देहांत हो गया।

बीसवीं सदी की हिंदी कविता का सबसे बेचैन, सबसे तड़पता हुआ और सबसे ईमानदार स्वर है गजानन माधव मुक्तिबोध। मुक्तिबोध की कविता जटिल है। भगवान सिंह ने उनकी कविता की जटिलता का बयान इस तरह किया है, 'वे सरस नहीं हैं, सुखद नहीं हैं। वे हमें झकझोर देती हैं, गुदगुदाती नहीं। वे मात्र अर्थग्रहण की मांग नहीं करतीं, आचरण की भी मांग करती हैं । तारसप्तक में मुक्तिबोध ने स्वयं कहा है, 'मेरी कविताएँ अपना पथ खोजते बेचैन मन की अभिव्यक्ति हैं। उनका सत्य और मूल्य उसी जीव-स्थिति में छिपा है।

हिन्दी 'नई कविता' में मुक्तिबोध की जगह वही है, जो छायावाद में निराला की थी। निराला के समान ही मुक्तिबोध ने भी अपने युग के सामान्य काव्य-मूल्यों को प्रतिफलित करने के साथ ही उनकी सीमा की चुनौती देकर उस सर्जनात्मक विशिष्टता को चरितार्थ किया, जिससे समकालीन काव्य का सही मूल्यांकन हो सका।

वर्तमान परिस्थिति से संबंधः

मुक्तिबोध मूलतः कवि हैं। उनकी आलोचना उनके कवि व्यक्तित्व से ही निःसृत और परिभाषित है। वही उसकी शक्ति और सीमा है। उन्होंने एक ओर प्रगतिवाद के कठमुल्लेपन को उभार कर सामने रखा, तो दूसरी ओर

नयी कविता की ह्रासोन्मुखी प्रवृत्तियों का पर्दाफ़ाश किया। यहाँ उनकी आलोचना दृष्टि का पैनापन और मौलिकता असन्दिग्ध है। उनकी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक समीक्षा में तेजस्विता है। जयशंकर प्रसाद, शमशेर, कुँवर नारायण जैसे कवियों की उन्होंने जो आलोचना की है, उसमें पर्याप्त विचारोत्तेजकता है और विरोधी दृष्टि रखने वाले भी उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। काव्य की सृजन प्रक्रिया पर उनका निबन्ध महत्त्वपूर्ण है। ख़ासकर फैण्टेसी का जैसा विवेचन उन्होंने किया है, वह अत्यन्त गहन और तात्विक है। उन्होंने नयी कविता का अपना शास्त्र ही गढ़ डाला है। पर वे निरे शास्त्रीय आलोचक नहीं हैं। उनकी कविता की ही तरह उनकी आलोचना में भी वही चरमता है, ईमान और अनुभव की वही पारदर्शिता है, जो प्रथम श्रेणी के लेखकों में पाई जाती है। उन्होंने अपनी आलोचना द्वारा ऐसे अनेक तथ्यों को उद्घाटित किया है, जिन पर साधारणतः ध्यान नहीं दिया जाता रहा। 'जड़ीभूत सौंदर्याभिरुचि' तथा 'व्यक्ति के अन्तःकरण के संस्कार में उसके परिवार का योगदान' उदाहरण के रूप में गिनाए जा सकते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

मुक्तिबोध हिंदी के अतिविशिष्ट रचनाकार हैं। उन्हें उम्र ज़रूर कम मिली, पर कविता, कहानी और आलोचना में उन्होंने युग बदल देने वाला काम किया। पहली बार वह व्यवस्थित रूप में 'अज्ञेय' द्वारा संपादित 'तार सप्तक' में अपनी कविताओं के साथ उपस्थित हुए। उनके जीवनकाल में उनकी कविता की कोई किताब नहीं प्रकाशित हो पाई। उनके जीवित रहते उनकी सिर्फ़ एक किताब छपी, यह थी 'एक साहित्यक की डायरी।' डॉ. नामवर सिंह जी के शब्दों में- 'नई कविता में मुक्तिबोध की जगह वही है, जो छायावाद में निराला की थी। निराला के समान ही मुक्तिबोध ने भी अपनी युग के सामान्य काव्य-मूल्यों को प्रतिफलित करने के साथ ही उनकी सीमा की चुनौती देकर उस सर्जनात्मक विशिष्टता को चरितार्थ किया, जिससे समकालीन काव्य का सही मूल्यांकन हो सका।

Recap / पुनरावृत्ति

- गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविताएँ नए सृजन का विस्फोट है।
- मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी यह कविता उनकी राजनीतिक विचारधारा को भी परिलक्षित करती है।
- उन पर मार्क्सवाद की विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।
- इसलिए नई कविता आंदोलन के वे प्रमुख कवि भी हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मुक्तिबोध का पूरा नाम क्या है?
2. मुक्तिबोध के काव्य संग्रह का नाम बताइए।
3. मुक्तिबोध के जीवन काल में प्रकाशित उनका ग्रंथ?
4. 'काठ का सपना' किसका कहानी संग्रह है?
5. 'चाँद का मुँह टेढ़ा हैं' – के कवि कौन है?
6. मुक्तिबोध का जन्म कब, कहाँ हुआ है?
7. मुक्तिबोध का निधन कब हुआ?
8. वे बातें लौट न आएँगी किसकी कविता ह?

Answers / उत्तर

1. गजानन माधव 'मुक्तिबोध'।
2. 'मुक्तिबोध रचनावली'
3. 'एक साहित्यक की डायरी।'
4. गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
5. गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
6. 13 नवंबर 1917 श्योपुर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश में।
7. 11 सितम्बर 1964 को नई दिल्ली
8. मुक्तिबोध

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी 'नई कविता' में मुक्तिबोध की जगह निर्धारित कीजिए।
2. अज्ञेय और मुक्तिबोध की कविताएँ – एक तुलनात्मक अध्ययन।
3. वे बातें लौट न आएँगी कविता का सारांश लिखकर उद्देश्य व्यक्त कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ. शिवकुमार वर्मा

इकाई 3

कंकरीला मैदान

केदारनाथ अग्रवाल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक कवि केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्ति जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- आधुनिक कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य -जीवन से जानकारी प्राप्त करता है
- आधुनिक कविता का दिशा बोध समझता है
- केदारनाथ अग्रवाल के आदर्श, दृष्टिकोण, भाषा-शैली आदि से परिचित होता है
- कंकरीला मैदान कविता समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

नवीन भावों, नये विचारों और आदर्शों के साथ हिन्दी काव्य-जगत में प्रस्फुटित हुए कवि हैं केदारनाथ अग्रवाल। उनकी काव्य-प्रणाली निराली है। आधुनिकता का प्रवाह उनकी कविता में प्रचुर मात्रा में मिलती है। केदार जी का आरंभिक जीवन कमासिन के ग्रामीण माहौल में बीता और शिक्षा दीक्षा की शुरूआत भी वहीं हुई। तदनंतर अपने चाचा मुकुंदलाल अग्रवाल के संरक्षण में उन्होंने शिक्षा पाई। क्रमशः रायबरेली, कटनी, जबलपुर, इलाहाबाद में उनकी पढ़ाई हुई। इलाहाबाद में बी.ए. की उपाधि हासिल करने के पश्चात क़ानूनी शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात बाँदा पहुँचकर वहीं वकालत करने लगे थे।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- वर्तमान जीवन की विसंगतियों का चित्रण और यथार्थवाद का विश्लेषण किया है।
- प्रगतिशील कवि होने के नाते उन्होंने प्रकृति के माध्यम से भी अन्याय, शोषण और अत्याचार का विरोध किया है।
- उन्होंने प्रकृति के माध्यम से वस्तुओं और जीवों और मनुष्य की निजता, जीवन और विजय संघर्ष की गाथा रची है।
- संवेदनशील होकर कला के प्रति बिना आग्रह रखे वे काव्य की जनवादी चेतना से जुड़े हैं।

Discussion / चर्चा

कवि परिचयः

केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी प्रगतिशील कविता के अन्तिम रूप से गौरवपूर्ण स्तम्भ थे। उनका जन्म 1 अप्रैल 1911 बाँदा जिले के कमासिन ग्राम में हुआ। पिता हनुमान प्रसाद गुप्ता और माता घसीटो देवी है। केदार जी के पिताजी स्वयं कवि थे और उनका एक काव्य संकलन 'मधुरिम' के नाम से प्रकाशित भी हुआ था। अग्रवाल छायावादी युग के मूर्धन्य प्रगतिवादी कवि थे।

केदार जी का आरंभिक जीवन कमासिन के ग्रामीण माहौल में बीता और शिक्षा दीक्षा की शुरूआत भी वहीं

हुई। तदनंतर अपने चाचा मुकुंदलाल अग्रवाल के संरक्षण में उन्होंने शिक्षा पाई। क्रमशः रायबरेली, कटनी, जबलपुर, इलाहाबाद में उनकी पढ़ाई हुई। इलाहाबाद में बी.ए. की उपाधि हासिल करने के पश्चात् क़ानूनी शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् बाँदा पहुँचकर वहीं वकालत करने लगे थे।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के एक प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं, लेकिन उनकी कविता में प्रकृति के चित्र भी बहुलता से देखे जा सकते हैं। उनकी कविताओं में हवा, धूप, नदी, बादल, पेड़-पौधे, चना, अलसी, पत्थर, पहाड़, सब को हम नई तरह से देखते हैं। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से वस्तुओं और जीवों और मनुष्य की निजता, जीवन और विजय संघर्ष की गाथा रची है। प्रगतिशील कवि होने के नाते उन्होंने प्रकृति के माध्यम से भी अन्याय, शोषण और अत्याचार का विरोध किया है।

'कंकरीला मैदान' केदारनाथ अग्रवाल की लघु होकर भी आकर्षक एवं विचार प्रधान कविता है।

केदारनाथ के अनुभूत व्यक्तित्व और यथार्थवाद का विश्लेषण उनके रचना-उत्स को करीब से देखने में सहायक सिद्ध होता है। उनका यथार्थ बोध उनके आसपास का जीवन है जिसमें उनका गाँव, केन नदी, पेड़, पहाड़, वन, धूप-छांव, सूरज-चांद-सितारे, ऋतु परिवर्तन के दृश्य, लौकिक वस्तुओं का रंग रूप है। 'अपूर्वा' की भूमिका में कवि का कथन उद्धरणीय है- 'लोग तो प्रगतिशील कविता में केवल राजनीति की चर्चा मात्र ही चाहते हैं। वे कविताएँ जो प्रेम से, प्रकृति से, आसपास के आदमियों से, लोकजीवन से, सुंदर दृश्यों से,भूचित्रों से, यथावत चल रहे व्यवहारों से और इसी तरह की अनेकरूपताओं से विरचित होती हैं, प्रगतिशील नहीं मानी जातीं। मेरी प्रगतिशीलता में इन कथित वर्जित विषयों का बहिष्कार नहीं है। वह इन विषयों के संदर्भ में उपजी हुई प्रगतिशीलता है।

काव्यागत विशेषताएँ

केदारनाथ अग्रवाल की कविता मे प्रकृति और लोक परिवेश की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका को अलग नहीं देखा जा सकता। कालिदास, तुलसी, निराला, नागार्जुन की परंपरा में केदार जी भी लोकजन के कल्याण से जुड़े हैं। केदार जी मुख्यतः मानववादी कवि हैं। लोक जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो उनकी दृष्टि से छूटा हो। उन्होंने सदैव जनता के बीच रहकर उनके कल्याण के लिए संघर्ष किया। केदारनाथ अग्रवाल जितने सहज हैं उतने ही कठिन कवि भी हैं। सहजता उन्हें लग सकती है जो भारतीय ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और सचमुच के भारत से वास्ता रखते हैं। गाँव और गाँव के जीवन से जिनका सम्बन्ध पुस्तकों और रजतपटों तक सीमित है, उनके लिये वे कठिन तथा अक्रामक कवि हैं। क्योकि वे किसानों के प्रतिनिधि हैं और ठेठ ग्रामीण जीवन से लेकर श्रमिक की समग्रता ही उनकी मुख्य काव्य वस्तु है। इसका मतलब यह नहीं है कि इस कवि से जीवन का कोइ कोना छूट गया हो। सच तो यह है कि इस कवि ने भारतीय जीवन के उन सभी पक्षों को अभिव्यक्ति दी है जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं ...... क्या सुख, क्या दैन्य, क्या श्रम से पस्त जीवन, क्या टूटती आकांक्षाओं मे दम तोड़ते सपने, क्या क्रूर व्यवस्था के पाखण्ड, क्या प्रजातंत्र का खोखला खेल और इन सबसे अलग प्रकृति के समग्र उपादानों पर न्योंछावर कवि की अनुभूति की वह अप्रतिम मानवीय संसक्तिः जो जीवन को नई चेतना से अनुप्राणित कर देती है।

कविता-परिचय

यह कविता कवि केदारनाथ अग्रवाल की रचना है। इसमें कवि ने कँकरीले अर्थात् काण्टों-कंकड़ों से भरे मैदान को उस अतीत वैभव का प्रतीक मानकर चित्रण किया है कि जो अब अन्तराल में अनेक स्मृतियाँ छिपाए, रूखा-सूखा, खण्डहर प्रायः बनकर रह गया है। कवि ने कल्पना की है कि कभी यहाँ पानी का सागर लहराता होगा कि समय के आघात ने जिसे अब इस रूप में बदल दिया है । सागर की मछलियाँ ही जैसे जम-सूखकर कहीं- कहीं खिले काण्टेदार फूल बन गई हैं। ऐसे फूल जिन्हें कभी किसी युग में प्रेमिनों (मछलियों) ने अपने प्रेमियों को देने के लिए सजाया-सँवारा होगा। कवि का तात्पर्य है कि अतीत का वैभव आज का खण्डहर, आज का वैभव भविष्य का खण्डहर होता है।

कविता पाठ

कंकरीला मैदान

ज्ञान की तरह जठर-जड़
लम्बा चौड़ा
गत वैभव की विकल याद में-
बड़ी दूर तक चला गया है गुमसुम खोया।
जहाँ-तहाँ कुछ कुछ दूरी पर,

उसके ऊँपर,
पतले से पतले डंठल के नाज़ुक बिरवे
थर-थर हिलते हुए हवा में खड़े हुए
बेहद पीड़ित।
हर बिरवे पर मुँदरी जैसा एक फूल है
अनुपम, मनोहर,
हर एसी मनहर मुंदरी को
मीनों नें चंचल आँखों से
नीले सागर के रेशम के रश्मि तार से,
हर पत्ती पर बड़े चाव से–बड़ी जतन से–
अपने अपने प्रेमीजन को देने के खातिर काढ़ा था
सदियों पहले।
किंतु नहीं वे प्रेमी आये
और मछलियाँ सूख गयी हैं–कंकड़ हैं अब।
आह! जहाँ मीनों का घर था
वहाँ बड़ा मैदान हो गया।।

सारांशः

कवि जड़ समान पेट के साथ गुम सुम घूमता है। उनकी दृष्टि में जड़ पेट ज्ञान के बराबर है। लम्बा चौड़ा है तथा गत वैभव की विकल याद स्मरण कराने वाला है। पता नहीं कि निशून्य शिथिल-दुर्बल पेट के साथ कहाँ तक जाना है।

ज्ञान की तरह जठर-जड़
लम्बा चौड़ा
गत वैभव की विकल याद में-
बडी दूर तक चला गया है गुमसुम खोया।
भूख तन के समान मन को भी होती है। खाये
बिना दोनों सबल नहीं बन पाती है।
जहाँ-तहाँ कुछ कुछ दूरी पर,
उसके ऊँपर,
पतले से पतले डंठल के नाजुक बिरवे
थर-थर हिलते हुए हवा में खड़े हुए
बेहद पीड़ित।

तब कुछ दूर पर पतले से पतले पौधे दिखायी पड़ते हैं। वह थर-थर हिलते है जो तेज़ हवा में खड़े हुए है। निरंतर पड़ने वाले हवा के झोंके उसे हिलाते- डुलाते हैं। लगता है कि पेड़-पौधे हवा की झोंकों से अपनी अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। समूल पीड़ित एवं हताश पेड़-पौधों पर हवा को तनिक भी सहानुभूति नहीं होती है।

हर बिरवे पर मुँदरी जैसा एक फूल है
अनुपम, मनोहर,
हर ऐसी मनहर मुंदरी को
मीनों नें चंचल आँखों से
नीले सागर के रेशम के रश्मि तार से,
हर पत्ती पर बड़े चाव से–बड़ी जतन से–
अपने अपने प्रेमीजन को देने के खातिर काढ़ा था।

हर पेड़-पौधे में अनुपम तथा मनोहर फूल है जो अंगूठी जैसे प्रतीत होते हैं। यह नीले सागर के रेशम के रश्मि तार के मीनों के चंचल आंखें लगते है। हर पत्ती पर बड़े चाव से, बड़ी जतन से रखी अपने-अपने प्रेमीजन को देने के खातिर सदियों पहले काढ़ा था।

किंतु नहीं वे प्रेमी आये
और मछलियाँ सूख गयी हैं–कंकड़ हैं अब।
आह! जहाँ मीनों का घर था
वहाँ बड़ा मैदान हो गया।।

कवि कहते है कि जिस प्रेमी का इंतज़ार किया, वे प्रेमी नहीं आये हैं। इसलिए मछलियाँ सूखकर कंकड़ के समान हो गयीं हैं। जिस जगह पहले मीनों का घर था

उस जगह अब बड़ा मैदान हो गया। परिवर्तन की भरमार में प्रकृति बदल गयी, उसका बदलाव भयानक होता है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता मे प्रकृति और लोक परिवेश की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका को अलग नहीं देखा जा सकता।

Critical Overview / अवलोकन

प्रतीकों के सहारे जीवन का समग्र चित्रण करने में कवि केदारनाथ सिद्धहस्त है। प्रस्तुत कविता 'कंकरीला मैदान' में वे वर्तमान संकीर्ण जीवन की मुसीबतें चित्रित करते हैं। ग्रामीण परिवेश और लोकजीवन को सशक्त वाणी प्रदान करनेवाले कवियों में केदारनाथ अग्रवाल विशिष्ट हैं। परम्परागत प्रतीकों को नया अर्थ सन्दर्भ देकर केदार जी ने वास्तुतत्त्व एवं रूपतत्त्व दोनों में नयेपन के आग्रह को स्थापित किया है। अग्रवालजी प्रज्ञा और व्यक्तित्व-बोध को महत्त्व देनेवाले प्रगतिशील सोच के अग्रणी कवि

हैं। केदार ने काव्य के संस्कार अपने पिता से ही ग्रहण किये थे। केदारनाथ अग्रवाल ने सन् 1972 ई० में बाँदा में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन का आयोजन किया।

अग्रवाल छायावादी युग के मूर्धन्य प्रगतिवादी कवि थे। अनूठा शब्दचयन और भावाभिव्यक्ति में चित्रात्मकता इनकी विशेषता है। 'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'आग का आईना', 'गुलमेहँदी', 'पंख और पतवार', 'हे मेरी तुम' और 'अपूर्वा' इनके मुख्य काव्य-संग्रह हैं। इनके कई निबंध-संग्रह भी प्रकाशित हैं। ये साहित्य अकादमी तथा 'सोवियत लैंड नेहरू' पुरस्कार से सम्मानित हुए। ये रचनाएँ उनकी सृजन प्रतिभा की सबूत हैं।

समग्रतः केदारनाथ अग्रवाल सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं, प्रगतिशील चेतना और सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर कवि हैं। संवेदनशील होकर कला के प्रति बिना आग्रह रखे वे काव्य की जनवादी चेतना से जुड़े हैं। 'युग की गंगा' में उन्होंने लिखा है-"अब हिन्दी की कविता न रस की प्यासी है, न अलंकार की इच्छुक है और न संगीत के तुकान्त की भूखी है।" इन तीनों से मुक्त काव्य का प्रणयन करनेवाले केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में रस, अलंकार और संगीतात्मकता के साथ प्रवहमान है और भावबोध एवं गहन संवेदना उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- केदारनाथ की भाषा सरल-सहज, सीधी-ठेठ है।
- उनके प्रगितवादी काव्य में जनसाधारण की चेतना को स्वर मिला है, अतः उसमें एक सरसता विद्यमान है।
- छायावादी काव्य की भाँति उसमें दूरारूढ़ कल्पना की उड़ान नहीं है।
- प्रायः सभी कवियों ने काव्य-भाषा के रूप में जनप्रचलित भाषा को ही प्रगतिवादी काव्य में अपनाया है परन्तु केदार कुछ मामलों में अन्य कवियों से विशिष्ट हैं।
- उनकी काव्य-भाषा में जहाँ एक ओर गाँव की सीधी-ठेठ शब्दावली जुड़ गयी है ।
- वहीं प्राकृतिक दृश्यों की प्रमुखता के कारण भाषा में सरलता और कोमलता है।
- गाँव की गन्ध, वन-फूलों की महक, आँवई भाषा, सरल जीवन और आसपास के परिवेश को मिलाकर केदारनाथ अग्रवाल ने कविता को प्रगतिशील बौद्धिक चेतना से जोड़े रखकर भी मोहकता बनाये रखी है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. केदारनाथ अग्रवाल कौन है?
2. केदारनाथ अग्रवाल के किन्हीं दो पद्य संग्रह के नाम बताइए।
3. केदारनाथ अग्रवाल के किन्हीं दो गद्य संग्रह के नाम बताइए।
4. प्रगतिशील काव्यधारा के एक प्रतिनिधि कवि कौन है?
5. 'युग की गंगा' किसकी रचना है?
6. कँकरीले मैदान का अर्थ क्या है?
7. निरंतर पडनेवाले हवा के झोंकें उसे हिलाते-डुलाते हैं। किसे?
8. जो जगह पहले मीनों का घर था अब वह क्या हो गया?

Answers / उत्तर

1. आधुनिक हिन्दी के विख्यात कवि, चिंतक और गद्यकार।
2. युग की गंगा (1947), फूल नहीं रंग बोलते हैं।
3. समय-समय पर (1970), विचार बोध (1980)
4. केदारनाथ अग्रवाल
5. केदारनाथ अग्रवाल
6. काण्टों-कंकड़ों से भरे मैदान
7. पेड-पौधों को
8. बडा मैदान

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कवि केदारनाथ अग्रवाल का व्यक्तित्व और कृतित्व – एक सारगर्भित अध्ययन।
2. कँकरीले मैदान किसका प्रतीक है? सिद्ध कीजिए।
3. कवि और कविता पर टिप्पणी लिखें -'कँकरीले मैदान'।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य – डॉ. रामविलास शर्मा।
2. फूल नहीं रंग बोलते हैं - अशोक त्रिपाठी।
3. कहे केदार खरी खरी की भूमिका से – डॉ. अशोक त्रिपाठी।
4. प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल – डॉ. रामविलास शर्मा।

इकाई 4

फूल झर गए

कीर्ति चौधरी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ‘तीसरा सप्तक’ की कवयित्री कीर्ति चौधरी के जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- कवयित्री कीर्ति चौधरी के काव्यगत विशेषताओं से जानकारी प्राप्त करता है
- ‘फूल झर गए’ कविता का परिचय प्राप्त करता है
- जीवन की नैमिषिकता के बारे में याद दिलाता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

कीर्ति चौधरी की कविताओं में एक मोहक प्रगीतात्मकता पाई जाती है और उनमें गाँव-क़स्बे-शहर का संपूर्ण जीवन मौजूद है। उन्होंने प्रतीकों और बिंबों का भी बहुतायत से प्रयोग किया है। ‘तीसरा सप्तक’ में उनके साथ रहे कालांतर के प्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह ने कहा था-“महादेवी वर्मा के बाद हिन्दी कविता में जो एक रिक्तता आई थी, उसे कीर्ति अपने मौलिक लेखन से पाटती हैं। उनकी कविता एक नए साँचे में थी जिसकी बनावट अलग थी। उसमें एक ताज़गी थी। और अपनी रचनाओं के तल में उनके पास एक ख़ास तरह का स्त्री सुलभ संवेदना का ढाँचा था जो उनके समय में किसी और के पास नहीं था।”

‘फूल झर गए’ कीर्ति चौधरी की कविता है। सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन ‘अज्ञेय’ द्वारा संपादित ‘तीसरा सप्तक’ में कीर्ति चौधरी को स्थान मिला है। ‘तीसरा सप्तक’ अज्ञेय द्वारा संपादित नई कविता के सात कवियों की कविताओं का संग्रह है। इसमें कुँवर नारायण, कीर्ति चौधरी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह और विजयदेवनारायण साही की रचनाएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन से 1959 ई० में हुआ। जैसा कि हम जानते हैं कि कीर्ति चौधरी तीसरे तारसप्तक की अकेली कवयित्री है बाकी 6 कवि हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- ‘अज्ञेय’ द्वारा संपादित तीसरा सप्तक में प्रमुख हस्ताक्षर।
- “किसी का जीवन अमर नहीं” यह संदेश फैलाते हैं।
- क्षण भंगुर जीवन में फूलों के समान दूसरों को खुशी देते रहना है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचयः

'तीसरा सप्तक' में शामिल कवयित्री कीर्ति चौधरी का जन्म 1 जनवरी 1934 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के एक ज़मींदार कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम कीर्तिबाला सिन्हा था। कविताएँ कीर्ति चौधरी नाम से प्रकाशित कराती थीं। शिक्षा-दीक्षा उन्नाव और कानपुर से हुई। उन्हें साहित्यक संस्कार परिवार से ही मिले उनकी माँ सुमित्रा कुमारी सिन्हा हिंदी की लोकप्रिय कवयित्री सह गीतकार थीं और पिता भी साहित्यक अभिरुचि रखते थे। उनके परिवार का प्रेमचंद, निराला जैसे साहित्यकों से निकट संबंध रहा था। उनका विवाह ओंकारनाथ श्रीवास्तव से हुआ जो हिंदी के सर्वश्रेष्ठ रेडियो प्रसारकों में से एक थे और स्वयं भी साहित्यक रचनाएँ करते थे। उनके भाई अजित कुमार भी हिंदी में सुपरिचित रहे हैं जिन्होंने 'बच्चन रचनावली' का संपादन किया है और कई संस्मरण लिखे हैं।

1954 में एम.ए. करने के बाद 'उपन्यास के कथानक तत्व' जैसे विषय पर उन्होंने शोध भी किया। साहित्य उन्हें विरासत में भी मिला और फिर जीवन साथी भी साहित्य, संप्रेषण से जुड़े रहे। हालांकि पिता एक ज़मीदार थे पर माँ, सुमित्रा कुमारी सिन्हा ख़ुद एक बड़ी कवियत्री, लेखिका और जानी-मानी गीतकार थीं। माँ के प्रभाव से मुक्त कीर्ति चौधरी का लेखन अपनी मौलिकता ही लिए हुए था। कीर्ति चौधरी की कविताएँ तीसरा सप्तक में शामिल की गई थी।

कीर्ति चौधरी का निधन 13 जून 2007 को लंदन में हो गया।

रचनाएँः दायित्व भार, लता 1, 2 और 3, एकलव्य, बदली का दिन, सीमा रेखा।

अन्य कृतियाँः कम्पनी बाग़, आगत का स्वागत, बरसते हैं मेघ झर झर, मुझे फिर से लुभाया, वक़्त, केवल एक बात थी आदि।

कविता पाठः

फूल झर गए

फूल झर गए।
क्षण-भर की ही तो देरी थी
अभी-अभी तो दृष्टि फेरी थी
इतने में सौरभ के प्राण हर गए।
फूल झर गए।

दिन-दो दिन जीने की बात थी,
आख़िर तो खानी ही मात थी;
फिर भी मुरझाए तो व्यथा हर गए
फूल झर गए।

तुमको और मुझको भी जाना है
सृष्टि का अटल विधान माना है
लौटे कब प्राण गेह बाहर गए।
फूल झर गए।

फूलों-सम आओ, हँस हम भी झरें
रंगों के बीच ही जिएँ औ' मरें
पुष्प अरे गए, किंतु खिलकर गए।
फूल झर गए।

सारांशः

फूल झर गए।
क्षण-भर की ही तो देरी थी
अभी-अभी तो दृष्टि फेरी थी
इतने में सौरभ के प्राण हर गए।
फूल झर गए।

'फूल झर गए' कीर्ति चौधरी की कविता है। कवयित्री कहती हैं कि क्षण-भर की ही तो देरी में फूल झर गए थे। फूल का जीवन नैमिषिक है। उसे बड़ी देर तक जीने की लालसा है, किंतु अल्प क्षण में झर जाने की नियति है। कवयित्री स्पष्ट करती हैं कि अभी-अभी तो दृष्टि फेरी थी, इतने में सौरभ के प्राण हर गए। अभी तक नयनों को आनंद एवं नाक को ख़ुशबु प्रदान करता फूल क्षण के भीतर मात्र याद बन कर रह गया।

दिन-दो दिन जीने की बात थी,

आख़िर तो खानी ही मात थी;
फिर भी मुरझाए तो व्यथा हर गए
फूल झर गए।

तुमको औ' मुझको भी जाना है
सृष्टि का अटल विधान माना है
लौटे कब प्राण गेह बाहर गए।
फूल झर गए।

फूल का जीवन केवल एक या दो दिन तक सीमित है। फूल के समान मनुज को भी जाना है। किसी का जीवन अमर नहीं हैं। यही सृष्टि का अटल विधान है। कब जीव-जंतुओं के गेह रूपी शरीर से प्राण बाहर जाते हैं, पता नहीं है। शरीर नश्वर है, मृत्यु ही शाश्वत है। फूल झर जाने के समान मनुष्य का जीवन भी झर जाता है।

फूलों-सम आओ, हँस हम भी झरें
रंगों के बीच ही जिएँ औ' मरें
पुष्प अरे गए, किंतु खिलकर गए।
फूल झर गए।

क्षण भंगुर जीवन में फूलों के समान दूसरों को खुशी देते रहें। क्योंकि हम भी झर जायेंगे। हँसकर हम भी झरें। जब तक प्राण हैं, तब तक रंगों के बीच ही जिएँ और मरें तो पुष्प जैसे खिलकर मरें। 'फूल झर गए' शीर्षक कविता द्वारा कवयित्री ने क्षणिक जीवन को आनंदप्रद बनाने का आह्वान किया है।

विश्लेषण-

प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने आशा-निराशा का घोर संघर्ष दिखाकर आशा के पक्ष में रहने का मार्ग दिखा दिया है। कीर्ति चौधरी जी ने 'फूल झर गए' कविता के ज़रिए जीवन के अस्थायीपन के भाव को व्यक्त किया है। कविता की प्रारंभिक पंक्तियों में कवयित्री के द्वारा अपनों को खोने के दर्द को बहुत ही संवेदनशील रूप से चित्रित किया गया है।

कविता के मध्य भाग में जीवन के क्षणभगुरता के बारे में स्पष्ट किया है। उनका मानना है कि यह जीवन एक न एक दिन ख़त्म हो जाना ही है। ऐसे में जीवन के हर एक क्षण को दुख और उदासी के साथ न बिता कर, इसे ख़ुश रह कर गुज़ारें। कीर्ति चौधरी की साहित्यक यात्रा यूँ तो बहुत लम्बी और सृजन समेटे हुए नहीं है पर जितनी भी है, उसे किसी तरह से कमतर नहीं आंका जा सकता।

Critical Overview / अवलोकन

फूल का जीवन नैमिषिक है। मानव जीवन भी नैमिषिक है। इसलिए हम भी क्षण भंगुर जीवन में फूलों के समान दूसरों को ख़ुशी देते रहें। उनका मानना है कि यह जीवन एक न एक दिन ख़त्म हो ही जाना है तो जीवन के हर एक क्षण को दुख और उदासी के साथ न बिता कर हमें कोशिश करनी है कि हम इसे ख़ुश रह कर गुज़ारें।

Recap / पुनरावृत्ति

- मानव जीवन फूल के जीवन के समान नैमिषिक है।
- कविता के मध्य भाग में उन्होंने जीवन की अस्पष्टतता को, उसके सीमित काल के बारे में हम लोगों को बताया है।
- कीर्ति चौधरी जी की मानना है कि यह जीवन एक न एक दिन ख़त्म हो ही जाना है तो जीवन के हर एक क्षण को दुख और उदासी के साथ न बिता कर हमें कोशिश करनी है कि हम इसे ख़ुश रह कर गुज़ारें।
- फूल झर जाने के समान मनुष्य का जीवन भी झर जाता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कीर्ति चौधरी का जन्म कब, कहाँ हुआ?
2. कीर्ति चौधरी की किन्हीं दो कृतयों के नाम लिखिए?
3. 'तीसरा सप्तक' में शामिल कवयित्री का नाम?
4. कीर्ति चौधरी का मूल नाम क्या था?
5. फूल झर गए कविता का संदेश क्या है?
6. 'फूल झर गए' कविता का कवि कौन है?
7. उसे बडी देर तक जीने की लालसा है। किसको?
8. सृष्टि का अटल विधान क्या है?

Answers / उत्तर

1. 1 जनवरी, 1934 में नईमपुर गाँव, उन्नाव ज़िला, उत्तर प्रदेश
2. दायित्व भार, एकलव्य।
3. कीर्ति चौधरी
4. कीर्ति बाला सिन्हा
5. क्षण भंगुर जीवन में फूलों के समान दूसरों को ख़ुशी देते रहें।
6. कीर्ति चौधरी
7. फूल को
8. किसी का जीवन अमर नहीं है।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कीर्ति चौधरी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक सारपूर्ण लेख लिखिए।
2. फूल झर गए कविता का सारांश एवं संदेश लिखिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. तीसरा सप्तक - अज्ञेय।
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
3. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार वर्मा।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्रशुक्ल।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 06

साठोत्तरी और समकालीन कविता

इकाई 1

हर तरफ धुआँ है

धूमिल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक, साहित्यिक स्थितियों से परिचय प्राप्त करता है
- समकालीन कवियों के बारे में समझता है
- आधुनिक हिन्दी के प्रमुख कवि धूमिल के व्यक्तिगत एवं काव्यगत जीवन से परिचित होता है
- 'हर तरफ धुआँ है' कविता के बारे में समझता है
- समकालीन कविता की विशेषताएँ समझती है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी में समकालीन शब्द अंग्रेजी के 'कन्टेम्परेरी शब्द' के सम शब्द के रूप में प्रयुक्त करते हैं, जिसका अर्थ होता है- एक ही समय में घटित होने वाला। समकालीन कविता से तात्पर्य वर्तमान काल में रहकर कविता लिखने वाले कवि की कविता से होता है। समकालीन कविता का आविर्भाव सन् 1964 के पश्चात माना जाता है। असल में यह आधुनिक कविता का विकसित रूप है।

समकालीन सामाजिक जीवन पर दृष्टि डालते समय कई सुरीति और कुरीति एक साथ हमारे सामने आती हैं। राजनीति की बुराइयाँ, बेरोज़गारी की समस्या, भूख, महिलाओं के प्रति होने वाले अन्याय तथा अतिक्रमण, शोषण, बर्बरता, अत्याचार, क्रमहीन अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, जातिवाद, सांप्रदायिकता, सामाजिक यथार्थ बोध हीनता, खान-पान के नाम पर घटित होने वाली समस्याएँ, क्षेत्रीयवाद, बच्चों के प्रति होने वाले बलात्कार आदि तरह-तरह की समस्याएँ हमारे सामने उभरकर आती हैं। नयी चेतना और नयी भाव-भूमि, नयी संवेदना और नये शिल्प विधान के साथ फैली हुई इस धारा को नई कविता का नाम देकर पुकारना अनुचित नहीं है।

हिन्दी के समकालीन कवियों की श्रेणी में कई कवि आते हैं। जिसमें कुछ कवियों के नाम उदाहरणार्थ दे रहा हूँ। धूमिल, लीलाधर जगूडी, अशोक वाजपेयी, चन्द्रकांत देवताले, अरुण कमल, वेणुगोपाल, सोमदत, बलदेव बंशी, प्रयाग शुक्ल, सौमित्र मोहन, कात्यायनी, राजेश जोशी, गोरख पांडेय, उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल, राजकुमार कुम्भज, ज्ञानेन्द्रपति, मनोज सोनकर, अनामिका आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- समकालीन हिन्दी के प्रतिनिधि कवि और कविताओं की विषयों का मूल्यांकन करने पर मालूम होगा कि समकालीन कविताएँ स्त्री पक्षपात, दलित पक्षपात, सम लिंग पक्षपात, पर्यावरण-प्रदूषण आदि विभिन्न विषयों को काव्य वस्तु बनाया है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

▶ समकाल के सुप्रसिद्ध कवि अरूण कमल, अनामिका और ज्ञानेंद्रपति के व्यक्तिगत जीवन एवं साहित्यक जीवन से तत्कालीन हिन्दी साहित्य समृद्ध हुए।

▶ बेजगह - महिलाओं की गुलामी भरे जीवन को सीधे-सादे शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम है।

▶ मुक्ति, बेजगह एवं प्यासा कुआँ - हमें समझाती हैं कि हमारी समकालीन कविता, समय और समाज के धड़कन को ग्रहण कर सीधे-सच्चे रास्ते पर अग्रसर है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचयः

सुदामा पाण्डेय धूमिलः

धूमिल का जन्म 9 नवम्बर 1936 वाराणसी के पास खेवली गांव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम सुदामा पांडेय था। उनके पिता का नाम पंडित शिवनायक था और माँ का नाम रसवंती देवी था। उन्होंने सन् 1958 में आई टी आई (वाराणसी) से विद्युत डिप्लोमा लेकर वे वहीं विदयुत अनुदेशक बन गये। उन्हें मरणोपरांत 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका निधन 38 वर्ष की अल्पायु में ब्रेन ट्यूमर से 10 फरवरी 1975 को हुआ।

सुदामा पाण्डेय धूमिल की प्रमुख रचनाएँ:

1. संसद से सड़क तक-1972 (प्रथम काव्य संग्रह)
2. कल सुनना मुझे-1976 (साहित्य अकादमी पुरस्कार 1979 ई।)
3. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र (इस रचना की भूमिका विद्यानिवास मिश्र ने लिखी है।)

धूमिल की कुछ सबसे लोकप्रिय कविताएँ हैं- मोचीराम, बीस साल बाद, पटकथा, रोटी और संसद, लोहे का स्वाद आदि। धूमिल को मरणोपरांत 1979 में 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सन् 1960 के बाद की हिंदी कविता में जिस मोहभंग की शुरूआत हुई थी, धूमिल उसकी अभिव्यक्ति करने वाले अंत्यत प्रभावशाली कवि हैं। उनकी कविता में परंपरा, सभ्यता, सुरुचि, शालीनता और भद्रता का विरोध है, क्योंकि इन सबकी आड़ में जो हृदय पलता है, उसे धूमिल पहचानते हैं। कवि धूमिल यह भी जानते हैं कि व्यवस्था अपनी रक्षा के लिये इन सबका उपयोग करती है, इसलिये वे इन सबका विरोध करते हैं। इस विरोध के कारण उनकी कविता में एक प्रकार की आक्रामकता मिलती है। किंतु उससे उनकी कविता की प्रभावशीलता बढ़ती है। धूमिल अकविता आन्दोलन के प्रमुख कवियों में से एक हैं। धूमिल अपनी कविता के माध्यम से एक ऐसी काव्य भाषा विकसित करते हैं जो नई कविता के दौर की काव्य-भाषा की रुमानियत, अतिशय कल्पनाशीलता और जटिल बिंबधर्मिता से मुक्त है। उनकी भाषा काव्य-सत्य को जीवन सत्य के अधिकाधिक निकट लाती है।

धूमिल साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रखर युगद्रष्टा, रचनाकार हैं। अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर का उपजा असंतोष उनकी कविताओं में व्यंग्य-रूप में सर्वत्र परिलक्षित होता है। सामाजिक विसंगतियों के प्रति गहरा सरोकार रखने वाले कवि धूमिल का समूचा साहित्य वर्तमान से मुठभेड़ करता दिखायी देता है। डॉ. शुकदेव सिंह का मत हैं 'धूमिल अपने समय का ही नहीं, हिन्दी का सबसे महत्वपूर्ण जन कवि और जनवादी कवि था। यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि धूमिल ने जिस जीवन की अभिव्यक्ति अपने काव्य में की, उस जीवन को उन्होंने किसी अन्य को जीते नहीं देखा था, बल्कि स्वयं भोगा था और जिस आदमी की पीड़ा को वह अपनी कविता में वाणी देते रहे वह कोई और नहीं स्वयं धूमिल ही थे।

धूमिल की कविताओं के सन्दर्भ में वरिष्ठ साहित्यकार काशीनाथ सिंह कहते है- 'धूमिल कविताएँ नहीं, पंक्तियाँ लिखता था। उसकी कविता लिखने की प्रक्रिया मुझे रीतिकालीन आचार्यो की याद दिलाती है। जिस तरह रीतिकालीन कवियों का सारा ध्यान सवैया या कवित्त की

अंतिम पंक्ति पर केन्द्रित होता था या यूँ कहे कि सबसे पहले उनके दिमाग़ में 'समस्या' आती थी और वे, उसकी पूर्ति ऊपर की तीन या सात पंक्तियों से करते थे, उसी तरह धूमिल के दिमाग़ में जुमले आते थे और ये जुमले कभी तो उसके उपजाऊ दिमाग़ की उपज होते थे और कभी उसे लोगों की बातचीत से हासिल होते थे। फिर वे जुमले उसके लिए कविता में 'प्रस्थान-बिन्द' की तरह होते थे, उस सूत्र के माध्यम से वह कविता को कंसीव करता था-बल्कि वे उपलब्ध पंक्तियाँ ही कविता का प्रारूप, विषय और आकार निर्धारित करती थीं। कविता का कोई भी सचेत पाठक 'संसद से सड़क तक' की लगभग सभी कविताओं में ऐसी पंक्तियों पर उँगली रख सकता है। ज़्यादातर वे सूक्तियाँ कविता के अंत में हैं।

धूमिल की रचनाएँ पढ़ते हुए पाठकों का स्वयं को उन विचारों-भावों के निकटस्थ पाने की विशेषताओं के कारण ही धूमिल सच्चे जनकवि कहलाए। धूमिल पाखंड, बनावट, स्वांग, औपचारिकता से सर्वथा मुक्त कवि थे जिनमें निर्भीकता, बेबाकी तथा सच्चाई से कटु यथार्थ लिखने का सामर्थ्य थी। धूमिल स्वयं अभावों में पले-बढ़े थे इसलिए सप्रयास नहीं बल्कि सहजता से आमजन के दुःख-दर्द, पीड़ा-वेदना रच पाए। धूमिल ने प्रभावित हुए बिना पीड़ा लिखी और उनकी कविताएं पढ़के कभी कोई पाठक निराशा के गर्त में नहीं समाया। उनके पात्रों ने संघर्षरत, कठिनाइयों से जूझते हुए भी आनंद के अल्प, सूक्ष्म क्षणों को जीया। धूमिल की कविताओं के माध्यम से उनको समझना, सत्य से साक्षात्कार करना है।

धूमिल स्पष्टवादी, अक्खड़, दबंग स्वभाव के कारण सदैव अधिकारियों के क्रोध का निशाना बने और अधिकारियों के भिन्न-भिन्न तरीकों का उत्पीड़न ही उनके मानसिक तनाव का कारण बना। 10 फरवरी, 1975 को हिंदी साहित्याकाश का ये अनोखा जनप्रिय कवि सदा के लिए ब्रह्मलीन हो गया।

कविता पाठः

हर तरफ धुआं है

हर तरफ धुआं है
हर तरफ कुहासा है
जो दांतों और दलदलों का दलाल है
वही देशभक्त है

अंधकार में सुरक्षित होने का नाम है-
तटस्थता।
यहाँ कायरता के चेहरे पर
सबसे ज्यादा रक्त है।
जिसके पास थाली है
हर भूखा आदमी
उसके लिए, सबसे भद्दी
गाली है

हर तरफ कुआँ है
हर तरफ खाईं है
यहां, सिर्फ, वह आदमी, देश के करीब है
जो या तो मूर्ख है
या फिर गरीब है।

सारांशः

उपरोक्त कविता के रचयिता व्यवस्था में तीसरे आदमी की घुसपैठ पर प्रश्न उठाने वाले कवि हिन्दी कविता के 'युगपुरुष' सुदामा पांडेय हैं, जिन्हें साहित्य की दुनिया 'धूमिल' नाम से जानती है। धूमिल, कबीर, निराला और मुक्तिबोध की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कवि है।

धूमिल की कविताएँ मुख्यतः वर्ग भेद पर केंद्रित हैं जो कि मानव सभ्यता के जन्म से ही है और शायद अंत तक रहेगा। इसलिए यह आज भी प्रासंगिक है।

हर तरफ धुआं है
हर तरफ कुहासा है
जो दांतों और दलदलों का दलाल है
वही देशभक्त है

कवि कहते है कि चारों ओर धुआँ और कुहासा है। इसमें दांतों और दलदलों का दलाल है और ऐसा करने वाला देशभक्त बन जाता है। धुआँ और कुहासा हमारे आँखों के आगे की विविध प्रत्यक्ष सच्चाई को अप्रत्यक्ष बना देता है। कुछ लोग ऐसे हैं जो बुरे से बुरे पथ पर चलकर देशभक्त का उच्च पद हासिल करते हैं।

अंधकार में सुरक्षित होने का नाम है-
तटस्थता।
यहां कायरता के चेहरे पर
सबसे ज्यादा रक्त है।
जिसके पास थाली है

हर भूखा आदमी
उसके लिए, सबसे भद्दी
गाली है

हर तरफ कुआँ है
हर तरफ खाईं है
यहां, सिर्फ, वह आदमी, देश के करीब है
जो या तो मूर्ख है
या फिर गरीब है।

विचारवान कवि धूमिल ने अंधकार में सुरक्षित होने को तटस्थता कहा है। यहाँ कायरता के चेहरे पर सबसे ज्यादा रक्त बहता है। जिसके पास थाली है उसको खाना खिलाया जाता है। कवि के मत में हर भूखा आदमी को, भूख के कारण सबसे भद्दी गाली सहनी पड़ती है।

धूमिल वर्ग संघर्ष का कवि है। मज़दूर-मालिक, शासक-शासित विचार उन्होंने अधिकांश कविताओं में प्रकट किया है। यहाँ कवि प्रवासी मज़दूरों की दर्दनाक दास्तां, उनकी तकलीफ, उनका दर्द, उनका कष्ट चित्रित करता है। मजदूरों के संकट की पराकाष्ठा ट्रेन द्वारा कट जाने से हुई- पर मध्यम वर्ग की प्रतिक्रिया, उन्हें बेवकूफ कहने का दम्भ, उनका मजाक उड़ाना, 50 दिनों बाद भी उन्हें अधीर कहना आदि पंक्तियाँ इसको प्रासंगिक बना देता है।

साठोत्तरी कविता में 'धूमिल' का उदय एक महत्त्वपूर्ण घटना की तरह हुआ। धूमिल के रूप में नई कविता और अकविता के किसी संक्रमण सुरंग से हाथ में औज़ार लिए हिंदी कविता का एक वास्तविक मज़दूर-किसान सामने आया था जिसने अपने औज़ार हथियार की तरह समकालीन कविता-विमर्श पर तान दिए थे। लेकिन उसके औज़ार हथियार नहीं हैं। वह स्वयं आगाह करते हुए कहते हैं कि "शब्द और शस्त्र के व्यवहार का व्याकरण अलग-अलग है। शब्द अपने वर्ग-मित्रों में कारगर होते हैं और शस्त्र अपने वर्ग-शत्रु पर।" उनका आक्रोश अकविता, क्रुद्ध युवा पीढ़ी, श्मशानी या भूखी पीढ़ी के आक्रोश से इस मायने में भिन्न था कि इसके मूल में शोषण से मुक्ति की प्रबल आकांक्षा मौजूद थी। उनका आक्रोश एक पूरी पीढ़ी, वर्ग और युग का आक्रोश भी था जो कविता, विमर्श, राजनीति में मुखर हो रहा था।

Critical Overview / अवलोकन

'धूमिल' उपनाम उन्होंने खुद चुना था। उनका मूल नाम सुदामा पांडेय था। उन्होंने कलकत्ता के एक लोहे के कारख़ाने में मज़दूरी की, फिर कुछ समय बाद एक ट्रेड कंपनी की नौकरी करने लगे। बाद में उन्होंने आईटीआई से इलेक्ट्रिक डिप्लोमा किया और अनुदेशक की नौकरी करने लगे। इन कुछ रोज़गार अवसरों से गुज़रते व्यवस्था और पूँजीवादी संरचना के प्रति उनका आक्रोश गहरा ही होता गया। व्यवस्था-विरोध उनके स्वभाव और उनकी कविता की एक विशेष प्रवृत्ति ही रही। उनकी कविताओं में यहाँ-वहाँ नज़र आती 'अराजकता' युगीन प्रभाव की देन भी है। नक्सलबाड़ी स्वच्छंदता का प्रभाव उस दौर के कई निम्न-मध्यवर्गीय कवियों में प्रकट हुआ है। 'धूमिल' के दृष्टिकोण की कुछ सीमितता उच्च शिक्षा और एक्सपोज़र के अभाव के कारण भी है।

धूमिल की अपनी विशिष्ट काव्य-भाषा है जिसमें आमफ़हम शब्दों का बहुलता से प्रयोग हुआ है। उनकी कविताओं की सफलता और लोकप्रियता में बिंबों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है जो प्रखर और ताज़े हैं। उनकी काव्य-भाषा की एक अन्य विशेषता बार-बार प्रकट होने वाले सामान्यीकरण हैं जो उनकी कविता में 'ड्रामा' के तत्वों का प्रवेश कराते हैं। देश की आज़ादी से मोहभंग उनकी कविताओं में अत्यंत तीक्ष्णता से अभिव्यक्त हुआ है और ये कविताएँ उन तमाम नैतिकताओं, भद्रताओं से लोहा लेती हैं जिनका इस्तिमाल शासन अपनी रक्षा के लिए करता है। उनकी भाषा की सरलता और प्रवाह उन्हें लोकप्रिय कविताओं में शुमार कराती है। उनके विषयों में आम जीवन, उसके संघर्ष और प्रतिरोध के सभी चित्र मौजूद हैं।

धूमिल का 39 वर्ष की अल्पायु में ब्रेन ट्यूमर से निधन हो गया। उनके जीवनकाल में उनका एक ही काव्य-संग्रह 'संसद से सड़क तक' (1972) प्रकाशित हो सका था। मरणोपरांत उनके दो अन्य संग्रह 'कल सुनना मुझे' (1977) और 'सुदामा पाँडे का प्रजातंत्र' (1984) संकलित हुए। गद्य विधा में उनकी सात कहानियाँ और दर्जनाधिक निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उनकी डायरी, पत्रों और उनपर लिखे गए संस्मरणों से उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता है। इसके साथ ही ये उनकी

कविताओं तक पहुँच के 'टूल्स' के रूप में भी काम आते हैं। इसके साथ ही उन्होंने अनुवाद और नाट्यलेखन में भी अपनी प्रतिभा दिखायी।

अकविता आंदोलन के प्रमुख कवि धूमिल सहज, सजग और अपनी प्रतिभा के बल पर अपनी साहित्य की ज़मीन तैयार करने वाले तार्किक एवं निर्भीक कवि हैं। धूमिल का काव्य संसार उनका स्वयं का भोगा हुआ और खुली आंखों से देखा हुआ यथार्थ है। इसलिए उनकी कविता में एक अलग प्रकार की आक्रामकता है।

समकालीन कविताः युवा-पीढ़ी का विद्रोहः

कुछ लोगों का विमर्श है कि समकालीन कविता युवा-पीढ़ी के विद्रोह का प्रस्तुतिकरण है। डॉ. जैन के मत में- वर्तमान समाज व्यवस्था से मोहभंग का शिकार हुए आम आदमी के भीतर की पीड़ा, तनाव, विवशता, अकेलापन, खीझ और गुस्से को उसके कटु अनुभवों की समग्रता का संस्पर्श देने में समकालीन कविता का काव्य-मर्म अंतर्ध्वनित है। डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने सन् 1970 के बाद की कविता को विक्षुब्ध कविता कहा है।

विषय-विविधताः

समकालीन कविता में घटना मुख्य विषय रहा है। कवियों के आँखों के सम्मुख आने वाला ही नहीं, अपरिचित विषय भी काव्य-विषय के रूप में अभिव्यक्त है। स्वदेशी समस्याओं के समान विदेशी समस्याएँ भी कवियों को प्रभावित करती हैं। जिसमें नैतिकता-अनैतिकता, लोकतंत्र-परतंत्र, संसद-विधान सभा, राजनीतिज्ञ, संप्रदायवाद, समाजवाद, चुनाव आदि सम्मिलित है।

डॉ. संतोष तिवारी अपनी अज्ञेय से अरुण कमल नामक ग्रंथ में लिखते है कि आठवें दशक की कविता पूँजीवाद और व्यवस्था के ख़िलाफ़ आक्रोशित और आवेगी रचनाओं का दस्तावेज रही है। किंतु नवें दशक में आम आदमी के दुःख दर्द को अपेक्षाकृत अधिक संयत भाषा में इस तरह शब्द बद्ध किया गया है कि मनोव्यथायें गहरी करुणा के साथ परिवेशगत सच्चाइयों का इज़हार करती हुई हमारे दिल दिमाग़ को झकझोरती है, संवेदना के स्तर पर वस्तु स्थिति का मार्मिक उद्घाटन करती है। समकालीन कविता में पारिवारिक रिश्तों को प्रगाढ़ आत्मीयता के साथ उभारा गया है।

रूढ़ियों की ख़िलाफ़ की ऊँची आवाज़ः

समसामयिक ज़िन्दगी की सत्यता अरुण कमल की कविताओं में चित्रित है। जीवन की वास्तविकता यथा-तथा चित्रित करने में अरुण कमल सिद्धहस्त हैं। उसकी कविता रूढ़ियों की ख़िलाफ़ की ऊँची आवाज़ है। अरुण कमल ने बड़े सहज ढंग में जीवन को रेखांकित किया है। वे सन् 1980 से ले कर अब तक वे काव्य धारा में अपना अस्तित्व व्यक्त करते हुए आ रहे है।

समकालीन कविता की विशेषताएँ

समकालीन कवि अपने समय और परिवेश को चित्रित करने में समर्थ लग रहे हैं।

समकालीन कवि अपनी लेखनी द्वारा जन सामान्य के क्रांतिकारी परिवर्तन को रेखांकित करने में सक्रिय रहते हैं। समकालीन कवियों का मुख्य लक्ष्य आम आदमी और समाज की वास्तविकता चित्रित करना होता है। अर्थात समकालीन कवि समाज के हर चाल-चलन को अपनी कविता में अभिव्यक्त करते है।

Recap / पुनरावृत्ति

- धूमिल ने विशेष रूप से सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार किया।
- साहित्य सृजन धूमिल के लिए मनोरंजन की चीज नहीं है।
- धूमिल की भाषा हिंदी कविता की बनी बनाई परंपरा से अलग है।
- वे कविता की दुनिया में भाषा का भ्रम तोड़ते हैं।
- वे जनता की यातना और दुःख से उभरी तेजस्वी भाषा में कविताएँ करना पसंद करते हैं।
- वे कहते हैं, "आज महत्व शिल्प का नहीं कथ्य का है, सवाल यह नहीं कि आपने किस तरह कहा है, सवाल यह है कि आपने क्या कहा है।"

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. धूमिल का जन्म कहाँ हुआ है?
2. धूमिल की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
3. धूमिल का पूरा नाम क्या है?
4. धूमिल का निधन कब हुआ?
5. धूमिल का वास्तविक नाम क्या है?
6. कवि धूमिल ने अंधकार में सुरक्षित होने को क्या कहा है?
7. हमारे आँखो के आगे की विविध प्रत्यक्ष सच्चाई को अप्रत्यक्ष बना देता है। क्या?
8. किसके चेहरे पर सबसे ज्यादा रक्त बहता है?

Answers / उत्तर

1. धूमिल का जन्म 9 नवम्बर 1936 वाराणसी के पास खेवली गांव में हुआ था।
2. संसद से सड़क तक-(1972), कल सुनना मुझे-(1976)
3. सुदामा पाण्डेय।
4. 10 जनवरी 1975
5. धूमिल का वास्तविक नाम सुदामा पांडेय है।
6. तटस्थता
7. धुआँ और कुहासा
8. कायरता के चेहरे पर

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. धूमिल के व्यक्तिगत और साहित्यक जीवन का परिचय।
2. 'हर तरफ धुआँ है' कविता का सारांश लिखकर उद्देश्य बताइए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. धूमिल की कविता – शुकदेव सिंह।
2. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार वर्मा।
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।

SGOU

इकाई 2

मुक्ति

अरुण कमल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक कवि अरुण कमल के व्यक्तिगत जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- अरुण कमल के काव्यगत जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- सामाजिक-पारिवारिक जीवन की विसंगतियों से अवगत होता है
- पिता-पुत्र संबंधों की सच्चाई से परिचय प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

'मुक्ति' शीर्षक कविता सचमुच वक्त का दर्पण है। यह सही अर्थ में समकालीन प्रतिनिधि कविता है। इसके रचनाकार प्रगतिशील कवि और आलोचक अरुण कमल है। इसमें वर्तमान जीवन-संघर्षो में त्रस्त एक पिता के विक्षुब्ध मन का आत्म विस्फोट चित्रित किया गया है। घर पर यंत्रवत जीवन जीने वाला गृह नायक अपने जीवन के सायंकाल में निराशा से भर जाता है। वह यथा समय अपना उत्तरदायित्व निभाने में असमर्थ है। बाद में उसका भयानक भविष्य स्वयं भोगना पड़ता है। वास्तव में उसने भूत तथा वर्तमान काल कष्ट और दुख में ही बिताया। वह निस्सहाय है। नौकरी से अवकाश प्राप्त यह पिता समकालीन समाज के लाखों-करोड़ों पिताओं में से एक है, जो महा संकट सहने वाले मध्य वर्ग का प्रतिनिधि भी है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- 'मुक्ति' शीर्षक कविता में कवि अरुण कमल ने एक पिता की संकट को अभिव्यक्ति किया है।
- रिटेरमेंट के पश्चात उस अध्यापक पिता को मालूम होता है कि उसका बेटा पढ़ाई में पीछे है।
- अवकाश प्राप्त अध्यापक दूसरे बच्चों को पढ़ाते वक्त अपने बच्चे को भूल गया।
- बेटे को पीटने एवं परिवार की उपेक्षा में उसे बड़ा दुःख होता है।
- एक मध्य वर्गीय परिवार के गृह नायक का दुःख-दर्द इस कविता को सजीव बना देता है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचय

अरुण कमल समकालीन हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। आप वर्तमान प्रगतिशील विचारधारा के वक्ता-कवि रहे हैं। समकालीन जीवन की संघर्ष, संकट एवं परिवर्तन आदि अरुण के काव्यों के विषय रहे हैं।

अरुण कमल का वास्तविक नाम अरुण कुमार है। अरुण कमल के नाम से आप जाने जाते हैं। उनका जन्म 15 फरवरी 1954 को बिहार के रोहतास जिले के

नासरीगंज में हुआ था। वे कई साल पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफ़ेसर रहे हैं। आप कवि होने के साथ-साथ आलोचक और अनुवादक भी हैं। किंतु कवि के रूप में उन्हें अच्छी ख्याति मिली है। अरुण कमल प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' के संपादक भी रहे हैं।

अरुण कमल

रचनाएँ और पुरस्कार

अरुण कमल का पहला काव्य ग्रंथ 'अपनी केवल धार है', जिसका प्रकाशन सन् 1980 में हुआ था। सन् 1989 में प्रकाशित अरुण कमल का दूसरा काव्य-संग्रह 'सबूत' अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। सन् 1996 में उन्होंने 'नए इलाके में' नाम से तीसरा काव्य-संग्रह प्रकाशित किया, जिसे भी साहित्य-प्रेमियों ने सहर्ष स्वीकार किया। नए इलाके में, मैं वो शंख महा शंख, अपनी केवल धार, सबूत, पुतली में संसार, योगफल आदि अरुण कमल के काव्य कृतियों में प्रमुख है। उनके आलोचना ग्रंथों में कविता और समय, गोल मेज आदि मुख्य है। कथोपकथन उनकी ख्याति प्राप्त आलोचना ग्रंथ है।

पुरस्कारः

सन् 1998 में 'नये इलाके में' नामक काव्य पर अरुण कमल को केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। इसके अलावा सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, शमशेर सम्मान, रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार आदि सम्मानों से भी आप सम्मानित हुए हैं।

कविता पाठः

मुक्ति

आज जब पढ़ते-पढ़ाते मैंने तुझे
मारा, मेरे बच्चे
तब क्यों भर गयीं मेरी आँखें
नम क्यों गये मेरे नाखून तक?
तुम रोए नहीं, तुम हिले भी नहीं
बैठे रहे चुपचाप पाँव पर पाँव धरे
और मैंने देखे तुम्हारे उभरे हुए
लम्बे साँवले पाँव
अब जब सोचता हूँ ठण्डे मन से
अब जब उतरी है बाढ़
देखता हूँ अपने ही अन्दर दुर्गन्ध और
पाँक से
भरी हुई गलियाँ
टूटे मकान, ढही भित्तियाँ
देखता हूँ अपना विनाश।
दोष मेरा ही था
मैंने कभी पूछा नहीं, कैसे हो तुम
जानता भी नहीं था क्या-क्या पढ़ते हो
तुम
और आज जब अचानक देखा मैंने तुम
कुछ भी नहीं जानते
मेरा लड़का कुछ भी नहीं जानता
तब।।।
सोचो मैं कितना दुःखी था
हृदय ने बाँटे थे धमनियों में जो रक्त
आज
वे ही रक्त घोंटते थे हृदय।
दोष लेकिन मेरा भी क्या था
मैं एक रिटायर्ड स्कूल मास्टर
जो सुबह से शाम तक घूमता है यहाँ से
वहाँ
इस-उसके बेटे-बेटियों को ट्यूशन पढ़ाता
बैठता कैसे थोड़ी भी देर खुद अपने बेटे के पास–
जब घर में निकलता, तुम सोए होते
जब लौटता, तुम सोए होते।
चार साल हो गए,
चार साल हो गए अवकाश मिले–
कितना अच्छा था देखना एक भरा हुआ
कमरा
सूर्यमुखी फूलों-सी सैकड़ों आँखें घूमती
मेरे साथ
मैं खिच्चा उंगलियों में खल्लियाँ
पकड़ाता – और आज मैं सेवा-मुक्त हूँ, आज़ाद,
क्या किया मैंने इस जीवन में

सयानी लड़कियाँ, बच्चे, कच्ची गृहस्थी
अभी भी ज़िन्दगी ढूँढ़ती है घुरी
अभी भी ज़िन्दगी ढूँढ़ती है मुक्ति
कहाँ अवकाश, कहाँ समाप्ति
अभी ही तो शुरू हुई ज़िन्दगी
अभी ही तो चरखे में डाली है पूनी।
क्यों उठ गए थे हाथ

आज क्यों उठे मेरे हाथ।

सारांशः

'मुक्ति' अरूण कमल की चर्चित कविता है। यह जीवन के यथार्थ पक्ष को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने वाली एक सशक्त, किंतु सरल कविता है। यह कवि के अपने व्यक्तिगत अनुभव कहने को रीति में लिखी हुई कविता है। इसमें मध्य वर्गीय जीवन जीने वाले लोगों की तकलीफ़े एक अवकाश प्राप्त अध्यापक के जीवन-संघर्ष द्वारा कवि अरूण कमल प्रस्तुत करते हैं। कवि अरूण कमल एक अविचारित घटना की सूचना दे कर पाठकों के मन में उत्सुकता जगाते हुए कविता शुरु करते हैं–

आज जब पढ़ते-पढ़ाते मैंने तुझे
मारा, मेरे बच्चे
तब क्यों भर गयीं मेरी आँखें
नम क्यों गये मेरे नाखून तक?

पिता अवकाश प्राप्त अध्यापक हैं। वे पहले एक प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाते थे। उन्होंने कई साल असंख्य विद्यार्थियों को अक्षर-ज्ञान प्रदान किया था। वे स्कूल अध्यापक वृत्ति से चार साल पहले अवकाश प्राप्त कर चुके थे। ये पिता आज अपने जीवन को निरर्थक समझते हैं क्योंकि आज जीवन में पहली बार उन्होंने अपने बेटे को मारा था।

अध्यापक वृत्ति से अवकाश प्राप्त उस कर्मठ पिता को लगता है कि उनके बच्चे के शिक्षा अधूरी है। इस पर उन्हें निराशा के साथ क्षोभ भी होता है। पिता आज बच्चे को पढ़ाते हुए पहले पहल मारते हैं। इस पर उनकी आँखें भर आती हैं। तब वह अपने आप से पूछते हैं कि मेरी आँखें क्यों भर आयीं?

पिता से मार खाकर भी बेटा नहीं रोता है। इतना ही नहीं, वह बिना हिले-डुले, पाँव पर पाँव रखकर लकड़ी के पुतले जैसा चुपचाप बैठा रहा। बेटे की आँखों से एक बूँद आँसू भी नहीं निकले। अनुमान है कि उसकी भीतर की स्थिति बाहर के समान निश्चित और शांत होगी। बेटे का इस तरह बैठना पिता को आश्चर्यचकित कर देता है। अब उसे अपराधी बेटा नहीं लगता है, पिता स्वयं अपने आप को अपराधी मानता है। अथवा एक दायित्वहीन पिता का बुरा चित्र उनके आगे प्रकट होता है। क्योंकि वे अब तक अपने बेटे के पढ़ायी पर दृष्टि नहीं डाल पाये। उन्हें लगता है कि उनका जीवन अधूरा और स्वार्थपरक है। जीवन की चार दीवारें उनके आगे एक-एक होकर गिरती जा रही हैं।

दोष लेकिन मेरा भी क्या था
मैं एक रिटायर्ड स्कूल मास्टर
जो सुबह से शाम तक घूमता है यहाँ से
वहाँ
इस-उसके बेटे-बेटियों को ट्यूशन पढ़ाता ।

नौकरी से अवकाश प्राप्त पिता ठंडे मन में समझते है कि उनका बच्चा निर्दोष है। सारे अपराध बच्चे के ऊपर डालना पाप है। क्योंकि वे एक कर्मठ अध्यापक होकर भी उन्होंने आज तक अपने बेटे के अध्ययन पर दृष्टि ही नहीं डाली। पिता अब तक कभी भी नहीं पूछा कि तुम कैसे हो, तुम्हारी पढ़ाई कैसी हो? बेटा क्या-क्या पढ़ता है या नहीं पढ़ता है, पिताजी होकर भी वे यह जानते भी नहीं।

पिता को बड़ा दुःख होता है। वह सोचता है कि दोष मेरा भी क्या था। आमदनी जुड़ाने की व्यग्रता में सुबह से शाम तक घूमने वाला एक आम आदमी ही था वह। स्कूल से लौटकर वह दूसरे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता था। ट्यूशन से छूटकर जब वह घर पर लौटता, तब बेटा सोया होता। सुबह बच्चे के उठने से पहले ही आमदनी जुटाने जाता था। आज सेवामुक्त पिताजी का एक भरा पूरा घर है–

और आज मैं सेवा-मुक्त हूँ, आज़ाद,
क्या किया मैंने इस जीवन में
सयानी लड़कियाँ, बच्चे, कच्ची गृहस्थी
अभी भी ज़िन्दगी ढूँढ़ती है घुरी
अभी भी ज़िन्दगी ढूँढ़ती है मुक्ति।

जीवन के सायंकाल में पिता समझते हैं कि अब तक

परिवार के आवश्यकता के लिए कुछ भी नहीं किया है। अपना पूरा ध्यान धनार्जन पर सीमित रहा। असल में मैंने इस जीवन में किया ही क्या है? घर पर सयानी लड़कियाँ और बच्चे है। अपनी कच्ची गृहस्थी है। अब जीवन अस्त होने वाला है। इस लंबे जीवन में स्वयं जीना भूल गया है। वे कहते है कि उन्हें आज़ादी मिली है, मगर कष्ट-संकटों से नहीं। अथवा यों कहिए कि जीवन में दुःख-कष्टों का अंत नहीं होता है।

काव्य पदों की शब्दावलीः

'नम क्यों गये मेरे नाखून तक'- प्रयोग भारी दुःख-कष्ट को व्यक्त करने के लिए किया है। 'बैठे रहे चुपचाप पाँव पर पाँव धरे'- द्वारा कवि शांत होकर आराम से बैठने की ओर संकेत करते हैं। जीवन के भड़क चित्रित करने के लिए– 'जो सुबह से शाम तक घूमता है यहाँ से वहाँ'- का प्रयोग किया है। कवि व्यक्त करना चाहते है कि जीवन यहाँ से वहाँ तक का सफ़र है। 'सूर्यमुखी फूलों-सी'- चित्रण से सूरजमुखी फूल की आशंका और आकांक्षा की ओर पाठकों के ध्यान खींच लेते हैं। सूरजमुखी सूर्य की प्रतीक्षा में तल्लीन रहती है।

मनुष्य जीवन की विडंबनाएँ इस कविता का विषय हैं। ललित भाषा और आकर्षक शैली इस कविता की विशेषता है।

शब्दार्थः

नम	=	गीला, भीगा हुआ
नाखून	=	नख
चुपचाप	=	बिना कुछ कहे, निशब्द
पाँव	=	पैर
उभरे	=	निकलना, प्रकट होना
साँवले	=	मैला, धुएँ से काले
बाढ़	=	बढ़ने की क्रिया, वृद्धि
गलियाँ	=	बस्ती, मुहल्ला
ढही	=	एकाएक गिरना, हिम्मत हारना
अचानक	=	सहसा, अकस्मात
बाँटे	=	भाग, हिस्सा
घोंटते	=	गति देकर एक में मिलाना
भित्तियाँ	=	दीवारें
खुद	=	आप, स्वयं
सूर्यमुखी	=	सूरजमुखी, सूर्यकान्त
खिच्चा	=	आबादी, भीड़भाड़
सयानी	=	अनुभवी तथा बुद्धिमान स्त्री
कच्ची	=	कच्चा, अपरिपुष्ट
गृहस्थी	=	कुटुंब, परिवार
ज़िन्दगी	=	जीवन, जीवन काल
ढूँढ़ती	=	खोज करना
पाँक	=	कीचड़
पूनी	=	धुनी हुई कपास जिससे सूत काता जाता है।

रूपक भाषाः

अरुण कमल की कविताओं में नए बिंब-विधान देखने को मिलते हैं। आज मनुष्य जीवन में हर कहीं एक उदासीनता छायी हुई है। इस उदासीनता को पाठकों को समझाने के लिए कवि कहते है –

तुम रोए नहीं, तुम हिले भी नहीं
बैठे रहे चुपचाप पाँव पर पाँव धरे

कवि यहाँ लड़कों और नौजवानों में दिखने वाले निष्क्रियता का जड़-सा भाव आँकते हैं। आजकल अधिकर लोग ऐसे ही हैं, जो बाहर से शांत दिखायी पड़ते हैं, लेकिन भीतर कलुषित व अशांत होते हैं। आज लड़कों और नौजवानों में एक प्रकार का निरुत्साह व्याप्त है।

और आज मैं सेवा-मुक्त हूँ, आज़ाद,

क्या किया मैंने इस जीवन में – जैसे संदर्भों में कवि वर्तमान बेमेल जीवन का दयनीय रूप दिखाते हैं। लोग नौकरी से सेवा मुक्त होते समय अवश्य सोचते है कि क्या किया मैंने इस जीवन में? थोड़ी देर के सोच-विचार के बाद उन्हें उत्तर मिलता है कि इस जन्म में जो करना था, वह तो किया हो नहीं। जब जीवन समापन की ओर है तब अनिवार्य बातें पूरा करने की समय भी नहीं मिलता है। ऐसे स्थिति में हर आदमी ज़रूरी और मनचाहे आग्रह सफल किये बिना ही चल जाते हैं।

छंद / अलंकारः

'सूर्यमुखी फूलों-सी सैकड़ों आँखें'- में कवि ने उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

अवकाश प्राप्त अध्यापक सोचते है कि मैं सेवा-मुक्त हूँ। आज मुझे पूरी आज़ादी मिली है। जीवन की लंबी अवधि के पश्चात मिली हुई इस आज़ादी से क्या फायदा? वह सोचता है कि मैंने इस जीवन में क्या किया? सयानी लड़कियाँ, बच्चे, कच्ची गृहस्थी। सब सूर्यमुखी फूलों-सी मुझे देख रहे हैं। यहाँ उस अध्यापक के मन में ही नहीं, हमारे मन में भी यह सवाल उठते है कि इस जीवन में मैंने क्या किया?

वस्तुताः 'मुक्ति' के पिता के सामने जो समस्या है वही आजकल के मध्य वर्गीय परिवार के अधिकतर गृह नायकों की भी है। मध्य वर्गीय परिवार के अधिकांश गृह नायकों को आमदनी जुटाने को बाहर जाना पड़ता है। वे ज़्यादा समय घर पर नहीं रहते, बाहर बिताते हैं। जिससे घर के अनिवार्य बातों पर ध्यान देने का समय नहीं मिलता है। परिणाम स्वरूप पारिवारिक जीवन के ताल-मेल टूट जाते हैं, घर के माहौल में संकीर्णता पैदा होती है। जिसमें उलझकर वे खिन्न हो जाते हैं। ऐसे हज़ारों-लाखों लोगों का विलाप इस कविता में गूँजता है।

Critical Overview / अवलोकन

अरुण कमल की कविता समस्त मानवों की यथार्थ स्थिति की कविता है। 'मुक्ति' शीर्षक कविता में कवि ने मध्यवर्गीय परिवार के विडंबनाओं का हृदय स्पर्शी चित्रण किया है। एक पिता की संवेदना को अभिव्यक्त करने वाली यह कविता पिता-पुत्र संबंध को भी रेखांकित करती है।

कविता का मुख्य वक्ता चार साल पहले नौकरी से अवकाश पा चुका एक अध्यापक है। कई साल अध्यापक वृत्ति करने पर भी उसके पास जीने के लिए आमदनी नहीं है। मध्यवर्गीय परिवारों में यह देखने को मिलता है कि पर्याप्त आमदनी के बिना वे उच्च वर्गीय जीवन जीने की कोशिश करते हैं। अंत में पराजित हो कर निराश हो जाते हैं।

अवकाश प्राप्त अध्यापक दूसरे बच्चों को पढ़ाने-सिखाने के लिए इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। इसलिए उसे अपने बच्चे पर ध्यान देने का समय ही नहीं होता है। अर्थाभाव हरेक की समस्या है। ज़्यादा से ज़्यादा कमाने की लालसा मनुष्य की जन्मजात विशेषता है।

उपरोक्त कविता के पिताजी (अवकाश प्राप्त अध्यापक) हताश हैं। क्योंकि घर-परिवार की सारी बातें उनके कंधों पर हैं। वास्तव में घर के सारे काम और दायित्व सभी सदस्यों को मिल-जुलकर करने चाहिए। विवेच्य कविता में अपराधी कौन है- पिता है या बच्चे? दोनों के अपने-अपने न्याय हैं। दोनों अपनी-अपनी जगह पर सही हैं। इसलिए दोनों को अपराधी कहना अनुचित है। किंतु यह सच है कि दोनों अपने-अपने दायित्व नहीं समझ रहे हैं या जानबूझकर भूल रहे हैं। ऐसी स्थिति में परिवार की ख़ुशियाँ गुम हो जाती हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- अरूण कमल को आज के ज़माने का सजग कवि कहा जाता है।
- हर व्यक्ति द्वारा अनुभूत चिर - परिचित घटनाएँ उनकी कविता में विषय के रूप में उभर कर आती हैं।
- पर्यावरण-प्रदूषण को उन्होंने अपनी कृतियों में चर्चा का विषय बनाया है उतना अन्य समकालीन कवियों ने नहीं किया।
- कवि अरूण कमल समाज की गतिविधियों में जितनी अंतर्दृष्टि डालते हैं उतनी अन्यत्र दुर्लभ है।
- अरूण कमल सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, भौगोलिक, शैक्षिक तथा पारिवारिक आदि सभी विषयों पर जागरूक कलाकार हैं।
- मुक्तिबोध, धूमिल, केदार नाथ सिंह की परंपरा का पालन करने वाले ये कवि ग्राम और ग्रामीणों को पसंद करते हैं।
- वर्तमान मनुष्य जो चाहता है वह अरूण कमल अपनी रचना द्वारा उन्हें देते हैं।
- अरूण कमल की कविता में वर्तमानकालिक समाज प्रतिबिम्बित होता है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मुक्ति शीर्षक कविता के रचयिता कौन हैं?
2. अरूण कमल की समकालीन प्रतिनिधि कविता कौन-सी है?
3. जीवन के यथार्थ पक्ष को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने वाली एक सशक्त कविता कौन-सी है?
4. निर्बलों के कवि माने जाते हैं। किसे?
5. वे दूसरों को नहीं, ख़ुद को अपराधी समझते हैं। कौन?
6. अरूण कमल का जन्म कहाँ हुआ?
7. अरूण कमल का वास्तविक नाम क्या है?
8. सूर्यमुखी फूलों-सी-चित्रण से किसकी आशा और आकांक्षा बताते हैं?

Answers / उत्तर

1. अरूण कमल
2. मुक्ति
3. मुक्ति
4. अरूण कमल
5. पिता
6. बिहार के रोहितास जिले में
7. अरूण कुमार
8. सूरजमुखी फूल

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. समकालीन सामाजिक जीवन की गतिविधियों पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
2. समकालीन कविता: युवा-पीढ़ी का विद्रोह है- इस मत से आप कहाँ तक सहमत है? अपने विचारों को प्रकट कीजिए।
3. 'मुक्ति' के पिता के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हुई है- यह समस्या समझाइए।
4. 'मुक्ति' कविता में चित्रित पिता की ग्लानि और विवशता अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. समकालीन कविता की कथ्य चेतना – संजय जैन।
2. समकालीन कविता – वीरेन्द्र सिंह।
3. कविता का जन्म – कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह।
4. नयी कविता में नाट्य काव्य – हरिश्चन्द्र वर्मा।
5. नये इलाके में – अरुण कमल।
6. अरुण कमल – वैभव सिंह।
7. नया पथ – सुधीर रंजन सिंह।
8. अभी, बिलकुल अभी – नन्दकिशोर नवल।
9. अपनी केवल धार – अरुण कमल।
10. पुतली में संसार – अरुण कमल।

इकाई 3

पत्थर की बेंच

चन्दकांत देवताले

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर चंद्रकांत देवताले के बारे में समझता है
- समकालीन समय की सभी प्रवृत्तियों से परिचित होता है
- देवताले जी की प्रमुख कृतियाँ समझता है
- 'पत्थर की बेंच' कविता की जानकारी प्राप्त करता है
- सार्वजनिक स्थलों के संरक्षण करने की आवश्यकता समझता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर चंद्रकांत देवताले उच्च शिक्षा में अध्यापन कार्य से संबद्ध रहे हैं। देवताले जी की कविता में समय और सन्दर्भ के साथ ताल्लुकात रखने वाली सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रवृत्तियाँ समा गई हैं। उत्तर आधुनिकता को भारतीय साहित्यिक सिद्धांत के रूप में न मानने वालों को भी यह स्वीकार करना पड़ता है कि देवताले जी की कविता में समकालीन समय की सभी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से आप उत्तरआधुनिकता को मानें या न मानें, ये कविताएँ आधुनिक जागरण के परवर्ती विकास के रूप में रूपायित सामाजिक सांस्कृतिक आयामों को अभिहित करने वाली हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर चन्द्रकांत देवताले अपनी कविता की सघन बुनावट और उसमें निहित राजनीतिक संवेदना के लिए जाने जाते थे।
- 'पत्थर की बेंच' देवताले की चर्चित कविता है।
- उनकी कविता में समय के सरोकार हैं, समाज के सरोकार हैं, आधुनिकता के आगामी वर्षों की सभी सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ हैं।
- 'पत्थर की बेंच' समकालीन सामाजिक समस्याओं को सूचित करने वाली एक कविता है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचयः

चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवंबर, 1936, जौलखेड़ा, बैतूल, मध्य प्रदेश में और मृत्यु 14 अगस्त, 2017 में हुई थी। उन्होंने इंदौर से एम.ए. तथा सागर विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि ली। वह देश की 24 भाषाओं में विशेष साहित्यिक योगदान के लिए प्रख्यात साहित्यकारों

में शामिल थे। चंद्रकांत अपनी कविता की सघन बुनावट और उसमें निहित राजनीतिक संवेदना के लिए जाने जाते थे। वे 'दुनिया का सबसे गरीब आदमी' से लेकर 'बुद्ध के देश में बुश' तक पर कविताएँ लिखते थे। यह सार्वदेशिकता उनकी कविताएं भी बयान करती हैं। देवताले काफी पढ़े लिखे इंसान थे। उन्होंने कवि गजानन माधव मुक्तिबोध पर शोध की थी और इंदौर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। उन्हें उनके कविता संग्रह 'पत्थर फेंक रहा हूँ' केलिए 2012 को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

चंद्रकांत देवताले

प्रमुख कृतियाँ हैं- हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून से, लकड़बग्घा हँस रहा है, रोशनी के मैदान की तरफ़, भूखंड तप रहा है, हर चीज़ आग में बताई गई थी, पत्थर की बैंच, इतनी पत्थर रोशनी, उजाड़ में संग्रहालय आदि। उनकी कविता में समय के सरोकार हैं, समाज के सरोकार हैं, आधुनिकता के आगामी वर्षो की सभी सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ हैं।

देवताले जी को उनकी रचनाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें प्रमुख हैं- माखन लाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान। उनकी कविताओं के अनुवाद प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में और कई विदेशी भाषाओं में हुए हैं। देवताले की कविताओं की जड़ें गाँव-कस्बों और निम्न मध्यवर्ग के जीवन में हैं। उसमें मानव जीवन अपनी विविधता और विडंबनाओं के साथ उपस्थित हुआ है। कवि में जहाँ व्यवस्था की कुरूपता के ख़िलाफ़ गुस्सा है, वहीं मानवीय प्रेम-भाव भी है। वह अपनी बात सीधे और मारक ढंग से कहते हैं। कविता की भाषा में अत्यंत पारदर्शिता और एक विरल संगीतात्मकता दिखाई देती है।

कविता पाठः

पत्थर की बैंच

पत्थर की बैंच
जिस पर रोता हुआ बच्चा
बिस्कुट कुतरते चुप हो रहा है
जिस पर एक थका युवक
अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है

जिस पर हाथों से आंखे ढांप
एक रिटायर्ड बूढ़ा भर दोपहरी सो रहा है
जिस पर वे दोनों
जिन्दगी के सपने बुन रहे हैं
पत्थर की बैंच
जिस पर अंकित है आंसू, थकान
विश्राम और प्रेम की स्मृतियां
इस पत्थर की बैंच के लिए भी
शुरु हो सकता है किसी दिन
हत्याओं का सिलसिला
इसे उखाड़ कर ले जाया
अथवा तोड़ा भी जा सकता है
पता नहीं सबसे पहले कौन आसीन हुआ होगा
इस पत्थर की बैंच पर!

सारांशः

'पत्थर की बैंच' समकालीन कविता है। इसके रचयिता सुप्रसिद्ध समकालीन कवि चद्रकांत देवताले हैं। कवि ने देखा कि पत्थर की बैंच के इतिहास में आँसू, थकान, विश्राम, प्रेम जैसे अनेक मानुषिक विकार अंकित हैं। लेकिन यह सब जाननेवाला कवि आशंकित हो जाता है। वह इसलिए है कि किसी दिन इस पत्थर की बैंच के लिए हत्याओं का सिलसिला शुरु हो सकता है। उसे उखाड़ कर ले जाया सकता है। अथवा तोड़ा भी जा सकता है। कवि को यह नहीं मालूम है कि सबसे पहले इस पत्थर की बैंच पर कौन आसीन हुआ होगा? अर्थात कवि डरता है कि इस पत्थर की बैंच के बारे में अधिकार स्थापित करने

SGOU

केलिए कब लड़ाई शुरु हो जायेगी।

कवितांश प्रतीकात्मक है। पत्थर की बैंच सार्वजनिक स्थल का प्रतीक है। उसपर बैठे चार प्रकार के लोग साधारण आमजनता का प्रतीक हैं। पत्थर की बैंच जैसे सार्वजनिक स्थलों के संरक्षण करने की आवश्यकता की सूचना कवितांश में निहित है। सार्वजनिक स्थलों का संरक्षण करना आवश्यक है, क्योंकि ऐसे स्थल साधारण लोगों की अनियंत्रित संवेदनाओं से भरे हुए हैं। जाति, धर्म, राजनीति, स्वार्थता आदि के नाम पर और उनकी सस्ती प्रतिस्पर्धा के लिए सार्वजनिक स्थलों का सत्यनाश नहीं करना चाहिए।

पत्थर की बेंच पर रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते चुप हो जाता है। थका युवक कुचले हुए सपनों को सहला रहा है। रिटायर्ड बूढ़ा हाथों से आँखें ढाँप सो रहा है। प्रेमी -प्रेमिका ज़िन्दगी के सपने बुन रहे हैं।

'पत्थर की बेंच' प्रसिद्ध कवि चन्द्रकान्त देवताले के कविता है। वर्तमान हिन्दी के वरिष्ठ कवि देवताले प्रस्तुत कविता में बताना चाहते हैं कि मनुष्य हर क्षण सार्वजनिक जगहों का नाश कर रहा है।

पार्क में जो पत्थर की बेंच है, उस पर दिन-रात कई तरह के आदमी आकर बैठते हैं। उधर एक बच्चा रो रहा है और बिस्कुट कुतरते चुप हो जाता है। पार्क में बैठा थका युवक अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है। दुपहर की धूप है, इस से बचकर, एक रिटायर्ड आदमी अपने हाथों से आँखें ढाँपकर सो रहा है । तब इधर प्रेमी-प्रेमिका अपनी ज़िन्दगी के सपने बुन रहे हैं जो दूसरों से अलग मात्र अपनी दुनिया में विचरते हैं। इस पत्थर की बेंच पर अनेकों की थकान, आँसू, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ अंकित है।

जिस पर हाथों से आंखे ढांप
एक रिटायर्ड बूढ़ा भर दोपहरी सो रहा है
जिस पर वे दोनों
जिन्दगी के सपने बुन रहे हैं
पत्थर की बैंच
जिस पर अंकित है आंसू, थकान
विश्राम और प्रेम की स्मृतियां
इस पत्थर की बैंच के लिए भी
शुरु हो सकता है किसी दिन
हत्याओं का सिलसिला
इसे उखाड़ कर ले जाया
अथवा तोड़ा भी जा सकता है
पता नहीं सबसे पहले कौन आसीन हुआ होगा
इस पत्थर की बैंच पर !

पत्थर की बैंच किसी की निजी सामग्री नहीं है। बैंच पार्क में स्थित है। कोई उस पर जाकर बैठ सकता है। बच्चा, युवक और बूढा तीनों अपने अपने विकट समय में हैं। विश्राम करने के लिए तीनों पार्क की बैंच का आश्रय लेते हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि देवताले अपनी आशंका को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस पत्थर की बेंच को भी किसी दिन मनुष्य नष्ट कर डालेगा। उसे उखाड़ कर ले जायेगा अथवा तोड़ डालेगा। यह इतनी पुरानी बेंच है कि उसमें कौन-कौन, कितनी बार और पहली बार कौन बैठा होगा, यह भी हमें पता नहीं।

प्रस्तुत कविता प्रतीकात्मक है। इसमें वर्णित पत्थर की बेंच सार्वजनिक जगहों का प्रतीक अवश्य है। सार्वजनिक जगह सामाजिकता का संगम स्थान है। इसलिए इसका संरक्षण करना सभी का दायित्व है।

काव्य-भाषा और शिल्प

काव्य-भाषा और शिल्प पर भी जाएँ तो चन्द्रकान्त देवताले की ये कविताएँ एक अत्यन्त सुखद विकास का प्रमाण हैं। अपनी अन्तरंग रचनाओं में कवि की भाषा अब अधिक से अधिक पारदर्शी हुई है और उसमें साठ और सत्तर के दशक की सघनता और गठीलापन समय और अनुभव के प्रवाह से मँजकर एक विरल संगीतात्मकता तक पहुँचा है। चन्द्रकान्त देवताले अपनी समष्टिपरक कविताओं में हमेशा सीधे सम्बोधन की भाषा के क़ायल रहे हैं और वैसी रचनाओं में उनके शब्द और भी मारक तथा लक्ष्य भेधी हुए हैं। उनके कुछ बिम्ब और कूटशब्द जैसे पत्थर, चट्टान, चाकू, समुद्र आदि इन कविताओं में भी लौटे हैं लेकिन ज़्यादा निखर कर। 'लैब्रेडोर' कविता शृंखला में चन्द्रकान्त देवताले ने सजगता और संघर्ष का एक सर्वथा नया तथा सार्वजनिक माध्यम चुना है जबकि

'गाँव तो भूल नहीं सकता था मेरी हथेली पर' तथा 'नागझिरी' जैसी कविताओं में वे अपने अनुभव और पाठक के बीच किसी भी अलंकरण को नहीं आने देते। ये लम्बी कविताएँ हैं और स्मरण दिलाती हैं कि 'भूखंड तप रहा है' जैसी रचना का यह सृजेता हिन्दी के उन बहुत कम कवियों में से है जिनसे लम्बी कविता भी सध पाती है।

हिन्दी कविता के इन दिनों में जब दुर्भाग्यवश अधिकांश प्रतिभाशाली युवा और अधेड़ कवि भी बहुत जल्दी अपनी सम्भावनाओं के सीमान्त पर पहुँच रहे लगते हैं, चन्द्रकान्त देवताले की ये कविताएँ अपने प्रतिबद्ध ग़ुस्से की बार-बार धधकती उपस्थिति, गहरी मानवीयता और मर्मस्पर्शिता तथा निजी रिश्तों, संकटों, चिन्ताओं की स्वीकारोक्तियों की सदानीरा वैविध्यपूर्ण जटिलता से उन पर लौटने को बाध्य करती हैं। 'आग' चन्द्रकान्त के प्रिय बिम्बों में से है और उनकी कविता ठीक आग की तरह हिन्दी की अधिकांश कविता और आलोचना को राख कर देती है और अपनी जाज्वल्यमान उपस्थिति स्वीकारने पर बाध्य करती है। जिन कवियों को समझे बिना बीसवीं सदी की हिन्दी कविता का कोई भी आकलन बौद्धिक दारिद्र्य से विकलांग माना जाएगा, चन्द्रकान्त देवताले उनमें से एक रोमांचक, अमिट हस्ताक्षर हैं।

Critical Overview / अवलोकन

'पत्थर की बैंच' वरिष्ठ कवि चंद्रकांत देवताले की चर्चित कविता है। आप हैं। देवताले की कविता उनके लंबे अनुभव और चिंतन की उपज है। यहाँ चिंतन की ठोस जमीन तो है लेकिन वह विषय से इतना घुल-मिल गई है कि अंत में यहां एक मजबूत कविता की शक्ल में ही रह जाती है। देवताले अपनी कविताओं में निरंतर राजनीतिक सजगता और सामाजिक संदर्भों के अछूते विषय उठाते रहे हैं। बदले हुए समाज, बदले हुए समय में बदली हुई समस्याओं और विषयों पर अलग-अलग किस्म की कविताएँ उनके यहाँ हैं।

सार्वजनिक जगहों के नाश पर कवि आशंकित है। कवि की आशंका यह है कि पत्थर की बेंच के लिए भी किसी दिन हत्याओं का सिलसिला शुरू हो सकता है। अपनी स्वार्थता के लिए कोई भी, किसी भी समय ऐसे सार्वजनिक जगहों का सर्वनाश कर सकता है। कवि का डर यह है कि इन जगहों के नाश होने पर साधारण जनता अपनी संवेदनाओं को कैसे शांत कर सकेगी। 'पत्थर की बेंच' एक समकालीन कविता है जिसमें सार्वजनिक जगहों के नाश पर आशंकित कवि को हम देख सकते हैं।

कवितांश गद्यकविता की शैली में है। भाषा सरल और प्रवाहमय है। कवितांश द्वारा कवि अपने विचारों को हमारे सम्मुख पहुँचाने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- समकालीन कविता के क्षेत्र में चन्द्रकान्त देवताले अत्यंत ख्याति प्राप्त कवि हैं।
- 'पत्थर की बेंच' समकालीन सामाजिक समस्याओं को सूचित करने वाली एक कविता है।
- देवताले की कविता में समय और सन्दर्भ के साथ ताल्लुकात रखने वाली सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रवृत्तियाँ समा गई हैं।
- देवताले जी की कविता में समकालीन समय की सभी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं।
- वह अपनी बात सीधे और मारक ढंग से कहते हैं।
- कविता की भाषा में अत्यंत पारदर्शिता और एक विरल संगीतात्मकता दिखाई देती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘पत्थर की बेंच’ के कवि कौन हैं?
2. बच्चा क्या कर रहा है?
3. रिटायर्ड बूढ़ा क्या कर रहा है?
4. प्रेमी- प्रेमिका क्या कर रहे हैं?
5. पत्थर की बेंच किसका प्रतीक है?
6. हाथों से आँखें ढाँप भरी दोपहरी सो रहा है। कौन?
7. एक थका युवक क्या कर रहा है?
8. ‘पत्थर की बेंच’ पर क्या-क्या अंकित हैं?

Answers / उत्तर

1. चन्द्रकान्त देवताले
2. रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते चुप हो जाता है।
3. हाथों से आँखें ढाँप सो रहा है।
4. ज़िन्दगी के सपने बुन रहा है।
5. सार्वजनिक जगहों का
6. रिटायर्ड बूढ़ा
7. अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है।
8. आँसू, थकान, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ।

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. कवि देवताले ‘पत्थर की बेंच’ में किसका संदेश देता है?
2. ‘पत्थर की बेंच’ कविता का सारांश लिखिए।
3. ‘पत्थर की बेंच’ कविता में चित्रित प्रतीकों पर चर्चा कीजिये।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक कविता – शिवकुमार मिश्र।
2. समकालीन कविता - वीरेन्द्र सिंह।
3. नया पथ - सुधीर रंजन सिंह।
4. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी।

इकाई 4

बेजगह

अनामिका

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन समय की सर्वाधिक ख्याति-प्राप्त कवयित्री अनामिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय मिलता है
- अनामिका के आदर्श और दृष्टिकोण द्वारा समकालीन भारतीय समाज में स्त्री की यथार्थ स्थिति का परिचय प्राप्त होता है
- इक्कीसवीं शती की भारतीय स्त्री के वास्तविक रूप का परिचय मिलता है
- अनामिका की चर्चित एवं प्रतिनिधि कविता 'बेजगह' पर विचार-विमर्श कर अच्छाई-बुराई की विवेचना करता है
- स्त्री को बेजगह बनाने वाली पितृसत्तात्मक प्रणाली की बुराई से परिचित होता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

अनामिका हिन्दी के समान अंग्रेजी साहित्य में भी प्रभुत्व रखने वाली रचनाकार हैं। वे सही अर्थ में नारी पक्षपाती लेखिका हैं। लेखन-कार्य के साथ-साथ अनामिका देश-देशांतर के साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों में से भी जुड़ी रहती हैं। अध्यापिका, कवयित्री, उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक, निबंधकार, पत्रकार तथा अनुवादक आदि विभिन्न रूप में अनामिका ख्याति पा चुकी हैं।

'बेजगह' समकालीन कवयित्री अनामिका के सशक्त स्त्री पक्ष की कविता है। यह उनकी 'खुरदरी हथेलियाँ' नामक काव्य-संग्रह में संकलित है। हिन्दी में स्त्री-पक्ष कविता का आरंभ वर्तमान काल में हुआ है। नारीवादी कविता का आधार स्त्री-पुरुष असमानता बना हुआ है। वैश्वीकरण के काल में लिखी गई अनामिका की कविताएँ हिन्दी में स्त्री पक्ष कविता का प्रतिनिधित्व करती हैं। अनामिका व्यक्त करना चाहती हैं कि स्त्री, पुरुष की उपभोग वस्तु नहीं है, उन्हें पुरुष के बराबर जगह है। किंतु पुरुष वर्ग उन्हें बेजगह कर धक्का देता जाता है। नारी का अस्तित्व निर्धारित करने वाली कविता 'बेजगह' समकालीन स्त्री पक्ष रचना का यथार्थ चेहरा दिखा देती है।

अनामिका के रचनाओं की मुख्य विशेषता उसमें अंतर्लीन संवेदना है। उनकी कविताओं में जितनी संवेदना मिलती है उतनी वर्तमान साहित्य में अन्यत्र किसी में दुर्लभ है। अनामिका की कविता में स्त्री का अस्तित्व और वास्तविक रूप विविध रूप-धारण कर पाठकों के सामने उपस्थित होता है। जिसमें बच्ची से लेकर बुज़ुर्ग महिला भी शामिल है।

स्त्री पक्ष की चिंता अनामिका की कविता की पहचान है। उस धरातल पर खड़ी होकर वह अपनी भावनाओं को चित्रित करती हैं। यह सच है कि समाज में स्त्री की एक अलग स्थान होता है। यह स्थान पुरुष से भिन्न और बहुत दूर तक होता है। पुरुष को जो कुछ उपलब्ध है वह स्त्री को अनुपलब्ध है। जब पुरुष सभी प्रकार के सुख-सुविधाओं का वक्ता और भोक्ता रहता है तब स्त्री को उन सबसे वंचित रहना पड़ता है। पुरुष के सामने सब रास्ते खुले हैं, परंतु स्त्री के आगे सब बंद। सभी अवसरों से स्त्री को दूर रखा जाता है। वह अधिकांशतः मनचाही जगह से वंचित रह जाती है। अनामिका स्त्री की उस छूटी हुई जगह को निर्धारित कर प्रस्तुत करने में सजीव, सक्रिय और सबल रहती हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- अनामिका की कविताएँस्त्री पीड़ा, स्त्री-पुरुष भेदभाव, स्त्री की मानसिक व्यथा ही उजागर नहीं करती है बल्कि उसका समाधान भी करती हैं।
- कविता बेजगह इससे अलग नहीं है।
- इसमें चर्चित पितृ सत्तात्मक पारिवारिक रीति पठनीय है।
- स्त्री, पुरुष की उपभोग वस्तु नहीं है, उन्हें पुरुष के बराबर स्थान है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचय

अनामिका समकालीन हिन्दी कविता के सर्वाधिक चर्चित एवं मशहूर कवियों में एक है। अनामिका शब्द का अर्थ गुणी या सीमाओं एक नाम द्वारा लगाये गये निशुल्क होता है।

अनामिका

समकालीन साहित्य जगत में अपना नाम चरितार्थ करने वाली मेधा कवयित्री अनामिका का जन्म बिहार के मुजफ़्फ़रपुर में 17 अगस्त, 1961 को हुआ था। अनामिका के बारे में वरिष्ठ आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने सच ही कहा है- स्त्री-मुक्ति के नए आयाम यहाँ खुलते हैं। अनामिका के यहाँ स्त्री-मुक्ति मानव-मुक्ति का उत्स है।

हिन्दी समकालीन साहित्य में मज़बूत नाम है अनामिका।

अनामिका की लेखनी समकालीन संदर्भो की सारी उथल-पुथलों को लिपिबद्ध करने में सक्षम है। वे खुली आँखों से समाज को देखती हैं और उसका समग्र चित्रण प्रस्तुत करती हैं। यह विशेष ध्यान देने का बात है कि अनामिका की संपूर्ण रचना की नींव नारीवाद है। वे सदा समय उसके पक्षधर हो कर चलती हैं।

कविता पाठ

बेजगह

"अपनी जगह से गिर कर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून" –
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
    और मारे डर के जम जाती थीं
    हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।
    जगह ? जगह क्या होती है ?
    यह, वैसे, जान लिया था हमने
    अपनी पहली कक्षा में ही।
याद था हमें एक-एक क्षण
आरंभिक पाठों का–
"राम, पाठशाला जा !

राधा, खाना पका !
राम, आ बताशा खा !
राधा, झाड़ू लगा !
भैया अब सोएगा,
जाकर बिस्तर बिछा !
अहा, नया घर है !
राम, देख यह तेरा कमरा है !
'और मेरा?'
'ओ पगली,
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।'
जिनका कोई घर नहीं होता–
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?
कौन-सी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर
औरत हो जाती है।
कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फँस कर बाहर आए केशों-सी
एकदम से बुहार दी जाने वाली?
घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग-बाग,
कुछ प्रश्न पीछे पड़े थे, वे भी छूटे !
छूटती गई जगहें
लेकिन, कभी कभी तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पड़े होने का एहसास नहीं हुआ !
परंपरा से छूट कर बस यह लगता है–
किसी बड़े क्लासिक से
पासकोर्स बी .ए .के प्रश्नपत्र पर छिटकी
छोटी-सी पंक्ति हूँ–
चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग।
सारे संदर्भो के पार
मुश्किल से उड़ कर पहुँची हूँ
ऐसी ही समझी-पढ़ी जाऊँ
जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अंभग !

सारांश

अनामिका की 'बेजगह' शीर्षक कविता नयी कविता के ढाँचे में रची गयी कविता है। प्रस्तुत कविता उनकी 'खुरदरी हथेलियाँ' नामक काव्य-संकलन में संकलित है। यह स्त्री के अस्तित्व को रेखांकित करने वाली, नारी पक्षधर कविता है। कवयित्री इस कविता के द्वारा परिवार एवं समाज में स्त्री के अस्तित्व को व्यक्त करने का प्रयास करती हैं। कवयित्री यह समस्या उपस्थित करती हैं कि स्त्री के अस्तित्व बड़ा है या परंपरा के नाम पर चलने वाली नारी विरोधी भावना।

वेद-वेदान्त से लेकर अद्यतन तक कही भी हम दृष्टि पात करें, स्त्री के प्रति हर कही दुराग्रह नजर आएगा। लोग कहते हैं कि हम बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। यानी हर पल हर घड़ी हमारे आस-पास कुछ न कुछ बदल रहा है लेकिन एक चीज है, जो कभी नहीं बदली और शायद न ही बदलेगी वह है स्त्री को सिर्फ एक देह मात्र समझने की मानसिकता। सदियों से संघर्षरत नारी समाज की एक इकाई के रूप में अपनी पहचान की निर्मिति के लिए स्त्री, जिस अदम्य जिजीविषा एवं प्रबल इच्छा शक्ति का परिचय आज दे रही है, वह उसकी बौद्धिक जागृति की ही परिचायक है जो उसने धर्म, आस्था, परम्परा, मूल्य एवं व्यवस्था के प्रति प्रकट किया है। वर्तमान समय में नारी पुरूष वर्ग से प्रतिस्पर्धा न करके केवल उसके समकक्ष एक मनुष्य होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकारों की माँग कर रही है। वह पुरूष के अस्तित्व को न नकार कर एक सह नागरिक की तरह अपनी पहचान स्थापित करना चाह रही है। इसके लिए उसका सारा जोर अब तक प्रयुक्त मिथकों का अस्वीकार और स्वतंत्र इंसान के रूप में अपनी स्वीकृति का है। महादेवी वर्मा के शब्दों में, 'संसार के मानव समुदाय में वही व्यक्ति स्थान और सम्मान पा सकता है, वही जीवित कहा जा सकता है, जिसके हृदय और मष्तिष्क ने समुचित विकास पाया हो और जो अपने व्यक्तित्व द्वारा मनुष्य समाज से रागात्मक के अतिरिक्त बौद्धिक सम्बद्ध भी स्थापित कर सकने में समर्थ हो। एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की सबको आवश्यकता है। कारण, बिना इसके न मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति और संकल्प को अपना कह सकता है, और न अपने किसी कार्य को न्याय-अन्याय की तुला पर तौल सकता है।

अनामिका कहती हैं कि स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। जैसे बाल और नाखून अपनी जगह से कटने पर कहीं के नहीं रहते, वैसे स्त्री की भी कोई जगह नहीं है। बचपन से उसे खाना पकाना, झाड़ू लगाना और अपने भाइयों के सेवा करने का दायित्व सौंपा जाता है। पिता के घर में लड़की का दर्जा दूसरा है। उनमें बार-बार यह विश्वास

पैदा करा जाता है कि पिता के घर में उसे कोई जगह नहीं है। आगे पति के घर में भी उन्हें जगह नहीं मिलती है।

भारतीय स्त्रियाँ कई वर्षों से निश्चित अस्तित्व के बिना जीवन-यापन करती हैं। पुरुष -मेधा समाज में घर-परिवार में मात्र पुरुषों को स्थान है, स्त्री का कोई स्थान नहीं होता है। इस बुरी प्रथा ने बरसों से लाखों-करोड़ों स्त्रियों को दूसरे दर्जे पर रखा है। घर-परिवार और समाज में दुख एवं कष्ट सहने वाली स्त्री की जगह को लेकर कवयित्री कई प्रश्न उपस्थित करती हैं। ऐसे सवालों के जवाब ढूँढने का दायित्व समाज पर निर्भर है। अनामिका की विवेच्य कविता पितृ सत्तात्मक संप्रदाय में अपनी स्थान परखने वाली स्त्री के मानसिक दुख तथा पीड़ा से ओतप्रोत है।

अब तक संसार में कई परिवर्तन हुए हैं। इक्कीसवीं शती के इस परिवर्तित ज़माने में अधिकांश भारतीय स्त्रियों की स्थिति वही है जो दस-पंद्रह शती पहले थी।

आज भी भारतीय स्त्रियों को पूरी आज़ादी प्राप्त नहीं है। शादी के नाम पर उन्हें अपने घर से निष्कासित कर दिया जाता है। अपने घर पर बेजगह रही स्त्री जब पति-गृह में प्रवेश करती है, तो पति का घर भी उनका घर नहीं बनता, उसके लिए अपना कोई कमरा नहीं होता। इस प्रकार भारतीय स्त्री को घर और समाज में कोई जगह नहीं मिलती है। परिणाम स्वरूप वह हमेशा अपने आप को बेजगह खड़ा पाती है।

"अपनी जगह से गिर कर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून" –

अनामिका स्पष्ट करती हैं कि भारतीय स्त्री कटे हुए नाखून और कंघी में फँसकर बाहर आये केशों की तरह एकाएक बुहार दी जाने वाली हो जाती है। हमारे यहाँ स्त्री-पक्ष नियमों की कोई कमी नहीं है। किंतु आश्चर्य यह है कि कानून प्रावधान होते हुए भी लड़की पिता के घर और संपत्ति पर उत्तराधिकारी नहीं बन पाती है। कानून को समाज स्वीकारता नहीं है।

"राम, पाठशाला जा !
राधा, खाना पका !
राम, आ बताशा खा !
राधा, झाड़ू लगा !
भैया अब सोएगा,
जाकर बिस्तर बिछा !

भारत में लड़का और लड़की की भेद-भावना उनके जन्म से ही शुरू हो जाती है। घर-परिवार एवं समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में लिंग-भेद से उत्पन्न समस्याएँ दृष्टि गोचर होती हैं। अधिकतर पुरुष स्त्री को केवल अपनी यौन-क्रिया का उपकरण मात्र समझते हैं। कुछ पुरुषों के लिए स्त्री नौकरानी मात्र है। यह विकृत मनोभाव बदलना ज़रूरी है। भारतीय स्त्री पर हुए परंपरागत बुरे व्यवहारों को बदलने का दायित्व परिवर्तित ज़माने के शिक्षित एवं सुसंस्कृत नौजवानों पर है। विवेच्य कविता ऐसे विचारों को ही जाग्रत करती है।

कवयित्री के मन में अपनी संस्कृत टीचर के श्लोक का अन्वय अब भी जीवंत है। यह जीवंत चित्र हर क्षण उनसे प्रश्न करता है कि औरत क्या अपनी जगह से गिरे केश और नाखून के समान दूर फेंकने की वस्तु है? इसमें कवयित्री ने औरतों की स्थिति पर एक अलग दृष्टि डाली है।

कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फँस कर बाहर आए केशों-सी
एकदम से बुहार दी जाने वाली?

दर्दनाक बात है कि भारतीय औरत अब भी टूटे हुए केश और काटे हुए नाखून के समान इधर-उधर फेंका जाती है। अर्थात आज भी हमारी महिलाओं को कोई घर नहीं होता है। पुरुषों के दृष्टि में वे हवा, धूप और मिट्टी जैसी होती हैं। उन तीनों को घर की क्या ज़रूरत? इस विषय पर अनामिका तर्क नहीं करती हैं, सत्य उपस्थित करती हैं। खुले मन से सोचें तो उनका मत बिलकुल सही है।

भारत का सामाजिक ढाँचा अब भी रूढ़ि ग्रस्त है। अंधविश्वास और अबद्ध पूर्ण विचारों पर निमग्न पुरुषों में कुछ, स्त्री को उनका जन्म सिद्ध अधिकार और आज़ादी देने को तैयार नहीं होते हैं। यह संकट की बात है कि घर पर लड़की के पिताजी जो स्त्री-विरुद्ध निर्णय लेते हैं, तो लड़की की माताजी भी पति का सहयोग देती है। यहाँ स्त्री की शत्रु वही बन जाती है। स्त्री के ऐसा स्त्री विरोधी दृष्टिकोण भी निंदनीय है।

कवयित्री कहती है–

लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती है।
उनका कोई उत्तर नहीं होता।

अंतर-भाव बचपन से ही लड़कियों के मन में पैदा कर दिया जाता है। तब उनके बालसुलभ मन में यह प्रश्न उत्पन्न होता है–

जिनका कोई घर नहीं होता –
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?

कवयित्री अनामिका हमसे पूछती है कि ऐसी कौन-सी जगह होती है, जिसके छूट जाने पर लड़की औरत बन जाती है? माँ-बाप का यह घर छूटते ही लड़की औरत बन जाती है! औरत बन जाते ही उनकी जगह बदल जाती है। तब उनका स्थान घर द्वार बन जाता है। तब अपने लोग पीछे छूट जाते हैं।

कवयित्री के राय में भारत में स्त्री को बेजगह बनाने की परंपरा बहुत पुरानी है। संस्कृत काल से ले कर अब तक इसका निर्वाह चल रहा है।

परंपरा से छूट कर बस यह लगता है–
किसी बड़े क्लासिक से
पास कोर्स बी.ए. के प्रश्नपत्र पर छिटकी
छोटी-सी पंक्ति हूँ–
चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग।

परंपरा के ख़िलाफ़ विद्रोह से आनंद कितना मिलता है? बस, किसी बड़ी क्लासिक किताब में, दो-एक पंक्ति में ऐसी स्त्री को जगह मिल जाती है। परिणाम स्वरूप उनका जीवन किसी बी.ए के प्रश्न पत्र की छोटी-सी पंक्ति के समान हो जाता है। कवयित्री अपनी मानसिक स्थिति व्यक्त करती हैं कि मैं यह चाहती हूँ कि कोई मेरी सही सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत करे। इन सारे संदर्भों के पार मुश्किल से पहुँची हूँ। तुकाराम का कोई अपूर्ण और अभंग समझकर मुझे पढ़ाया जायेगा, क्या?

प्रस्तुत कविता पाठकों के सामने जीवन के कुछ अनसुलझे प्रश्न उठाती है। निष्कर्ष यह है कि अस्तित्व ढूँढती स्त्री के दुख एवं पीड़ा की सजीव अभिव्यक्ति 'बेजगह' शीर्षक कविता में आदि से अंत तक दिखायी देती है।

शब्दार्थः

जगह	=	स्थान
केश	=	बाल, अलक, कुंतल
अन्वय	=	दो वस्तुओं का पारस्परिक ताल मेल
श्लोक	=	संस्कृत का पद्य
जम	=	जाती मिल जाना
कक्षा	=	क्लास, दर्जा
बिस्तर	=	शय्या, बिछावन
एकदम	=	बिलकुल, पूरी तरह
बुहारना	=	झाड़ू लगाना
बताशा	=	मीठा व्यंजन
एहसास	=	अनुभव, अनुभूति
छिटकना	=	बिखरना
अधूरा	=	अपूर्ण
अंभग	=	अखंडित, न टूटने वाला

व्याख्या

अनामिका की 'बेजगह' कविता वैश्वीकरण की सशक्त उपज है। अनामिका की कविताओं में हम स्त्री के अनेक रूप देख सकते हैं। उनकी कविता में संवेदनशीलता कूट-कूटकर भरी हुई है। संपूर्ण संवेदना द्वारा अनामिका समाज में स्त्रियों की विसंगतियों का चित्रण करती हैं।

समाज से संबंधित हर विषय में अनामिका का अपना आदर्श और दृष्टिकोण है। यह 'बेजगह' में हमारी शिक्षा-संप्रदाय के लिए अभिव्यक्त विमर्श एवं व्यंग्य से स्पष्ट हो जाता है। यथा–

अपनी पहली कक्षा में ही।
याद था हमें एक-एक क्षण
आरंभिक पाठों का–
राम, पाठशाला जा !
राधा, खाना पका !
राम, आ बताशा खा !
राधा, झाड़ू लगा !
भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा !
अहा, नया घर है !
राम, देख यह तेरा कमरा है !

'और मेरा?'
'ओ पगली,
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।'

ऊपर दी हुई घटना लाखों-करोड़ों विद्यार्थियों के पाठ-पुस्तकों से संबंधित है। बचपन की घटनायें कुछ बच्चों के मन में ताज़ा रहती हैं। बड़े हो जायें तो भी वे उनकी स्मृति-पटल से मिट नहीं पाती। ऐसी ही एक घटना अनामिका ने पाठ्य-पुस्तकों में से उठाकर सब के सामने रखी है। यह हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि अब पढ़ो और सोचो कि ये पाठ आख़िर हमारे बच्चों को क्यों पढ़ा रहे हैं? हमें या हमारे समाज को? इसमें शंका नहीं है कि ऊपर दी गई पंक्तियाँ स्त्री-विरुद्ध मनोभाव को प्रचारित-प्रसारित करती है। उपरोक्त पंक्तियाँ स्त्री की दशा और दिशा को बदलने को हमें उत्तेजित कर देती हैं।

बच्चों को भिन्नता पढ़ाने वाले अध्यापकों में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि है। हमारे परंपरागत शिक्षा-प्रणालियों में कमियाँ है। वैसे स्त्री-पुरुष असमानता को प्रोत्साहन देने वाला माहौल भी घरों में जारी है।

हम कभी-कभी देख सकते है कि एक माँ-बाप के संतानों में लड़का माता-पिता के अभिनंदन का पात्र बन जाता है, लड़की विरक्ति की। घर-परिवारों में लड़कों को मुख्य स्थान मिलता है तो लड़की को मिलता है गौण स्थान। दोनों के काम के विभाजन में भी अंतर दृश्यमान है।

इक्कीसवीं शती में भी अधिकतर घरों में लड़की एक अनचाहा जीव बनकर जीवन न्योछावर कर देती है। अपने लड़कों को हम जिस ढाँचे में पालते-पोसते हैं, लड़की को उस ढाँचे में नहीं पालते। बचपन से ही बच्चों के मन में यह विश्वास पैदा करते हैं कि लड़का माँ-बाप के बुढ़ापे का संरक्षक है, लड़की दूसरे के घर जाने वाली होती है। माता-पिता के इस विरुद्ध भाव पर लड़के खुश होते हैं, लड़की के मन में निराशा और ग्लानि फैल जाती है।

जिस समाज स्त्री को माँ, कुल दीप, ऐश्वर्य देवता, आराधना पात्र जैसी संज्ञा दे कर पुकारा जाता है, उस समाज में स्त्री अनीति, अन्याय और आक्रमण का शिकार बनकर उपेक्षित की जाती है। मालूम होता है कि स्त्री के लिए ऊपर कहे गये सारे शब्द केवल उपमा मात्र ही हैं। जिस देश से स्त्री को देवी के समान पूजने का मंत्र गूँजता है उस देश से अधिकाधिक लड़की-भ्रूण हत्या की ख़बरें आती रहती हैं। अगर भ्रूण हत्या न भी हो तो जन्म लेने के पश्चात उन्हें विविध प्रकार के तनावों में बाँध कर हत्या कर दी जाती है।

Critical Overview / अवलोकन

अनामिका सामाजिक दृश्यों को खुली आँखों से देखने वाली चेतना-संपन्न कलाकार हैं। समाज से स्त्री का जो दारुण दृश्य उन्हें प्राप्त होता है वे उसे अपनी कविता में उतार लेती हैं। इसलिए अनामिका को इक्कीसवीं शती की भारतीय नारी के दुःख, यातना और संघर्ष सही अर्थ में समझने और समझाने वाली कवयित्री कहते हैं। उनकी कविताएँ भारतीय समाज में स्त्री की यथार्थ स्थिति का आँखों देखा चित्र पाठकों के समक्ष लाती हैं। अनामिका की प्रस्तुत कविता हम से स्त्री-आज़ादी की बात-चीत करती है। लेकिन अनामिका के लिए नारी मुक्ति कभी भी परिवार या पुरुष से मुक्ति नहीं रही है। अथवा अनामिका की कविताएँ भारतीय समाज में अनछुए संदर्भों द्वारा स्त्री-पीड़ा और यातना को व्यक्त रूप तथा भाव प्रदान करती हैं। परिवर्तित सामाजिक परिवेश, मूल्य च्युति, टूटती संयुक्त परिवार-प्रणाली, अकेलापन से उपजी त्रासदी और स्त्री-पुरुष रिश्ते संबंधी आदर्श आदि अनामिका के मुख्य काव्य-विषय रहे हैं। अतएव यों कहिए कि अनामिका की कविताएँ सामाजिक यथार्थ का ही प्रस्तुतीकरण करती दिखाई देती हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- ‘बेजगह’ शीर्षक कविता पाठकों को यह पाठ पढ़ाती है कि स्त्री और पुरुष की भिन्नता की शुरुआत अपने-अपने घर से ही होती है।
- लोगों में अधिकतर ऐसा है कि लड़कों को विद्यालय जाने को प्रेरित किया जाता है और लड़कियों को खाना पकाने का आज्ञा दी जाती है।
- नये घरों में लड़कों को कमरा है, लड़की के लिए नहीं है।
- इससे स्पष्ट है कि स्त्री-पुरुष भेद भाव की प्राथमिक पाठशाला घर ही है।
- यहाँ कवयित्री हमारी परंपरागत शिक्षा-व्यवस्था के आरंभिक पाठों की निरर्थकता की ओर इशारा करती हैं।
- अनामिका एक स्त्री होने के नाते स्त्री की समस्याएँ उन्हें ख़ूब मालूम है।
- पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्री उनके उपभोग की वस्तु मात्र है।
- इसका ज्वलंत उदाहरण बेजगह में प्राप्त है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ‘बेजगह’ किसकी रचना है?
2. अनामिका के जन्म कहाँ हुआ?
3. अनामिका ने कहाँ से उच्च शिक्षा पायी है?
4. ‘बेजगह’ कविता का विषय क्या है?
5. अनामिका के किस काव्य कृति को केन्द्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है?
6. ‘बेजगह’ किस काव्य-संग्रह में संकलित कविता है?
7. बेजगह कविता में चित्रित विषय क्या है?

Answers / उत्तर

1. अनामिका के
2. बिहार के मुजफ़्फ़रपुर में
3. दिल्ली विश्वविद्यालय से
4. समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में लिंग-भेद है
5. ‘टोकरी में दिगंत-थेरीगाथा : 2014’ शीर्षक काव्य पर
6. ‘खुरदरी हथेलियाँ’
7. अस्तित्व ढूँढनेवाले स्त्री के दुःख एवं पीडा की सजीव अभिव्यक्ति

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. स्त्री को लगता है कि घर-परिवार में उनका कोई स्थान नहीं है– क्यों? युक्ति युक्त कारण समझाइए।
2. 'बेजगह' कविता के संदर्भ में अपने स्त्री पक्ष पर विचार प्रकट करते हुए अपने मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए।
3. भारतीय स्त्री आज़ादी के अधिकारी है– इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. समकालीन कविता की कथ्यचेतना - संजन जैन।
2. नई कविता में नाट्य काव्य - हरिश्चन्द्र वर्मा।
3. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार वर्मा।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र।
5. खुरदरी हथेलियाँ - अनामिका।
6. बीजाक्षर - अनामिका।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई 5

प्यासा कुआँ

ज्ञानेंद्रपति

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन हिन्दी के विख्यात कवि ज्ञानेन्द्रपति से परिचित होता है
- ज्ञानेन्द्रपति की चर्चित तथा प्रतिनिधि कविता 'प्यासा कुआँ' समझता है
- पारिस्थितिक कवि के रूप में जनमानस में ज्ञानेन्द्रपति के स्थान समझता है
- समकालीन समाज में पर्यावरण-प्रदूषण के यथार्थ रूप का परिचय मिलता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

समकालीन हिन्दी कविता को अपने नवीन दृष्टिकोण से नयी दिशा और दशा प्रदान करने वाले कवियों में ज्ञानेन्द्रपति का नाम शीर्षस्थ है। ज्ञानेन्द्रपति महाप्राण निराला और क्रांति बीज मुक्तिबोध की परंपरा को आगे ले जाने वाले कवि हैं। उन्हें कविता केवल कथनी नहीं है, करनी है। ज्ञानेन्द्रपति कविता को इतना पसंद करते थे कि पूरा समय काव्य-सृजन में ध्यान केंद्रित करने को उन्होंने अपने जीविका एवं जन्म-स्थान तक छोड़ दिया। पारिस्थितिक संतुलन स्थापित कर रहने की आवश्यकता पाठकों के मन में स्थापित कर उन्हें प्रकृति संरक्षण के महान उद्देश्य का संदेशवाहक बना है।

ज्ञानेन्द्रपति जन्मदाता प्रकृति के उपासक कवि है। वे एक ओर प्रकृति के अनुकूलता प्रदर्शित करते हैं दूसरी ओर उसके हत्यारों के प्रति सख्त विरोधी भी व्यक्त करता है। वे प्रकृति को मनुष्य की सहचरी समझते हैं।

ज्ञानेन्द्रपति की कविता का प्राण तत्व प्रकृति है। उनकी कविता में प्रकृति की चेत-अचेत अवस्था मुख्य स्थान पाती है शेष सब कुछ गौण है। उनके काव्य की रीढ़ पारिस्थितिक-चित्रण है। इसके बिना अन्य विषय दुर्लभ है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- पारिस्थितिक संतुलन स्थापित रहने की आवश्यकता समझाता है।
- कविता के विषय समकालीन प्रतीत होता है।
- ज्ञानेन्द्रपति की कविताएँ जीवन और कला, सृजन और संवेदना के समर्थन का परिणाम है।
- वर्तमान काल में मनुष्य अपने बुरे कर्मों एवं धर्मों द्वारा साबित करते है कि वह विवेक-बुद्धि में पशुओं से तुच्छ है।

Discussion / चर्चा

कवि परिचय:

ज्ञानेन्द्रपति

ज्ञानेन्द्रपति जन मानस के कवि हैं। ज्ञानेन्द्रपति जन्मदाता प्रकृति के उपासक कवि है। वे एक ओर प्रकृति के अनुकूलता प्रदर्शित करते हैं दूसरी ओर उसके हत्यारों के प्रति सख्त विरोधी भी व्यक्त करता है। वे प्रकृति को मनुष्य की सहचरी समझते हैं। ज्ञानेन्द्रपति की कविता का प्राण तत्व प्रकृति है। उनकी कविता में प्रकृति की चेत-अचेत अवस्था मुख्य स्थान पाती है शेष सब कुछ गौण है। उनके काव्य की रीढ़ पारिस्थितिक-चित्रण है। उनका काव्य विडंबनाओं से मुक्ति पाने की सीधे-सच्चे रास्ता भी दिखा देता है। ज्ञानेन्द्रपति की कविताएँ जीवन और कला, सृजन और संवेदना के समर्थन का परिणाम है। उनकी कविता केवल विमर्श को ही उपस्थित नहीं करती है, इसमें संवेदना भी पर्याप्त मात्रा में है।

ज्ञानेन्द्रपति हिन्दी के उत्साही एवं अनूठे कवि हैं। उनकी कविताओं में समाज की आशंका मुख्य रूप में उभर कर आती है। पारिस्थितिक प्रदूषण, बाज़ारीकरण, आधुनिक जीवन शैली के दुष्प्रभाव, प्रकृति प्रेम आदि उनकी काव्य के विषय बन जाती है।

कविता पाठ

प्यासा कुआँ

प्यास बुझाता रहा था जाने कब से
बरसों बरस से
वह कुआँ
लेकिन प्यास उसने तब जानी थी
जब
यकायक बंद हो गया जल-सतह तक
बाल्टियों का उतरना
बाल्टियाँ- जो अपना लाया आकाश डुबो कर
बदले में उतना जल लेती थीं
  प्यास बुझाने को प्यासा
  प्रतीक्षा करता रहा था कुआँ, महीनों
  तब कभी एक
  प्लास्टिक की खाली बोतल
  आ कर गिरी थी
  पानी पी कर अन्यमनस्क फेंकी गई एक प्लास्टिक-बोतल
  अब तक हैण्डपम्प की उसे चिढ़ाती आवाज़ भी नहीं सुन पड़ती
एक गहरा-सा कूड़ादान है वह अब
उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है अब भी
अगर तुम दो पल उस औचक बढ़ाए कुएँ के पास खड़े होओ चुप।

सारांश:

प्रस्तुत कविता प्यासा कुआँ समकालीन हिन्दी में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले कवि ज्ञानेन्द्रपति के पर्यावरण-प्रदूषण से संबंधित कविता है। यह पारिस्थितिक अवबोधन हेतु रची गयी कविता है। जिसका विषय आधुनिक है। कुएँ पुरानी है। लेकिन पुराने ज़माने में कुएँ प्रदूषित न थे। आज नदी प्रदूषित ही नहीं, उन्हें प्यास बुझाने की प्यास है। इसलिए विवेच्य कविता के विषय समकालीन प्रतीत होता है।

कवि ज्ञानेन्द्रपति कहते है कि वह कुआँ पिछले कई वर्षों से प्यास बुझाता रहता था। जब कुएँ के पानी के धारा-प्रवाह एकाएक उसके सतह में ही बंद हो गया तब उन्हें अपनी प्यास मालूम हुई थी। पहले बड़े-बड़े बाल्टियों में भरी-पूरी पानी देती थी, लेकिन सतह में बंद होने से अब पानी नहीं मिलती थी।

कुएँ कई महीनों से प्यास बुझाने के प्यास की प्रतीक्षा करता रहता था। तब उस पर कभी एक प्लास्टिक की खाली बोतल आ कर गिर पड़ी। यह पानी पीने के पश्चात किसी एक अन्य मनस्क फेंकी गई प्लास्टिक की खाली बोतल थी। उसे अब तक हैण्डपम्प की चिढ़ाती आवाज़ भी नहीं सुन पड़ती थी।

SGOU

दिन गुज़रते-गुज़रते कुआँ एक बड़ा और गहरा कूड़ेदान का रूप धारण कर लेता है। उनकी प्यास अब सिसकी के तरह सुनती जा सकती है। कवि कहते है कि अगर तुम थोड़ी देर कुएँ के पास चुप खड़े होकर कान लगाए। तब तुम्हें उनकी सिसकी सुनायी पड़ेगी।

ज्ञानेन्द्रपति के साहित्य की शब्द दर शब्द, पंक्ति दर पंक्ति में मिट्टी की गहरी महक है। सजग कवि इस बात से दुःखी हैं कि आजकल सबसे अधिक हमला प्रकृति पर हो रहा है। फलतः जीव वायु, पानी, हवा, प्रकृति-सौंदर्य, सुगंध, पेड़-पौधे, खाद्य-पदार्थ आदि सब छूट जाते हैं। वर्तमान काल में मनुष्य अधिक से अधिक अविवेकी और क्रूर होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं यह अविवेकी संघ जानबूझकर अपनी ही आत्मा (प्रकृति) का घात कर रहे हैं। ज्ञानेन्द्रपति अपने कर्मों-धर्मों द्वारा व्यक्त करते है कि प्रकृति में मानव का हमला इस प्रकार चलता रहा तो मनुष्य को अभयारण्य तलाशना होगा।

प्यास बुझाता रहा था जाने कब से
बरसों बरस से
वह कुआँ
लेकिन प्यास उसने तब जानी थी
जब
यकायक बंद हो गया जल-सतह तक
बाल्टियों का उतरना
बाल्टियाँ- जो अपना लाया आकाश डुबो कर
बदले में उतना जल लेती थीं

प्रस्तुत कविता में ज्ञानेन्द्रपति कूड़ा-कचरा भर कर कुएँ के पानी बंद होने के चित्रण से प्रकृति की महान उपलब्धि की अनुपलब्धि का रूप सामने लाता है। कुएँ में पहले पानी भरे हुए थे। किंतु पिछले कुछ बरसों से कुएँ को प्यास लगता था। उससे पहले उन्हें प्यास का पता न था। जब एकाएक जल-स्रोत बंद हो गया तब वे प्यास समझ लिया। एक दिन देखते-ही-देखते अचानक कुएँ के जल-स्रोत सतह में बंद हो गये। पहले बाल्टियों में ज्यादा से ज्यादा पानी मिलता था। अब बाल्टी में पानी भर लेना संभव न था। अब कुएँ को सख्त प्यास लगता था। वह प्यास बुझाने की प्यास में तिल-मिला हो उठ्ते थे।

प्यास बुझाने को प्यासा
प्रतीक्षा करता रहा था कुआँ, महीनों

तब कभी एक
प्लास्टिक की खाली बोतल

आ कर गिरी थी

मनुष्य के बुरी आदतों ने कुएँ को मिट्टी के एक गट्टा परिवर्तित कर दिया है। द्रोही मन वाला अन्यमनस्क मनुष्यों ने पानी पीने के बाद प्लास्टिक का बोतल कुएँ पर फेंक दिये गये। साथ-ही-साथ अविवेकी लोगों ने कुएँ को कूड़ा-कचरा छोड़ने का जगह मान भी लिया है।

कवि के वचन से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपने मन के सारे कूड़े-कचरे कुएँ पर फेंककर उन्हें एक गहरा-सा कूड़ेदान बना दिया है। सच में मानव-मन सबसे बड़ा कूड़ेदान है। जब वह भर जाता है, तब वह उसे यहाँ-तहाँ फेंक देता है। अब कुएँ प्यास बुझाने के प्यासा में तिलमिल है- कहकर कवि हमारा ध्यान धरती के तड़प की ओर खींच लेता है। धरती के मृत्यु से तात्पर्य उसकी संपूर्ण जीव-अजीव की सर्वनाश है, जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं।

आज कुएँ को कलियुग है। कूड़ादान बन जाने से पहले उसका एक स्वर्णिम युग था। तब वह भरापूरा रहता था। यह सुवर्ण-काल अब उन्हें मात्र स्मृति है। अब कुएँ सिसकी भरते हैं। यह सिसकी निसहायता और असहायता की होती है। किसने यह धरती के अवयवों को निरर्थक बनाकर छोड़ डाला? धरती माँ ने जिस मनुष्य को खान-पान देकर पाला-पोसा है, उस मनुष्य ने उसकी गला घोंट दिया है। कवि कहते है कि अगर दो पल कुएँ के पास चुपचाप रहकर कान लगाते तो उसकी सिसकी सुन सकती है। यह स्पष्ट है कि धरती रूदन उसकी नहीं है, मेरी, तेरी और सारी की रूदन है। स्वयं बुद्धिमान और शक्तिमान मानने वाला क्रूर मनुष्य कब समझेगा कि यह सिसकी मात्र कुएँ की नहीं है, संपूर्ण जीवों के सिसकी है।

पानी पी कर अन्यमनस्क फेंकी गई एक प्लास्टिक-बोतल

अब तक हैण्डपम्प की उसे चिढ़ाती आवाज़ भी नहीं सुन पड़ती

एक गहरा-सा कूड़ादान है वह अब

उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है
अब भी

अगर तुम दो पल उस औचक बुढ़ाए कुएँ के पास
खड़े होओ चुप।

जल के स्रोत कुएँ के प्यास होने और प्लास्टिक की खाली बोतल के गिरने जैसे बिम्बों के प्रयोग इस कविता में हुआ है। यह अवश्य पर्यावरण-प्रदूषण की भयानक संकट-समस्या की ओर संकेत करते हैं। पारिस्थितिक प्रदूषण में तड़पता कवि का मन इस कविता के पंक्तियों में सिसकता जैसा प्रतीत होता है।

शब्दार्थः

बुझाता	=	शांत करना
बरसों	=	वर्षों
बरस	=	वर्ष
यकायक	=	अचानक, सहसा
बंद	=	रोक, अवरुद्ध
सतह	=	बाहर या ऊपर का फैलाव, पटल
बाल्टियों	=	buckets
उतरना	=	निकालना
बोतल	=	bottle
अन्यमनस्क	=	जिसका चित्त कहीं और हो, अनमना
चिढ़ाती	=	नाराज़ कराना, क्रुद्ध कराना
गहरा	=	गहराई वाला
अगर	=	यदि
पल	=	दम, क्षण
औचक	=	अकस्मात, एकदम
चुप	=	खामोश, मौन

Critical Overview / अवलोकन

ज्ञानेन्द्रपति प्रगतिशील उदात्त और भव्य परिकल्पना के कवि हैं। उन्हें काल और समय के प्रामाणिक भाष्यकार कवि कहना भी उचित है। ज्ञानेन्द्रपति का 'प्यासा कुआँ' पारिस्थितिक-उद्बोधन पैदा करने वाले सशक्त कविता है। पानी और मनुष्य में बड़ी आत्म संबंध है। जल-थल और वायु के बिना जीवों को जीना संभव नहीं होता है। वर्तमानकालीन लोगों में अधिकांश को पारिस्थितिक स्थिति के बारे में चिंता नहीं है। समकालीन मनुष्य अपनी स्वार्थ मनोभाव न छोड़ता तो उसका भयंकर दुष्परिणाम आने वाले सभी पीढ़ी भोगना पड़ेगा।

प्यासा कुआँ कवि ज्ञानेन्द्रपति का पर्यावरण-प्रदूषण संबंधित कविता है। जिसमें उनके पर्यावरण के प्रति प्रेम और चिन्ता स्पष्ट रूप में झलकता है। यह छोटी कविता अवश्य समकालीन पर्यावरण-प्रदूषण की भयानक स्थिति की ओर संकेत करते हैं। कवि का दुःख -दर्द मन इसमें तड़पता जैसा प्रतीत होता है।

आज धरती प्रदूषित है, समुद्र प्रदूषित है और आकाश प्रदूषित है। प्रकृति के अंग-प्रत्यंग प्रदूषण से निर्जीव अवस्था की ओर गुज़र रहे हैं। इस भयानक स्थिति कुबुद्धि और अविवेकी मनुष्य द्वारा निर्मित है। समकालीन मनुष्यों में कुछ कभी-कभी जानवर से तुच्छ बन जाते हैं। मनुष्य और जानवर में मुख्य अंतर यह है कि सृष्टा ने मनुष्य को सोचने-समझने का विवेक दे दिया है, जानवर को नहीं। किंतु वर्तमान काल में मनुष्य अपने बुरे कर्मों एवं धर्मों द्वारा साबित करते है कि वह विवेक-बुद्धि में पशुओं से तुच्छ है। ऐसा लगने का कारण यह है कि जानवर पर्यावरण प्रदूषित नहीं करते है, स्वयं विवेकी तथा समझदार मानने वाले मनुष्य द्वारा पर्यावरण प्रदूषित होती है।

मनुष्य ने प्रकृति के संतुलन नष्ट-भ्रष्ट कर उसे बड़ी विपत्ति पर धकेल कर दिया है। सृष्टा के सृष्टि में मनुष्य सबसे बुद्धिमान ही नहीं, अविवेकी, स्वार्थी और घमंडी भी है। नहीं तो वे इस प्रकार अपनी जन्मदात्री की अपमान और हत्या नहीं करते हैं।

मनुष्य अपने चारों ओर कूड़ा-कचरा फेंक देता है, पेड़-पौधों को काट कर देते हैं, पत्थरों-पहाड़ों का सत्यानाश कर देता और अंत में गर्मी में तड़पते मरते है। प्रकृति पर मनुष्य का करतूत इस प्रकार चलता तो आने वाले पीढ़ी को मिट्टी, पानी, समुद्र, खाद्य पदार्थ आदि सब अप्राप्य हो जायेगा। इस कविता में सजग कलाकार ज्ञानेन्द्रपति इस प्रकार के कई विचारों और विकारों को अभिव्यक्ति करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्यासा कुआँ में चर्चित समस्या वर्तमान काल पर आधारित है।
- पर्यावरण-प्रदूषण वर्तमान संसार में सबसे अधिक चर्चित एक भयानक समस्या है।
- जल प्रदूषित है, थल प्रदूषित है, वायु प्रदूषित है, खाद्य पदार्थ प्रदूषित है।
- प्रकृति के अंग-प्रत्यंग प्रदूषित होने का मूल कारण मनुष्य के प्रदूषित मन और मस्तिष्क है।
- यह तर्कहीन बात है कि भूमि, आकाश और समुद्र के प्रदूषण मनुष्य द्वारा चलते हैं।
- आजकल आधुनिकरण के नाम पर चारों ओर होने वाली परिष्कार परिस्थिति के संतुलन की घातक सिद्ध होती है।
- प्रकृति की संपत्ति पर इसकी हरेक जीव-जंतुओं को अधिकार है।
- इस संपत्ति पर वर्तमान काल के जीवियों को ही नहीं, भावी काल में आने वाले पीढ़ियों का भी अधिकार है।
- जल प्रदूषण हो या वायु, किसी जानवर की ओर से इसकी प्रदूषण नहीं होती है।
- किसी पशु पानी में प्लास्टिक नहीं फेंकता है, कूड़े-कचरे डॉल नहीं देते है।
- किसी जानवर अंतरिक्ष में भारी मात्रा में कार्बन डॉइऑक्साइड छोड़कर प्राण वायु रोक नहीं करता है।
- चर्चित कविता अब तक अनकहे ऐसे कई विषयों को समर्थन करने में पूर्ण रूपेण सक्षम है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्यासा कुआँ शीर्षक कविता के कवि कौन है?
2. ज्ञानेन्द्रपति का पारिस्थितिक अवबोधन हेतु रची गयी कविता कौन -सी है?
3. ज्ञानेद्रपति के मुख्य कृतियों के नाम लिखिए?
4. कुएँ को कब प्यास लगता था?
5. प्यासा कुआँ में कवि कौन-सी विचार प्रकट करते है?
6. प्यासा कुआँ किस प्रकार की कविता है?
7. ज्ञानेन्द्रपति का जन्म कहाँ हुआ है?
8. ज्ञानेद्रपति के केन्द्र साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचना का नाम बताइए?

Answers / उत्तर

1. ज्ञानेन्द्रपति
2. प्यासा कुआँ
3. कुएँ के पानी के धारा-प्रवाह एकाएक उसके सतह में ही बंद हो गया तब
4. कुएँ के जल-स्रोत बंद होते समय
5. पर्यावरण-प्रदूषण संबंधी विचार

6. पारिस्थितिक अवबोधन हेतु रची गयी कविता
7. झारखंड के पथरगामा
8. संशयात्मा

Assignments / प्रदत्त कार्य

1. प्यासा कुआँ का विश्लेषण कीजिए।
2. प्यासा कुआँ शीर्षक कविता वर्तमान स्थिति से कैसे संबंध रखती है?
3. प्रस्तुत कविता के आलोचनात्मक अध्ययन कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. संशयात्मा – ज्ञानेन्द्रपति।
2. गंगातट – ज्ञानेन्द्रपति।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्रशुक्ल।
4. समकालीन कविता - वीरेंद्र जैन।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी पद्य साहित्य आदिकाल से आधुनिक काल तक

COURSE CODE: B21HD04DC

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-970238-5-9